

PUBLISHED BY THE DEPARTMENT OF PUBLICATIONS,
SANSKRIT UNIVERSITY, VARANASI (INDIA).

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, VARANASI.

वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्थ-

सरस्वतीभवनपुस्तकालये

ख्रिस्तीय १७९१ तमवर्षात् १९५० तमवर्षपर्यन्तं सङ्गृहीतानां
हस्तलिखितसंस्कृतग्रन्थानां

विवरणपञ्जिका

तस्या अयं

व्याकरणग्रन्थसङ्ग्रहात्मकः

दशमो भागः

वाराणसेयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्थ-

सरस्वतीभवनाख्यपुस्तकालयहस्तलिखितग्रन्थविभागसंषद्द्विविद्भिः

सम्पादितः

१८८६तमे शकाब्दे ।

NOTE

The Sarasvati Bhavana Library was established as a constituent part of the Government Sanskrit College, Varanasi, in 1791. Ever since this institution came into existence Sanskrit manuscripts have been acquired and preserved in it. Though there were a few catalogues of manuscripts already published in the past, in course of time, however, all of them became out-of-print and out-of-date on account of the number of manuscripts having increased manifold. Therefore, early in 1951 steps were taken towards preparation of a comprehensive catalogue of all the manuscripts acquired upto the end of the preceding year. The first four volumes of the thus prepared new catalogue of our manuscripts were published by March 1958. Then this Library merged with the Government Sanskrit College into the newly established Vārāṇaseya Sanskrit Viśvavidyālaya, and the work of compilation and publication of catalogues of manuscripts has been continued under the auspices of this institution.

It will be observed that the pattern of this catalogue adopted by us in 1951 is substantially in accord with the form later approved for cataloguing of Sanskrit manuscripts by University Grants Commission.

Up till now we have published eleven volumes of such catalogues and the present one is volume X. It enlists altogether 2521 manuscripts of works on Vyākaraṇa, All the manuscripts described here have their titles arranged in an alphabetical order to facilitate reference, since in the existing condition we have not been able to arrange the titles in any standard order in the body of the catalogue.

Vārāṇasī
11th Śrāvāṇa
1886 Śakābda

SUBHADRA JHĀ
Granthādhyakṣa, Vārāṇaseya
Sanskrit Viśvavidyālaya.

**हस्तलिखितग्रन्थविवरणपत्रिकायाः
दशमो भागः**

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|--------------------------------|--|
| ३७९२५ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | १-२८०। |
| ३७९२६ | काशिका | | १-७७। |
| ३७९२७ | पद्मञ्जरी | हरदत्तमिश्रः | २-८४, १-१०७, २४-६८, १५३-१६१, १-७०, १-११५, १-३०, ३०-३२, १-१२०। |
| ३७९२८ | कारकादिविचारः | | ३। (गणनया) |
| ३७९२९ | समासादिविचारः | | ६। ” |
| ३७९३० | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | २। ” |
| ३७९३१ | गणपाठः | | १-४१। |
| ३७९३२ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागोजिमहः | २१-५९। |
| ३७९३३ | ” | | १६। (गणनया) |
| ३७९३४ | शब्दकौस्तुभः | | १-१४। |
| ३७९३५ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | ४४-६८, ७०-८१। |
| ३७९३६ | प्रौढमनोरमा | | ३९। |
| ३७९३७ | महाभाष्यं सटीकम् | | ५२। |
| ३७९३८ | वैयाकरणभूषणसारः | कौण्डभट्टः | १। |
| ३७९३९ | सारप्रदीपिका | | १४-२७ |
| ३७९४० | गणपाठः | गोवर्द्धनः ? | १-९। |
| ३७९४१ | वृत्तिवादः | | ३-४, ७-१५। |
| ३७९४२ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | | १-३, ३-१३ (=१३-१४), १६। |
| ३७९४३ | खण्डितपत्रप्रणि | | ७६। (गणनया) |
| ३७९४४ | प्रक्रियाकौमुदी | | १-४। |
| ३७९४५ | प्रक्रियाकौमुदी सटीका | रामचन्द्रः टी.विठ्ठलाचार्यः | ३-१८। |
| ३७९४६ | ” | ” | १-४३। |
| ३७९४७ | व्याकरणग्रन्थविशेषः | | ९। (गणनया) |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|-------------------|------------------|---------|------|----------|------------------------|---------------------------------------|
| १०३×४८ | ९ | ३० | दे. ना. | का. | १३४९ | पू० | |
| १०५×४६ | ९ | ३९ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका, प्रथमाध्यायमात्रम् । |
| ११६×४२ | ११ | ५७ | " | " | | अपू० | काशिकाव्याख्या । |
| १०७×४६ | २० | ४५ | " | " | | " | |
| १०७×४६ | १९ | ४८ | " | " | | " | |
| ११६×४९ | १२ | ४४ | " | " | | " | |
| १०६×४५ | ८ | ३२ | " | " | | पू० | |
| १११×३७ | ११ | ५८ | " | " | | अपू० | |
| १०४×४१ | १० | ५० | " | " | | " | कारकप्रकरणस्य । |
| १०६×४५ | ११ | ५० | " | " | | " | |
| १०३×४१ | ७ | २८ | " | " | | " | स्वरसन्धिप्रकरणस्य । |
| ९५×४३ | ९ | २१ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| १२८×७६ | १० | ४८ | " | " | | " | |
| १०३×४६ | ८ | ३४ | " | " | | " | |
| ९८×३५ | ८ | ३१ | " | " | | " | सारस्वतटीका १-६ प्रकाशाः । |
| १०८×४७ | २२ | ४७ | " | " | | " | प्रथमाध्यायान् पञ्चमाध्यायांशः । |
| १०६×४५ | १२ | ४७ | " | " | | " | |
| १०×४२ | ४७ | ९ | " | " | | " | बौद्धार्थप्रकरणस्य । |
| विभिन्नः | ४ | ५० | वङ्ग | " | | " | |
| १०७×३८ | ११ | ४५ | दे. ना. | " | | पू० | वैदिकभागः । |
| १०८×३८ | ९ | ३३ | " | " | १६३० | अपू० | वैदिकभागस्य, टीका प्रसादः । |
| १०८×३७ | १३ | ४५ | " | " | | पू० | स्वरभागस्य । |
| १६७×३५ | ९ | ७१ | वङ्ग | " | | अपू० | पाणिनीयभिन्नं व्याकरणं प्रतिभाति । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------------|--|---|
| ३७९४८ | प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः | विट्ठलाचार्यः | ८४ । (गणनया) |
| ३७९४९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-८, ९ (=१-३) १०-२९, ३१-४५, ७१-२२५, ८५-१२५, १२७-१७७, + १, ९३-९४, १६१, १६६-१६७, १७१ । |
| ३७९५० | शब्दरत्नभावप्रकाशिका | वैद्यनाथपायगुण्डे | १, ३-५६, १-३७, ८८-९३, ९३-९६, ९८-११८, १२१-१६५, १६७-१६८, १८०-३४४, ३४६-४१७ । |
| ३७९५१ | लघुशब्दन्दुशेखरः | नागेशभट्टः | १-४३, ७४-९६, ९६ (=९६, ९७), ९८-१५१, १८१-१८७, १९६-२०५, २५०-४०३, ४०५-४२९, ४४२, ४४६-४८२, १६३ (=२२), ४८४-५९२ । |
| ३७९५२ | वृत्तिदीपिका | कृष्णभट्टः | १-२३ । |
| ३७९५३ | धातुपाठः | | १-२७ । |
| ३७९५४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- व्याख्या | जयकृष्णः | १-४८, ५० । |
| ३७९५५ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागोजिभट्टः | १-१८ (=१८, १९), २०-५१, ५१ (=५१, ५२), ५३ |
| ३७९५६ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १-६६ । |
| ३७९५७ | शब्दरत्नभावप्रकाशिका | वैद्यनाथपायगुण्डे | १-२२ । |
| ३७९५८ | पदमञ्जरी | हरदत्तमिश्रः | १-७५, १-१०३, १०६-११८, १-५९, १-३१, ३३-३४, ८६-१२७ । |
| ३७९५९ | पदचन्द्रिकावृत्तिः | | ५७-११० (=११०, १११), १११-११६ । |
| ३७९६० | वैयाकरणभूषणसारदर्पणः | हरिवल्लभः | १-२५, ५६-२३९ । |
| ३७९६१ | वैयाकरणसिद्धान्तलघु- मञ्जूषा सटीका | | १-१०६ । |
| ३७९६२ | वैयाकरणसिद्धान्तलघु- मञ्जूषाटीका | नागेशः टी. कृष्णमित्रः | १-१८८, २५५-३१४ (=३१४, ३१५), ३१६-३१८ (=३१८, ३१९), ३१९-३८९ (=२८९), २९५ । |
| ३७९६३ | वै. सि. लघुमञ्जूषाटीका | | २१-४१ । |
| ३७९६४ | महाभाष्यं सप्रदीपोद्योतम् | पतञ्जलिः टी. कैयटः नागो- जिभट्टश्च | २-८, १२, १४-४०, १०५-१४७, १९९-२४२, २९७-३३६ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|---------------|--------------|---------|-------|--------------|---------------------|--|
| ९८×४१ | १४ | ४१ | दे. ना. | का. | | अपूर्० | समासतद्धितप्रकरणयोः । |
| १०९×५४ | १२ | ३४ | " | " | १८४७ | " | भावकर्मप्रक्रियान्ता । |
| ९५×४२ | १२ | ४७ | " | " | | " | वै. सि. कौ. टी. टी. टी. । |
| १०४×४२ | ९ | ३९ | " | " | १७९३ | " | वै. सि. कौ. टी. । |
| १२२×४२ | ११ | ४५ | " | " | | पूर्० | |
| १३२×५१ | ७ | ३२ | " | " | | " | पाणिनीयः । |
| १२८×४८ | १२ | ५६ | " | " | | अपूर्० | व्याख्या-सुवोधिनी, स्वरवैदिकप्रकरणयोः । |
| ९४×४३ | १० | ४० | " | " | १८८३ | पूर्० | |
| ११५×३९ | ८ | ६२ | " | " | १५३९ | " | १-६ पादाः । |
| ११७×४९ | १२ | ४९ | " | " | | अपूर्० | वै. सि. कौ. टी. टी. टी. । |
| ११×४५ | ११ | ४९ | " | " | १७३२ १५३३ | " | अष्टाध्यायीटी. टी. । प्रथमतृतीयाध्यायांशा । |
| १०५×४४ | ९ | ४३ | " | " | १६४७ | " | स्वाद्यन्तविवेकः । |
| १३२×५३ | ९ | ५० | " | " | | " | स्फोटवादान्तः । |
| १३×५२ | ९ | ५१ | " | " | | " | |
| १२८×५२ | ९ | ४० | " | " | | " | टी कुञ्जिका । |
| १२६×५ | २२ | ७५ | " | " | | " | |
| १३७×७१ | १५ | ६० | " | " | | " | अ. १, पा. १, आ. २-३, ५-६ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|--------------|---|
| ३७९६५ | शब्दरत्नभावप्रकाशः | | ३८-७६ । |
| ३७९६६ | प्रौढमनोरमा | | १६, २९, ३२-४९, ५२-६७ (=६७-६८), ६९-८५, ९१-१०२, १३०, १३२-१३७, १४७ (=११)-१७०, १-५३, २-४४ (=१), २-५२, १-४, १-२७ (=२३५), २-१५, १७-५५ । |
| ३७९६७ | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | ३-२५, २७-४७, ७३-९९, ९९-१३६, १३६-१८४, १८९-२१६, २६-२७, ७२-७३ । |
| ३७९६८ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | २-९, १२-११२, ११५-१७९ । |
| ३७९६९ | स्फोटचन्द्रिका | श्रीकृष्णः | १६-२० । |
| ३७९७० | परिभाषापाठः | | १-४ । |
| ३७९७१ | परिभाषाभास्करः | भास्करः | १-४८ (=४९), ४९ । |
| ३७९७२ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागोजिभट्टः | १-७२ । |
| ३७९७३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-४० । |
| ३७९७४ | सारस्वतविवृतिः | पुञ्जराजः | १-२३२ । |
| ३७९७५ | महाभाष्यप्रदीपः | कैयटः | १, ३-१६, १-१३६, १-१०, १-२९, १-२५, +१, १-८ । |
| ३७९७६ | शब्दकौस्तुभः | | १-१५, १-२०, १-८ । |
| ३७९७७ | कातन्त्रवृत्तिटीका | दुर्गासिंहः | ५७-६७ । |
| ३७९७८ | कातन्त्रविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | ८४-१००, १०२-१४१, १४३-१६० । |
| ३७९७९ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागोजिभट्टः | २६-५७ । |
| ३७९८० | प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः | श्रीविठ्ठलः | १-४१ । |
| ३७९८१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २३-३७, ४५-४७, ५४, ८७-९६, ९८-१२८, १२८ । |
| ३७९८२ | वै.सि. लघुमञ्जूषा सटीका | नागेशभट्टः | १-२५ । |
| ३७९८३ | वै. सि. लघुमञ्जूषा | ” | १-२०, २२-३७, ३९-५८, ६०-६६ । |
| ३७९८४ | कातन्त्रविवरणम् | पृथ्वीधरः | १-२, ४-१०४ । |
| ३७९८५ | कविकल्पद्रुमः सटीकः | | १-६५ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|---------------|--------------|---------|-------|-----------------|--------------------|-----------------------------------|
| ९'८×४'४ | १२ | ४५ | दे. ना. | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० टी० । |
| ९'८×४'४ | ११ | ३७ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० । |
| ९'८×४'४ | ७ | ३७ | " | " | १८२८ | " | प्रौढमनोरमाव्याख्या । |
| ९'८×४'१ | ११ | ४० | " | " | | " | सुवन्तप्रकरणस्य । |
| ९'७×४'६ | ११ | ३० | " | " | | " | |
| ९'८×५ | १० | ३७ | " | " | | पू० | १-१२६ परिभाषाः । |
| १०'७×४'८ | ११ | ४५ | " | " | १८२१ | " | |
| ११'२×४'५ | ९ | ४० | " | " | १८८५ | " | |
| ११'६×४'१ | ७ | ३६ | " | " | १७४५ श. १६१० | " | उणादिप्रकरणस्य । |
| ९'८×४'९ | १० | २५ | " | " | | " | आख्यातान्ता । |
| १२'७×४'९ | १३ | ६१ | " | " | | अपू० | १, २, ६, ७, अध्यायाः । |
| ११'८×४'१ | १३ | ५८ | " | " | | " | अ. १, ४-६ आ. । |
| १०'६×२'८ | ८ | ६१ | वज्र | " | | " | कृत्सु पष्ठः पादः । |
| ११'४×२'८ | ६ | ६२ | दे. ना. | " | | " | |
| ९'५×४'४ | ११ | ३८ | " | " | १८२७ | " | |
| १०'२×४'४ | ११ | ४४ | " | " | | पू० | |
| १०'८×४'६ | ९ | २४ | " | " | | अपू० | |
| १३'८×५'४ | ७ | ५६ | " | " | | " | स्फोटप्रकरणम्, टीका-कुञ्जिका । |
| १२'७×४'८ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| ११'१×४'७ | ११ | २३ | " | " | | " | आख्याते १-८ पादाः । |
| १३'६×४'५ | ८ | ५८ | " | " | | पू० | धातुपाठोवा । टीका कामधेन्वाख्या । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------|----------------------|--|
| ३७९८६ | मध्यमनोरमा | | १-५७ । |
| ३७९८७ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १, ३-४६, १-२, ५-५५, १-४, ६-११ । |
| ३७९८८ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | १-११, १३ । |
| ३७९८९ | प्रयोगसारः | बाह्यडाख्यशर्मा | १-५ । |
| ३७९९० | काशिका | | ४०-४१, ४३-६०, ६२, ६४-६७, ७० । |
| ३७९९१ | शब्दकौस्तुभटीका | | १८ । (गणनया) |
| ३७९९२ | गणपाठः | | २-४, ६-१४ । |
| ३७९९३ | वैयाकरणभूषणसारः | कौण्डभट्टः | १-६४, ६४-६६, ६६-२६७ । |
| ३७९९४ | चिदस्थिमाला | | १, ३-२९, २९-७३, ७३, ७-१२९, १३१-२१४, २१६-२५८ । |
| ३७९९५ | बृहच्छब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १, ३-५९, ६१-६७ । |
| ३७९९६ | कातन्त्रविस्तरः | वर्द्धमानः | २-५० । |
| ३७९९७ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १-१५३, १५२-३६४, ३६४-३७८ । |
| ३७९९८ | वै० सि० कौमुदीटीका | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | ६५-२१९, २१९=(२१९-२२०), २२१-२२३, ४७४-५८०=(५८०, ५८१), ५८२-६९५, १६-४८, ५५-६०, ६३-१००, २८२-३५४, ३७६-३९३, ४०२-५११ । |
| ३७९९९ | सिद्धान्तरत्नाकरः | रामकृष्णभट्टः | १-३१५=(३१५-३१७), ३१८-३४९ । |
| ३८००० | ” | ” | १-४५, २-४७, ८३-९८ । |
| ३८००१ | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | सृष्टिधरशर्मा | १-२२९ । |
| ३८००२ | महाभाष्यसिद्धान्तरत्नप्रकाशः | | १२-१५, २६-६५, ८८-१३२, ६, ८-४२, १-११९, १-३३ (=३४-३५) ३६-६६, १००-१२९, १३१-१९२, २-२९७, २-७४=(७४-७५), ७६-७८, ११०-१४१ । |
| ३८००३ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपाचार्यः | १, ३-१३१, १३३ । |
| ३८००४ | प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः | विठ्ठलाचार्यः | १-६२, ५३-९३+१, ९४-९६+१, ९७-१२४, १२६ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|---------------|--------------|---------|-------|----------|---------------------|--|
| १२७×४९ | ९ | ४१ | दे. ना. | का. | १८४८ | पू० | मध्यसि० कौ० व्याख्या, सुवन्तान्ता । |
| १०५×४६ | ११ | ५१ | " | " | | अपू० | अ० १, पा० १, आ० १-२, पा० २, आ० ३ अन्ते भाष्यप्रदीपोऽपि । |
| ९७×४१ | १२ | ४० | " | " | १८४५ | " | |
| ६७×४४ | ८ | २० | " | " | | " | |
| ९४×४ | ११ | ३३ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटी० अ० १, पा० ३-४ । |
| १०७×४५ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| १०७×४७ | १२ | ४५ | " | " | | " | |
| ११×४७ | ८ | ३८ | " | " | | " | |
| १११०×४३ | ८ | ४६ | " | " | | " | लघुशब्देन्दुशेखरटीका । |
| १०४×४६ | ९ | ४४ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| १३८×४६ | ९ | ५२ | " | " | | " | |
| २२२×५२ | १० | ८६ | " | " | १८५३ | " | महाभाष्यटी. टी. (कै. वि.) प्रथमाध्यां प्र.पा. चृती. १, पा.२ आ. यावत् पूर्णः। |
| १०२×३८ | १० | ३७ | " | " | १८४९ | " | टीका-तत्त्वबोधिनी । |
| १२५×४९ | ८ | ३६ | " | " | | पू० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी टीका । |
| १०×४४ | १० | ३९ | " | " | | अपू० | विभक्त्यर्थविचारं यावत् । |
| १८४×३ | ६ | ८१ | वङ्ग | " | | पू० | कलापटीका । |
| १२८×४९ | १२ | ४५ | दे. ना. | " | | अपू० | प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादस्य प्रथमाह्निककारभ्य चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थपादे प्रथमाह्निकं यावत् । |
| ९२×४३ | ८ | २५ | " | " | १८१३ | " | |
| १०३×४६ | ९ | ३५ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------|------------------------------|---|
| ३८००५ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-२१, २६-७८ । |
| ३८००६ | बृहच्छ्वेदरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-१४, २-२१, २७, २८-३०७, २-१३ । |
| ३८००७ | कातन्त्रविवरणटीका | | २-११७ । |
| ३८००८ | आख्यातवृत्तिटिप्पणी | सोद्वेश्वरः | १-१५, १७-७९, ८१-८८ । |
| ३८००९ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-११ । |
| ३८०१० | रत्नार्णवः | कृष्णसिन्धुः | २-७३ । |
| ३८०११ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | ३-४४ । |
| ३८०१२ | सिद्धान्तसुधानिधिः | | २-११, २-४१, १-१३, १५-२६ । |
| ३८०१३ | चन्द्रकला | | २-५९ । |
| ३८०१४ | कलापपरिशिष्टप्रबोधः | गोपीनाथः | १-९२ । |
| ३८०१५ | मुग्धबोधः | | २-१२०, १२०-१५२, १५२, १५३=(१५३, १५४), १५५-१६७, ३२८ । |
| ३८०१६ | धातुपाठः | | २-३०, ३०-३२ । |
| ३८०१७ | कलापसूत्रव्याख्या | | १-२९, १ । |
| ३८०१८ | कलापसूत्रम् | | १, १-९ । |
| ३८०१९ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जलिः प्रदीपकारः-कैयटः | १-१८, १-२२ । |
| ३८०२० | " | " | १-२२ । |
| ३८०२१ | " | " | १-३६, १-२९, १६१-१७८, १-९२, १-७६, १-८८, १-३७, १-११५, १-१३०, १-१६, १-८६=(८६,८७), ८८-१०९, १-१५३= (=१५३, १५४-१६३) १६४-१९६, ११६- २११, १-३३, ३३-१०७, २-९३ । |
| ३८०२२ | वाक्यपदीयं सटीकम् | भर्तृहरिः टी० हरिवृषभः | ४०-५० । |
| ३८०२३ | " | भर्तृहरिः टी० पुण्यराजः | १-४२, १-४२, १-३७, २-१७, १७-३१, १-२६ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|---------------|--------------|---------|-------|----------|---------------------|---|
| १०.९×४६ | ५ | २० | दे. ना. | का. | १९२० | अपू० | |
| ५×११ | १५ | ४० | " | " | | " | |
| ११.२×३३ | ६ | ४५ | " | " | | " | |
| ९.६×४.९ | २५ | ५४ | " | " | १४६६ | " | |
| ९.५×४.२ | ८ | ३५ | " | " | | " | |
| ११.८×४.७ | १० | ३९ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका |
| १२.६×४.९ | १४ | ६२ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी०, स्वरवैदिकखण्डयोः |
| १२.३×४.८ | १० | ४७ | " | " | | " | महाभाष्यटीका । |
| १२.७×४.७ | १० | ५० | " | " | | " | शब्देन्दुशेखरटीका, कारकप्रकरणस्य |
| १२.६×३.३ | ७ | ४१ | वङ्ग | " | | " | नामप्रकरणम् (क० प० टी०) |
| १२.६×४.९ | ७ | ४५ | " | " | | " | |
| ८.८×३.८ | ६ | २६ | " | " | | " | |
| १०.९×३.२ | ५ | ३५ | " | " | | " | अन्तिमं पत्रं भवानन्दकृतकारकाद्यर्थ- निर्णयस्य । |
| १२.७×३.८ | ७ | ४२ | " | " | | " | प्रथममेकाङ्कितं पत्रं कलापसूत्रव्या- ख्यानरूपं । |
| १२.८×६ | १२ | ४९ | दे. ना. | " | | " | |
| १६×६.५ | १४ | ५८ | " | " | | " | |
| १६×६.५ | १० | ५९ | " | " | १८७५ | " | |
| १३×५.६ | १० | ४१ | " | " | १९३२ | " | प्रथमकाण्डम् । टी० प्रकाशः |
| १३×४.२ | ६ | ३७ | " | " | १९३२ | " | द्वितीयकाण्डम् |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|---------------------------------|--|
| ३८०२४ | वाक्यपदीयं सटीकम् | भर्तृहरिः टी. हरिवृषभः | १-४, १-५१ । |
| ३८०२५ | " | भर्तृहरिः | १-१२, ५५ । |
| ३८०२६ | " | भर्तृहरिः टी. पुण्यराजः | १-३५ । |
| ३८०२७ | " | " | १-३०, १-११ । |
| ३८०२८ | " | " | १-१३, १-१५५ । |
| ३८०२९ | " | भर्तृहरिः टी. हरिवृषभाचार्यः | १-३, १-३२, १-९ । |
| ३८०३० | वाक्यपदीयम् | भर्तृहरिः | १-१० (=१०, ११, १२, १३, १४) १५- ४९ । |
| ३८०३१ | " | " | १-९ । |
| ३८०३२ | सिद्धान्तकौमुदी | | २-१६ । |
| ३८०३३ | धातुरत्नमञ्जरी | | १-३२ + १ । |
| ३८०३४ | मध्यसिद्धान्तकौमुदीटीका | | २-५, २-५, ८ । |
| ३८०३५ | वै० सिद्धान्तकौमुदीटीका | | २-७, ११-१८ । |
| ३८०३६ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | ९२ । (गणनया) |
| ३८०३७ | " | " | १-१८ । |
| ३८०३८ | " | | ९-४२, ४४-४९ । |
| ३८०३९ | " | | १२-१७, १७-२१ । |
| ३८०४० | धातुपाठः | | ३ । (गणनया) |
| ३८०४१ | गणपाठः | | २-७ । |
| ३८०४२ | वै० सि० कौमुदीटीका | | ७-१९ । |
| ३८०४३ | धातुपाठः | | ७ । (गणनया) |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|--|
| १३१×४२ | ७ | ४४ | दे.ना. | का. | १९३२ | अपू० | ब्रह्मकाण्डं, टीका प्रकाशः |
| १३×४१ | ७ | ४५ | " | " | | " | ८० श्लोकतः शक्तिव्यापारभेदोऽस्मि- न्नितिव्याख्यापर्यन्तम् । |
| १०८×४५ | ८ | ५२ | " | " | | " | ८५ श्लोकतः २३३ श्लोकान्तम् । द्वितीयकाण्डम् । |
| १०८×४६ | ८ | ४२ | " | " | | " | द्वितीयकाण्डम्, ८५ श्लोकतः २३४ श्लोकान्तम् । |
| ११×४८ | ७ | ३० | " | " | १९२४ | पू० | द्वितीयकाण्डम् । संख्याविच्छेदेऽपि ग्रन्थः पूर्ण एव । |
| १३१×४२ | ६ | ५० | " | " | १९३२ | " | ब्रह्मकाण्डम् । टी० प्रकाशः |
| ११×४६ | ८ | ३९ | " | " | | अपू० | काण्डद्वयम्, तृतीयकाण्डस्यापि बहवः श्लोकाः सन्ति । |
| १३३×५६ | १० | ४३ | " | " | | पू० | प्रथमकाण्डम् |
| १०×४५ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | वैदिकप्रकरणम् |
| ६२×९७ | १३ | २४ | " | " | | " | |
| ११×४७ | ७ | ३० | " | " | | " | |
| ११×४८ | ८ | २५ | " | " | | " | |
| ९६×४२ | ९ | २६ | " | " | १७९९ | " | |
| ९×३९ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| १०८×४७ | १० | ४१ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणम् |
| ९८×४६ | १३ | ५० | " | " | | " | " |
| ११५×२२ | ३ | ३४ | " | " | | " | |
| ७×३७ | ७ | २० | " | " | | " | |
| ११३×३९ | ८ | ४९ | " | " | | " | टीका-तत्त्वबोधिनी |
| ६७×४३ | ४ | १६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|-----------------------------------|---|
| ३८०४४ | अष्टाध्यायीपाठः | | १-३ । |
| ३८०४५ | अष्टाध्यायी | | १४ । (गणनया) |
| ३८०४६ | धातुरूपावली | | ८४८ । ” |
| ३८०४७ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | ३-७६, ७८-९२ । |
| ३८०४८ | ” | ” | १-८२ । |
| ३८०४९ | ” | ” | २-११, १३-२६, २८-१२८, १३१-१५५ + २ । |
| ३८०५० | वै० सिद्धान्तमञ्जूषा | नागेशः | ३-६, १६-२६, ८६-११६, ११९-१४७, १४७-१४८, १४८-१७४ । |
| ३८०५१ | वै० सि. मञ्जूषाव्याख्या | वैद्यनाथपायगुण्डे | १-२०, ४२-८० । |
| ३८०५२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ३०-३३, ३६-३९ । |
| ३८०५३ | सारस्वतम् | | २५ । (गणनया) |
| ३८०५४ | मुग्धबोधः | बोपदेवः | १, ३-३९, १-५, १-१५, १७-३२, ३४, १-४०, ४२-४९, ४०-४७, ५६-६८ + २ । |
| ३८०५५ | संक्षिप्तसारः सटीकः | क्रमदीश्वरः टी.का. गोपीचन्द्रः | १-१९०, १९६ + १ । |
| ३८०५६ | काशिका सटीका | वासनजयादित्यौ टी. हरदत्तमिश्रः | १-१८२, ३-९९, १-१६८, ३६-१६३, १-१३९, १-१९९, १-१२४, १-११४ । |
| ३८०५७ | परिभाषेन्दुशेखरः | | १, ३-९, ११-३३ । |
| ३८०५८ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १-५९ । |
| ३८०५९ | धातुरूपावली | | ९४४-९४६, १००२-१००४, १००६-१०५५, १०५७-१०७७, १०८५-१०८६, १०८८, ११०१, ११०३-११०८, १११०-१११४, १११६-११३५, ११३७-११५९, ११६१-११६४, ११६६-१५२३ । |
| ३८०६० | धातुवृत्तिः | सायणः | १६३-१६५ । |
| ३८०६१ | ” | | १-११३ । |
| ३८०६२ | प्रक्रियाकौमुदी | | ८८-१०० । |
| ३८०६३ | सारस्वतप्रक्रिया | | ७७ । (गणनया) |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|---------------|--------------|--------|-------|----------|---------------------|--------------------------------|
| १०×४४ | ११ | ३६ | दे.ना. | का. | | पू० | नागेशभट्टपर्यालोचितभाष्यसम्मतः |
| ८५×३६ | १० | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १२७×४८ | ७ | ३८ | वङ्ग | " | | " | |
| १०४×३४ | ७ | ५१ | दे.ना. | " | | " | |
| ११२×३ | ७ | ५५ | " | " | १५३७ | पू० | कृत्सु षष्ठपादान्ता । |
| ११६×३१ | ६ | ४१ | " | " | | अपू० | |
| १२७×४९ | १३ | ५९ | " | " | १८४५ | " | |
| १२७×५ | २२ | ७७ | " | " | | " | व्याख्या-कलाख्या |
| १०१×४६ | १२ | ४१ | " | " | | " | |
| १२६×३६ | ६ | ४५ | वङ्ग | " | | " | |
| ११×३५ | ५ | ३६ | " | " | | " | |
| १३×५ | ८ | ४७ | " | " | | " | |
| १२२×६२ | १४ | ६० | दे.ना. | " | | " | टीका-पद्मञ्जरी |
| १०×४४ | ९ | २९ | " | " | | " | |
| १३४×४९ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| १२५×४६ | ९ | ३७ | " | " | | " | |
| १०८×४२ | १२ | ३८ | " | " | | " | |
| १३६×५२ | ११ | ४५ | " | " | | " | |
| १११×४४ | ९ | ४६ | " | " | | " | |
| १११×४२ | ११ | ५४ | वङ्ग | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|-----------------|--|
| ३८०६४ | वै० सिद्धान्तलघुसंज्ञजूषा | नागेशभट्टः | १-१७ । |
| ३८०६५ | मुग्धबोधटीका | | १९२-१९५ । |
| ३८०६६ | " | | १-८ । |
| ३८०६७ | कातन्त्रपरिशिष्टवृत्तिः | श्रीपतिदत्तः | ३-१२९ । |
| ३८०६८ | वैयाकरणसंज्ञासूत्रः | कौण्डभट्टः | १-११, १३-२६, २८-९० । |
| ३८०६९ | वै० सिद्धान्तलघुसंज्ञजूषा | | ५३-७८ । |
| ३८०७० | लघुशाब्देन्दुशेखरः | | १-३६ । |
| ३८०७१ | उणादिसूत्रम् | | १-४ । |
| ३८०७२ | गणपाठः | | १-१४ । |
| ३८०७३ | महाभाष्यप्रदीपविवरणम् | | २-८ । |
| ३८०७४ | " | नागेशभट्टः | १-४१ । |
| ३८०७५ | श्रौटसंनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | ३-५६, ३५-१०५ । |
| ३८०७६ | सारस्वतप्रक्रिया | | १-११ । |
| ३८०७७ | धातुरूपावली | | १०१७ । (गणनया) |
| ३८०७८ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | ३-९३ । |
| ३८०७९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | २-३२, ४०-४५, ४७-१०७, ११४-१२५, १५८-२०१, २०९-२२६ । |
| ३८०८० | " | " | २-४५ । |
| ३८०८१ | कातन्त्रविस्तरः | वर्द्धमानः | २-४१, ४१-७७, ७९-१२५ । |
| ३८०८२ | सिद्धान्तरत्नाकरः | | २-२७=(२८-२९) ३०-८१=(८२) ८३-१०७=(१०८) १०९-१५५, १५५-१६९=(१७०-१७१) १७२-२०६=(२०७) २०८-२११, १-१५२ । |
| ३८०८३ | भैरवी | | २-३, ५-१३, १३-२२=(२३) २४-१९०, १९२ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि. | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|---|
| १३१×५३ | ९ | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ११×५१ | ८ | ४६ | वङ्ग | " | | " | |
| ११७×३२ | ९ | ४९ | " | " | | " | समासप्रकरणम् |
| १२७×३९ | ७ | ४६ | " | " | | " | सन्धिप्रकरणम् |
| ८८×३३ | ८ | ३३ | दे. ना. | " | | " | |
| १०१×४४ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| ९७×३८ | ८ | ३२ | " | " | | " | समासप्रकरणम् |
| १०७×४२ | १० | ४२ | वङ्ग | " | | पू० | मध्ये दौर्गसिंहामुणादिवृत्तौ इत्यपि लिखितमस्ति । |
| १११×३९ | ९ | ५२ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| १११×५ | १२ | ६३ | " | " | | " | कैयटविवरणमित्यपिनामान्तरम् |
| १०७×५३ | १२ | ५० | " | " | | " | |
| ९६×४५ | १२ | ३९ | " | " | | " | वै.सि.कौ.व्याख्या तद्धिततद्धन्तप्रकरणम् |
| ९१×३९ | १० | ३९ | वङ्ग | " | | " | |
| १२३×४५ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| १२७×३१ | ६ | ६५ | दे. ना. | " | | " | |
| ११३×४९ | १२ | ४० | " | " | १८४६ | " | |
| ११२×५ | १० | ३६ | " | " | | " | वैदिकप्रकरणम् |
| ११८×३२ | ६ | ५० | " | " | १५०० | " | |
| ११×४६ | ११ | ५७ | " | " | | " | वै० सिद्धान्तकौमुदीटीका |
| ९८×४४ | १० | ४४ | " | " | | " | परिभाषेन्दुशेखरटीका |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|---------------------------|---|
| ३८०८ | वैयाकरणभूषणसारव्याख्या | | ९४-९७, ९९, १०१, १३४-२०१=२०२-२३०, २३०-२३१, २३१-३०७=३०८-४४५ |
| ३८०८ | धातुरूपावली | काशीनाथः | ५३४ । (गणनया) |
| ३८०८ | " | " | ८३८ । " |
| ३८०८ | " | " | ६३७ । " |
| ३८०८ | तत्त्वबोधिनी | | १३-३४, ४७-५६, ५९-१४७ । |
| ३८०९ | हरिनामामृतव्याकरणम् | जीवगोस्वामी | १-१८, २०-४० । |
| ३८०९ | धातुपाठः | | १-११ । |
| ३८०९ | तत्त्वबोधिनी | | १-१५०+१ । |
| ३८०९ | धातुरूपावली | | ३०६ । (गणनया) |
| ३८०९ | " | | ५५० । " |
| ३८०९ | " | | ९२ । " |
| ३८०९ | महाभाष्यसूक्तिरत्नाकरः | शेषनारायणः | १-९४, १-४५, १-५६, १-६७, २-११०, ११०, ११५-१९९, ११०-११३, २-९२, ९४-१०९, १११-१२७, २-५३, २-१०७, १-१३, १५-२५ । |
| ३८०९ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-६७+१ । |
| ३८०९ | सारस्वतप्रक्रिया | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-११, ११-४६, ४८-५६ । |
| ३८०९ | " | " | १२, १४-३५ । |
| ३८०९ | काशिका | जयादित्यः | १-९१, २-१२६, १-१४३ । |
| ३८१० | धातुरूपावली | | ५१८ । (गणनया) |
| ३८१० | स्फोटविचारः | | १-४ । |
| ३८१० | सारस्वतप्रक्रिया | | २६ । (गणनया) |
| ३८१० | " | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | ३१-५६, ५९-७८, ८०-१०३ । |
| ३८१० | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | १-१७ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|------------------------------------|
| ११×४६ | ९ | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १२६×४९ | ९ | ३४ | " | " | | " | कीटदंष्ट्रा |
| १२८×४८ | ८ | ३४ | वज्र | " | | " | |
| १२७×४९ | ८ | ३३ | दे. ना. | " | | " | |
| ११२×४६ | ११ | ३४ | " | " | | " | सिद्धान्तकौमुदीटीका |
| १११×४२ | ८ | ३५ | " | " | | " | समासप्रकरणम् |
| ९८×४१ | १३ | ४१ | " | " | | " | |
| १२×४६ | ९ | ३९ | " | " | | " | (वै० सि० कौ० टीका) |
| १३×४६ | ८ | ४३ | वज्र | " | | " | |
| १२६×४८ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| १२५×५ | ८ | ४० | " | " | | " | |
| १३×५ | ११ | ५७ | दे. ना. | " | १८३७ | " | |
| १०६×४६ | ११ | २७ | " | " | | " | |
| ८९×४२ | ७ | ३० | " | " | | पू० ❀ | आख्यातप्रक्रियातः कृदन्तप्रक्रिया- |
| १०३×५२ | १० | ३२ | " | " | १८५३ | अपू० | |
| ९५×४२ | ९ | ३६ | " | " | १८३८ | " | १, ३-४ अध्यायाः, अष्टाध्यायीटीका । |
| १२७×५ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| ११४×४५ | १३ | ३६ | " | " | | " | |
| ९८×४५ | १० | २७ | " | " | | " | |
| १०३×४५ | ९ | ३६ | " | " | १६५१ | " | |
| ६८×४ | ८ | २० | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|---------------------|---------------------------------------|
| ३८१०५ | षट्कारकविचारः | रत्नपाणिः | १-११ । |
| ३८१०६ | सारस्वतप्रक्रिया | | १९-३१ । |
| ३८१०७ | " | | ४-५, ११-२८, ३०-४० । |
| ३८१०८ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | ३१ । (गणनया) |
| ३८१०९ | शब्दानुशासनवृत्तिः | हेमचन्द्रः | १-१२, १२-४९ । |
| ३८११० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१५ । |
| ३८१११ | वृत्तिदीपिका | रघुनाथभट्टसुतः | १, ४३ । |
| ३८११२ | कातन्त्रपरिशिष्टवृत्तिः | श्रीपतिदत्तः | १, १३० । |
| ३८११३ | धातुवृत्तिः | सायणः | १-१९५, १-४५ । |
| ३८११४ | तन्त्रप्रदीपः | मैत्रेयरक्षितः | १-१७, १-१८, १-३४, १-१९ । |
| ३८११५ | काशिकाविवरणपञ्जिका | जिनेन्द्रबुद्धिपादः | १, १-२६, । |
| ३८११६ | " | " | १-२८ । |
| ३८११७ | " | " | १-५, ७-२५, २७ । |
| ३८११८ | " | " | ५-२७, २९-४१ । |
| ३८११९ | " | " | १-५ (=६), ७-१५१+१ । |
| ३८१२० | काशिकावृत्तिः | | १-१४, १-१० । |
| ३८१२१ | " | | १-१९ । |
| ३८१२२ | " | | १-१९ । |
| ३८१२३ | रूपावतारः | धर्मकीर्तिः | १-१६, १-३३ । |
| ३८१२४ | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्राचार्यः | ३-५, २०-६३, ६५-११२, २३०० । |
| ३८१२५ | " | | १-९, ८-२२, २५-६६, ६६ (=६७), ६८-८५ । |
| ३८१२६ | प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः | | ५४ । (गणनया) |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आघातः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|-------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| ९'८×४'४ | ८ | ३० | दे. ना. | का. | १९२१ | पू० | षट्कारकप्रतिच्छन्दकंवा । |
| १०'६×४'२ | ८ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| ९'५×४'४ | ७ | २८ | " | " | १५७५ | " | |
| १२'२×२'९ | ६ | ३६ | " | " | | " | |
| १४×६'७ | १५ | ४६ | " | " | सं. १९३९ | पू० | अ० न, पा० १-४ । प्राकृतव्याख्या । |
| १३'७×५'३ | १६ | ७६ | " | " | | अपू० | पत्रत्रये टिप्पण्यपि । आदितो हल्- सन्ध्यंशा । |
| १२'६×४'६ | ९ | ३६ | " | " | | " | पत्रैकदेशे "प्र०" "का०" इति लिखित- मस्ति । |
| १२'८×३'९ | ७ | ४९ | वङ्ग | " | श. १७१६ | " | |
| १२'४×४'८ | ९ | ३५ | दे. ना. | " | | " | भ्राह्मदादिगणौ । |
| १४'२×३'४ | ६ | ६९ | वङ्ग | " | | " | प्रथमाध्यायस्य द्वितीयपादान्तः । |
| १३'८×३'२ | ६ | ६६ | " | " | | पू० | अष्टमोऽध्यायः । १ सं-पत्रं द्विलिखितम् । |
| १४'४×३ | ९ | ७९ | " | " | श. १६४५ | " | सप्तमोऽध्यायः । |
| १३'७×३'२ | ७ | ७२ | " | " | | अपू० | सप्तमोऽध्यायः । |
| १४'५×३'३ | ६ | ६० | " | " | | " | द्वि० अ० प्र० पा० । |
| १३'७×३'६ | ७ | ६० | दे. ना. | " | १५२१ | " | प्रथमाध्यायः । न्यासापरनामधेया । |
| १३'८×३'२ | ६ | ६४ | वङ्ग | " | | पू० | अष्टमाध्याये गोपादः । |
| १४'१×३'१ | ५ | ५२ | " | " | | " | सप्तमोऽध्यायः । |
| १४'२×३ | ५ | ५४ | " | " | | " | अष्टमोऽध्यायः । |
| १०'७×४'१० | १० | ४० | मै० | " | | अपू० | अष्टाध्यायीवृत्तिः । १-६ अध्यायाः । |
| १०'६×३'४ | ७ | ४३ | दे. ना. | " | सं० १५३० | " | सुवन्तप्रकरणम् । |
| ११'४×४'६ | ८ | २९ | " | " | | " | " |
| ११'८×४'५ | १३ | ६१ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|--------------|-----------------------------------|
| ३८१२७ | प्रक्रियाकौमुदी | | १-२८, ३१-३२ । |
| ३८१२८ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १०-९२ (९२=९३) ९४-१४६, १४८-१७६+१ |
| ३८१२९ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-६८ । |
| ३८१३० | तत्त्वबोधिनी | | ५२ । (गणनया) |
| ३८१३१ | „ | | २, ४-४८ । |
| ३८१३२ | अष्टाध्यायी | | १, ३-५, ७, ९-४८, ५४-५९, ६२-६७+१ । |
| ३८ ३३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी लघुशब्देन्दुशेखरसहिता | | २-३, ५-५२, ५४-५५, ५९, १०३-१४१ । |
| ३८१३४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- विलासः | भास्करः | २-७५, ७८-१३४, १३६-२०४, २०६-२१६ । |
| ३८१३५ | शब्दकौस्तुभव्याख्या | | २-३६, ५०-८९ । |
| ३८१३६ | रूपमालिका | रङ्गदेवः | १-१९, २१-२५, ३० । |
| ३८१३७ | सारस्वतम् | | १-२, + २, ५-२९ । |
| ३८१३८ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | २-३०, ४३, १४६-१४९ । |
| ३८१३९ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ६०-६२, ६२-६३ । |
| ३८१४० | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-२२ । |
| ३८१४१ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-५० । |
| ३८१४२ | शब्दरत्नम् | | १-३४ । |
| ३८१४३ | अष्टाध्यायी | | १-१०, २०, २२-३४, ३६-६६ । |
| ३८१४४ | यमचातुर्विध्यनिर्णयः | | ३ । |
| ३८१४५ | वाक्यपदीयप्रमेयसङ्ग्रहः | | १६ । (गणनया) |
| ३८१४६ | निर्द्धारणपञ्चीविचारः | | १, ४ । |
| ३८१४७ | रप्रत्याहारमण्डनम् | लक्ष्मणपाठकः | ३-८ । |
| ३८१४८ | हल्ङ्यादिसूत्रविचारः | मन्नूरामः | १, १-४ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | क्रमांशः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|------------------|---------|----------|----------|-------------------------|--|
| न२×३५ | न | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | कृदन्तप्रक्रिया । |
| ९३×९९ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| न८×३५ | ७ | २८ | " | " | | पू० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीटीका स्वरवैदिकखण्डयोः । |
| ९२×४९ | ११ | ३५ | " | " | | अपू० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीटीका । सन्धिप्रकरणस्य । |
| ९५×४२ | न | ४६ | " | " | | " | |
| ७४×३२ | ७ | २६ | " | " | | " | पाणिनिसूत्रपाठः । |
| ११८×४२ | ११ | ५२ | " | " | | " | |
| १०×४४ | १० | ३४ | " | " | | " | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीटीका । |
| १०६×४८ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| ९७×३४ | ७ | ३५ | " | " | | " | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीस्थशब्दानाम् । |
| १०×४१ | १० | ३० | " | " | | " | तद्धितप्रकरणान्तम् । |
| ११३×४९ | १० | ४७ | " | " | | " | |
| १०८×४७ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| ९१×४ | १४ | ३३ | " | " | | पू० | आख्यातप्रक्रियान्ता । |
| न८×३८ | ९ | ३२ | " | " | | " | पाणिनिसूत्रपाठः । |
| १०३×५ | ११ | ३२ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| न८×३८ | न | २८ | " | " | | " | पाणिनिसूत्रपाठः । |
| १०८×४४ | २२ | ६२ | " | " | | " | |
| ९७×३८ | १८ | ५२ | " | " | | " | |
| ९×४ | १२ | ४६ | " | " | सं. १७१४ | " | प्राद्युपसर्गबोधकखण्डनरहस्यञ्च । |
| १०७×४६ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| १०८×४६ | ११ | ३३ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|---------------------------|---|
| ३८१४९ | प्रक्रियाकौमुदी | | २-८०, १-५० + १, १-१२ । |
| ३८१५० | लघुसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-२६(=२७), २७-३१, १-२३, २३ (=२४), २४-७१ । |
| ३८१५१ | उपसर्गार्थसङ्ग्रहः | कृष्णाचार्यः | १, ३ । |
| ३८१५२ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-१०, १०-५८, ६१-६९, ६१(=७०), १-६० । |
| ३८१५३ | फक्किकार्थप्रकाशः | इन्द्रदत्तोपाध्यायः | १-१०२, १०२-१०४ । |
| ३८१५४ | सारस्वतम् | | १-९ । |
| ३८१५५ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | ७-२२, २४-५३, ५५-७१ । |
| ३८१५६ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-३०, १-५२, १-१९ । |
| ३८१५७ | सारस्वतम् | | २-४८, ५९-६५ । |
| ३८१५८ | सारसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-१९, २१ । |
| ३८१५९ | यङ्लुगन्तप्रयोगविचारः | | १-६ । |
| ३८१६० | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १ । |
| ३८१६१ | पूर्वपक्षावली | होरिलशर्मा | १-५ । |
| ३८१६२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-६७, ६८-७१, (=६९-७२), ७४-८२, ८२-१२६ । |
| ३८१६३ | सारस्वतटीका | पुञ्जराजः | १-१९ । |
| ३८१६४ | सारस्वतवृत्तिः | महीधरः | १, ३-१४, १४-१९, ३-२३ । |
| ३८१६५ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १५० । (गणनया) |
| ३८१६६ | कातन्त्रसूत्रम् | | १-४, ७-१०, १३-७८, ८१, ८५, ९७-११३, ११६-१२३ । |
| ३८१६७ | कारकचक्रम् | | १-१५ । |
| ३८१६८ | उणादिसूत्रमाला | | ८ । (गणनया) |
| ३८१६९ | तत्त्वबोधिनी | | १-२, ४-२८, २८-४२(=४३), ४४-५४, ६४-६५ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|-------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| ५'५ × ७'८ | १८ | २० | शा. | का. | | अपू० | |
| ११'७ × ६'८ | १० | २५ | दे. ना. | " | | पू० ❀ | |
| १०'८ × ४'५ | १२ | ५५ | " | " | | अपू० | |
| १० × ६ | ७ | २३ | " | " | | " | |
| १३'२ × ५'६ | ११ | ३८ | " | " | | " | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीव्याख्या . |
| १३'१ × ६'२ | १८ | ४० | " | " | | " | कृदन्तप्रक्रिया । |
| १०'७ × ४'६ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| १२'२ × ४'७ | ७ | ४२ | " | " | | पू० | |
| १०'१ × ४'३ | ८ | २९ | " | " | | अपू० | |
| ९'४ × ४'२ | ८ | ३४ | " | " | | " | |
| १०'३ × ४'३ | ११ | ४४ | " | " | | पू० | पुस्तके यङ्लुगन्तटीका, इतिलिखितमस्ति . |
| ११'१ × ४'७ | १५ | ३८ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० । |
| ९'५ × ५ | ११ | ३४ | " | " | | " | |
| ११ × ५'२ | १४ | ३५ | " | " | | " | पूर्वार्द्धम् । |
| ९'७ × ४'५ | १२ | ४४ | " | " | | " | |
| ११'२ × ५'८ | १४ | ४४ | " | " | | " | आख्यातप्रकरणस्य । |
| १०'८ × ३ | ५ | ४६ | " | " | सं. १७०४ | " | |
| १०'१ × ३'१ | ६ | ३९ | " | " | | " | |
| १३'८ × ३'३ | ८ | ५५ | वङ्ग | " | | पू० | |
| १३ × ३ | ७ | ७३ | " | " | | अपू० | प्रारम्भे वैयाकरणसिद्धान्तसंग्रहः रलोक- मयः । १-५ पादाः । |
| ९'३ × ४'३ | ८ | ३८ | दे. ना. | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|---------------------------|--|
| ३८१७० | पद्मञ्जरीकुसुमविकासः | शिवदासः | ४० । |
| ३८१७१ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागोजिभट्टः | ६-२४ । |
| ३८१७२ | सारस्वतम् | | ९-२०, २२-६२, ६५-६८, ७३-९०, ९४ । |
| ३८१७३ | सारस्वतदीपिका | सूरसिंहः | ३-८० । |
| ३८१७४ | धातुपाठः | | १-२१ । |
| ३८१७५ | समासचक्रम् | | १-५ । |
| ३८१७६ | रूपमालिका | रङ्गदेवः | १-१७ । |
| ३८१७७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१९६, १-१५५ । |
| ३८१७८ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १, ३-६, १०-२३, २७-४० । |
| ३८१७९ | " | | १-३३ । |
| ३८१८० | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामाश्रमाचार्यः | १-५०, ३२-८८ । |
| ३८१८१ | तत्त्वबोधिनी | | १-२५, १६९-२२६, २३५-२५५ । |
| ३८१८२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-३१, ३७-६६, २०१-२०६ । |
| ३८१८३ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | १-१४, ११-४० । |
| ३८१८४ | " | | १-३५ । |
| ३८१८५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-६२ (=६३), ६३-७०, ४-७, १२-१३, १५-३२, ७१-७५, ८५-८६, १०५-१०७, १११-११३ । |
| ३८१८६ | सारस्वतं सटीकम् | टी०का० साधुनाथः | १-४५, १-४ । |
| ३८१८७ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-७, १८-६७ (=६८), ६८-१५१ । |
| ३८१८८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १, १४-१७, १९-६९, ७५-९४, ९६-१७३, १-३१, ३१-४४ । |
| ३८१८९ | सारस्वतचन्द्रिका | | १-१७ । |
| ३८१९० | सारस्वतम् | | १-४८, ३४-६४, ७०-१२२, १२६ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|-----------------|--------|-------|----------|-------------------------|---|
| १०३×३८ | ९ | ५० | दे.ना. | का. | | अपू० | प्रथमाध्याये तृतीयध्वरणः । अष्टाध्यायी टी० टी० टी० |
| १२८×४९ | ११ | ५८ | " | " | | " | |
| १०×४४ | ७ | २९ | " | " | | " | |
| १०१×४४ | ७ | ३४ | " | " | १९२३ | " | आख्यातप्रकरणस्य । |
| ९१×४९ | १० | ३४ | " | " | | पू० | पाणिनीयः । |
| १०३×४६ | ९ | ३० | " | " | १९०५ | " | |
| ११५×४९ | ९ | ४० | " | " | | " | सिद्धान्तकौमुदीसिद्धशब्दानाम् । |
| ९५×४१ | ९ | ३८ | " | " | | " | पूर्वोत्तरार्द्धे । |
| ११२×५ | १० | ४४ | " | " | | अपू० | तद्धितप्रक्रिया । |
| १०९×५ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| १०१×४५ | ८ | २८ | " | " | १८८६ | " | आख्यातकृदन्तभागौ । |
| १०४×४१ | ८ | ३१ | " | " | | " | सुवन्तभागः । वै० सि० कौ० टीकः |
| ११३×४१ | ७ | ४१ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |
| ९८×४२ | ८ | २७ | " | " | १८४३ | " | " |
| ९६×४३ | ८ | ३९ | " | " | १८६८ | पू० | सुवन्तप्रकरणम् । |
| १०५×४६ | १२ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १२४×४८ | १२ | ३८ | " | " | | " | |
| १०१×४३ | ८ | ३२ | " | " | | " | |
| १२२×४३ | ७ | ३७ | " | " | १८७२ | " | |
| १३३×५३ | १० | ५२ | " | " | | " | |
| ९७×५५ | ९ | २४ | " | " | १८८५ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|---------------------------|--|
| ३८१९१ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिभट्टः | १५० । (गणनया) |
| ३८१९२ | महाभाष्यं सटीकम् | पतञ्जलिः टी० का० कैयटः | १-५०, १-१८, १-२, २४-३७, ६९-११४, ११६-१२१ । |
| ३८१९३ | शब्दरूपावली | | १ (= १) १-७, ९-१३, १३-१४ । |
| ३८१९४ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १-३.५, १२-१४, १८-१९ । |
| ३८१९५ | रूपमालिका | रङ्गदेवः | १-२, २-१६, २१-३१ । |
| ३८१९६ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | १-३९ । |
| ३८१९७ | धातुवृत्तिः | सायणः | १३-१६, २२-२६, ३१-४८ ५१, ५३-५७, ५९-७४, ८३-८४, ८६-९२, १४२, १४५, १४६-१५३ (= १४७-१५४), १५६-१६१ (= १५७-१६२), १६३-१७८, १८०-१८२ १८४-१८५, १८७-१९०, १९२-२०१, २०३- २२२, २२५, २२८, २३०-२५० । |
| ३८१९८ | " | | ३६-३९ । |
| ३८१९९ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १०-५४ । |
| ३८२०० | प्रौढमनोरमा | | १-१० । |
| ३८२०१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ५-१९, ४९-६७, ८९-९७, ९९, १०२-१०४, १२०-१२३, ६०, ६२-७३ । |
| ३८२०२ | प्रौढमनोरमा | | १, २१-२७, २७-२८, २८-५७, ५९-८१ । |
| ३८२०३ | परिभाषेन्दुशेखरः सटीकः | नागेशः | १-२० । |
| ३८२०४ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | टी.का. वैद्यनाथः | १-१० । |
| ३८२०५ | त्रिपथगा | | १३-३५ । |
| ३८२०६ | लिङ्गानुशासनम् | भट्टोजिदीक्षितः | १-७ । |
| ३८२०७ | तत्वबोधिनी | | १, ३-११६, १-३०, २-२८, ३०-६९ । |
| ३८२०८ | शब्दरत्नभावप्रकाशिका | वैद्यनाथः | १२-६७, + १०, ११-२९, ३६-४५ । |
| ३८२०९ | परिभाषेन्दुशेखरकाशिका | वैद्यनाथभट्टः | ९५-१००, १०३-१६५ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|-------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---------------------------------|
| १०.५ × ४.१ | १० | ४० | दे. ना. | का. | | अपूर्० | अ० १, पा० १, आ० १-९ । |
| १२.५ × ६.४ | १३ | ५० | " | " | | " | टीका-प्रदीपः । |
| ७.७ × ३.६ | ७ | २२ | " | " | | " | |
| १०.८ × ४.६ | ११ | ४५ | " | " | | " | |
| ९.६ × ४.२ | ८ | २१ | " | " | | " | सिद्धान्तकौमुदीसिद्धशब्दानाम् । |
| ९.९ × ४.३ | ९ | २९ | " | " | | " | तिङ्प्रकरणम् । |
| १०.४ × २.९ | ८ | ५१ | " | " | | " | |
| १०.४ × २.९ | १० | ५५ | " | " | | " | |
| ८.१ × ४ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| ८.१ × ४ | १५ | ३४ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९.६ × ४.२ | १३ | ३८ | " | " | | " | लिपिभेदः |
| ९.६ × ४.२ | ११ | ४० | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । लिपिभेदः । |
| १३.१ × ५.३ | ८ | ५४ | " | " | | " | टीका-भादा । |
| ९.६ × ४.३ | १३ | ३७ | " | " | | " | |
| ११.६ × ४.१ | १२ | ४६ | " | " | | " | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |
| १०.७ × ३.४ | १० | ४७ | " | " | १८८१ | पूर्० | |
| १२ × ४.७ | ११ | ५७ | " | " | | अपूर्० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीटीका । |
| १२.४ × ४.९ | १० | ५९ | " | " | | " | कारकप्रकरणम् । |
| १०.७ × ३.९ | ९ | ४५ | " | " | १८४५ | " | |

| क्र.संख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|---------------------------|--|
| ३८२१० | लिङ्गवृत्तिः | वररुचिः | १-१५ । |
| ३८२११ | सध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १, ३-२८, १-१३, १५-२१+१, २२-२३, २३-२६, २८-२९, २९-३२, ३४-४०, ४०-४१, ४०-४३, ४३, ४३-४४, ४४-४५, ४५-४६, ४६-४७, ४७-४८, ४८-४९, ४९-५०, ५०-५१, ५१-५२, ५२-५३, ५५-६३, ६३-६७, ६९, ६९-८७, १-५, ५-९ । |
| ३८२१२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १४०-१४३, १५७-१६७, १८१-१९६ । |
| ३८२१३ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-३, ६-४२, ४२-४६ । |
| ३८२१४ | रप्रत्याहारमण्डनम् | लक्ष्मणपाठकः | २-७ । |
| ३८२१५ | रुचादिवृत्तिः | | १-११ । |
| ३८२१६ | प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः | विठ्ठलाचार्यः | २०-३९, ५०-५१ । |
| ३८२१७ | सारस्वतसूत्रपाठः | | १-११ । |
| ३८२१८ | सारस्वतटीका | | १-७+१ । |
| ३८२१९ | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्रः | १-१०४ । |
| ३८२२० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१०१, १-२९, १-४९, १-११ । |
| ३८२२१ | श्रौढमनोरमा | | १-१०९, १११-१३४ । |
| ३८२२२ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-१०+१ । |
| ३८२२३ | | | १७-१९, १-१६, २०-४१ । |
| ३८२२४ | प्रक्रियाकौमुदी | | ९-४२, ६३-६४, ६६-६७, ६९ । |
| ३८२२५ | कात त्रसूत्रं सवृत्तिकम् | वृ० का० दुर्गासिंहः | १-१९, २२-७१, ७१, ७३-९०+१ । |
| ३८२२६ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-१९ । |
| ३८२२७ | ” | | १-८७, ११-५५, ६६-६९ । |
| ३८२२८ | रूपसङ्ग्रहः | | १, ७-८, १८-२९ । |
| ३८२२९ | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामाश्रमाचार्यः | २-६, ९-१६, १८-३२, ३४-३५, ३७, ३१-४८ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|-------------------|------------------|---------|-------|--------------|-------------------------|---|
| १२'४×४'८ | १२ | ४१ | दे. ना. | का. | १८४६ | पू० | |
| १०'८×५'५ | १४ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १०'७×४'५ | ११ | ३६ | " | " | | " | पत्रकोणे "बृहत्कौ" इति लिखितमस्ति । |
| ९'८×४'३ | १२ | ४३ | " | " | | " | |
| १०'५×४'६ | ९ | ४४ | " | " | | " | |
| १४'४×३'२ | ६ | ४३ | वङ्ग | " | | पू० | |
| ११'१×३'७ | ८ | ५१ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| ९'४×४'६ | ७ | २६ | " | " | | पू० | |
| १०'७×४'५ | ७ | २१ | " | " | | अपू० | |
| १०'७×४'९ | १० | ३७ | " | " | | पू० | सुवन्तान्ता । |
| १०'८×४'८ | ९ | ३४ | " | " | १८२० १८२१ | " | तद्धित-वैदिक-स्वर-लिङ्गानुशासनप्रकरणानि |
| ११'३×४'५ | ९ | ३७ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका, सुवन्तप्रकरणस्य । |
| ९'२×३'५ | ५ | २८ | " | " | १६७५ | " | भ्वादिप्रकरणांशम् । |
| ९'४×४ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| ९'७×४'५ | १० | २७ | " | " | | " | तिङन्तभागः । |
| ९×३ | ८ | ४४ | " | " | १६१६ | " | तद्धितपादान्तम् । |
| ९'३×३'४ | ७ | ३३ | " | " | | पू० | कृतप्रक्रियातः क्त्वादिप्रक्रियान्तम् । |
| ९'१×३'५ | ५ | २८ | " | " | १६७५ | अपू० | आख्यातान्तम् । |
| ९'८×४'१ | ६ | २५ | " | " | | " | प्रक्रियाप्रोक्तधातूनाम् । |
| ११'३×४'६ | ९ | ४० | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|---------------------------|--|
| ३८२३० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-६७ । |
| ३८२३१ | ” | | १४, २१-२३, २५-७५, ४-१० (२६७-२७१, २७१-२७२ । |
| ३८२३२ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-५१ । |
| ३८२३३ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १, ३-५० । |
| ३८२३४ | प्रक्रियाकौमुदी | | १८-५७, ६०, ७६ । |
| ३८२३५ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-६, १-१२, १४, १६-१७ । |
| ३८२३६ | महाभाष्यं सप्रदीपविवरणम् | | १-३, ३-४, ४, ४, ५, ५-१५, १७-२४ । |
| ३८२३७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१८३ । |
| ३८२३८ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपालः | १-१६ । |
| ३८२३९ | रूपावली | | १-१९ । |
| ३८२४० | परिभाषापठः | | १-३ । |
| ३८२४१ | अष्टाध्यायी | | १-४२ । |
| ३८२४२ | शब्दरूपावली | | १-६, ६ (=७), ८-९ । |
| ३८२४३ | ” | | १-३, ३-५, ७-१४ । |
| ३८२४४ | भाषावृत्तिः | पुरुषोत्तमदेवः | ९९ । (गणनया) |
| ३८२४५ | ” | ” | ७७ । ” |
| ३८२४६ | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | सृष्टिधरशर्मा | ३-१५, २०-२९, ३१-५६ + १ । |
| ३८२४७ | भाषावृत्तिः | पुरुषोत्तमदेवः | २५६ । (गणनया) |
| ३८२४८ | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | सृष्टिधरशर्मा | १-२, २-१९, ५७-६० । |
| ३८२४९ | शब्दरूपावली | | ४-२१ । |
| ३८२५० | भाषावृत्तिः | पुरुषोत्तमदेवः | १-१६, १-११, १-१४, १-१३, १-६ + १, ९-१६, १-३ + १, ४-६ + २, १-१३, १-१४, १-११ + १, १२-१७ + १, १८-२१, १-९, १, १०-१९, १, १, १ + ५, १-३ + २, १-७, १-९ + २, १५-२१, ९-१२ + ५४ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | श्रावणः | लिपिकालः | पृष्ठांश- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|-------------------|------------------|---------|---------|-----------------|---------------------|--|
| १४'५ × ६'५ | १० | ३५ | दे. ना. | का. | | अपू० | आदितः कारकप्रकरणांशा । |
| १३ × ५'९ | ११ | ३६ | " | " | | " | प्रतिपत्रपार्श्वे बृ०कौ०इति लिखितमस्ति । |
| १२ × ५'३ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| १२ × ५'१ | ९ | ४२ | " | " | | " | आख्यातप्रक्रिया । |
| १२ × ५ | ११ | ३५ | " | " | | " | सुवन्तप्रकरणम् । |
| १३'५ × ५'५ | ५ | २९ | " | " | | " | |
| १२'५ × ४'५ | १२ | ५२ | " | " | | " | |
| १३ × ४'९ | ५ | ४३ | " | " | १९३० | पू० | पूर्वार्द्धम् । |
| ९'१ × ४'७ | १३ | ३४ | " | " | १८७६ | " | |
| ८'७ × ४ | ९ | २९ | " | " | १९०६ | " | |
| १०'८ × ४'७ | १२ | ३६ | " | " | १६.... | " | |
| ९'८ × ४'४ | ९ | २८ | " | " | | अपू० | |
| १०'७ × ४'७ | ५ | ३४ | " | " | | पू० ❀ | शब्दमालिका वा । |
| १० × ४'६ | ७ | २४ | " | " | | अपू० | |
| १३'९ × ३'२ | ४ | ४७ | वङ्ग | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| १३'५ × ३'२ | ४ | ४२ | " | " | | " | " |
| १०'१ × २'९ | ५ | ५० | " | " | | " | अष्टमाध्यायः अष्टाध्यायी टी० टी० । |
| १४'१ × ३'६ | १० | ६१ | " | " | सन १२६२ १२७२ | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| १०'१ × २'९ | ५ | ५२ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीकाटीका । |
| ९'१ × ४'४ | ६ | १९ | दे. ना. | " | | " | |
| १३'२ × ३'१ | ७ | ३२ | वङ्ग | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पं संख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|----------------|--|
| ३८२५१ | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | मृष्टिधरशर्मा | १-३१, १-१४, १-२५, १-१४, २, १-८ + १, १-३, ५-९ + २, ११-३० + २ । |
| ३८२५२ | " | " | १-२०, १-१६ + ३, २२-५६ + १ । |
| ३८२५३ | " | " | १-५१, १-२१, १-१८ । |
| ३८२५४ | " | " | १-१२, २४ २९ + १, ३१-४२, ४२-५९ + ३ । |
| ३८२५५ | भाषावृत्तिः | पुरुषोत्तमदेवः | १-९, १-४, १-२१ + २७ । |
| ३८२५६ | मुग्धबोधः | बोपदेवः | १-७८ + १, १-१११, १, ३४-३८ । |
| ३८२५७ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-५२ । |
| ३८२५८ | परिभाषापाठः | | १-३ । |
| ३८२५९ | " | | १-२, ४-५ । |
| ३८२६० | धातुपाठः | | १-१६ । |
| ३८२६१ | चारुल्लोचनचतुरी | शिवशर्मा | १-२, १०-१३ । |
| ३८२६२ | भाषावृत्तिः | पुरुषोत्तमदेवः | १-२५ + २ । |
| ३८२६३ | व्याकरणक्रोडपत्रम् | | ९ । (गणनया) |
| ३८२६४ | लघुशाब्देन्दुशेखरः | | १-३५, ४६-५६ । |
| ३८२६५ | शब्दरत्नम् | | १-४५ । |
| ३८२६६ | प्रौढमनोरमा सशब्दरत्ना | | २-१९, २१-७६, १०९-१२१ । |
| ३८२६७ | तत्त्वबोधिनी | | २४७-२६१, २६३-२७७, २९३-३०५, १-१०, १२-१८ । |
| ३८२६८ | शब्दरूपावलिः | | १-७ । |
| ३८२६९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- सटीका | | १-२१, २३-२४ + ८ । |
| ३८२७० | तत्त्वबोधिनी | | १-१५, १८-३५ । |
| ३८२७१ | लघुशाब्देन्दुशेखरः | | १-२, ४-७, २-१०, १२-३४, ३६-४९, ४-११, ११-१६, १८ + ३ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णाविवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|---------------|--------------|---------|------|---------------|--------------------|--|
| १४*४ × ३*१ | ११ | ८४ | वङ्ग | का. | | अपू० | अष्टाध्यायीटीकाटीका । |
| १३*९ × ३*२ | ५ | ४७ | " | " | रा. १६८१ | " | " |
| १४*१ × ३*१ | ८ | ६३ | " | " | | " | " पञ्चमाध्यायः । |
| १४ × ३*२ | ६ | ६५ | " | " | | " | " अ० ५ पा० २ |
| १४*५ × ३*४ | ८ | ४६ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| १४*१ × ४*३ | ८ | ४६ | " | " | वङ्गाब्द १२४९ | " | |
| ९*३ × ४*२ | १० | ३४ | दे. ना. | " | | " | |
| ९ × ३*९ | १५ | ४६ | " | " | | पू० | |
| ७*८ × ३*५ | ९ | २५ | " | " | | अपू० | |
| ९*२ × ४*३ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| ७*१ × ४*२ | १४ | २५ | " | " | | " | |
| १४*६ × ३*३ | ५ | ३६ | वङ्ग | " | | " | अलुक्पादान्ता ? अन्तिमपत्रद्वये - व्याकरणसम्बन्धिबिचारः धर्मशास्त्रीय- ग्रन्थानि । |
| १२*५ × ४*६ | १४ | ६४ | " | " | | " | सूत्रप्रयोगपरिभाषादीनाम् । |
| ११*४ × ४*२ | ९ | ५१ | " | " | | " | |
| ११*५ × ४*७ | ९ | ३६ | " | " | | " | सुवन्तप्रकरणम् । वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| १०*९ × ४*७ | ९ | ४९ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| ११*३ × ४*९ | १३ | ४६ | " | " | | " | " |
| ९*५ × ४*४ | ९ | ३६ | " | " | | पू० | |
| १०*८ × ५*५ | १४ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| १२*९ × ५*१ | १५ | ५१ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०*९ × ४*४ | १० | ५० | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पद.संख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|---------------------|---|
| ३८२७२ | शब्दरत्नम् | | १-३७ । |
| ३८२७३ | तन्त्रयोधिनी | | १-५, ८-१३, १६-१७, २१, २४-२८, ३१-३२, ३५-३८, १-२, ५-७, १४-१५, १८-२०, २२-२३, २९-३०, ३३-३४, ३९-४४, १, ५-७ । |
| ३८२७४ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-५० । |
| ३८२७५ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-२, ४ + १, ५-२३ । |
| ३८२७६ | कातन्त्रविम्वरः | वर्द्धमानमिश्रः | १, ३-२४, २४-१९७ । |
| ३८२७७ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गासिंहः | २-५४ । |
| ३८२७८ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | ३-१५, १८-३१ (=३२), ३३-५७, ७०-७६, ७६-८१, २६-३६, ३८-६७, ६९-७५ । |
| ३८२७९ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-५, ३-४५, ४५-४९ (=४६-५०), ५१-६४ (=१२०-१३४) । |
| ३८२८० | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-११, १४-३६, ३६-३७, ३९-५४, ५६-५७, ५९-६३, ६३-६५ । |
| ३८२८१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-३०, ४४-९८, १११-१४७ । |
| ३८२८२ | प्रौढमनोरमा | | ३०-९८, १००-१०७, २००-२५०, २५२-२५८ । |
| ३८२८३ | " | | २-४, ४-७४ । |
| ३८२८४ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | २-३, १९-२३ । |
| ३८२८५ | काशिकाविवरणपञ्जिका | जिनेन्द्रबुद्धिपादः | २-४, १४-२७, २९-३५, ३७-३९, ४४-५२, ५४-७४, ७७-७८, ८१-८६, ९०, २०-२५, ३३-४५, ५१-५८, ६० । |
| ३८२८६ | काशिका | वामनः | १-७१, १-६९, ७२, ७२-१०३, ७०-११६, ११८-१५२, १-३८, ४०-५३, ५५-६०, ६८-७१, ७३-७५, ७५-८२, ८२-८३, १६१-१६७ । |
| ३८२८७ | स्फोटरत्नम् | शेकृष्णः | १-१३ । |
| ३८२८८ | वैयाकरणभूषणसारवर्षणः | हरिवल्लभः | १-२३, २५-३३, १-८१, १-४, ४, ८-४०, १-१६ । |
| ३८२८९ | वैयाकरणभूषणसारव्याख्या | हरिः | १-१६, १-७ । |
| ३८२९० | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलदेवः | १-१३ + १ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|-------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--------------------------|
| १०'१×४'४ | ११ | ३६ | वज्र | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०'न×४'४ | १२ | ४० | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० । |
| ९'९×४'३ | ९ | ३५ | " | " | | पू० | |
| ११'३×४'६ | ९ | ३८ | " | " | | अपू० | पूर्वकृदन्तभागः । |
| १०×३ | ६ | ४० | " | " | | " | आख्यातविट्टतिर्वा । |
| ९'१×३'१ | १० | ४७ | " | " | | " | आख्यातप्रकरणस्य । |
| ९'५×२'६ | ६ | ४३ | " | " | | " | |
| १०'न×४'५ | १३ | ४० | दे. ना. | " | १८९३ | " | |
| १०'३×४'५ | १७ | ३७ | " | " | | " | |
| ९'९×४'२ | ९ | ४० | " | " | | " | द्विरुक्तप्रक्रियान्ता । |
| १०'५×४'३ | ९ | ३८ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०'५×४'५ | १३ | ४६ | " | " | | " | " |
| ९'९×४'३ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| ११'३×४ | ९ | ४७ | " | " | | " | |
| ९'५×४'४ | ९ | ४२ | " | " | १८५२ | " | अष्टाध्यायीटीका |
| ९'९×४'४ | ९ | ५० | " | " | | पू० | |
| ९'न×४'४ | ११ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| ९'७×४'३ | १० | ४३ | " | " | | " | व्याख्या-काशिका । |
| ६'५×४'९ | १० | १९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------|-----------------|--|
| ३८२९१ | वैयाकरणभूषणसारः | | १-२६+१। |
| ३८२९२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१९, २६-२९, ३२-५५, १-१८, २२-५०, ६०-७९ (=१), ३। |
| ३८२९३ | कातन्त्रसूत्रम् | | १-१३। |
| ३८२९४ | कविकल्पद्रुमः | वोपदेवः | १, ११, १४-१५, १८-२२। |
| ३८२९५ | धातुरूपावली | | १-३। |
| ३८२९६ | धातुपाठः | | १-३०। |
| ३८२९७ | धातुरूपावली | | १-५४। |
| ३८२९८ | समासचक्रम् | | १-१०। |
| ३८२९९ | वैयाकरणभूषणसारः | कौण्डभट्टः | १-२४। |
| ३८३०० | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | | ३-३४। |
| ३८३०१ | समासचक्रम् | | १-१४। |
| ३८३०२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१५९। |
| ३८३०३ | शब्दरूपावली | | १, ३-३४। |
| ३८३०४ | शब्दकौस्तुभः | | ५-१३, १५-२८, ३०। |
| ३८३०५ | वैयाकरणभूषणसारः | | १-२१, ३६-६४। |
| ३८३०६ | प्रौढमनोरमा | | १-६२। |
| ३८३०७ | " | | १-१०, १२, १२-१९, २१-८९, १७-४७, १-१२, १-१२, १-१६। |
| ३८३०८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी सटीका | | १५८। |
| ३८३०९ | लघुशब्दरत्नम् | | १-१२। |
| ३८३१० | धातुरूपावली | | १-२८। |
| ३८३११ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-६७। |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | भाषाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| १०१×४३ | १० | ३४ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९९×४८ | ३ | ३१ | " | " | | " | प्रारम्भाच्छैपिकांशा । |
| १२३×२ | ३ | ३० | वङ्ग | " | | " | आख्याते ३ पादः ! |
| १६४×३२ | ५ | ६४ | " | " | | " | धातुपाठो वा । टिप्पण्यपि क्वचित् । |
| ९३×४४ | ७ | ३४ | दे. ना. | " | | पू० | |
| १०१×५४ | ७ | ३० | " | " | | अपू० | |
| ४९×८५ | १६ | १२ | " | " | | " | |
| ९३×३९ | ८ | ०७ | " | " | | " | पञ्चमपत्रस्य निरङ्के पृष्ठे ग्रन्थः समाप्तः, तस्यैव साङ्के पृष्ठे समाप्त- विषयको ग्रन्थः पूर्वभिन्नस्त्वसमाप्तः । |
| ११५×४२ | १२ | ४९ | " | " | | " | |
| ११९×४२ | १० | ५१ | " | " | | " | |
| ५२×३५ | ७ | १० | " | " | | " | |
| १४१×५४ | ९ | ५२ | " | " | | पू० | पूर्वाद्धि मात्रम् । |
| ९८×४३ | ९ | २८ | " | " | | अपू० | |
| ११×४७ | १२ | ४५ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| १२२×५ | १० | ४९ | " | " | | " | नामार्थनिर्णयप्रकरणस्य । |
| १०७×४३ | ८ | ३३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| १२×५७ | ११ | ५० | " | " | | " | |
| ११७×४२ | १३ | ५३ | " | " | | " | |
| १०×४४ | ११ | ४५ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| १०८×४६ | ९ | ३६ | " | " | सं० १९०९ | पू० | |
| ११५×४५ | ७ | ४१ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पदसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|----------------|---|
| ३८३१२ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिभट्टः | १-२, २ (=३), ४-१५ । |
| ३८३१३ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-१४, १-३९, १-१५ । |
| ३८३१४ | वैयाकरणभूषणसारः | कौण्डभट्टः | १-५ । |
| ३८३१५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-५, ७-११, १३, १७-७५, ७७-९६ । |
| ३८३१६ | तत्वबोधिनी | | ८ । |
| ३८३१७ | काशिका | जयादित्यः | १, ४-२४, ३१, ६५-८५, १-७+१ । |
| ३८३१८ | श्रौढमनोरमा | | १-१६, २१-५७, ६१-८२, ९२-१२९ । |
| ३८३१९ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १, ४, १०, १७-१८, २२-२३, २८, ३१, ३३-३८, ४१-४४, ४७-६४ । |
| ३८३२० | कातन्त्रसूत्रम् | | २४-४१, ६-१२ । |
| ३८३२१ | संक्षिप्तसारटीका | | १-१५, + ३१ (=क-ष) । |
| ३८३२२ | " | | १-३, ६-१० १६-१७ । |
| ३८३२३ | धातुपाठः | | १८ । (गणनया) |
| ३८३२४ | " | | १-९ + १० । |
| ३८३२५ | कातन्त्रवृत्तिपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १-४१ + ४० । |
| ३८३२६ | कातन्त्रपरिशिष्टम् | | १-९, ११-३०, ३२-४०, ४२-४८, ५० । |
| ३८३२७ | कातन्त्रसूत्रम् | | १-५, ८-१०, १३-१४, १८+१ । |
| ३८३२८ | कातन्त्रवृत्तिपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | ६७-९८, १११-११५ । |
| ३८३२९ | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | | १-४, ६-१३, १५-२०, २३-३० । |
| ३८३३० | कातन्त्रसूत्रम् | | १-१३ । |
| ३८३३१ | भाषावृत्तिः | पुरुषोत्तमदेवः | २-६४, ६६-६९ । |
| ३८३३२ | प्रक्रियाकौमुदी | | ८-१४ + ४, २४, २९-३३ + २, १-१३ । |
| ३८३३३ | गणपाठः | | १-५ । |
| ३८३३४ | कविकल्पद्रुमः | | १-२६ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | व्यासः | लिपिकालः | पं. पं. विवेकः | विशेष वरणम् |
|------------|---------------|--------------|---------|--------|----------|----------------|---------------------------------------|
| १०'५ × ४'७ | ११ | ४५ | दे. ना. | का. | | अपू० | अ० १, पा० १, अ० १ । अष्टाध्यायीटीका । |
| ११'७ × ५'७ | १० | ४० | .. | .. | | .. | समाप्ततिष्ठन्तद्दन्तभागः । |
| ११'५ × ३'७ | ८ | ६१ | मै. | .. | | .. | |
| ११'५ × ४ | ९ | ४९ | .. | .. | | .. | |
| १०'२ × ४'४ | १० | ४५ | दे. ना. | .. | | .. | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०'५ × ४'५ | ९ | ४२ | .. | .. | | .. | अष्टाध्यायीटीका अ० ४, पा० ३ । |
| ९'५ × ४'३ | ९ | ३३ | .. | .. | | .. | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९'६ × ४'१ | ८ | ३४ | .. | .. | | .. | |
| ९'१ × २'५ | ७ | ३४ | .. | .. | | .. | |
| ११'४ × २'२ | ५ | ४१ | वज्र | .. | | .. | |
| १०'९ × २'७ | ४ | ४१ | .. | .. | | .. | |
| १६'५ × ३'२ | ७ | ४३ | .. | .. | | .. | तु' सि० पा' । |
| १६'६ × ३'३ | ८ | ७० | .. | .. | | पू० ॐ | भद्रादिगणमारभ्यङ्ग्यादिपर्यन्तः । |
| १८'८ × ४'३ | ८ | ७८ | .. | .. | | अपू० | |
| १७'५ × ३'७ | ६ | ५४ | .. | .. | | .. | |
| १२'९ × ३'५ | ४ | ३२ | .. | .. | | .. | तद्धितपादान्तव् । |
| १६'६ × २'८ | ७ | ९१ | .. | .. | १७४३ | .. | आख्याः उच्यते पादः । |
| १२'६ × ३ | ८ | ५८ | .. | .. | | .. | अष्टाध्यायी टी० टी० । |
| १३'८ × २'६ | ५ | ४४ | .. | .. | | पू० | तद्धितपादान्तव् । |
| ६'५ × ३'१ | ७ | ४१ | दे. ना. | .. | | अपू० | अष्टाध्यायीटीका । |
| ८'४ × ३ | ७ | ६३ | मै० | .. | | .. | |
| ८'६ × ४'१ | ९ | ३६ | दे. ना. | .. | | .. | पाणिनीयः । |
| ९'४ × ४'२ | ६ | ३० | .. | .. | | .. | |

| क्र.संख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|--|---|
| ३८३३५ | शब्दकौस्तुभः | | १-३२ । |
| ३८३३६ | वर्णादिसूत्रम् | | १-११ । |
| ३८३३७ | सारस्वतम् | | ६-१०, १९-३६, ४४ । |
| ३८३३८ | अनिट्कारिका सटीका | | १-३ । |
| ३८३३९ | शब्दरूपावली | | १-२४, २६-४४ । |
| ३८३४० | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-२, ४-७०, १ । |
| ३८३४१ | " | | ११-६८ । |
| ३८३४२ | सारस्वतम् | | १-१५ । |
| ३८३४३ | कारकनिर्णयः | | १, १-३ । |
| ३८३४४ | काशिकावृत्तिः | | १-१६ । |
| ३८३४५ | धातुपाठः | | १९ । गणनया) |
| ३८३४६ | कलापचन्द्रः | विद्याभूषणाचार्य- कविराजः | २७-३४ । |
| ३८३४७ | सारस्वतम् | | १-३, १-१९, १-१४ । |
| ३८३४८ | भाषावृत्तिः | पुरुषोत्तमः | ३-९, ११-५७, ५९-११०, ११०-१११ । |
| ३८३४९ | शब्दार्थसारमञ्जरी | जयकृष्णभट्टाचार्यः | १०-२१ । |
| ३८३५० | मुग्धबोधटीका | दयारामवाचस्पतिः | १-२, ५-३९, ३९-५६, ६१-९९, १०१-१०४, १०६-११४ । |
| ३८३५१ | कातन्त्रवृत्तिः सटीका | दुर्गसिंहः टी०का० काशीशिवरभट्टाचार्यः | १४-२६, ९२-१३६ । |
| ३८३५२ | मुग्धबोधटीका | रामानन्दः | ७ । (गणनया) |
| ३८३५३ | कलापचन्द्रः | विद्याभूषणसुषेण- कविराजः । | १-५३ + ४१ । |
| ३८३५४ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | २९-५६, ५८-६१ + १, ६३-६५, ६७ । |
| ३८३५५ | कातन्त्रवृत्तिपञ्चिका | त्रिलोचनदासः | १-११, १-४६, ४८-७३, ७५, ७८-९१, ९३- १००, १०२-१५० । |
| ३८३५६ | कातन्त्रसूत्रं सघृत्तिकम् | वृ० दुर्गसिंहः | १-३, ३-२९, १-१४, १-१३, १-२० । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | माघांशः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|---------------|--------------|---------|---------|-----------------|---------------------|--------------------------------------|
| ९'५ × ४'२ | ८ | २४ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ८'३ × ३'५ | ८ | ३५ | " | " | १७०९ | पू० | |
| ८'२ × ३'६ | ११ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ८'६ × ४'२ | १२ | २३ | " | " | १७३३ श. १६३८ | पू० | |
| ६'८ × ३'४ | ८ | २६ | " | " | | अपू० | |
| ९'२ × ३'९ | १२ | ३७ | " | " | | " | |
| ९'९ × ४'४ | ९ | २९ | " | " | | " | |
| १५ × ३'६ | ६ | ५३ | वज्र | " | | पू० | कारकसमासतद्विनप्रकरणार्थं. |
| १६ × ३'५ | ७ | ६४ | " | " | | अपू० | |
| १४ × ३'५ | ५ | ५० | " | " | | पू० | सप्तमाध्यायः । अष्टाध्यायीटीका |
| १३'३ × ३ | ७ | ६० | " | " | | " ❀ | |
| १७'२ × ३'८ | ७ | ८४ | " | " | | अपू० | कृत्पादः । कल्यापटीका । |
| १७'८ × ३'९ | ५ | ६३ | " | " | | " | सारस्वतदीपिका च । |
| १६'८ × ४ | ६ | ४८ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| १५'७ × ३'५ | ६ | ७२ | " | " | श. १७५६ | " | |
| १३'४ × ३'५ | ७ | ५३ | " | " | | " | |
| १४'६ × २'८ | ६ | ५४ | " | " | | " | दी०-शब्दरत्नाकराख्या । |
| १४'५ × ३'२ | ८ | ५९ | " | " | | " | |
| १५'८ × ३'३ | ६ | ६२ | " | " | | " | आख्यातेऽष्टमपादः |
| १४'४ × ३'५ | ४ | ४८ | " | " | | " | |
| १५'९ × ३ | ४ | ४० | " | " | श. १७५८ | " | आख्यातेऽष्टमपादः । |
| १३'२ × २'५ | ४ | ४८ | " | " | श. १६६२ | " | अन्ते कातन्त्रपरिशिष्टं धातुपाठश्च । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपि | श्रृंखलाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|---------------|--------------|-------|-----------|-----------------|---------------------|--|
| १५'८ × ३'२ | ५ | ६२ | वज्र | का. | | पू० | सन्धो पञ्चमः पादः । |
| १३'७ × २'६ | ४ | ३७ | " | " | श. १७५८ | अपू० | |
| १६'२ × ३'६ | ४ | ७३ | " | " | | " | |
| १४'३ × ३'९ | ६ | ५६ | " | " | | " | अन्तिमपत्रचतुष्टयं कातन्त्रटीकायाः । |
| ११'५ × ४'९ | ९ | ३६ | देना. | " | | " | |
| ८ × ३'३ | ६ | २२ | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'९ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| ८'३ × ४ | १० | २६ | " | " | | पू० | |
| ८'९ × ४'१ | १२ | ३१ | " | " | १६६९ | अपू० | |
| ९'७ × ३'९ | ११ | ३३ | " | " | | पू० | |
| १०'६ × ४ | ८ | ३९ | " | " | | " | |
| ९'९ × ४'६ | ९ | ३३ | " | " | १७४२ | " | |
| १०'३ × ५'१ | १० | २४ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०'१ × ३'८ | ७ | २९ | " | " | | पू० | |
| १०'३ × ४'४ | ८ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १०'९ × ५'४ | १२ | ३२ | " | " | १९४६ श. १८११ | पू० | श्लोकयोजनिकोपायभूतवैयाकरणपद- प्रयोगनियामकोऽयं ग्रन्थः । |
| १० × ४'४ | १५ | ४४ | " | " | | " ❀ | अतिजीर्णम् |
| ७'९ × ४'३ | ९ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| ९'६ × ४'३ | १० | ४४ | " | " | | पू० | श्लोकयोजनिकोपायश्च । |
| १२'७ × ५'१ | ९ | ३८ | " | " | १६०९ (?) | " | |
| ११'३ × ४ | १२ | ४५ | " | " | | " | |
| १०'३ × ४'७ | १२ | ५२ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|--------------------------|---|
| ३८३७९ | परिभाषामणिमाला | चन्द्रदत्तः | १-९ |
| ३८३८० | परिभाषेन्दुशेखरटीका | व्यङ्कटेशात्मजः | १, ८-२१=२२, २३-६०=६१, ६२-२२३ । |
| ३८३८१ | परिभाषाविवृतिव्याख्या | भैरवः | १-३, ५-७, ७, ७-२३, २५-६३ । |
| ३८३८२ | " | " | १-६८ । |
| ३८३८३ | परिभाषेन्दुचन्द्रिका | विश्वनाथः | ४७ । (गणनया) |
| ३८३८४ | वात्सुधाकरः | कृष्णाचार्यः | १-१८ । |
| ३८३८५ | " | " | १-१६ । |
| ३८३८६ | काशिकावृत्तिः | धामनः | १-४२, ८, ३२, ४०-४२, ४२-४३, ४३-४४, ४४-४६=४७, ४९-५०, ५३-५४, ५९, ५९-६४ । |
| ३८३८७ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १०१-१८६, १८८-२१७, १-३८, १-१९, १९-५२, १-६२, १-२२, २-३१ । |
| ३८३८८ | " | " | २, ४-३५, ३५-८२, ८४-१०२ । |
| ३८३८९ | " | " | १ । |
| ३८३९० | मध्यमनोरमा | " | १-१७ । |
| ३८३९१ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पुतञ्जलिः टीकां कैयटः | १-३५, १-६३, १-१९, २१-२५ (=३५), २६-४५, १-२३, १-२१, ९०-१०१, ३४-१२६, १-३८, ४१-५२, ५५-७७, १-२३, ६८-७३, ७५-१०६, १-१४१, १-८८, १-५३, ५५-८१ । |
| ३८३९२ | " | " | १-११८ । |
| ३८३९३ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | " | ५०, ५२-७० । |
| ३८३९४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १५४ । (गणनया) । |
| ३८३९५ | " | " | १-११, १६, १८-१९९, २-३८, २३-७८ । |
| ३८३९६ | वैयाकरणशब्दरत्नमाला | सोमयाजी | १-२३ । |
| ३८३९७ | शब्दकौस्तुभप्रभा | वेद्यनाथपायगुण्डः | ३३-५१ । |
| ३८३९८ | शब्दकौस्तुभः सटीकः | " | १-७८, ७८-९४, ९६-२०७ + १, २०८-२५७, १-४९ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|---------------|--------------|---------|-------|-----------------|---------------------|--|
| ९'न × ४'३ | ९ | ३३ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ९'९ × ४'५ | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | टीका त्रिपथगा १६४ पृष्ठ पर्यन्तम्, ततः परं हंसवती टीका च । |
| ९'५ × ४'२ | ११ | ४५ | " | " | | " | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |
| ९'५ × ३'५ | १० | ३२ | " | " | | " | " |
| ८'३ × ४'२ | ६ | २२ | " | " | | " | " |
| ९'७ × ४'३ | ११ | ३४ | " | " | | पू० | |
| १०'४ × ४'४ | ११ | ४७ | " | " | | " | |
| १०'६ × ४'५ | ९ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १०'न × ४'४ | ११ | ४४ | " | " | १८८३ | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०'७ × ४ | १० | ५१ | " | " | | " | " |
| १०'९ × ४'४ | ८ | ३१ | " | " | | " | " |
| ८'न × ४'१ | ११ | ३२ | " | " | | " | मध्यसिद्धान्तकौमुदीटीका । |
| १२'९ × ६'५ | ११ | ४८ | " | " | | पू० | अ० १-८ । |
| १२'६ × ५'७ | १३ | ५९ | " | " | | " | अ० ३ पा० १-४ । |
| १०'२ × ४'५ | २० | ५० | " | " | | अपू० | पुस्तकेऽस्मिन्मुद्रितपुस्तकात्पाठ-भेदोऽस्ति । |
| १०'९ × ४'न | १२ | ३७ | " | " | | " | पूर्वार्द्धम् । |
| १०'७ × ४'न | ५ | ३४ | " | " | | " | उत्तरार्द्धम् । |
| ९'३ × ४'१ | ९ | ३३ | " | " | १८८१ श. १७४६ | पू० | " |
| ९'न × ४'४ | १६ | ५३ | " | " | | अपू० | प्रत्याहाराहिकम् । |
| १३ × ५'४ | ११ | ५७ | " | " | १९२६ श. १७९१ | " | |

| क्र.संख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|---------------------------|------------------------------------|
| ३८३९९ | वैयाकरणभूषणसारपरीक्षा | भैरवमिश्रः | १-५, १२-१६ । |
| ३८४०० | महाभाष्यप्रदीपविवरणम् | रामचन्द्रसरस्वती | ७८-१२०, १३१-१३०, १३९-२७८ । |
| ३८४०१ | महाभाष्यटीका | | २८-४२, २४-३३, ३५-३६ । |
| ३८४०२ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १४-३३, ६-१०९, १३०-१३७ । |
| ३८४०३ | महाभाष्यप्रदीपः | कैयटः | ६५ । (गणनया) |
| ३८४०४ | प्रौढमनोरमा | | २-३०, ३४-४०, ४२, ४४-४८, ५५-५७ । |
| ३८४०५ | लिङ्गानुशासनवृत्तिः | | १-१२ । |
| ३८४०६ | मुग्धबोधः | वोपदेवः | १-६८, ७०-१७५ । |
| ३८४०७ | " | " | १-८५ । |
| ३८४०८ | " | " | १-११, १-४२, १-१३, १-१२, १-१२ + १ । |
| ३८४०९ | " | " | १-९९ । |
| ३८४१० | कातन्त्रसूत्रम् | | १-१८, १८-५४ + १० । |
| ३८४११ | कातन्त्रवृत्तिपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | २७-३४, ३२-३६, ३५-५२ । |
| ३८४१२ | कातन्त्रसूत्रं सवृत्तिकम् | दुर्गासिंहः | १-२३ । |
| ३८४१३ | कविकल्पद्रुमः | वोपदेवः | ४-२२ । |
| ३८४१४ | मुग्धबोधः | " | १-२, ४-५३ । |
| ३८४१५ | कारकविचारः | | १-१६ । |
| ३८४१६ | प्रौढमनोरमा | | ५७ । |
| ३८४१७ | लघुशब्दरत्नम् | | (१-१०) ११-४७ + १, ५१-६७ । |
| ३८४१८ | " | | ५-३५ । |
| ३८४१९ | प्रौढमनोरमाटीका | | १ १०८ । |
| ३८४२० | काशिका | काशी | १-३६ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|-------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| ११×४४ | ९ | ३६ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०×४४ | ११ | ३० | " | " | १८१५ | " | कैगटविवरणमिति । |
| ११'५×५'२ | १० | ४६ | " | " | | " | |
| १०'२×४'५ | ९ | ३२ | " | " | १६४४ | " | |
| १२'१×४'१ | १२ | ६५ | " | " | | " | |
| १०×४'५ | १३ | ४३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका |
| १०'४×४'८ | ११ | ३३ | " | " | | पू० | |
| १३'२×३'९ | ५ | ३४ | बङ्ग | " | श. १७६६ | अपू० | |
| १२'७×३'६ | ६ | ४२ | " | " | | " | |
| १३×३'४ | ४ | ३७ | " | " | | " | शब्दरूपावलिसहितः |
| १३'३×४'१ | ६ | ३९ | " | " | | पू० | |
| १३×३ | ४ | ३६ | " | " | | अपू० | श्रीपतिदत्तविरचितं कातन्त्रपरिशिष्ट- सूत्रञ्च । |
| १३'८×२'८ | ६ | ६७ | " | " | | " | |
| १२'८×३'३ | ४ | ४३ | " | " | | पू० | सन्धौ १-५ पादाः । |
| १५'१×३'३ | ६ | ४८ | दे. ना. | " | | अपू० | धातुपाठो वा |
| १५'४×३'२ | ४ | ४८ | बङ्ग | " | | " | त्यादिपादः |
| १५×३ | ६ | ५६ | " | " | | " | |
| १०'५×४'४ | ११ | ४० | मैथिली | " | | " | अजन्तपुँल्लिङ्गप्रकरणम् । |
| १०'४×४'५ | १२ | ५० | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । आदौ दशपत्राणि अङ्कद्वितानि । |
| १०'८×४'५ | १२ | ५० | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका |
| १०'८×४'४ | ९ | ३७ | दे. ना. | " | | " | |
| ८'५×३'३ | ९ | ३१ | " | " | | " | मध्यसिद्धान्तकौमुदीविवृतिः |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|--------------------|---|
| ३८४२१ | वैयाकरणभूषणसारः | | ४०-१०१ । |
| ३८४२२ | प्रबोधचन्द्रिका | बैजलभूपालः | १-१८ । |
| ३८४२३ | प्रत्याख्यानसङ्ग्रहः | नागोजिभट्टः | १-३७ । |
| ३८४२४ | प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः | विट्ठलः | ३-४, ६, ८-३१, ३४-३९, ४१, ४४-६३, ६५-६७, ९३, १०१, १०३-१०९, १११-११७, १२४-१४८, १५१-१५३, १५५-१५६, १६२ । |
| ३८४२५ | पाणिनीयवादनक्षत्रमाला | उमामहेश्वरदीक्षितः | ३८, ४०-९४ । |
| ३८४२६ | सिद्धान्तपद्माकरः | सदाशिवः | १-४, ४-४४, ४४-४८, ४८, ४८-६७, ६७-८३, ८३, ८३-८६, ८६, ८६, ८६-११५, ११५, ११५-१३७, १३७-१५५, १५५, १५५, १५५-२३४, २३४-२४८, २४८-२६३, २६३, २६३-२६७ । |
| ३८४२७ | अभिनवार्थतरङ्गिणी | सदाशिवभट्टः | १-४७ । |
| ३८४२८ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-४६ = ४७, ४८-९५ । |
| ३८४२९ | शब्दविनायकः | | ३-५ । |
| ३८४३० | शब्दरत्नप्रकाशिका | भैरवमिश्रः | ८७-१४७ । |
| ३८४३१ | " | " | १-८१, ८३-१२०, ९१-३६८ |
| ३८४३२ | शब्दरत्नटीका | | १-२६ । |
| ३८४३३ | शब्दरत्नभावप्रकाशिका | वैद्यनाथपायगुण्डे | १-९७, ९९, १-४७, ४७-५५ । |
| ३८४३४ | शब्दरत्नटीका | | १-१०, १०-५७ । |
| ३८४३५ | सारसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-५० । |
| ३८४३६ | शब्देन्दुशेखरटीका | भैरवमिश्रः | १-२१, २१-२२, २२-२३, २३-६४, ६८-८५ । |
| ३८४३७ | " | | १-६४ । |
| ३८४३८ | " | भैरवमिश्रः | १-३४=३५-३६-१११ । |
| ३८४३९ | " | " | १-१००, ११०-२७२ । |
| ३८४४० | " | " | १-२७३, २७७-३३७, ३३७-३४२ । |
| ३८४४१ | शब्देन्दुशेखरः | | १-१८, २०-४४, ५४-५९, ६२-१४३, १४७-२६६ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|-------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|--|
| ९'५ × ३'६ | ६ | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९'९ × ४'३ | ७ | ३७ | " | " | | " | |
| ९'५ × ४'४ | ११ | ४२ | " | " | | पू० | |
| १०'४ × ४'२ | १७ | ६३ | " | " | | अपू० | |
| ९'८ × ४'२ | १० | ४० | " | " | | " | |
| १०'९ × ४'७ | ७ | ३३ | " | " | श. १७६८ | पू० ❀ | परिभाषेन्दुशेखरत्रिपथगाव्याख्या । |
| ११'९ × ४'८ | ११ | ५२ | " | " | | " | परिभाषेन्दुशेखरगादाटीकासारांश टीकेयम् । |
| १२'४ × ४ | १४ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| १०'९ × ४'४ | ११ | ४६ | " | " | श. १७२३ | " | |
| ९'७ × ४'४ | १३ | ५३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टी० टी० । |
| १०'३ × ४'६ | १० | ४६ | " | " | १८८५ | पू० ❀ | " .. |
| १०'६ × ४'६ | ११ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| ९'८ × ४'४ | १६ | ५८ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टी० टी० । |
| १२'४ × ४'८ | ११ | ५१ | " | " | | " | " |
| ९'३ × ४'३ | ८ | ३१ | " | " | १९०६ | पू० | |
| १२'७ × ४ | ११ | ६६ | " | " | १८८१ | अपू० | चन्द्रकलाख्या । |
| ११'७ × ४'८ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| १२'९ × ५'१ | ११ | ६१ | " | " | | पू० ❀ | " तिङन्तप्रकरणमात्रम् । |
| ११'९ × ४'७ | १० | ३८ | " | " | | पू० ❀ | समासतो द्विरुक्तप्रक्रियान्ता । |
| ११'६ × ४'८ | १० | ३६ | " | " | | अपू० | स्त्रीप्रत्ययान्ता । |
| १३'४ × ४'९ | १० | ५७ | " | " | १७६१ | " | पूर्वादिम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|------------------|--|
| ३८४२ | वैयाकरणसिद्धान्तनरत्नाकरः | रामकृष्णभट्टः | १-२७, १-२७, २९-३१ । |
| ३८४३ | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्राचार्यः | १-६९ । |
| ३८४४ | " | | १, ३-६४ । |
| ३८४५ | वैयाकरणभूषणसारः | कृष्णभट्टः | ६१ । |
| ३८४६ | विभक्त्यर्थविचारः | | १-८ । |
| ३८४७ | अष्टाध्यायी | | १-५४ । |
| ३८४८ | अव्ययार्थः | | १-४ । |
| ३८४९ | सर्वमङ्गला | शेषशर्मसूरिः | १-३०, ३०-१३६, १३६-१३७, १३७-१७५, १७५-१७६, १, १७७-२२० । |
| ३८५० | रत्नार्णवः | | १-११७, ११९-१२३, १-७५, १, १-८५ । |
| ३८५१ | अर्थवत्त्वपरिष्कारः | | १-१२ । |
| ३८५२ | अष्टाध्यायी | पाणिनिमुनिः | १-५४ । |
| ३८५३ | सिद्धान्तकौमुदीटीका | | १ । |
| ३८५४ | धातुपाठः | | १-२१ । |
| ३८५५ | परिभाषेन्दुशेखरहैमवती | यागेश्वरः | १-५, ५-१८ । |
| ३८५६ | शिरोमणिः | शंभुकृष्णपण्डित | १-१८ । |
| ३८५७ | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | | १-३ । |
| ३८५८ | " | | २५-२७ + १ । |
| ३८५९ | " | सुखिधरशर्मा | २२-३३ + १ । |
| ३८६० | " | " | १-२०, २३-३०, ४, ६-८-१८-२३, १-३, ६, ६-७, १-९, ११-१४, १-१३, १-१२ । |
| ३८६१ | अनिट्कारिका सटिप्पणा | | १-४ । |
| ३८६२ | "अनेकमन्यपदाथे" सूत्रार्थविचारः | | १-१४ । |
| ३८६३ | उणादिसूत्रं सवृत्तिकम् | | १-३३ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|---------------|--------------|---------|-------|-----------------|--------------------|-----------------------------|
| १०१×३४ | ११ | ७२ | दे. ना. | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० व्याख्या । |
| १२१×४३ | ११ | ५४ | " | " | | " | |
| ११५×४५ | ६ | ३१ | " | " | | " | |
| ९८×४५ | १२ | ३३ | " | " | | " | |
| ८८×४ | १० | ४१ | " | " | | " | कारकवादो वा । |
| ८८×३५ | ९ | ३७ | " | " | | पू० | |
| ९४×४२ | ९ | २५ | " | " | | अपू० | |
| ७६×४१ | १३ | ३२ | " | " | | पू० ❀ | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |
| ९४×४ | ९ | ३५ | " | " | १६२० (?) | अपू० | वै० सि० कौ० व्याख्या । |
| ९६×३८ | २५ | ५१ | " | " | | " | |
| ६६×५१ | ९ | ३० | " | " | १९०८ श. १७७३ | पू० | |
| १०१×५१ | ३७ | २५ | " | " | | अपू० | अकथितञ्चेत्यादिसूत्राणाम् । |
| १०१×५४ | ११ | २८ | " | " | श. १७७६ | पू० | |
| ९८×४५ | १२ | ४० | " | " | १९२५ | अपू० | |
| ८८×४२ | ११ | ४२ | " | " | | पू० | प्रक्रियाकौमुदीव्याख्या । |
| १३१×३१ | ७ | ५५ | वङ्ग | " | | अपू० | अष्टाध्यायीटी०टीका । |
| १४५×३१ | ८ | ६३ | " | " | | " | " |
| १४५×३३ | ७ | ५५ | " | " | | " | " |
| १६६×३५ | ६ | ७४ | " | " | | " | अ० १—२ । |
| ८८×४५ | ९ | २९ | " | " | १६९९ | पू० | |
| ९२×३८ | ९ | ३२ | " | " | | अपू० | |
| ९×४ | १३ | ३३ | दे. ना. | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पृ० संख्याविवरणम् |
|------------|---|-------------------------------|---|
| ३८४६४ | एवकारार्थविवृतिः | माधवः | १-८ । |
| ३८४६५ | कारकग्रहः | मदनशर्मा | १-७ + १ । |
| ३८४६६ | कारकतत्त्वम् | वीरेश्वरः | १-२ । |
| ३८४६७ | कारकवर्णनं सटीकम् | ययातिः | १-५ । |
| ३८४६८ | स्वरसिद्धान्तचन्द्रिका | श्रीनिवासः | १-१९७ । |
| ३८४६९ | शिरोमणिः | | ५१-६२ । |
| ३८४७० | " | | १-२४ । |
| ३८४७१ | परिभाषेन्दुशेखरः सटीकः | नागेशः टी० का० भवदेवात्मजः | १-१५६, १५९-१६१, १-३१ + १ । |
| ३८४७२ | परिभाषाप्रदीपार्चिः | उदयङ्करः | १-८१ । |
| ३८४७३ | सारस्वतम् | | १-१२ । |
| ३८४७४ | प्रदीपव्याख्या | | १-२ । |
| ३८४७५ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतनम् | अन्नम्भट्टः | १-६५ । |
| ३८४७६ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशभट्टः | १-३४, ३७-६९ । |
| ३८४७७ | " | " | १-३४६, १-१५, २९-८३, ८३-८७, ८९-१२४, १-५९, ६१-१३१, १-६२, ६२-१००, १-८७, ८७-९४, ९६-९९, १-१०२, १०२-१६०, १- ८४, १-७० । |
| ३८४७८ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजभट्टः | १-१९३ । |
| ३८४७९ | विपमा | | १-२८६ । |
| ३८४८० | लघुशब्देन्दुशेखरविषमपद- वाक्यविवृतिः | राघवेन्द्राचार्यः | १-५५, १-२१ । |
| ३८४८१ | लघुशब्देन्दुशेखरविवृति- सङ्ग्रहः | | १-८९, १-२१ । |
| ३८४८२ | लघुशब्देन्दुशेखरभावार्थ- दीपिका | गोविन्दः | ११२-१२७, १२९-१५६, १-६ । |
| ३८४८३ | लघुशब्देन्दुशेखरप्रभा | शेषः | १-२० । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|------------------|--------|-------|------------------------|-------------------------|--|
| ९७×४३ | १३ | ४१ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १३३×४ | १० | ५१ | वज्र | " | वज्राब्दः १२८७ | पू० | |
| ११९×४६ | १४ | ५० | दे.ना. | " | | अपू० | |
| १४१×३८ | ३ | ४९ | वज्र | " | | पू० ? | नीतिशिक्षणव्याजेन । |
| ९६×४ | १० | ३९ | दे.ना. | " | १८७१ | " | |
| १०८×४६ | १४ | ४७ | " | " | श. १७३५ | अपू० | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |
| १०६×४६ | ११ | ४० | " | " | | " | किरीटनामिका वा । |
| ११४×५१ | ९ | ४५ | " | " | टी. रचना- कालः १८८२ | " | टीका-भैरवी । |
| ९७×४३ | ११ | ४३ | " | " | | पू० | |
| ९२×४३ | ९ | २३ | " | " | | अपू० | |
| ११×४ | ८ | ४१ | " | " | | " | महाभाष्य टी०टीका । |
| १०९×४८ | १० | ३६ | " | " | | " | " " । |
| ९८×४७ | १६ | ४४ | " | " | | " | अ० १ पा० ४ आ० ४ । |
| ११×४८ | ११ | ५० | " | " | १८२० १८४४ १८४५ | " | १-८ अध्यायाः । |
| १०७×४५ | ९ | ३२ | " | " | | पू० | |
| ९७×८७ | १२ | ३४ | " | " | | अपू० | लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या । स्त्रीप्रत्ययप्रकरणान्ता । |
| ९५×४५ | १० | ३६ | " | " | १९२० | " | पञ्चसन्धिप्रकरणम् हलन्तपुंल्लिङ्ग- प्रकरणञ्च । |
| १०५×४५ | ७ | ३२ | " | " | | " | सञ्ज्ञाप्रकरणांशादजन्तपुंल्लिङ्गांशः । |
| ९६×४२ | १७ | ४४ | " | " | | " | स्त्रीप्रत्ययकारकसमासप्रकरणानि । |
| ९३×३७ | ९ | ४१ | " | " | | " | सञ्ज्ञाप्रकरणम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|---------------------------|--|
| ३८८४ | लघुशाब्देन्दुशेखरव्याख्या | शेषसूरिः | १-१३, १३, १३-३९ । |
| ३८८५ | " | | १-१०, १-११, १-२ + ३ । |
| ३८८६ | " | | २७-५४ । |
| ३८८७ | शब्दरूपावली | रङ्गदेवः | १-१९ । |
| ३८८८ | " | गोविन्दः | १-६ । |
| ३८८९ | भाषावृत्तिः (?) | | १९-२० । |
| ३८९० | मुग्धबोधः | | १९-२६ + ७, ३४-३५ । |
| ३८९१ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-३ । |
| ३८९२ | " | वरद्वाराजभट्टः | १-४८=४९, ५०-१४५, १४५-१५५, १५७-१५९=१६०, १६१-२६२ । |
| ३८९३ | समासचूडामणिः | | १-२, ४-६ । |
| ३८९४ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गासिंहः | १-३७ । |
| ३८९५ | गणरत्नमद्बोधः | | १-३५ । |
| ३८९६ | प्राकृतकौमुदी | वररुचिः | १-३ । |
| ३८९७ | कारकतत्त्वम् | शेषचक्रपाणिपण्डितः | १-१५ । |
| ३८९८ | लघुशाब्देन्दुशेखरविवृतिः | | ९९ । |
| ३८९९ | सारस्वतप्रक्रिया | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-५७ । |
| ३९०० | कारकनिर्णयः | | ३ । |
| ३९०१ | प्रयोगविवेकसङ्ग्रहः | | १-२० । |
| ३९०२ | कातन्त्रकौमुदी | गङ्गे शशार्मा | १-३ । |
| ३९०३ | परिभाषामणिमाला | | ११ । (गणनया) |
| ३९०४ | परिभाषावली | | १-३ । |
| ३९०५ | वैयाकरणभूषणं सटीकम् | | १-२, ६-१६, १८-२५ । |
| ३९०६ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | २-२१, २३-२६, २६-३० । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| ९३×३८ | १७ | ४१ | दे. ना. | का. | | पू० ❀ | सञ्ज्ञाप्रकरणम् । |
| ९६×४४ | ८ | ३७ | " | " | | अपू० | हलन्तपुल्लिङ्गतः स्त्रीप्रत्ययांशा । |
| ९८×४४ | १३ | ३९ | " | " | | " | |
| ९२×४४ | १० | २५ | " | " | | " | |
| ९८×४५ | ७ | ३८ | " | " | १९३५ | पू० | |
| १३२×२९ | ८ | ७६ | बङ्ग | " | | अपू० | अष्टाध्याय्यटीका । |
| १२३×२८ | ४ | ३४ | " | " | | " | |
| १०७×४५ | ९ | ३२ | दे. ना. | " | | " | |
| ९६×५ | ८ | २९ | " | " | | " | |
| ८१×३२ | ६ | २१ | " | " | | " | भाषाप्रयोगविधिसहितः । । आदौ- पत्रद्वयं शब्दरूपान्वितम् । |
| ९×१७ | ४ | २७ | बङ्ग | " | श. १७८३ | पू० | सन्धौ पञ्चमपादा-ता । |
| १०६×३६ | ७ | ३३ | दे. ना. | " | | " | |
| १०७×४५ | १३ | ३८ | " | " | | अपू० | प्राकृतव्याकरणम् । |
| ९९×४३ | १३ | ४८ | " | " | १८१७ | पू० | |
| १०७×४५ | ९ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ११×५५ | १० | २७ | " | " | १९०७ | पू० | पूर्वार्द्धम् । |
| ९४×४५ | १४ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| ८२×२६ | ११ | ३१ | " | " | | पू० | तृतीयपटलं यावत् । |
| १३८×२६ | ५ | ५१ | बङ्ग | " | | अपू० | |
| ११×४५ | ७ | ३६ | मैथिली | " | | पू० ❀ | परिभाषेन्दुशेखराद् गृहीता । |
| १०६×४४ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| १०२×४६ | १२ | ५२ | दे. ना. | " | | अपू० | टीका-वैयाकरणमतोन्मज्जनम् । |
| ८५×४३ | १० | ३९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|-------------------------|---|
| ३८५०७ | तत्त्वबोधिनी | | १-२८ । |
| ३८५०८ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चायः | १-४८, ५०-६५, + १-५६ । |
| ३८५०९ | मुग्धबोधटीका | रामतर्कवागीशः | १-७ । |
| ३८५१० | मुग्धबोधः | | १, । |
| ३८५११ | समासचक्रम् | | १-५ । |
| ३८५१२ | " | | १-४ । |
| ३८५१३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-२६ । |
| ३८५१४ | " | | १-९, ११-२५, २५-४२ । |
| ३८५१५ | " | भट्टोजिदीक्षितः | २१-४५, १०-१०७, १-१-५७, ६४-८२=(८३) ८४-८८, १-२२, १-६, ८-२१ । |
| ३८५१६ | " | | १-३८ । |
| ३८५१७ | मुग्धबोधटीका | | २०-२७ । |
| ३८५१८ | " | दुर्गादासः | ५-३४ । |
| ३८५१९ | वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी व्याख्या | | १-९ । |
| ३८५२० | " | | २-५ । |
| ३८५२१ | ललिता | रामभद्राश्वरीन्द्रः | १-२४, १-१८ । |
| ३८५२२ | कातन्त्रम् | | ३८ । गणनया |
| ३८५२३ | धातोस्तन्निमित्तस्यैवेतिसूत्र- विचारः | | ६ । " |
| ३८५२४ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-१४, १६-१८ |
| ३८५२५ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-४५, ६५-२१५ । |
| ३८५२६ | धातुरूपावली | | १-५ । |
| ३८५२७ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | १-२१ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | श्रृंखला- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|-------------------|---------------------|---------|-------|-----------------|-------------------------|---|
| १२२×४ | ११ | ३९ | दे. ना. | का. | | अपू० | वे० सि० कौ० टीका । |
| ८७×४ | ७ | ३५ | ॥ | ॥ | | पू० ❀ | तद्धितान्तम् , ४८, ५०, पत्रयोर्मध्ये पत्राङ्कविच्छेदेऽपि न पाठश्रुतिः, अन्तिः। पत्रञ्च ग्रन्थान्तरस्य । |
| १३७×५३ | १० | ५० | वङ्ग | ॥ | | अपू० | समासप्रकरणम् । |
| १२७×३५ | ४ | ३८ | ॥ | ॥ | | ॥ | |
| ९९×५१ | ९ | ४३ | दे. ना. | ॥ | १९०९ श. १७७४ | पू० | |
| ९१×४.१ | ११ | ३५ | ॥ | ॥ | | ॥ | |
| १०१×५५ | ७ | २७ | ॥ | ॥ | | अपू० | |
| ९६×५१ | ९ | ३४ | ॥ | ॥ | | ॥ | |
| १२२×४.२ | ९ | ४५ | ॥ | ॥ | | ॥ | सुबन्तादारभ्य स्वरप्रकरणान्ते । |
| ११९×५ | १४ | ३८ | ॥ | ॥ | | ॥ | कृदन्तमात्रम् । |
| १४२×३१ | ७ | ६७ | वङ्ग | ॥ | | ॥ | कारकस्य |
| १३९×२९ | ६ | ५६ | ॥ | ॥ | | ॥ | |
| १३३×३३ | ६ | ५५ | ॥ | ॥ | | ॥ | हलन्तस्य । |
| १३८×३४ | ७ | ५० | ॥ | ॥ | | ॥ | |
| १२१×४.२ | १३ | ५९ | दे. ना. | ॥ | | ॥ | वेयाकरणसिद्धान्तकौमुदीव्याख्या |
| ५५×५३ | १२ | १२ | ॥ | ॥ | | ॥ | |
| ८३×४३ | ३९ | २६ | ॥ | ॥ | | ॥ | आमि सर्वनाम्नःसुट्, किम् क इत्यादि सूत्राणां विचारश्च । |
| १०६×४७ | १४ | ४९ | ॥ | ॥ | | ॥ | |
| ८२×४३ | ८ | २१ | ॥ | ॥ | | ॥ | |
| ६७×५ | १० | ३२ | ॥ | ॥ | | ॥ | मध्यकौमुद्याः । |
| ९३×३७ | ६ | २९ | ॥ | ॥ | | ॥ | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-------------------|---|
| ३८५२८ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | ३८-३९, ४२-४८, ५३-६३ । |
| ३८५२९ | वाङ्मुधाकरः | कृष्णमित्राचार्यः | १-२२ । |
| ३८५३० | वैयाकरणभूषणसारख्याख्या | | २-११, ११-१२५ । |
| ३८५३१ | वृत्तिदीपिका | कृष्णभट्टमौनी | १-६, १३ । |
| ३८५३२ | शब्दकौस्तुभः | | १-५३ । |
| ३८५३३ | महाभाष्यविवरणम् | | १-१८ । |
| ३८५३४ | वाक्यपदीयम् | भर्तृ हरिः | १-४७ । |
| ३८५३५ | विभक्त्यर्थविचारः | | १-९ । |
| ३८५३६ | वैयाकरणभूषणसारः | | १-५ । |
| ३८५३७ | व्याकरणक्रोडपत्राणि | | १०७ । (गणनया) |
| ३८५३८ | क्रोडपत्रम् | | १-७ । |
| ३८५३९ | शब्दकौस्तुभप्रभा | वेद्यनाथपायगुण्डे | १-८५ । |
| ३८५४० | रत्नार्णवः | | १-३२ । |
| ३८५४१ | लघुशब्दचन्द्रशेखरः | नामोशः | १-३०, ३०-५४ + १, ५५-२०९, २२० + १, २२१-३३२ । |
| ३८५४२ | " | | १-५८ । |
| ३८५४३ | चिदस्थिमाला | वेद्यनाथपायगुण्डे | १-८४, ८८-१५०, १५२-१६० । |
| ३८५४४ | वाक्यपदीयम् | भर्तृ हरिः | १-८६ । |
| ३८५४५ | " | " | १-२, १८-४१ + १ । |
| ३८५४६ | " | | १-९ । |
| ३८५४७ | वाक्यपदीयटीका | पुण्यराजः | १-१२७ । |
| ३८५४८ | " | | १-८० । |
| ३८५४९ | विभक्त्यर्थनिर्णयः | | १-१७० । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| ९९×४१ | ८ | ३१ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०६×४५ | ८ | ४४ | " | " | १९०१ | पू० | |
| ९७×४२ | १० | ३९ | " | " | | अपू० | |
| ८५×४२ | ११ | ३० | " | " | | " | |
| १०×४३ | ११ | ३८ | " | " | | पू० | १ अ. १पा. २-३ आ० । |
| १०×४७ | १४ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| १०×४४ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| १७×४१ | ९ | ६८ | वज्र | " | | " | |
| १२६×३८ | १० | ५४ | " | " | | पू० | सुवर्धनिर्णयमात्रम् । |
| ११×४६ | ११ | ३६ | दे. ना. | " | | अपू० | बिधिधाकारपत्राणि सन्ति । |
| ११७×४९ | १२ | ४३ | " | " | | पू० | |
| ९५×४१ | १० | ५१ | " | " | | अपू० | शब्दकौस्तुभटीका । |
| ९७×४२ | १० | ३८ | " | " | | पू० | सिद्धान्तकौमुदीव्याख्या । कारकप्रक- रणस्य । |
| १०१×४५ | ९ | ४३ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तकौमुदीटीका । |
| १०१×४६ | ९ | ४६ | " | " | | " | |
| १०७×४४ | ११ | ४५ | " | " | | " | लघुशब्देन्दुशेखरटीका । स्वादि सन्धि पर्या- न्तस्य, १५०पत्रे १०पक्तिः द्विरुल्लिखिता । |
| ९×३७ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| १११×४२ | १४ | ५४ | " | " | | " | |
| ११२×३९ | ७ | ४२ | " | " | | " | |
| ९३×४१ | १० | ४४ | " | " | | पू० | बहुशः पत्राणि क्रीडभक्षितानि सन्ति । |
| ८७×३५ | १३ | ४० | " | " | | अपू० | |
| १०५×४९ | १० | ३६ | " | " | | " | |

| क्र.संख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|--------------------|-------------------|
| ३८५५० | विभक्त्यर्थनिर्णयः | कृष्णभट्टः | १-५१, ५१ । |
| ३८५५१ | वृत्तिदीपिका | " | १-२२ । |
| ३८५५२ | वैयाकरणभूषणसारः | | २-२३, २५, २५-७५ । |
| ३८५५३ | " | कौण्डभट्टः | १-५४ । |
| ३८५५४ | " | " | १-३७ । |
| ३८५५५ | " | " | १-५७ । |
| ३८५५६ | " | | ३२-५५ । |
| ३८५५७ | " | कौण्डभट्टः | १-५१ । |
| ३८५५८ | समासपादः सटीकः | | १-३५, ३७-४८ । |
| ३८५५९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- व्याख्या | | १-३ । |
| ३८५६० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-६९ । |
| ३८५६१ | कातन्त्रं सवृत्तिकम् | वृ० का० दुर्गसिंहः | १-६३ । |
| ३८५६२ | " | " | १-२७ । |
| ३८५६३ | " | " | १-१९ । |
| ३८५६४ | " | " | १-७२ । |
| ३८५६५ | कविकल्पद्रुमः | बोपदेवः | १-१४ । |
| ३८५६६ | धातुदीपिका | दुर्गादासः | १-८ । |
| ३८५६७ | गणपाठः | | १-३७ । |
| ३८५६८ | धातुपाठः | | १-६ । |
| ३८५६९ | परिभाषावृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-२७ |
| ३८५७० | शब्देन्दुशेखरटीका | | १-७, ९-१३२ । |
| ३८५७१ | व्युत्पत्तिवादक्रोडपत्रम् | | १-३ । |
| ३८५७२ | सारसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | ३-१५ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपि. | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|-------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|-------------------------------------|
| ९.९×४.२ | १० | ३९ | दे.ना | का. | १८४६ | पू० | |
| १०.१×४.१ | ११ | ६० | " | " | १८४९ | " | |
| १२×४.७ | ११ | ६१ | " | " | श.१७(?) | अपू० | |
| ९.४×३.६ | ८ | ३९ | " | " | | पू० | स्फोटवादः । |
| १०.३×४.३ | १० | ४५ | " | " | | अपू० | |
| १३.१×४.३ | ८ | ४८ | " | " | १८२०(?) | पू० | |
| १०×४.५ | ९ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| ११.६×४.५ | १० | ४५ | " | " | | पू० | स्फोटवादः । |
| १४.१×३.७ | ४ | ५१ | वज्र | " | | " ❀ | ययान्युपदिष्टशैबनाट्यवर्णनव्याजेन । |
| ११.७×४.६ | ९ | ३७ | दे.ना. | " | | अपू० | मुनित्रयंनमस्कृत्येत्यस्यैव । |
| १०.४×४.४ | १० | ३७ | " | " | श.१५०३ | पू० | कृदन्तप्रकरणम् । |
| १२.१×३ | ७ | ३७ | वज्र | " | | अपू० | आख्यातवृत्तिः । |
| ११.३×१.४ | ३ | ३८ | " | " | | " | सन्धिवृत्तिः । |
| १६.२×३.७ | ५ | ४९ | " | " | | पू० | कृत्सु षष्ठपादः । |
| १६.६×३. | ४ | ५० | " | " | १७२६श० | " | चतुष्टयवृत्तिः । |
| १०.६×४.६ | ११ | ४६ | दे.ना. | " | | " | धातुपाठः । |
| १२.९×४.७ | ८ | ५१ | " | " | | अपू० | कविकल्पद्रुमटीका । |
| १६.६×३ | ३ | ३७ | वज्र | " | | पू० | कलापस्य । |
| ११.१×१.५ | ३ | ४ | " | " | | अपू० | " |
| १४.३×३.१ | ६ | ५८ | " | " | | पू० | |
| ११×४.१ | ९ | ४२ | दे.ना. | " | | अपू० | " |
| १०.५×४.६ | १२ | ४९ | " | " | | पू० | समानविभक्तिकत्वमात्रविचारः. |
| ६.६×३.४ | ७ | २१ | " | " | श०१६९३ | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पदसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|---------------------------|--|
| ३८५७३ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | २३-२९, ३१-४२ । |
| ३८५७४ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १-१७३ । |
| ३८५७५ | सारस्वतम् | | २३-२९ । |
| ३८५७६ | " | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १६-६७ । |
| ३८५७७ | " | | १-१६ । |
| ३८५७८ | " | | १३-३०, ३२, ४७-६० । |
| ३८५७९ | तत्त्वदीपिका | | १४-३२ । |
| ३८५८० | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-५२ । |
| ३८५८१ | उणादिसूत्रसङ्ग्रहः | | १-१० । |
| ३८५८२ | उणादिवृत्तिः | | १-६८ । |
| ३८५८३ | उपसर्गबोधकत्वखण्डनम् | | १-४ । |
| ३८५८४ | धातुवृत्तिः | सायणः | १-४० । |
| ३८५८५ | " | " | ३-५, ७-१७७, १७९-२५० । |
| ३८५८६ | काशिकाविवरणपञ्जिका | जिनेन्द्रबुद्धिः | २-६३ । |
| ३८५८७ | काशिकावृत्तिः | | १४२-१६०, १-८०, १-८१, १-९८, १-६०, १-५४ । |
| ३८५८८ | त्वतल्वादार्थः | | १-६ । |
| ३८५८९ | नन्दिकेश्वरकारिका सटीका | | १-५ । |
| ३८५९० | नपदान्त सूत्रक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३८५९१ | पदमञ्जरी | | १-३० । |
| ३८५९२ | परमलघुमञ्जूषा | नागेशः | १-३१ । |
| ३८५९३ | परिभाषाप्रदीपाचिः | | १-२२ । |
| ३८५९४ | परिभाषाभास्करः | भास्करः | १-५० । |
| ३८५९५ | " | " | १-४८ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|---------------|--------------|---------|-------|-----------------|---------------------|--|
| १०९×४२ | १० | ३० | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९६×३ | ६ | ४६ | " | " | १६१६ | पू० | आख्यातान्ता । |
| १०२×४ | ८ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ९८×४२ | ८ | २७ | " | " | १८४६ सा.१७११ | " | |
| ९७×४३ | ७ | २९ | " | " | | " | |
| १०२×३८ | ७ | ३० | " | " | | " | |
| ९५×४२ | ९ | ३२ | " | " | | " | सिद्धान्तपरिचयव्याख्या । |
| ७४×३ | ८ | २७ | " | " | | " | |
| ८६×३२ | ६ | २६ | " | " | १६६१ | पू० | |
| १०२×३७ | ७ | ३६ | " | " | १६४९ | " | |
| ९×३५ | ८ | २९ | " | " | | " | |
| १२७×४७ | ११ | ५२ | " | " | | अपू० | माधवीया । |
| १६×४३ | १२ | ५२ | " | " | | " | " |
| ११२×३४ | १० | ५८ | " | " | | " | न्यासउतिनाचान्तरपु.पञ्चाध्यायस्य चतुर्थ/पादं यावत् । |
| ११×४६ | १२ | ४२ | " | " | | " | तृतीयोऽध्यायः |
| १०१×४५ | ११ | ४० | " | " | | पू० | |
| ९८×४३ | ११ | ४१ | " | " | | " | |
| १११×४ | ९ | ३७ | " | " | १९११ | " | |
| १०३×४४ | ११ | ४४ | " | " | | अपू० | कारिकाव्याख्या अ० १ पा० २ . |
| १०२×४३ | १० | ५० | " | " | | पू० | |
| ११४×४४ | १० | ४९ | " | " | | अपू० | |
| ९७×४२ | १० | ४९ | " | " | १८९० | पू० | |
| १०७×४ | ११ | ४७ | " | " | १९१६ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------|-------------------|--------------------------|
| ३८५९६ | परिभाषेन्दुचन्द्रिका | विश्वनाथः | १-३०, ३७-४९ + ८४ |
| ३८५९७ | परिभाषार्थसञ्जरी | भीमः | १-९, ७-६१ । |
| ३८५९८ | अर्थवत्सूत्रविचारः | | १-५ । |
| ३८५९९ | शब्देन्दुशेखरव्याख्या | | पृ. सं. १-८ । |
| ३८६०० | शब्देन्दुशेखरटीका | | १६ । (गणनया) |
| ३८६०१ | सिद्धान्तकौमुदीटीका ? | | ४ । ,, |
| ३८६०२ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागोजीभट्टः | १-८९, ९१ । |
| ३८६०३ | चारुचरणचातुरी | शिवशर्मा | १-३५ । |
| ३८६०४ | नामि सूत्रादिक्रोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३८६०५ | पद्मञ्जरी | हरदत्तमिश्रः | १-४६, ४६-७३ । |
| ३८६०६ | परिभाषाशिरोमणिः | लालमणित्रिपाठी | १-३३ । |
| ३८६०७ | शङ्करी | | २९-३०, ३२-३७ । |
| ३८६०८ | गदा | वैद्यनाथपायगुण्डे | १-२३ । |
| ३८६०९ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ३३ । (गणनया) |
| ३८६१० | परिभाषेन्दुशेखरदोषोद्धारः | मन्तुदेवः | १-२४, १-७ । |
| ३८६११ | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्राचार्यः | १२-१७, ७२-७३, ७५-९० । |
| ३८६१२ | ” | | १-७४, १०३-११३, १२०-१२४ । |
| ३८६१३ | ” | रामचन्द्राचार्यः | १-२६, २९-३७, ४०-८१ । |
| ३८६१४ | ” | | १-७५ । |
| ३८६१५ | प्रक्रियाव्याकृतिः | कृष्णशेषः | ३९-६०, ६३-९२ । |
| ३८६१६ | व्याकरणग्रन्थविशेषः ? | | १-५, ३२ । |
| ३८६१७ | प्रबोधचन्द्रिका | जयसिंहभूपतिः | १-९ । |
| ३८६१८ | प्रातिपदिकान्तेतिसूत्रविचारः | यागेश्वरशर्मा | १-३, ५ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|---------------|--------------|---------|-------|----------|---------------------|---|
| १२'४×३'९ | ६ | ५७ | दे. ना. | का. | | अपू० | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |
| ९'४×४ | १३ | ४९ | " | " | | " | " |
| ११'५×४'९ | १४ | ४३ | " | " | | पू० | |
| ९'८×४'३ | १३ | ५६ | " | " | | " | अर्थवत्सूत्रस्य । |
| ११'१×४'१ | ९ | ४५ | " | " | | अपू० | कारकप्रकरणस्य । |
| १२'६×४'२ | १३ | ४७ | " | " | | " | " |
| १०'७×४'७ | १३ | ४६ | " | " | | " | अ० १ पा० २ आ० ३ । |
| ९'४×४'२ | ९ | ३७ | " | " | | पू० | सामान्यशब्दसङ्ग्रहः । |
| ११'४×४'५ | ३२ | २२ | " | " | | " | |
| ११'१×४'५ | ९ | ४३ | " | " | | " | काशिकाव्याख्या वा । |
| ९'६×४'५ | ८ | ३६ | " | " | | " | |
| ९'८×४'१ | ९ | ४१ | " | " | | अपू० | परिभाषेन्दुशेखर टी० । |
| ९'८×४ | ९ | ४३ | " | " | | " | " |
| १२'४×४ | १४ | ६० | तेलगू | " | | " | |
| १२'७×४'२ | १३ | ६७ | दे. ना. | " | | पू० ❀ | |
| ९'४×३'५ | ८ | ४१ | " | " | | अपू० | |
| ९'७×३'५ | १० | ३९ | " | " | | " | सुवन्तप्रकरणम् । |
| ८×३'३ | १० | २६ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |
| ८'४×३'६ | १४ | ३२ | " | " | | " | सुवन्तप्रकरणम् । |
| ११'४×३'९ | ९ | ५३ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |
| ९'४×२'३ | ४ | ३० | वङ्ग | " | | " | प्रक्रियाकौमुदी बी०, सन्धिप्रकरणम् । |
| १३'५×५'६ | १३ | ७० | दे. ना. | " | | पू० | प्रतापविनोदइति प्राचीनसूचीपत्रे । समास-विचारः । |
| ४'१×२'२ | ५ | १६ | " | " | | अपू० | |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्वापूर्णे- दिवसः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|------------------|-------|-------|------------------|------------------------|---------------------------------|
| १२९×४२ | ७ | ५३ | दे ना | का | | अपूर्० | वैयाकरणभूषणसार टी० । |
| १०६×४१ | १० | ४० | " | " | | " | अ० १ पा० १ । |
| १०९×४८ | ८ | ३३ | " | " | | पूर्० | अ० १ पा० २ आ० ३ । |
| १२३×३७ | ८ | ५१ | " | " | | " | |
| ११२×५२ | १२ | ३५ | " | " | १८९९ | अपूर्० | कारकप्रकरणमधिकृत्य विचारोऽयम् । |
| १०७×४६ | १० | ४३ | " | " | १७५१ | पूर्० | |
| १०३×३५ | १० | ५४ | " | " | | ॐ | अ० १ पा० १ । |
| १०८×३८ | १३ | ४३ | " | " | | " | प, स्फोटान्तम् । |
| ९६×४८ | १२ | २६ | " | " | | अपूर्० | |
| १२५×३९ | ९ | ५४ | तेलगू | " | | " | |
| ९९×४३ | ९ | २३ | दे ना | " | | पूर्० | सन्धिकडवासा |
| १२८×४९ | १० | ४६ | " | " | | अपूर्० | |
| १३×५ | १० | ४९ | " | " | | " | |
| ९१×३८ | ८ | २४ | " | " | | " | |
| ८९×४ | ८ | २६ | " | " | | " | |
| ९८×४३ | ८ | २६ | " | " | | " | |
| ८४×४ | ८ | २४ | " | " | | " | |
| ८३×३७ | ८ | २६ | " | " | | " | |
| १८×३३ | ६ | ६१ | वङ्ग | " | | " | |
| १०३×४८ | १० | ३९ | " | " | १८८० या १७४५ | " | |
| ९×५५ | ११ | ३२ | " | " | १८९४ या. १७५७ | पूर्० | अख्यातकृदन्तप्रकरणम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|------------------------------|-------------------------------|
| ३८६४० | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामाचार्यः | १-३४ । |
| ३८६४१ | " | रामभद्राश्रमः | १-५०=४५, ४७-५०=५१-७० । |
| ३८६४२ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-१०७ । |
| ३८६४३ | राजादिवृत्तिः | रत्नेश्वरचक्रवर्ती | १-६ । |
| ३८६४४ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागोजीभट्टः | १-३२, ३२-५४ । |
| ३८६४५ | परिभाषेन्दुशेखरटिप्पणी | | १-५, ५-२९, २९-४५ । |
| ३८६४६ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-१८, १-३७ । |
| ३८६४७ | गदा | वैद्यनाथपायगुण्डे | १-१२ । |
| ३८६४८ | परिभाषेन्दुशेखरदोषोद्धारः | मन्युदेवः (मन्तु- देवः ?) | १-३, ५-६६ । |
| ३८६४९ | गदा | वैद्यनाथपायगुण्डे | १-३=(४-६०, ६५, ८१-८३, ८५-९७ । |
| ३८६५० | त्रिपथगा | | ५० (गणनया) |
| ३८६५१ | परिभाषापाठः | | १-३ । |
| ३८६५२ | वाक्यपदीयटीका | हेलाराजः | १-१२८ । |
| ३८६५३ | प्रत्ययलोपेप्रत्ययलक्षणमिति- सूत्रविचारः | | १-९ । |
| ३८६५४ | धातुवृत्तिव्याख्या | सायणः (सायणा- त्मजः) | १-८० । |
| ३८६५५ | श्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-६८, ६८-३४२, ३४२-३४७ । |
| ३८६५६ | प्रक्रियादोषसङ्ग्रहः | | १-१३+४ । |
| ३८६५७ | सारस्वतम् | | ११-३१ । |
| ३८६५८ | " | | १-६३ । |
| ३८६५९ | कविकल्पद्रुमः | त्र्योपदेवः | १-१७ । |
| ३८६६० | श्रौढमनोरमा | | ३९-११३ । |
| ३८६६१ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-४९ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|---------------|--------------|---------|------|------------------|---------------------|--|
| ११२×७ | १४ | ३४ | दे. ना. | का. | १६४३ | पू० | पूर्वार्द्धम् । |
| ११७×५९ | ११ | ३५ | " | " | १९०४ | " | उत्तरार्द्धम् । |
| १०८×४२ | ७ | ३२ | " | " | शा. १७६९ १८२५ | " | |
| १६२×३७ | ६ | ५८ | वज्र | " | | " | राजादिगणपठितशब्दसाधुत्वविचार रूपा । |
| ९६×४ | १० | ३७ | दे. ना. | " | | " | |
| ९८×४१ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| ९८×४१ | १० | ४२ | " | " | | " ❀ | |
| १२३×४५ | १२ | ५८ | " | " | | अपू० | परिभाषेन्दुशेखरटी० । |
| ९५×४ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| १०६×३८ | १० | ४२ | " | " | | " | परिभाषेन्दुशेखर टी० । |
| १०५×४४ | ९ | ३५ | " | " | | " | " " |
| ९९×४३ | १० | ३९ | " | " | १८१७ | पू० | पाणिनिमता नुगाभी । |
| १०९×४७ | ८ | ३० | " | " | | अपू० | प्रकीर्णप्रकाशइति नामान्तरम् । |
| ९५×४२ | १० | ३२ | " | " | | पू० | |
| १११×४९ | ११ | ३४ | " | " | | " | |
| ८९×३८ | ९ | २८ | " | " | १८३२ | " | सिद्धान्तकौमुदीव्याख्या । |
| १०३×३८ | १५ | ५९ | " | " | | अपू० | |
| १०×४४ | १५ | ५४ | " | " | | " | |
| ९७×४७ | ८ | २७ | " | " | | " | आख्यातप्रति यानिरूपणम् । |
| १०१×४५ | ११ | ४२ | " | " | १७५९ | पू० | |
| ९९×४ | १७ | ५२ | " | " | | अपू० | सिद्धान्तकौमुदीव्याख्या । |
| ८९×३८ | ९ | ३२ | " | " | १८३२ | पू० | " वैदिकस्वरप्रकरणमात्रम् । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|---------------|--------------|--------|-------|----------|---------------------|--|
| ८७×३८ | ९ | ३३ | दे.ना. | का. | १८३२ | अपू० | सि० कौ० व्याख्या, कृदन्तमात्रम् । |
| ८९×३७ | ९ | ३० | " | " | | पू० | सि० कौ० व्य.ख्या, तिङन्तमात्रम् । |
| १०६×४५ | ९ | ४४ | " | " | | " | महाभाष्यटी०टी० ! ३ अ० ४ पा० १ आ० । |
| ११२×५१ | १६ | ४६ | " | " | | अपू० | प्रथमाध्यायस्य चतुर्थपादे, आदितः सुप्रिङन्तसूत्रपर्यन्तः । |
| १०८×३६ | १० | ४९ | " | " | | पू० | प्रथमपादे प्रथमाहिकमात्रम् । |
| १०६×४४ | १२ | ३९ | " | " | | अपू० | ३ अ० १ पा० ६ आ० । |
| १०५×४५ | १३ | ४९ | " | " | | पू० | षष्ठाध्यायस्य तृतीयपादः । |
| १०३×४४ | ११ | ३६ | " | " | | अपू० | द्वितीयाध्यायः । |
| १०३×४४ | १२ | ४५ | " | " | | पू० | पञ्चमाध्यायमात्रम् । |
| ११५×४६ | १० | ५१ | " | " | | " | षष्ठाध्यायस्य तृतीयपादे तृतीयमाहिकम् |
| ११४×४७ | ९ | ४५ | " | " | १८५५ | अपू० | सप्तमाध्यायस्य चतुर्थपादे प्रथमाहिकम् |
| ११२×४६ | ११ | ५१ | " | " | | " | सप्तमाध्यायस्य प्रथमपादे प्रथमाहिकम् |
| १०६×४८ | १० | ४२ | " | " | | " | अ० ३-४ । |
| ११२×४६ | १० | ४० | " | " | | " | द्वितीयाध्यायस्य २।३।६० सूत्रं यावत् |
| १२४×४५ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| १०५×३५ | ८ | ३८ | " | " | | " | प्रथमाध्यायः, अन्ते जैमिनिविरचितायां काशिकावृत्तौ, इतिलिखितं विद्यते । |
| १०×४७ | ९ | ३१ | " | " | | पू० | सप्तम्यन्ता । |
| ९×४२ | ७ | २८ | " | " | १८७० | अपू० | |
| ८१×३९ | १० | २८ | " | " | १८३९ | " | |
| ११×५ | ९ | ३८ | " | " | | " | श्रीढमनोरमाटीका । |
| १२×४४ | ९ | ४० | " | " | १७५३ | पू० | आख्यातभेदान्ता । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|--------------------------------|---|
| ३८६८३ | प्राकृतवृत्तिः | | १-१२ । |
| ३८६८४ | प्राकृतचन्द्रिका | कृष्णपण्डितः | १-६८ । |
| ३८६८५ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिभट्टः | १-२३२ । |
| ३८६८६ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-१५७, १-७५, १-१७, १-१४, १-२९ । |
| ३८६८७ | सहाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागोजीभट्टः | १-३३ । |
| ३८६८८ | " | " | १-३६ । |
| ३८६८९ | " | " | १-४८, १-९५ । |
| ३८६९० | " | " | १-२०७, ४२-४४ । |
| ३८६९१ | सहाभाष्यप्रदीपोद्योतनम् | अन्नम्भट्टः | १-३१ । |
| ३८६९२ | सहाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १-५५७ । |
| ३८६९३ | " | कृष्णभट्टः | १-५० । |
| ३८६९४ | परिभाषेन्दुशेखरःसटीकः | नागेशः टी० का० ब्रह्मानन्दः | १-२, २-३९, ३९-५१, ५३-६६, ६६-९८ ९७-९९-२३७ । |
| ३८६९५ | परिभाषाभास्करः | हरिभट्टभास्करः | २-४५ । |
| ३८६९६ | परिभाषाप्रदीपार्चिः | उदयङ्करः | १-११८ । |
| ३८६९७ | दशगणकारिकासतम् | | १-३ । |
| ३८६९८ | तर्कचन्द्रिका | कृष्णभट्टमौनी | १-९, ५४-७३, ७३-७७, ७६-८८ । |
| ३८६९९ | ज्ञापकसमुच्चयः | पुरुषोत्तमदेवः | १-२१ । |
| ३८७०० | गणपाठः | रामकृष्णः | १-१६ । |
| ३८७०१ | अर्थवत्सूत्रक्रोडपत्रम् | | १-८ । |
| ३८७०२ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-२४ । |
| ३८७०३ | " | " | १-२३० । |
| ३८७०४ | " | " | १-५७, ५९ । |

| आकारः | पक्षि-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------|--------------|---------|-------|----------|---------------------|--|
| ११.२×५.५ | ९ | ३२ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९.८×७ | १३ | ३१ | " | " | १९२५ | पू० | |
| ११.७×४.४ | ९ | ४९ | " | " | १८५१ | " | अ० १ पा० १ आ० ९ । |
| १०.७×३.८ | ९ | ४० | " | " | १७५७ | अपू० | |
| १०.३×४.३ | ११ | ४१ | " | " | | " | १ अ०, १ पा०, २ आ० । |
| १०.५×४.४ | ९ | ३५ | " | " | | पू० | १ अ० १ पा० १ आ० । |
| १०.४×४.४ | ११ | ३९ | " | " | | " | पष्टाध्यायस्यचतुर्थापादः, सप्तमाध्यायश्च । |
| १०.५×४.६ | ११ | ४२ | " | " | | अपू० | प्रथमाध्यायस्यः थमपादे नवमाह्निकम् । |
| ११.६×५.२ | १४ | ४४ | " | " | | " | महाभाष्यटीकाटीका । |
| १०.६×४.६ | ११ | ३६ | " | " | | पू० | १, २ अध्यायौ । |
| ९.२×३.७ | ११ | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १२.१×४.७ | ११ | १४ | " | " | | पू० ❀ | टीका-चित्रभा । |
| १०.२×४.४ | १० | ४९ | " | " | | अपू० | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |
| ९.५×४.२ | ९ | ४२ | " | " | | पू० | " |
| १२.३×५ | ११ | ४४ | " | " | | " | |
| ९.८×४.६ | ११ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| ९.७×४.१ | १० | ३८ | " | " | | पू० | |
| १०.५×५.१ | १५ | ४४ | " | " | | " | |
| १३.५×५.१ | १२ | ५५ | " | " | १८७५ | " | |
| ९.९×४.४ | १० | ३४ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका, अ. १, ना. १, आ. १ । |
| ९.९×४.३ | ११ | ४२ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका, अ. १, ना. ३, आ. ९ । |
| ११.२×४.१ | ११ | ५६ | " | " | १७५३ | अपू० | अष्टाध्यायीटीका, अ० ४, पा० ४, आ० १ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|-----------------|--|
| ३८७०५ | शब्दकौस्तुभः | | १-३३ । |
| ३८७०६ | | | १-३४, १-८३ । |
| ३८७०७ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-७२ । |
| ३८७०८ | " | " | १-५१, १-३२ । |
| ३८७०९ | " | " | १-४०, १-७५, ५५-१३७, १०८-१२९ । |
| ३८७१० | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशः | २-८, ८, ९-३५, ३५-४१, ४१-४५, ४५, ४५, ४५-४८, ४८-५५, ५५-६३, ६३-७१, ७१-१४५, १४५-१५४ । |
| ३८७११ | " | नागेशभट्टः | १-८९, ८९-२२२, २२४-२३९ । |
| ३८७१२ | " | " | १-१०, १०-२९, २९-३१, ३१-३९, ३०-३५, ३५-३६, ३६-६९, ६९-७०, ७०-१२८, १२८, १२८-२३३, २४२-२८७ । |
| ३८७१३ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिभट्टः | १-६, ६-२८७ । |
| ३८७१४ | " | | १-२२ । |
| ३८७१५ | " | | ८९-११६ । |
| ३८७१६ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-३२, १-३९, १-३०, १-३३, १-३६, १, १-३३.१-१७, १-५९, १-४५ । |
| ३८७१७ | शब्दकौस्तुभटीका | कृष्णाचार्यः | १-१८ । |
| ३८७१८ | " | " | ३-८, १४-३६ । |
| ३८७१९ | " | | १-२५, २७ । |
| ३८७२० | " | | १-३७ । |
| ३८७२१ | शब्दकौस्तुभविषमव्याख्या | | १-११, २३-४१ । |
| ३८७२२ | षोडशकारिका सटीका | | १-९ । |
| ३८७२३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-११४, ११४-१७३ । |
| ३८७२४ | " | " | १-१३३ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णपूर्ण विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|------------------|---------|-------|-----------------|----------------------|--|
| ११३×३९ | १२ | ६१ | दे. ना. | का. | | अपू० | अष्टाध्यायीटीका, अ० ४, पा० १, आ० ४ । |
| ११४×४ | ९ | ५१ | " | " | १७५२ | पू० | अष्टाध्यायीटीका, अ० ३, पा० १-२, आ० १-३, १-६ । |
| ११३×४ | १२ | ५५ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका, अ० २, पा० ४, आ० २ । |
| ११३×४ | ११ | ४७ | " | " | | " | अ० १ पा० २-४ । |
| ११३×४ | ११ | ५७ | " | " | | " ❀ | अ० १, पा० १ आ० १-९ । |
| १०९×४८ | ११ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| ९५×४२ | १५ | ४८ | " | " | | " | |
| १०८×४८ | १० | ४६ | " | " | १७८० श. १६४५ | " | |
| ९९×४३ | ११ | ४३ | " | " | | पू० | अ० १ पा० १ आ० १-९ । |
| १०१×४१ | १० | ५१ | " | " | | " | अ० १ पा०-१ आ० १ । |
| १०×४१ | १२ | ५० | " | " | | अपू० | अ० १ पा० १ । |
| १०४×४५ | ८ | ४१ | " | " | १९१५ | पू० | अ० १, पा० १, आ० १-९ । |
| १११×४६ | ९ | ४६ | " | " | | " | अ० १ पा० १ आ० ४ मात्रम् । |
| ८३×४३ | ११ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| ९३×४४ | १२ | ४४ | " | " | | " | |
| ११५×४३ | ९ | ३६ | " | " | | पू० | अ० १ पा० १ आ० ३ । |
| ९९×४४ | ११ | ४० | " | " | | अपू० | अ० १ पा० १ । |
| ८९×४ | १२ | ४३ | " | " | | पू० | |
| ९७×४२ | ९ | ३८ | " | " | | " | पूर्वाद्धि मात्रम् । |
| ९४×४२ | १० | ३५ | " | " | | " | तिङन्तमात्रम् । |

| क्र.संख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|--------------------------------------|--|
| ३८७२५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१४० । |
| ३८७२६ | " | " | १-५०, १-५१ । |
| ३८७२७ | प्रौढमनोरमा | " | १२८-१७२ । (=४-४८) |
| ३८७२८ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-१९, २२-३०, ३२-३५, ३९ । |
| ३८७२९ | स्फोटचन्द्रिका | श्रीकृष्णः | १-१३ । |
| ३८७३० | " | " | १-१५ । |
| ३८७३१ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | १-३, ६-१४ । |
| ३८७३२ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ७५ । (गणनया) |
| ३८७३३ | " | | १-२८ । |
| ३८७३४ | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्राचार्यः | १-८०, ८०-१४५ । |
| ३८७३५ | " | " | १-१६३ । |
| ३८७३६ | परिभाषेन्दुशेखरःसटीकः | नागेशः, टी. का. वैद्यनाथपायगुण्डे | १-५१ । |
| ३८७३७ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | " | १-५० । |
| ३८७३८ | नन्दिकेश्वरकारिका सव्याख्या | व्या. का. उपमन्युः | १-४ । |
| ३८७३९ | कारिकाविवेचनं सव्या- ख्योदाहरणम् | | १ ११ । |
| ३८७४० | अव्ययार्थः | | १-५ । |
| ३८७४१ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-७१, १-१९ । |
| ३८७४२ | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामाश्रमाचार्यः | १-५३, १-६५, १-२५ । |
| ३८७४३ | वैयाकरणसूत्रसारः | कौण्डभट्टः | १-९४ । |
| ३८७४४ | धातुपाठः | | १-२५ । |
| ३८७४५ | अष्टाध्यायी | | १-८८ । |
| ३८७४६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१९२, १९२-२१४=२१५-२७०, २७०-३१६, १-१२५, १-६०, १-११७, १-८९, १-१३ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|---------------|--------------|--------|-------|----------|---------------------|---|
| १०'५ × ४'६ | ११ | ४० | दे.ना. | का. | | पू० | उत्तरार्द्धम् । |
| ९'९ × ४'२ | १० | ४२ | " | " | | अपू० | कृदन्तप्रकरणम्, लिङ्गानुशासनप्रकरणञ्च । |
| १०'३ × ४'८ | १७ | ६० | " | " | १७७० | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०'६ × ४'६ | १३ | ५३ | " | " | १८१७ | " | वै० सि० कौ० व्याख्या, स्वरप्रकरणम् । |
| ९'५ × ४'२ | १२ | ४४ | " | " | | पू० | |
| ९'४ × ३'९ | १० | ४३ | " | " | १८५३ | " | |
| ९'३ × ४'२ | १३ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ११'३ × ४ | ७ | २८ | " | " | | " | |
| १०'४ × ४'५ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| ९'९ × ४'३ | १० | २६ | " | " | १६ (?) | पू० | |
| १०'२ × ४'७ | ९ | ३१ | " | " | १६११ | " | सुवन्तान्ता । |
| १३'३ × ५'४ | ८ | ६९ | " | " | | अपू० | टी०-गदा । |
| १३'५ × ५'२ | १२ | ६६ | " | " | १८७४ | " | " |
| ९'१ × ४'७ | १७ | ३३ | " | " | | पू० | व्याख्या-तच्चविमर्शिनी । |
| १०'५ × ४'८ | ९ | ३६ | " | " | | " | तिङ्कृत्तद्धितसमासाथनिरूपणरूपम् । |
| १०'६ × ४'५ | ८ | ४१ | " | " | | " | |
| ९'५ × ५'५ | १२ | २४ | " | " | १९०५ | " | आख्यातकृतप्रक्रिये । |
| ९'६ × ५'६ | १२ | २५ | " | " | १९०५ | " | |
| १०'८ × ४'६ | ७ | ३६ | " | " | १९२१ | " | |
| ११'७ × ४'९ | ९ | ३७ | " | " | १९२३ | " | |
| ११'६ × ४'९ | ७ | ३८ | " | " | १९२२ | " | |
| ११'७ × ५'७ | ७ | ३७ | " | " | १९२२ | " | |

| क्र.संख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|---------------------|-----------------------|
| ३८७४७ | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्रः | ४५-६३, ६६-७२ । |
| ३८७४८ | वैयाकरणभूषणसारटीका | | २-४६, ४६-५४, ५४-१०६ । |
| ३८७४९ | " | | १ ५५ । |
| ३८७५० | वैयाकरणभूषणसारतत्त्व- विवृतिः | रुद्रनाथः | १-३६ । |
| ३८७५१ | वैयाकरणभूषणसारलघु- दपणः | हरिवल्लभः | १-३५, ४४-९६ । |
| ३८७५२ | " | " | १-६३=६४, ८५-१०८ । |
| ३८७५३ | वैयाकरणभूषणसारः | कौण्डभट्टः | १-५२.५२-६५ । |
| ३८७५४ | " | " | १-६८ । |
| ३८७५५ | " | " | १-२१-२१-३१ । |
| ३८७५६ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा- कुञ्जिका | | १-५ + १-४ ७-३५ । |
| ३८७५७ | मनोरमाखण्डनम् | | ३-२७ । |
| ३८७५८ | " | | १-३२, २८ । |
| ३८७५९ | महाभाष्यम् | पतञ्जलिः | १-३७ । |
| ३८७६० | " | " | १-११, १३-६४ । |
| ३८७६१ | " | " | १-२९, ४०-६४ । |
| ३८७६२ | " | " | २०-६५=(६६) ६८-७४ । |
| ३८७६३ | " | " | १-१९, + १ । |
| ३८७६४ | " | " | १२-७२.७२-६४, १-११ । |
| ३८७६५ | महाभाष्यटीका | टी.का.-नारायणः | ४२ । गणनया |
| ३८७६६ | महाभाष्यसिद्धान्तरत्न- प्रकाशः | शिवरामेन्द्रसरस्वती | १-४९, ५६-५० । |
| ३८७६७ | यङ्लुगन्तप्रक्रियाप्रकाशिका | नारायणः । | १, ३-२५, २७ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपि. | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|---------------|--------------|---------|-------|----------|--------------------|--|
| ११'५ × ४'७ | १३ | ५४ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९'२ × ३'९ | ६ | ३६ | " | " | | " | |
| ६'३ × ४'१ | १२ | ३५ | " | " | | " | |
| १२'२ × ४'६ | १४ | ६२ | " | " | | " | |
| १०'१ × ४'२ | ८ | ४२ | " | " | १९०९ | " | |
| १० × ४'२ | ९ | ३९ | " | " | | पू० | आदितो नामार्थनिर्णयान्तः । |
| ९'८ × ४ | ८ | ३२ | " | " | | " | स्फोटवादः । |
| १०'८ × ४'२ | ७ | ३४ | " | " | | " | " |
| १०'५ × ४'५ | १४ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| १०'३ × ४'४ | ११ | ३७ | " | " | | " | |
| १०'१ × ३'७ | ८ | ३८ | " | " | | " | |
| १०'२ × ३'५ | ८ | ४१ | " | " | | " | |
| १०'८ × ४'३ | १४ | ४८ | " | " | | " | अ० ६ पा० १ । |
| १०'६ × ४'३ | ११ | ४० | " | " | | " | अ० २ पा० १-३ । |
| १०'५ × ४'६ | १३ | ५० | " | " | | " | अ० ६ पा० १ अ० ६ तः अ० ६- पा० ४ आ० ४ यावत् । |
| १०'४ × ४'३ | ९ | ४९ | " | " | | " | तृतीयाध्यायः । |
| १०'५ × ४'३ | १० | ५१ | " | " | | " | " |
| १०'९ × ४'६ | १० | ४९ | " | " | | " | अ० २ पा० १-४, अ० ४ पा० १ आ० १ । |
| ६ × ३'७ | ११ | ४१ | " | " | | " | अ० १ पा० २ आ० ३ । |
| ११'४ × ४'६ | १२ | ४८ | " | " | | " | |
| ६'४ × ४'२ | ११ | ४८ | " | " | १८३३ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|---------------------------|--|
| ३८७६८ | रप्रत्याहारखण्डनम् | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-२२ । |
| ३८७६९ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-२४ । |
| ३८७७० | परिभाषेन्दुशेखरचन्द्रिका | विश्वनाथः | १-८७, १-२८, १-३८ । |
| ३८७७१ | " | " | १-२३+१ । |
| ३८७७२ | परिभाषाप्रदीपार्चिः | | १, १-९, १-७+१ । |
| ३८७७३ | पदमञ्जरी | हरदत्तमिश्रः | १-१४३, १४५-१४६ । |
| ३८७७४ | " | " | १-२५० । |
| ३८७७५ | " | " | १-४५, १-७३ । |
| ३८७७६ | " | " | १-१५८ । |
| ३८७७७ | परिभाषार्थसङ्ग्रहः | वैद्यनाथः | १८ । (गणनया) |
| ३८७७८ | श्रौढमनोरमा | | १४ । " |
| ३८७७९ | तत्त्वबोधिनी | | १०, १२-१४+१, २५ । |
| ३८७८० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी सटीका | | ४५ । (गणनया) |
| ३८७८१ | " | | ६ । " |
| ३८७८२ | लघुशाब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-१९८, १-२७, १-३७, १-८४, १-४८, १-४३, ४३-५४, ५४-१०८ । |
| ३८७८३ | " | " | १-१२९ । |
| ३८७८४ | लघुशाब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-६४, ७१-१०२, १२०-१३८, १४४-२२९ । |
| ३८७८५ | " | " | (१=२)-६०, १-२१ । |
| ३८७८६ | " | " | १-१३८ । |
| ३८७८७ | " | " | १-१५१ । |
| ३८७८८ | " | " | १-९४, (=९५-९९) १००-१०१+१, १०२-११२ (=१), २-५०, ५०-६५ । |
| ३८७८९ | प्राकृतप्रकाशः सवृत्तिकः | वररुचिः । वृ.का. भामहः | १-३६ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|---------------|--------------|---------|-------|-----------------------------|---------------------|---------------------------------------|
| ११.२×४ | ११ | ५२ | दे. ना. | का. | १८३३ | पू० | |
| १३.२×५ | १० | ४९ | " | " | | अपू० | |
| ९.९×४.७ | १० | ४० | " | " | | " | |
| १४×५.३ | ११ | ५१ | " | " | | " | |
| ११.२×५.१ | १२ | ५५ | " | " | | " | |
| १०.२×४ | १० | ४१ | " | " | १६१७ | " | काशिकावृत्तिटीका । पञ्चमोऽध्यायः । |
| १०.९×३.९ | ७ | ३१ | " | " | | पू० | काशिकावृत्तिटीका अ०४ पा०४. पर्यन्ता । |
| १०.९×४.१ | ९ | ४४ | " | " | | " | काशिकावृत्तिटीका । अ० ३. पा०२-४ । |
| ११.६×४.४ | ८ | ४२ | " | " | १५८८ | " | अ-२. चरणाः १-४ । |
| १२.७×५ | २० | ५४ | " | " | | अपू० | |
| १२.६×५ | १७ | ४४ | " | " | | " | |
| १२.६×५ | १७ | ४३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० । |
| १२.६×५.२ | २० | ५० | " | " | | " | |
| १२×५.२ | २८ | ८२ | " | " | | " | |
| ९.६×३.६ | ९ | ३६ | " | " | | " | आदितस्तित्कान्तः । |
| १०.१×४.४ | ९ | ३७ | " | " | | पू० | तित्कान्तप्रकरणमात्रम् । |
| ९.४×४.१ | ९ | ४० | " | " | १७८४ | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ९.६×४.६ | ११ | ४० | " | " | १७८४ | पू० | .. भ्वादितो वैदिकप्रक्रियान्तम् । |
| ११.४×४.९ | १२ | ४७ | " | " | १८१२ | " | " सुवन्तान्तम् । |
| ९.५×३.६ | ९ | ४४ | " | " | | " | " आदितः कारकान्तम् । |
| ९.४×३.९ | ११ | ४५ | " | " | १८०५ | " | " सुवन्तान्तम् । |
| ९.९×४.२ | ७ | ३८ | " | " | गन्धवाहपुरा- णाब्दः १८४९ | " | वृत्तिः मनोरमा । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------|-----------------------------|--|
| ३८७९० | प्राकृतप्रकाशः सवृत्तिकः | वररुचिः, वृ०का० भामहः | १-१०, (=११-१४), १५-४२ । |
| ३८७९१ | पट्टकारकं सटीकम् | श्रीवल्लभानन्दः | १-८ । |
| ३८७९२ | पाणिनिसूत्रवृत्त्यर्थसङ्ग्रहः | | ३६ । (गणनया) |
| ३८७९३ | उपसर्गवृत्तिः | | १-२४ । |
| ३८७९४ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-५८ । |
| ३८७९५ | लघुशब्देन्दुचन्द्रिका | विश्वनाथः | १-७५ । |
| ३८७९६ | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-४२, ९१-९४, १०१-१२१, १२५-२२० । |
| ३८७९७ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशः | ३५, ४०-८०, ८२-११२, (=११३), ११४-३८६, (=३८७) ३८८-४६१ । |
| ३८७९८ | महाभाष्यप्रदीपप्रकाशः | नीलकण्ठदीक्षितः | १-६९=(७०), ७१-७८ । |
| ३८७९९ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पुतञ्जलिः, प्र०का. कैयटः | १-६६, ६६-१४०, १४२-२८९, २८९-२९४, २९४-४४५ । |
| ३८८०० | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १६९-२२४ । |
| ३८८०१ | शब्दरत्नभावप्रकाशिका | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-४२ । |
| ३८८०२ | प्रयोगमुखम् | | १-२७, २७-२८, ३०-३४ । |
| ३८८०३ | प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः | विट्ठलाचार्यः | ३०२-५३७, २-१६३, १६३-१८०, १-१९८ । |
| ३८८०४ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | १-१३, १३-१९ । |
| ३८८०५ | पूर्वपक्षसमाधिसङ्ग्रहः | हारिलशर्मा | १-१५, १५-१७ । |
| ३८८०६ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-४७ । |
| ३८८०७ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-२३३, १-५४, १, ५५-७०, ७०-१०९ । |
| ३८८०८ | योगविभागसूत्रसङ्ग्रहः | | १ । |
| ३८८०९ | टीकाग्रन्थविशेषः | | ५ । (गणनया) |
| ३८८१० | अनिट्कारिका सटीका | | १-३ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|---------------|--------------|---------|-------|--------------|---------------------|--|
| १०२×४५ | १० | ३४ | दे. ना. | का. | | अपूर्० | वृत्तिः मनोरमा । |
| ९७×४२ | १७ | ४८ | " | " | | पूर्० | |
| १०७×४६ | १० | ४२ | " | " | | अपूर्० | अ० ३ । |
| १३२×५६ | ६४ | ४९ | " | " | श १२४६ | पूर्० | रभसनन्दीकृतसम्बन्धोद्योत, रुचादिगण- वृत्तिः, परिभाषावृत्तिश्च । |
| १०२×४७ | ९ | ३८ | " | " | | अपूर्० | अजन्तपुंल्लिङ्गप्रकरणम् । |
| ९८×४७ | ९ | ३९ | " | " | | " | लघुशब्देन्दुशेखरटीका । |
| ११२×४२ | ९ | ४४ | " | " | १८११ | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ९८×४३ | ९ | ३४ | " | " | १८४० | " | |
| ११५×५४ | १४ | ४१ | " | " | | पूर्० ❀ | अ० १, पा० ३, आ० १-२ । |
| १३×६७ | १८ | ४४ | " | " | | अपूर्० | |
| ८८×३९ | ९ | २६ | " | " | | " | |
| १०५×४२ | १० | ५६ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टी० टीका । |
| ८५×५१ | १३ | २६ | " | " | | " | |
| १०३×४२ | ८ | ३४ | " | " | १६५९ | " | सुवन्तलकारार्थकृदन्तभागः । |
| १२४×५५ | १० | ४२ | " | " | | पूर्० | रामचन्द्राचार्यकृत्येयमित्यन्तिमपुष्पिका- याम् लिखितमस्ति । |
| १०×४५ | ९ | ३२ | " | " | | अपूर्० | पाणिनीयसूत्रोपरि । |
| ९३×४१ | १० | ३१ | " | " | | पूर्० | उत्तरार्द्धमात्रम् । |
| १०९×४९ | ९ | ४८ | " | " | १७४२ १७४४ | पूर्० ❀ | वै० सि० कौ० टीका । तिङन्तान्ता । |
| १२२×५ | १७ | ६८ | " | " | १८८६ | " | नागोजिभट्टपर्यालोचितो भाष्यसम्मतश्च । |
| ९३×३६ | ९ | ४४ | " | " | | अपूर्० | |
| १२२×४७ | १० | ४७ | " | " | | पूर्० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|---------------------------------------|--|
| ३८८११ | श्रौढमनोरमाटीका | हरिदीक्षितः | १-२७ । |
| ३८८१२ | महाभाष्यं सप्रदीपोद्योतम् | पतञ्जलिः प्र०का० कैयटः उ.का.नागेशः | ४९७-७५६, ७५८-८४८ । |
| ३८८१३ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-२२, १-२७, १-२०, १-२३, १-२४, १-२२, १-१२, १-३९, १-३२ । |
| ३८८१४ | वाक्यपदीयं सटीकम् | टी.का.हरिवृषभः | २-१९=(२०), २१ । |
| ३८८१५ | ” | टी.का.पुण्यराजः | १-१३२ । |
| ३८८१६ | वाक्यपदीयम् | भर्तृहरिः | १-६४ । |
| ३८८१७ | अधीगर्थद्वेषां कर्मणीति- सूत्रार्थविचारः | | १ । |
| ३८८१८ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-१०, १८-२५, (=२६), २७-६५, ७१-९९, ९९-२०३ । |
| ३८८१९ | वाक्यपदीयं सटीकम् | टी.का. हरिवृषभः | १-५२ । |
| ३८८२० | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १-९, ११, १३-२२, २६-६७, ८६-११४ । |
| ३८८२१ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-४, ६-३२ । |
| ३८८२२ | लघुशब्देन्दुशेखरज्योत्स्ना | उदयङ्करः | १-१७५ । |
| ३८८२३ | वैयाकरणभूषणसारदर्पणः | हरवल्लभः | १-१९४ । |
| ३८८२४ | वाक्यपदीयं सटीकम् | टी०का०हेलाराजः | १-२६२ । |
| ३८८२५ | वाक्यपदीयं सटीकम् | टी.का. पुण्यराजः | १-१९१ । |
| ३८८२६ | व्याकरणदीपिका | ओरम्भट्टः | १-७८, १-३८, १-८४, १-६४, १-५४, १-१२२, १-७५, १-६४, १-२२ । |
| ३८८२७ | प्राकृतसंजीवनी | वसन्तराजः | १-७८ । |
| ३८८२८ | प्राकृतचन्द्रिका | शेषकृष्णः | १-४९ । |
| ३८८२९ | स्वरितविवृतिः | इन्द्रदत्तोपाध्यायः | १-४ । |
| ३८८३० | स्थानिवत्सूत्रार्थविचारः | | १-३ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|------------------|---------|-------|---------------|-------------------------|--|
| १०९×४८ | ८ | ३३ | दे. ना. | का. | | पू० | वै० सि० कौ० टी० टी० “णेरणौ” इति सूत्रव्याख्यानरूपा । |
| १३८×५५ | ११ | ७३ | ” | ” | | अपू० | अ०१ पा०२—अ०२ पा० १ पर्यन्तम् । |
| १२४×४६ | १० | ५५ | ” | ” | १८६८- १८६९ | पू० | आष्टाध्यायीटीका, अ०१पा०१ आ०१-९। |
| १३१×५ | १५ | ५७ | ” | ” | | अपू० | टीका प्रकाशाख्या । |
| १०४×३ | ७ | ५२ | ” | ” | | ” | द्वितीयकाण्डम् । |
| १२८×६५ | १४ | ३६ | ” | ” | | पू० | |
| ११३×५ | ८ | ३८ | ” | ” | | अपू० | |
| ११३×५ | १० | ४७ | ” | ” | | ” | वै० सि० कौ० टीका । |
| ११६×४९ | ७ | ४२ | ” | ” | | पू० | टीका प्रकाशाख्या, ब्रह्मकाण्डम् । |
| १०६×४४ | ७ | ४६ | ” | ” | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९६×४७ | १० | ३५ | ” | ” | | ” | |
| ९५×४३ | ९ | ३२ | ” | ” | | पू० | हलन्तपुपुं लिङ्गान्ता । |
| १२३×४७ | ११ | ४७ | ” | ” | १८८४ | ” | स्फोटवादान्तः । |
| १०६×४५ | ९ | ४८ | ” | ” | | ” | टीका प्रकीर्णप्रकाशाख्या, तृतीयकाण्डमात्रम्, क्रियासमुद् शान्तम् । |
| ११७×४९ | ७ | ३४ | ” | ” | | ” | द्वितीयकाण्डमात्रम् । |
| ९५×४२ | ९ | ३५ | ” | ” | | ” | पाणिनिसूत्रवृत्तिर्वा । व्याकरणटीका-ग्रन्थश्च । |
| १०१×४ | १३ | ४० | ” | ” | | ” | प्राकृतव्याकरणवृत्तिः । |
| ९९×४२ | ९ | ४० | ” | ” | १८६० | ” | |
| १०६×४ | ७ | ३४ | ” | ” | | ” | |
| ११६×६३ | २२ | ६५ | ” | ” | | ” | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|--------------|--------------------------|
| ३८८३१ | सुवोधिनी | जयकृष्णभट्टः | १-२२ । |
| ३८८३२ | प्रयोगविधिः | | १-३ । |
| ३८८३३ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-३४ । |
| ३८८३४ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-५७ । |
| ३८८३५ | ” | ” | १-८० । |
| ३८८३६ | परिभाषावृत्तिः | | १-२४ । |
| ३८८३७ | परिभाषार्थोत्तंसः | | १-५, ४-९, ११-१७, २०-३४ । |
| ३८८३८ | परिभाषापाठः | | १-४ । |
| ३८८३९ | ” | | १-४ । |
| ३८८४० | ” | | १-८ । |
| ३८८४१ | क्रोडपत्रम् | | १-१२ । |
| ३८८४२ | धातुकोशः | वोपदेवः | १-१६ । |
| ३८८४३ | प्रौढमनोरमा सशब्दरत्ना | | ३० । |
| ३८८४४ | धातुरूपावली | | ३-६ । |
| ३८८४५ | ” | | ३ (गणनया) |
| ३८८४६ | ” | | १, ३-१० । |
| ३८८४७ | धातुपाठः | | १-२७ । |
| ३८८४८ | ” | | १-१७ । |
| ३८८४९ | तृतीयादिषुभाषितेति सूत्रार्थ- विचारः | | १ । |
| ३८८५० | णेरणौ यत्कर्मत्यादिसूत्रार्थ- सिद्धिः | नारायणः | १-२, २-४=५-१९ । |
| ३८८५१ | टिङ्गाणवितिसूत्रशङ्कासमाधा- नम् | | १ (लम्बमानम्) |
| ३८८५२ | गणरत्नमहोदधिः | | १-१४ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|---------------|--------------|---------|-------|----------|---------------------|--|
| ९२×५ | १३ | ४८ | दे. ना. | का. | १८६६ | पू० | वै०सि०कौ०टीका । वैदिकप्रकरणमात्रम् । |
| ९९×४४ | १० | ४३ | " | " | | " | समासचक्रम् । |
| १२३×४९ | ८ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| १२१×५१ | ११ | ४९ | " | " | | पू० | |
| ११३×४७ | ७ | ३३ | " | " | | अपू० | |
| १०४×४ | ७ | ३७ | " | " | १८४० | पू० | |
| १०७×३९ | ११ | ५१ | " | " | | अपू० | पत्रवासपाश्वे परिभाषेन्दुशेखरक्रोड-पत्रमिति लिखितमस्ति । |
| ८९×३८ | ११ | ३८ | " | " | | पू० | |
| ९८×३८ | ९ | २९ | " | " | १७७९ | " | |
| ९२×२४ | ५ | ४३ | " | " | | " | |
| १०×५१ | १६ | ४७ | " | " | | अपू० | सूत्रपरिभाषार्थविचारात्मकम् । |
| ११×४६ | १२ | ३९ | " | " | | पू० | |
| ९६×४८ | १९ | ३८ | " | " | | अपू० | कारकप्रकरणम् । |
| ७३×४५ | ९ | १६ | " | " | | " | |
| ९३×३६ | १८ | ३७ | " | " | १९३७ | " | |
| ९३×३६ | ११ | ३० | " | " | | " | |
| ८६×४१ | ९ | २६ | " | " | | पू० | |
| ८८×३८ | १० | ३९ | " | " | १८०३ | " | |
| ९९×४६ | १३ | ३७ | " | " | | " | |
| १०८×४ | ११ | ४८ | " | " | | " | |
| २१४×४५ | ४७ | २२ | " | " | | अपू० | |
| ९७×३७ | ८ | ३३ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|-----------------|---------------------------|
| ३८५३ | कविकल्पद्रुमः | | १-२=३-१२, १५ । |
| ३८५४ | अर्थवत्त्वविचारः | | २-३, ५ । |
| ३८५५ | काशिकाविवरणपञ्जिका | | ४ । (गणनया) |
| ३८५६ | एकाचउपदेशेऽनुदात्तादिति- सूत्रं सवृत्तिकम् | | १-२ । |
| ३८५७ | उत्तरपदत्वे चेति वार्तिक- कोडपत्रम् | | १-४, ६-७ । |
| ३८५८ | इकोगुणवृद्धीइतिसूत्रार्थः | रामेश्वरः | १-९१ । |
| ३८५९ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-९२ । |
| ३८६० | अर्थवदितिसूत्रार्थनिर्णयः | मतूरामः | १-१२ । |
| ३८६१ | वैयाकरणभूषणसारः | | ५८ । |
| ३८६२ | कोडपत्रम् | | ४ । (गणनया) |
| ३८६३ | शब्दरत्नटीका | | १-९ । |
| ३८६४ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-२१४ । |
| ३८६५ | ” | | १५-५१ । |
| ३८६६ | शाब्दबोधप्रक्रिया | | १-४ । |
| ३८६७ | समासचक्रम् | | १-८ । |
| ३८६८ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-९, ९ । |
| ३८६९ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | ४० । (गणनया) |
| ३८७० | षट्कारकविरचनम् | वल्लभानन्दः | १-४० । |
| ३८७१ | स्यादिप्रक्रिया | | १-४, ६-१५, २६-४१, ४३-६३ । |
| ३८७२ | अष्टाध्यायीवार्तिकम् | कात्यायनः | १-३८ । |
| ३८७३ | वाक्यपदीयं सटीकम् | टीका. हरिवृषभः | १-६, १-४९ । |
| ३८७४ | वैयाकरणभूषणम् | कोण्डभट्टः | १ ४०१ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|---------------|--------------|--------|-------|----------|---------------------|---|
| १० × ३८ | १३ | ४३ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९५ × ३६ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| १० × ३५ | ९ | ४६ | " | " | | " | "मिश्रञ्चानुपसर्गमसन्धौ" इति सूत्रस्य । न्यास इति नामान्तरम् । |
| १३६ × ५२ | १० | ५५ | " | " | | पू० | काशिकात् उद्धृतोऽशः । |
| ११४ × ४६ | १२ | ५७ | " | " | | अपू० | |
| ११५ × ५४ | १० | ४७ | " | " | | पू० | |
| ८३ × ३७ | ७ | २६ | " | " | | " | |
| ११४ × ४७ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| ९३ × ४४ | ९ | ४३ | " | " | | अपू० | |
| १२४ × ४६ | १२ | ५४ | " | " | | " | |
| १२३ × ४७ | १६ | ६७ | " | " | | " | व० सि० कौ० टी० टी० टीका । |
| १०७ × ४८ | १० | ३५ | " | " | | पू० | अष्टाध्यायीटीका । अ. १ पा. १ आ. ७ पर्यन्त |
| ९८ × ४४ | ११ | २९ | " | " | | अपू० | " अ. १ पा १ आ. ८ । |
| ११७ × ४२ | ११ | ४३ | " | " | | " | |
| ६८ × ४४ | १० | २२ | " | " | १८९३ | पू० | |
| ९६ × ४४ | १० | ४३ | " | " | | अपू० | अभिनवचन्द्रिका । हलन्तपुल्लिङ्गकरणः । |
| ११३ × ४५ | २१ | ७७ | " | " | | " | |
| ११४ × ३८ | ६ | ३२ | " | " | | पू० | |
| ८४ × ३५ | ८ | ३० | " | " | | अपू० | |
| १० × ४३ | ९ | ५१ | " | " | | पू० | |
| १० × ४४ | १२ | ४५ | " | " | १८८० | " | ब्रह्मकाण्डमात्रम् । |
| ९४ × ५२ | ७ | २४ | " | " | १८४८ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------|-------------------|--|
| ३८८५ | स्वरप्रक्रिया | रामचन्द्रशेपः | १-६, ५-१४० । |
| ३८८६ | स्वरप्रक्रियान्याख्या | ” | १ ७९ । |
| ३८८७ | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्रः | १-१०३ । |
| ३८८८ | पाणिनिसूत्रन्यायः | | १-४४, ४६-७८, ८०-८१ । |
| ३८८९ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ३-१६ । |
| ३८९० | ” | | १-१०, १०-३४, ३६-४१ । |
| ३८९१ | ” | | ५८ । (गणनया) |
| ३८९२ | ” | | २-२६ । |
| ३८९३ | ” | | १-५५ । |
| ३८९४ | ” | | १-४१ । |
| ३८९५ | त्रिपथगा | राघवेन्द्राचार्यः | १-५४ । |
| ३८९६ | अष्टाध्यायी | | १-५३ । |
| ३८९७ | ” | | १-१७ । |
| ३८९८ | आख्यातवादः | श्रीकृष्णभट्टः | १-६ । |
| ३८९९ | उणादिवृत्तिः | उज्ज्वलदत्तः | १ । |
| ३९०० | अनिट्कारिका | | १-५ । |
| ३९०१ | अष्टाध्यायी | | ५०-१११ । |
| ३९०२ | ” | | १-१६० । |
| ३९०३ | ” | | १-१८, २०-५० । |
| ३९०४ | ” | | १-४१ । |
| ३९०५ | धातुवृत्तिः | सायणः | १-१८३, १८३-२५१, १-८३ । |
| ३९०६ | काशिका | | १-३१, १-२२, १-३४, १-४८, १-४०, १-५९, १-३६, १-३० । |
| ३९०७ | लिङ्गवृत्तिः | वररुचिः | १-१२ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आज्ञाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|-------------------|------------------|---------|--------|----------|-------------------------|-----------------------------------|
| ११३×५१ | ९ | २८ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ११४×५२ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| १०४×४५ | ९ | २८ | " | " | १६६४ | अपू० | |
| ९६×४१ | ७ | २५ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| १२८×४१ | ७ | ६१ | " | " | | " | |
| १०×३ | ७ | ३८ | " | " | | " | |
| १०७×४५ | ९ | ४५ | " | " | | " | ३७ परिभाषातः पू६ परिभाषां यावत् । |
| १०८×४५ | ११ | ३९ | " | " | | " | |
| ९५×४ | १० | ३४ | " | " | | पू० | |
| १०८×४६ | ११ | ३९ | " | " | | " | |
| १०८×४६ | ११ | ४९ | " | " | | " | परिभाषेन्दुशेखरव्याख्या । |
| १०४×४४ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| ९२×३५ | ३ | १७ | " | " | | अपू० | |
| ९६×४९ | १४ | ४२ | " | " | | पू० | |
| ९६×४२ | १० | २७ | " | " | | अपू० | |
| ७८×३६ | १० | २३ | " | " | १७२७ | पू० | |
| ९५×४२ | ७ | २६ | " | " | १८६८ | अपू० | |
| ६२×४७ | १० | १४ | " | " | | " | |
| ८६×३५ | ८ | २४ | " | " | | " | |
| ९९×४२ | १० | ३४ | " | " | १८२७ | पू० | |
| ११×४५ | ९ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| १३२×४६ | १५ | ६० | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| १०४×४८ | १५ | ४५ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्र संख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|------------------------------------|---|
| ३८८९८ | व्याख्यानप्रक्रिया | शशिदेवः | १-८ । |
| ३८८९९ | कल्पलताटीका | भवनाथः | १-४९ । |
| ३८९०० | स्फोटतत्त्वम् | कृष्णद्विवेदः | १-१५ । |
| ३८९०१ | शब्दवोधप्रक्रिया | रामकृष्णः | १-९ । |
| ३८९०२ | शब्दरत्नभ वप्रकाशिका | वैद्यनाथः | १-१५२, १५२-१८३=१८४-२१८, २२० २३१, २३१-२३६, २३८-२४८ । |
| ३८९०३ | शब्दकौस्तुभतात्पर्यम् | | १-२१, २१-२२, २२-३८ । |
| ३८९०४ | सारस्वतलघुभाष्यम् | रघुनाथः | १-८३, ८५-१०२, १-५६ । |
| ३८९०५ | सूक्तिरत्नाकरः | शेषनारायणः | १-१३९, १३९-१६३, १-५२, ५२-१७२, १-४०, १-३५, ३५-४५, ४५ १८८= १८९-३४२, १-४१, १ ११९, १, ३-३३, १-२०+४ । |
| ३८९०६ | धातुरूपावली | | २४-४३ । |
| ३८९०७ | क्रोडपत्रम् | | ३ । (गणनया) |
| ३८९०८ | नन्दिकेश्वरकारिका सटीका | नन्दिकेश्वरः । टी० का० उपमन्युः | १-४ । |
| ३८९०९ | धातुपाठः | | १-१०, १२-२८, ३४-४४, ४८-५१, ५३-७६ । |
| ३८९१० | ” | | १-११ । |
| ३८९११ | धातुरत्नमञ्जरी | रामसिंहवर्मा | ३-४, ६-२०, २५-४०, ४२-४७ । |
| ३८९१२ | ” | ” | १-२८ । |
| ३८९१३ | धातुरूपावली | | १-१२ । |
| ३८९१४ | ” | | ६ । (गणनया) |
| ३८९१५ | ” | | ३-३९ । |
| ३८९१६ | परिभाषेन्दुशेखरशिरोमणिः | | १-७५ । |

| आकारः | पंक्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|-------------------|------------------|--------|-------|-----------------|-------------------------|--|
| १३'२×५'२ | ११ | ४४ | दे.ना. | का. | | पू० | |
| ११'७×४'७ | ९ | ३७ | " | " | १६५० | " | पल्लवाख्या । श्रीनगरकोटाधिपतिमहाराज माणिक्यचन्द्रकारिता । |
| ९'१×३'९ | ९ | ३२ | " | " | १७२५ | " | |
| १०'६×५ | १९ | ४१ | " | " | | " | |
| १३'५×५'४ | १५ | ६९ | " | " | १८७५ | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० टीका ! |
| १०'३×४'८ | ११ | ३२ | " | " | १८८४ | पू० | अष्टाध्यायी टी० टी० । प्रथमपादस्य सप्तमाहिकान्तम् । |
| १०'५×४'३ | ८ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| १०×४'३ | १६ | ४६ | " | " | १७७३ | " | महाभाष्यटीका । |
| ९'५×४'४ | ७ | ३१ | " | " | | " | |
| ९'६×४'८ | १५ | ५१ | " | " | | पू० | "ननिद्धारणे" इतिसूत्रस्य । नवर्थवि- चारश्च । |
| १०'४×५'१ | १६ | ३५ | " | " | | " | टीका तत्त्वविवरणी । प्रत्याहारसूत्रान्ता, |
| १०'५×३'७ | ८ | २९ | " | " | | अपू० | |
| ९'८×४'२ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| ८'७×३'५ | ८ | १३ | " | " | | " | |
| १०'१×४'५ | १२ | ३१ | " | " | १९०१ | पू० | |
| ९'३×४'३ | ७ | २४ | " | " | | अपू० | |
| ९'२×४'३ | ९ | २५ | " | " | | " | |
| ७'४×३'८ | ७ | २५ | " | " | | " | |
| १०'८×४'८ | ७ | ३१ | " | " | १९१५ श. १७८० | पू० | किरीट इतिनामान्तरम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|--------------------------|---------------------------------------|
| ३८९१७ | वैतन्त्र्यसूत्रपरदर्पणः | हरिकल्लभः | १-१९३ । |
| ३८९१८ | प्राकृतसूत्रम् | | १-३ । |
| ३८९१९ | प्राकृतप्रकाशः सवृत्तिकः | वररुचिः । वृ०का०भामहः | १-१८ । |
| ३८९२० | कातन्त्रसूत्रम् | | २-५२ । |
| ३८९२१ | सारस्वतप्रक्रिया | | १-५५ । |
| ३८९२२ | स्वरितवृत्तिः | इन्द्रदत्तोपाध्यायः | १-२ । |
| ३८९२३ | पाणिनिसूत्रव्याख्या | | ३-५३ । |
| ३८९२४ | अष्टाध्यायी | | १-८६ । |
| ३८९२५ | " | | १-२१ । |
| ३८९२६ | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १-२८०, २८०-२९४, २९४-२९७= २९८-३४३ । |
| ३८९२७ | " | " | १-१२३, १२५-२२५ । |
| ३८९२८ | प्रबोधचन्द्रिका | | १-२० । |
| ३८९२९ | प्रयोगविवेकसङ्ग्रहः | वररुचिः | १-२३ । |
| ३८९३० | " | " | १-२४ । |
| ३८९३१ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ७२-११० । |
| ३८९३२ | प्रौढमनोरमा | | १-२०, २२, २४-३९ । |
| ३८९३३ | " | | २७-३७, ४४, ४८, ५०-५१, ५३-१०१ । |
| ३८९३४ | " | | १-५१, ५१-६४, ६४-७०, २५-४९ । |
| ३८९३५ | " | | १-२३ । |
| ३८९३६ | तत्त्वबोधिनी | | १-१८ । |
| ३८९३७ | प्रौढमनोरमा | | १-७, ७-२७ । |
| ३८९३८ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-२६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ति- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|-----------------|-------------------------|--|
| १२३×४८ | ११ | ५६ | दे.ना. | का. | १८५८ | पू० | |
| ६६×४४ | ११ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १३५×५०४ | १२ | ५७ | " | " | १८७६ श० १७४१ | पू० | वृत्तिर्भनोरमा । |
| ८६×३८ | ८ | ३५ | " | " | १५२१ | अपू० | |
| ६७×५२ | ७ | २६ | " | " | | " | |
| ११४×४७ | ८ | ३७ | " | " | | पू० | |
| १०५×३५ | ७ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ६६×४५ | ८ | २७ | " | " | | पू० | |
| १०५×४४ | ८ | ३७ | " | " | | अपू० | |
| १२५×५ | ११ | ४५ | " | " | | पू०* | सिद्धान्तकौमुदीटीका । पूर्वार्द्धम् । |
| ६७×४७ | ११ | २८ | " | " | १७३६ | अपू० | सिद्धान्तकौमुदीटीका । |
| १०२×४४ | ८ | ३३ | " | " | १८८२ | पू० | |
| १२४×४४ | ८ | ४८ | " | " | १८०४ | " | तृतीयपटलान्त । |
| ६८×३१ | १० | ४७ | " | " | १७६५ | " | द्वितीयपटलान्तः । |
| १२६×४८ | १० | ५८ | " | " | | अपू० | |
| १११×४८ | ११ | ४२ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । तिङन्तप्रकरणम् । |
| १०१×४२ | ११ | ३७ | " | " | | " | " |
| १०१×४४ | ८ | ३३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । अव्ययान्ता । |
| ६५×४२ | ८ | २१ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । कारकप्रकरणम् । |
| १०१ × ३८ | १२ | ४८ | " | " | | " | सिद्धान्तकौमुदीटीका । |
| ६८×४३ | १० | ३७ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| ११४×४६ | ११ | ४७ | " | " | | पू० | वै० सि० कौ० टीका । वैदिकप्रक्रिया । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रांख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|------------------------------|--|
| ३८६३६ | प्रौढमनोरमाकुचमर्दनम् | जगन्नाथः (पण्डितराजः) | १-४४ । |
| ३८६४० | प्रौढमनोरमाटीका | | १-५, ५-२१, २३-२८ । |
| ३८६४१ | प्रौढमनोरमा सटीका | | १३-१४ । |
| ३८६४२ | प्रौढमनोरमाटीका | | १-१२ । |
| ३८६४३ | " | | १, २-११+१ । |
| ३८६४४ | बृहच्छब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-२४५, २४५-२=४+१ । |
| ३८६४५ | प्रौढमनोरमाव्याख्यानम् | | १-२, ४-२७ । |
| ३८६४६ | प्रौढमनोरमा सटीका | | १-१०, १२ । |
| ३८६४७ | शब्दरत्नम् | | १-३५+१, ३७-६३ । |
| ३८६४८ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-७ । |
| ३८६४९ | " | वरदराजः | १३-३४ । |
| ३८६५० | प्रौढमनोरमाखण्डनम् | चक्रपाणिः | १-७, ९-१५ । |
| ३८६५१ | प्रौढमनोरमा सशब्दरत्ना | | १-४, १-१६+१, १९४-१९८+१ । |
| ३८६५२ | " | | २९-७५ । |
| ३८६५३ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जलिः । प्रः का०-कैयटः | १-३५, १-११, १-१७, १-२०, १-२४, १-११, १३-१८ । |
| ३८६५४ | " | " | १-४७ । |
| ३८६५५ | " | " | १-१८, २३-५५ । |
| ३८६५६ | महाभाष्यम् | | १-७, १-३+१ । |
| ३८६५७ | " | पतञ्जलिः | १-६१ । |
| ३८६५८ | अदागमपरिभाषाविचारः | | १-५ । |
| ३८६५९ | येननाप्रःप्रइति परिभाषा- विचारः | | १-९ । |
| ३८६६० | "हलन्त्यम्" सूत्रविचारः | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| ६०६४६ | ११ | ४२ | दे. ना. | का. | १८५३ | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| १०४४३ | १२ | ४८ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । कारकप्रकरणम् । |
| ६०६५१ | १४ | ३८ | " | " | | " | |
| ६०७४३ | १२ | ५७ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ६०८४३ | ११ | ५० | " | " | | " | " |
| १२५४८ | ११ | ५० | " | " | | पू० | प्रौढमनोरमाटीका । विभक्त्यर्थान्तम् । |
| ६०७४२ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| १०४५ | १६ | ४४ | " | " | | " | |
| ६०८५१ | ११ | २७ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ६०१४३ | १० | ३३ | " | " | | पू० | कारकप्रकरणम् । |
| ७०४३१ | १० | ३८ | " | " | | अपू० | |
| १००७४५ | ६ | ४८ | " | " | | " | |
| ११५४८ | १३ | ५० | " | " | | " | |
| ११४४६ | ६ | ५० | " | " | | " | |
| १२३४६ | १२ | ६२ | " | " | | " | अ० १ पा० १ आ० १-७ । |
| १३६५५ | १३ | ७४ | " | " | १९२२ | पू० | अ० १ पा० १ आ० ८-६ । |
| १३६५३ | १० | ७२ | " | " | | अपू० | अ० १ पा० २-३ । |
| १३८५४ | १३ | ६८ | " | " | | पू० | अ० १ पा० ४ आ० १-२ । |
| ३८५४ | १० | ५० | " | " | १९२४ | " | चतुर्थाध्यायः । |
| १००७४३ | ११ | ५१ | " | " | | अपू० | |
| १०६४३ | ८ | ४६ | " | " | | " | |
| ६५४६ | ११ | ३६ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|---|------------------------------|
| ३८६६१ | स्फोटचन्द्रिका | कृष्णभट्टः | १-१४ । |
| ३८६६२ | स्फोटनिरूपणम् | | १-७ । |
| ३८६६३ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-५०, १-२७ । |
| ३८६६४ | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | ५७-६८, ६१-६७ । |
| ३८६६५ | वै० सि० कौमुदीविलासः | भास्करः | १ । |
| ३८६६६ | मनोहरा | | ३-३७ । |
| ३८६६७ | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १७०-२३३ = २३४-२७६ । |
| ३८६६८ | " | | १-१४० । |
| ३८६६९ | " | | ५३-१८८ । |
| ३८६७० | महाभाष्यप्रदीपोद्योत | नागेशः | १-७१, १-१३, ९-५३, १-४४ । |
| ३८६७१ | महाभाष्यं सप्रदीपोद्योतम् | पतञ्जलिः । प्र० का० कैयटः उ० का० नागेशः | १-१६६, १-१६६, १-१५२, १-१३६ । |
| ३८६७२ | महाभाष्यप्रदीपोद्योत | नागेशः | १-२७४ । |
| ३८६७३ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जलिः । प्र० का० कैयटः | १-१७७, १-१६७, १-१०२ । |
| ३८६७४ | क्रोडपत्रम् | | २-३ । |
| ३८६७५ | शब्दकौस्तुभटीका | कृष्णमित्रः | १-८, १०-२५, २५-३५ । |
| ३८६७६ | " | " | १-८, १०-१६, १६-३४ । |
| ३८६७७ | " | कृष्णाचार्यः | १-२८ । |
| ३८६७८ | " | | १-३, २-४ । |
| ३८६७९ | शब्दकौस्तुभवृत्तिः | | २ । (गणनया) |
| ३८६८० | वैयाकरणभूषणसारटीका | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------|----------------|--------------|---------|-------|----------------------|--------------------|---|
| १२०४५ | १० | ४१ | दे. ना. | का. | १८(?) | पू० | |
| ८०४१ | १२ | ४१ | " | " | | अपू० | |
| १२२४६ | ११ | ५३ | " | " | | पू० | सिद्धान्तकौमुदीटीका । स्वरवैदिक-प्रकरणमात्रम् । |
| १३५८ | १४ | ५१ | " | " | | अपू० | " |
| ८०४२ | १० | ३६ | " | " | | " | " |
| १२४४६ | ११ | ५२ | " | " | | " | " |
| १०५२ | १३ | ३६ | " | " | १८३८ | " | सिद्धान्तकौमुदीटीका । तद्धितप्रकरणम् । |
| ८०५१ | १० | २८ | " | " | | " | सिद्धान्तकौमुदीटीका । कारकसमास-प्रकरणे । |
| १०५१ | १२ | ४६ | " | " | | " | सिद्धान्तकौमुदीटीका । सुवन्तप्रकरणम् । |
| १३४५१ | १२ | ६६ | " | " | १८६४ | " | ६-८ अध्यायाः । |
| १३३५२ | १२ | ५६ | " | " | १८६६ १८६७ १८६८ | पू० | २-५, अध्यायाः । |
| १३२४५ | १२ | ४८ | " | " | १८६६ | " | प्रथमाध्यायः । |
| १२८४७ | १२ | ५६ | " | " | १८६३ | अपू० | अ० १, ६, ७ । |
| ८८४३ | ११ | ४३ | " | " | | " | सर्वादीनिर्दानामानीतिसूत्रम् । |
| १०१४३ | ८ | ३२ | " | " | | " | टीका भावप्रदीपः (८ आ०) । |
| १०४४ | ११ | ४० | " | " | १८४५ | " | टीका भावप्रदीपः । अ० १, पा० १, आ० ९ |
| १०४४ | ११ | ३४ | " | " | | " | (आ० ५) । |
| ८०४३ | १३ | ४५ | " | " | | " | अष्टाध्यायी टी० टीका । |
| ८८४३ | ८ | ३३ | " | " | | " | |
| ८८४२ | ११ | ३८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|-----------------|--|
| ३८६८१ | क्रोडपत्रम् | | १ । |
| ३८६८२ | शब्दकौस्तुभटीका | कृष्णाचार्यः | १-२१, २३ ३५, ३५-४० । |
| ३८६८३ | " | | १-२१ । |
| ३८६८४ | विपमा | | १-५ । |
| ३८६८५ | शब्दकौस्तुभः | | २७, २६-३४, ३६-३७ + १ । |
| ३८६८६ | " | | १-२१ । |
| ३८६८७ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-२२ । |
| ३८६८८ | " | | १-१०, ६-१०, १४-१७, २-३५ । |
| ३८६८९ | " | | १-२ + १ । |
| ३८६९० | " | | १-२६ । |
| ३८६९१ | " | | १-१२ । |
| ३८६९२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | (१-२) १३-१४, १७-४०, ४०-४२, ४६, ४६-४८ । |
| ३८६९३ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-११७, १-५, ७-६, ६-२६, २८-६६ । |
| ३८६९४ | " | | १-१२१ । |
| ३८६९५ | " | | १-८३ । |
| ३८६९६ | " | | १ । (गणनया) |
| ३८६९७ | " | | १-३, ५-२८, ३०-४५, ५६-११४ । |
| ३८६९८ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-१४० । |
| ३८६९९ | " | " | १-१५६ । |
| ३८७०० | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | १-४, ७-१६ । |
| ३८७०१ | प्रातिपदिकार्थसूत्रविचारः | | १ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|------|--------------|-------------------------|----------------------------------|
| ६'८'४'२ | १० | ३६ | दे. ना. | का. | | अपू० | दादेर्धातोर्घ इति सूत्रस्य । |
| १०'१'४'३ | १० | ३७ | " | " | | " | अष्टाध्यायी टी० टीका । |
| ६'६'४'२ | ८ | ३८ | " | " | | " | " |
| १०'४'४ | १३ | ३६ | " | " | | " | शब्दकौस्तुभव्याख्या । |
| १०'४'२ | ११ | ३६ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| ८'८'४'२ | १० | ३८ | " | " | | " | " १ अ०, १ पा०, ६ आ० । |
| ६'६'४'३ | १० | ३४ | " | " | | " | " १ अ०, १ पा० । |
| १०'४'२ | ६ | ३१ | " | " | | " | " |
| १०'४'४'६ | १२ | ६७ | " | " | | " | " १ अ०, १ पा०, १ आ० । |
| १२'३'४'६ | ११ | ४१ | " | " | | " | " १ अ०, १ पा०, ८ आ० । |
| १२'१'५ | ११ | ४१ | " | " | | पू० | " १ अ०, १ पा०, ७ आ० मात्रम् । |
| ११'५'४'२ | ११ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| १२'२'४'४ | ८ | ५१ | " | " | १६०२ १६०६ | पू०* | उत्तरार्द्धम् । |
| १०'५'१ | ६ | २७ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |
| १०'६'४'६ | ११ | ३२ | " | " | | " | " |
| १०'४'७ | १४ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| ११'५'४'६ | १० | ४१ | " | " | | " | उत्तरार्द्धम् । |
| १०'३'४'६ | १० | ३६ | " | " | १८०६ | पू० | पूर्वार्द्धम् । |
| १२'५'४'४ | ६ | ४७ | " | " | १६०६ | " | " |
| ६'३'४'२ | १० | २६ | " | " | १८८३ | अपू० | |
| ६'४'४'२ | १६ | ४१ | " | " | | " | |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|--------------|--------|-------|----------|---------------------|---|
| १११×४५ | १० | ४४ | दे.ना. | का. | १७१६ | पू० | सिद्धान्तकौमुदीव्याख्या । तिङन्ता- दारभ्य स्वरवैदिकप्रकरणान्ता । |
| ११३×४२ | १२ | ४३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० व्याख्या । कृदन्तमात्रम् । |
| १०६×४२ | १२ | ३८ | " | " | | " | " तिङन्तमात्रम् । |
| १०५×४१ | ८ | ३४ | " | " | १७२३ | अपू० | " पूर्वार्द्धम् । |
| १०६×४५ | २८ | २५ | " | " | | पू० | |
| ६८×४३ | ६ | ३६ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । तिङन्तप्रकरणम् । |
| १०×४३ | १० | ४१ | " | " | | " | " |
| ६८×४३ | १० | ४६ | " | " | | " | " |
| ६८×४४ | १० | ३८ | " | " | | " | " |
| ६८×४३ | १० | ३३ | " | " | | " | " |
| ६७×४३ | ६ | ३४ | " | " | | " | " |
| ६६×४३ | ६ | ३८ | " | " | १८५८ | पू० | |
| ८५×४३ | ६ | ३५ | " | " | | " | |
| ६५×४६ | १३ | ४२ | " | " | | अपू० | पञ्चमीकारकांशं यावत् । |
| १०५×४५ | ११ | ४५ | " | " | | पू० | स्फोटवादान्तः । |
| १०८×४४ | ६ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १२३×४४ | ६ | ५३ | " | " | १६०४ | पू० | स्फोटवादान्तः । |
| ८६×३६ | १२ | ४२ | " | " | | " | क्रियद्भूषणकारिकाविवेचनात्मकम् । |
| १०७×४२ | १२ | ४५ | " | " | १५६२ | अपू० | |
| ६८×४३ | १२ | ४५ | " | " | | " | |
| ६७×४२ | ८ | ३१ | " | " | | " | |
| ६६×३६ | ७ | ३३ | " | " | | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|--------------------|------------------------|
| ३६०२४ | परिभाषेन्दुशेखरविवृतिः | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-१२, १-६, १-२०, १-८ । |
| ३६०२५ | परिभाषार्थमञ्जरी | भीमः | १-३६ । |
| ३६०२६ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ६ । |
| ३६०२७ | परिभाषेन्दुशेखरविवृतिः | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १+१ । |
| ३६०२८ | परिभाषार्थमञ्जरी | भीमः | १-४१ । |
| ३६०२९ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-७७ । |
| ३६०३० | " | " | १-५१ । |
| ३६०३१ | परिभाषापाठः | | १-३, ५ । |
| ३६०३२ | " | | १-४ । |
| ३६०३३ | वै० सि० परमलघुमञ्जूषा | नागेशः | १-३४ । |
| ३६०३४ | " | " | १-३७ । |
| ३६०३५ | लघुशब्देन्दुशेखरदोषोद्धार | मन्नूदेव . | १-२८ = ३६, ४० - ७० । |
| ३६०३६ | चिदस्थिमाला | | १-७१ । |
| ३६०३७ | लघुशब्देन्दुशेखरज्योत्स्ना | उदयङ्करः | १-३६ । |
| ३६०३८ | शब्दरूपावली | | २-८ । |
| ३६०३९ | " | | १-२१, २३-२४, ४३-५२ । |
| ३६०४० | " | | २-८ । |
| ३६०४१ | " | | २-८, १० १२ । |
| ३६०४२ | " | | १-१० । |
| ३६०४३ | " | | १-२० । |
| ३६०४४ | शब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-७४ । |
| ३६०४५ | " | | १-२४ । |
| ३६०४६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- विलासः | भास्करः | १-२६, १-५४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|--|
| ८'७x५ | १३ | ४० | दे. ना | का. | | अपू० | गदा । |
| ८'८x४'८ | १० | २८ | " | " | | " | |
| ८'७x४'८ | १३ | ३८ | " | " | | " | |
| १०'१x४'५ | ८ | ३६ | " | " | | " | गदा । |
| ८'७x५ | ११ | ३५ | " | " | | " | |
| १०x४'५ | ८ | ३८ | | | १८८० | पू० | |
| ८'७x४'८ | ११ | ३६ | " | " | १८५२ | " | |
| ७'२x३'२ | १० | २५ | " | " | | अपू० | |
| ८'८x३'४ | १० | ३६ | " | " | | पू० | |
| १२'५x४'६ | १० | ५१ | " | " | १८७० | " | |
| १२'५x४'४ | ८ | ४८ | " | " | १८०४ | " | |
| १२'७x४'८ | ८ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| १२'८x४'८ | १० | ५० | " | " | | " | लघुशब्देन्दुशेखरटीका । परिभाषा- प्रकरणान्ता । |
| ८'८x४'३ | ८ | ३५ | " | " | | " | |
| ८'६x४'८ | ८ | ३४ | " | " | | " | |
| ८x४'३ | ८ | २२ | " | " | | " | |
| ७x४'३ | १३ | २६ | " | " | | " | |
| ७'४x३'८ | ७ | २१ | " | " | | " | |
| ८x४'२ | ८ | २४ | " | " | | " | |
| ८'६x३'३ | ७ | २२ | " | " | | पू० | |
| ८'८x५ | १२ | ४४ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ८'७x५ | ११ | ३८ | " | " | | " | |
| १०x४'३ | ११ | ३८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|--------------|-------------------|
| ३६०४७ | शब्दकौस्तुभटीका | | १-४ । |
| ३६०४८ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-६७, १-६६ । |
| ३६०४९ | प्रक्रियाकौस्तुभटीका | रामचन्द्रः | १-१०१ । |
| ३६०५० | वैयाकरणभूषणसारदर्पणः | | १-२२ । |
| ३६०५१ | वैयाकरणभूषणसारविवृतिः | रुद्रनाथः | १-५ । |
| ३६०५२ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-४० । |
| ३६०५३ | " | " | १-२४ । |
| ३६०५४ | " | " | १, ४१-४६ । |
| ३६०५५ | " | " | १६५-३०६ । |
| ३६०५६ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ३३०-३३६, १-१८ । |
| ३६०५७ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | १-१७ । |
| ३६०५८ | " | वरदराजः | १-३५, ३८-७६ । |
| ३६०५९ | " | " | १-८२ । |
| ३६०६० | " | | १-२६ । |
| ३६०६१ | " | | १-२ । |
| ३६०६२ | " | | १८-२८ । |
| ३६०६३ | " | | १-३७ । |
| ३६०६४ | " | | १५ । (गणनया) |
| ३६०६५ | " | | १-६६, १-२३ । |
| ३६०६६ | "जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ्" इति सूत्रार्थविचारः | | १-३ । |
| ३६०६७ | महाभाष्यप्रदीपः | कैथटः | १-१४ । |
| ३६०६८ | " | | १-३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| ६०४४४२ | १४ | ४५ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ६०६४४३ | ६ | ४० | " | " | | पू० | वै० सि० कौ० टीका । अजन्तनपुंसकलिङ्गान्तः । |
| १००४४४४ | १० | २६ | " | " | १६६४ | " | सुवन्तान्ता । |
| ६०६४४४ | ११ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| ६०७४४१ | ६ | २७ | " | " | | " | |
| ६०१४४५ | ११ | ३१ | " | " | | " | |
| ६०८४४४ | १० | २८ | " | " | | " | हल्सन्ध्यन्ता । |
| ६०७४४५ | ६ | २३ | " | " | | " | |
| ६०६४३०६ | ७ | २४ | " | " | | " | |
| १२४५३ | १४ | ४६ | " | " | | " | कारकसमासौ । |
| १००६४४७ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| १०४४५ | ६ | २१ | " | " | | " | |
| १००७४४८ | ११ | ३२ | " | " | १८६८ | पू० | |
| १००८४४७ | ६ | ३७ | " | " | | अपू० | तिङन्तभागः । |
| ६०३४४२ | ६ | ३१ | " | " | | " | |
| १००६४४७ | ११ | ४३ | " | " | | " | |
| ६०४४४२ | ६ | २६ | " | " | | " | हलन्तपुंल्लिङ्गान्ता । |
| ६०८४४३ | ६ | २३ | " | " | | " | भ्वादिभागः । |
| ७०५४३०६ | ६ | १६ | " | " | | " | अव्ययान्तभागः तिङन्तभागश्च । |
| १२०६४५१ | ६ | ४१ | " | " | | पू० | |
| ६०१४३१ | १२ | ३६ | " | " | | अपू० | अ०२ पा० १ । |
| १२०७४५ | १३ | ४८ | " | " | | " | " |

| क्रम संख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्यादिवरणम् |
|-------------|----------------------------|------------------------------|------------------------------|
| ३६०६६ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जलिः । प्र० का० कैयटः | १-६१ (= ६२,) ६३ ६४ । |
| ३६०७० | | " | १-१०३, १६-४३, १३२-१४१, १४१ । |
| ३६०७१ | महाभाष्यम् | | १-२ । |
| ३६०७२ | द्वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-३, २-३७, ३६-४३ । |
| ३६०७३ | " | " | १-२१७ । |
| ३६०७४ | विविधकोडपत्रसङ्ग्रहः | | ५४ । (गणनया) |
| ३६०७५ | वादनक्षत्रमाला | | १-३ । |
| ३६०७६ | " | | १-३ । |
| ३६०७७ | वाक्यपदीयम् | भर्तृहरिः | १-११ । |
| ३६०७८ | लघुशब्देन्दुशेखरचूडामणि | | ४ । (गणनया) |
| ३६०७९ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | २-१२, ३४-४० । |
| ३६०८० | लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या | राघवेन्द्राचार्यः | १-७०, ४२-८१, ८१-८६ । |
| ३६०८१ | " | | १-४२ । |
| ३६०८२ | लघुशब्देन्दुशेखरज्योत्स्ना | उदयङ्करः | १-२६ । |
| ३६०८३ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ५१ । (गणनया) |
| ३६०८४ | " | श्रीधरः | १-७६, २७-३५, १-२७+१ । |
| ३६०८५ | लघुशब्देन्दुशेखरविवृतिः | | १-६८ । |
| ३६०८६ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ३०-७४ । |
| ३६०८७ | " | राघवेन्द्रः | १-६४ । |
| ३६०८८ | " | | १, १४-२०, २३-२४, २६-३२ । |
| ३६०८९ | " | | ८७-१०२ । |
| ३६०९० | " | | १००-१०४ । |

| आकारः | पक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्वपूर्व-विवेकः | विशेषनिर्णयः |
|---------|--------------|--------------|--------|-------|----------|-------------------|--|
| १२०६४६५ | १७ | ४७ | दे. ना | का | | पू० | पञ्चमाध्यायः । |
| १३०६०६ | १२ | ४७ | " | " | | "* | अ० १ पा० २ आ० ५ पर्यन्तम् । |
| ६०२०३६ | १२ | ३८ | " | " | | अपू० | अ० २ पा० १ आ० १ । |
| ८०४३४ | १२ | ५५ | " | " | १३६५ | " | |
| १००४४४६ | १० | ३६ | " | " | | पू० | |
| ६०६३५ | ६ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| १०५१ | २१ | ५४ | " | " | | पू० | क्यौलुप्तं न स्थानवदितिविचारः । |
| ११०४४४८ | ११ | ६७ | " | " | | अपू० | " |
| ११०२४३८ | ११ | ७० | " | " | | " | |
| १००८४३६ | १० | ५५ | " | " | | " | अजन्तपुंलिङ्गभागः । |
| १००४४४४ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| १०५४४५ | ६ | ४० | " | " | १६१४ | " | |
| ६०५४३५ | ७ | ३८ | " | " | | " | |
| ६४४४४ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| १०६४४५ | ६ | ३७ | " | " | | " | |
| १२२४४८ | ६ | ५५ | " | " | | " | वे० सि० कौ० टी० टीका । टीका-श्रेयरी । कारकान्ता । |
| १००६४४४ | ६ | ३१ | " | " | | " | |
| ६०७४४३ | १० | ५० | " | " | | " | |
| १०४४४५ | ६ | ३६ | " | " | | " | |
| १००४४४४ | ६ | ४३ | " | " | | " | |
| १००२४४३ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| १०५४४३ | ६ | ४२ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पृष्ठसंख्यादिशङ्कः |
|------------|-------------------------|-----------------|--|
| ३६०६१ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-१७६, ८०-११२, ११४-११६+१ । |
| ३६०६२ | " | " | ४-२७, २६-३१, ३३, ३८-५७ । |
| ३६०६३ | प्रौढमनोरमा | | २६ । |
| ३६०६४ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १-२२१ । |
| ३६०६५ | " | नागेशः | १-२४, २४-२६७, १-३५ । |
| ३६०६६ | " | | २१-२७ । |
| ३६०६७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १३२ । |
| ३६०६८ | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-१२, १२-१८ = (१८, १६) २०-१२३, १२३-१३३ । |
| ३६०६९ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-१८, २५-४४, ४४, ५२-१०५, ६६-११६, ११९-१३७+१ । |
| ३६१०० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१०५, २-५३ । |
| ३६१०१ | " | भट्टोजिदीक्षितः | ८४ । |
| ३६१०२ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | २ । (गणनया) |
| ३६१०३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १ । |
| ३६१०४ | " | | ३-४ । |
| ३६१०५ | " | | १ । |
| ३६१०६ | " | | ५४-६६ । |
| ३६१०७ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-१६ । |
| ३६१०८ | " | | ३१-६५, ७३-१२३, १२३-१७२, १७४-१८७ । |
| ३६१०९ | प्रौढमनोरमा | | १३६, १४६-१६५, १६८-१६६ । |
| ३६११० | व्याकरणटीकाग्रन्थविशेषः | | १ । |
| ३६१११ | समासचक्रम् | | १-५ । |
| ३६११२ | प्रयोगविधिः | | १-१० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|-------|-----------------|-------------------------|--|
| ६२ × ३६ | ८ | ३५ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ६४ × ४१ | ११ | ५५ | " | " | | " | |
| १२ × ४८ | २३ | ४४ | " | " | | " | |
| १२ × ४८ | ६ | ५२ | " | " | १६२२ | पू० | |
| १२ × ४८ | ८ | ५८ | " | " | | " | पूर्वाद्धम् । |
| १० × ४३ | १० | ४३ | " | " | | अपू० | |
| ६३ × ४३ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| १२ × ४४ | १० | ४५ | " | " | १९१५ | पू०* | वै० सि० कौ० टी० टीका । कारकान्तम् । |
| ६८ × ३५ | ८ | १९ | " | " | १८८३ | अपू० | |
| ९७ × ५ | ११ | २६ | " | " | | " | तद्धितान्ता । |
| ११ × ४४ | २ | ३६ | " | " | १८०६ | " | |
| ९६ × ४२ | ८ | २२ | " | " | | " | |
| ९७ × ४९ | १२ | ३६ | " | " | | " | वैदिकप्रकरणम् । |
| १० × ४५ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| ६८ × ५ | १२ | ३६ | " | " | | " | |
| ६७ × ५ | १० | २७ | " | " | | " | |
| ६८ × ५ | १० | ३८ | " | " | १८५५ श० १६७४ | " | तद्धितप्रकरणम् । |
| ८८ × ३५ | ७ | २७ | " | " | | " | सुवन्तात्तद्धितान्ता । |
| ६६ × ४४ | ८ | २६ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । पूर्वाद्धम् |
| १० × ४५ | १० | ३१ | " | " | | " | |
| ८५ × ३८ | ७ | २७ | " | " | | पू० | |
| ६६ × ४८ | ६ | २४ | " | " | | " | रुमासचक्रम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|--------------------------|--|
| ३९११३ | प्रयोगविधिः | | १-५, १ |
| ३९११४ | शब्दानुशासनं सवृत्तिकम् | हेमचन्द्राचार्यः | १-२४७ । |
| ३९११५ | सारस्वतप्रक्रिया | अनुभूतिस्वरूपा- चार्य | १-६४ । |
| ३९११६ | " | | १, ३-१६ । |
| ३९११७ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-११३ । |
| ३९११८ | कातन्त्ररूपमाला | भावसेनः | १-२३, २५-५९, १-२१ । |
| ३९११९ | दीपन्याकरणम् | चिद्रूपाश्रमः | १-३३ । |
| ३९१२० | लघुचन्द्रिका | रामाश्रमः | १-२० । |
| ३९१२१ | लघुसिद्धान्तचन्द्रिका | " | १-५ । |
| ३९१२२ | " | " | १-२४ । |
| ३९१२३ | " | " | १-७ । |
| ३९१२४ | " | " | १-३१ । |
| ३९१२५ | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-४९ । |
| ३९१२६ | चङ्गकारिका | चङ्गदासः | १-३ । |
| ३९१२७ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-३९ + १७ ५७-१९५, १५७-२४६+९८- ३४३ । |
| ३९१२८ | रप्रत्याहारमण्डनम् | रामचन्द्रपाठकः | १-६ । |
| ३९१२९ | अष्टाध्यायी | | ४६ । |
| ३९१३० | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-२७, २७-३१ । |
| ३९१३१ | " | | १-२८, १-४ । |
| ३९१३२ | तत्त्वबोधिनी | | १-५८+१ । |
| ३९१३३ | सिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-८१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|--|
| १०'७x४ ७ | ७ | २१ | दे. ना. | का. | १९०८ | पू० | समासचक्रञ्च । |
| ११'७x६'१ | ११ | ३४ | " | " | १८९९ | " | जैनव्याकरणम् । |
| ९'६x४'२ | १० | २९ | " | " | १७७६ | " | आख्यातप्रक्रियामात्रम् । तिबर्षदिवृत्तिर्वा । |
| ९'४x३'६ | ७ | २७ | " | " | | अपू० | आख्यातप्रक्रियांशा । |
| १०x३ | १२ | ३३ | " | " | | " | दौर्गसिहीति नामान्तरम् । |
| ९'८x३'४ | ७ | ३१ | " | " | १५०४ | " | |
| ९'७x३'९ | ८ | ३४ | " | " | | पू० | |
| १४'४x५'५ | १० | ३६ | " | " | | " | आख्यातप्रक्रिया कृत्प्रक्रिया च । |
| ९'३x४'४ | १० | २७ | " | " | | " | कृत्प्रक्रियामात्रम् । |
| ९'२x४'५ | ९ | २३ | " | " | | " | तद्धितप्रक्रियान्ता । |
| ९'८x४'४ | ८ | ३१ | " | " | | " | कृत्प्रक्रियामात्रम् । |
| ९'७x४'३ | ८ | २३ | " | " | | " | आख्यातप्रक्रियामात्रम् । |
| ११'४x५ | १४ | ५४ | " | " | १७७७ | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । वैदिकीप्रक्रिया । |
| १२'४x४'३ | ८ | ५३ | " | " | १९०४ | " | षष्ठपटलः । सम्बन्धोपदेश इति नामान्तरम् । |
| ७'५x४'८ | ६ | ११ | " | " | १८४६ | अपू० | |
| ९'८x४'२ | १३ | ३६ | " | " | | पू० | |
| ७'८x३'३ | ७ | २५ | " | " | | अपू० | |
| ९'४x४'२ | १० | ५० | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका स्वरप्रकरणस्य । |
| ९'४x४'२ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| ९'७x४'२ | ११ | ४५ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी०, तिङन्तभागः । |
| १०'५x४'५ | ९ | ३५ | " | " | | पू० | कृदन्तभागः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|---|---------------------------------------|
| ३९१३४ | सिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१५७, १-८२ = (८३) ८४-१७१, १-५१ । |
| ३९१३५ | " | " | १-१३४ । |
| ३९१३६ | " | " | १-८१ । |
| ३९१३७ | तत्त्वबोधिनी | | १-५, ५१-१११ । |
| ३९१३८ | सिद्धान्तकौमुदी | | १-१३३ । |
| ३९१३९ | " | | १-३, ११३-११४ । |
| ३९१४० | संस्कृतमञ्जरी | रघुनाथः | १-३ । |
| ३९१४१ | अष्टाध्यायी | | १-२७, २९-५४+१ । |
| ३९१४२ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-१८ । |
| ३९१४३ | धातुपाठः | | १-१४ । |
| ३९१४४ | " | | १-४, ४, +१ । |
| ३९१४५ | धात्वर्थनिपातार्थनिर्णयः | | १-२८ । |
| ३९१४६ | न्यासः | | १-३६ । |
| ३९१४७ | पदचन्द्रिकावृत्तिः | कृष्णः | १-५०, ५५-८३, ८३-१००, १०२-१५३, १-१०२ । |
| ३९१४८ | टीकाग्रन्थविशेषः | | २ । (गणनया) |
| ३९१४९ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशभट्टः | १-६५ । |
| ३९१५० | " | " | १-५९ । |
| ३९१५१ | परिभाषेन्दुशेखरःसविवृतिः | नागेशभट्टः वि० का०-वैद्य- नाथपायगुण्डेः | १-३५ । |
| ३९१५२ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | वैद्यनाथपाय- गुण्डेः | १-५७, ५९-१४२ । |
| ३९१५३ | परिभाषार्थमञ्जरी | भीमः | १-९, ५-७० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|----------------|--------------|---------|-------|--------------|---------------------|--|
| १००३×४०४ | ११ | ४५ | दे. ना. | का. | १७४४ १८३१ | पू० | संज्ञाप्रकरणतो लिङ्गानुशासन-पर्यन्ता । |
| १००४×४०५ | १० | ३८ | " | " | | " | तिङन्तभागः । |
| १००५×४०६ | ९ | ४१ | " | " | | " | तद्धितभागः । |
| १००८×६०८ | ८ | ३१ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । भ्वादिमात्रम् । |
| १००३×४०४ | ९ | ३५ | " | " | | पू० | आदितःसमासाश्रयविधिपर्यन्ता । |
| १००३×३ | ७ | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ९००४×३ | १३ | ४५ | " | " | श. १७३० | पू० | गीर्वाणमञ्जरीति नामान्तरम् । |
| ८००३×३ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | आदितोऽष्टमाध्यायस्य तृतीय-पादान्ता । |
| ९००४×४ | १० | ४३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । कारक-प्रकरणस्य । प्रत्येकप्रतीकं धृत्वा नेयं व्याख्या किन्तु कञ्चित्प्रतीकमादायैव । |
| ९०२×४०२ | ११ | ५७ | " | " | १७८८ | पू० | |
| ८०२×४०२ | ६ | २५ | " | " | | अपू० | मध्ये धातुरूपावली च । |
| ९०१×४०२ | ९ | ३१ | " | " | | " | अन्ते तिङर्थनिर्णयश्च । |
| ११०५×४०८ | ८ | ४५ | " | " | | " | काशिकाटीका । |
| ९०३×४०४ | ९ | ३२ | " | " | | " | तद्धितान्तविवेकः कृदन्तविवेकश्च । |
| ९०७×४०२ | ११ | ४७ | " | " | | " | |
| ८०५×३०७ | ८ | ३९ | " | " | | " | |
| ९०४×४०२ | १० | ३४ | " | " | १८८९ | " | |
| १२०६×४०८ | १० | ५६ | " | " | | " | विवृतिर्गादाख्या । |
| ९०३×४०३ | १० | ४८ | " | " | | " | टीका गदा । |
| ९०३×४०२ | ९ | ३२ | " | " | | " | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------|--------------------|--|
| ३९१५४ | पूर्वपक्षावलिः | | १-७+१ । |
| ३९१५५ | प्रक्रियाकौमुदीटीका | शेषनारायणः | १-५४ । |
| ३९१५६ | बालकौमुदी | | १-१० । |
| ३९१५७ | शब्दरत्नभावप्रकाशिका | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-८० । |
| ३९१५८ | " | | १-२६ । |
| ३९१५९ | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | सृष्टिधरशर्मा | १-२७, १-२७ (२७ = १), २-३५, १-२६, १-८, १-१७, १-२४ + ६ । |
| ३९१६० | " | " | १-७, ७-२२, १८-२९, २०-२५, १-२९, १-२७, १-४२, १-३४, १-२३, १-२४, १-६, ८-९, ११-२१, १-२९, १-१०, १२-२६, १६-१७, २०-२३, २०-२४, २३-२९ । |
| ३९१६१ | शब्दकौस्तुभः | | १-३१, १-२४, १-१९ । |
| ३९१६२ | शब्दकौस्तुभप्रभा | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-९२ । |
| ३९१६३ | शब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-१३६ । |
| ३९१६४ | शब्दरूपावलिः | | २-५ । |
| ३९१६५ | " | | १-५ । |
| ३९१६६ | शब्दसारः | खुशहालद्विवेदः | ६-३२, ३४-३७ । |
| ३९१६७ | वैयाकरणभूषणसारदर्पणः | | १-१९७ । |
| ३९१६८ | वैयाकरणभूषणसारकान्तिः | देवगोपालः | १-३३ । |
| ३९१६९ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-६७ । |
| ३९१७० | वैयाकरणभूषणसारटीका | रामकिशोरः | १-१२ । |
| ३९१७१ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | राघवेन्द्रः | ८६-१६८ । |
| ३९१७२ | विभक्त्यर्थनिरूपणम् | | १-४, ६-१५ । |
| ३९१७३ | शब्दरूपावलिः | | १, ६ । |
| ३९१७४ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | १-३९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|--|
| ९०४४३ | १० | ३५ | दे.ना. | का. | | अपू० | धातोस्तन्निमित्तस्येत्यादिकतिपय- सूत्राणाम् । |
| ९०४३२ | ७ | ४८ | " | " | | " | |
| १३०४५३ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| १०३४५ | ११ | ४५ | " | " | | " | |
| ९०५४३ | १२ | ४३ | " | " | | " | अर्थवत्सूत्रस्य । |
| १६४३३ | ६ | ५९ | वङ्ग. | " | | " | अ० १ पा० २-४, अ० २ पा० १-३ । |
| १४५४३६ | ५ | ४५ | " | " | | " | अ० ५ पा० ४, अ० ६ पा० १, ३, अ० ७ पा० १-३, अ० ८ पा० २-४ । |
| ९०४२ | ९ | ४९ | दे.ना. | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । अ० १ पा० १ आ० २ । |
| ९०६४३ | ९ | ३२ | " | " | | " | |
| ९०३४२ | ९ | ५१ | " | " | | पू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । कारका- न्तम् । |
| ९०४४१ | ९ | २१ | " | " | | अपू० | |
| ८०४४५ | ७ | १६ | " | " | | " | |
| १००४४८ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| १००४४६ | १० | ४७ | " | " | | " | |
| १००६४५ | ९ | २९ | " | " | | " | |
| १००१४५ | ९ | ३९ | " | " | १८९४ | पू० | स्फोटवादान्तः । |
| १००१४३९ | ७ | ४१ | " | " | | अपू० | |
| १००४४५ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| १०४३७ | ८ | ४६ | " | " | | " | |
| ९०४४२ | ९ | २१ | " | " | | " | |
| ८०४४२ | ६ | २३ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|-----------------------------|----------------------------|
| ३९१७५ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-३ । |
| ३९१७६ | " | | १-१८, २१-७०, ७३-७६ । |
| ३९१७७ | " | | १-१२+१ । |
| ३९१७८ | " | | १-१५, १७-३१ । |
| ३९१७९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-५५, ९, ५६-६६, ६८-८० । |
| ३९१८० | " | " | १-९०, १-४५ । |
| ३९१८१ | " | | १-४३ । |
| ३९१८२ | " | | १ । |
| ३९१८३ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-५६ । |
| ३९१८४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी- टीका | | ३ । |
| ३९१८५ | " | | १-२ । |
| ३९१८६ | " | | १-२, १-२+१ । |
| ३९१८७ | " | | १-११ । |
| ३९१८८ | " | | १-२, ८ । |
| ३९१८९ | प्रौढमनोरमा | | १-६ । |
| ३९१९० | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १ । |
| ३९१९१ | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | ९८-१२०, १-६७, १-४०, १-२८ । |
| ३९१९२ | सम्बन्धोपदेशः | शंगादासः (चङ्गदासो वा) | १-८५ । |
| ३९१९३ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-९४ । |
| ३९१९४ | " | | १-१७ । |
| ३९१९५ | " | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-२५ । |
| ३९१९६ | " | | ३-८+१ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | जायारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|--------|----------|------------------------|--------------------------------------|
| १०३×४६ | ९ | ४३ | दे.ना. | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ११×३५ | ९ | ४३ | " | " | | " | " |
| ९५×३९ | ११ | ४७ | " | " | | " | " |
| १०४×४४ | १२ | ४६ | " | " | | " | " |
| १०×५१ | १४ | ३१ | " | " | १८५६ | पू०* | कृदन्तप्रकरणम् । |
| १११×४७ | ७ | ४२ | " | " | १७४९ | " | " वैदिकप्रकरणं लिङ्गानुशासनञ्च । |
| ९७×५१ | १० | ४० | " | " | | अपू० | स्वरवैदिकप्रकरणे । |
| ९७×४९ | १२ | ३४ | " | " | | " | वैदिकीप्रक्रिया । |
| १२५×४३ | १० | ५२ | " | " | १९०६ | पू० | वैदिकप्रक्रियातो लिङ्गानुशासनान्ता । |
| १२६×४९ | १५ | ५९ | " | " | | अपू० | |
| ११×३८ | ११ | ४५ | " | " | | " | |
| ९७×५ | ११ | ३३ | " | " | | " | |
| १०५×४६ | ११ | ४१ | " | " | | " | |
| १२९×४८ | १५ | ५९ | " | " | | " | |
| ९७×४२ | १० | ५१ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९९×५ | १३ | ४१ | " | " | | " | |
| ९९×५२ | १३ | ४० | " | " | १८३९ | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०३×४४ | ८ | ३७ | " | " | १७६६ | पू० | पद्यध्यायान्तः । |
| ८३×४४ | ९ | २३ | " | " | १९१८ | " | तद्धितप्रकरणान्तम् । |
| १०३×५ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ९६×४३ | ११ | ३० | " | " | १७७६ | पू० | कृदन्तप्रकरणम् । |
| ९५×४४ | १३ | ४० | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याद्वयरणम् |
|------------|-------------------------|-------------------------|----------------------------------|
| ३९१९७ | सारस्वतम् | | १९-५८ । |
| ३९१९८ | " | अनुभूतिरूप- पाचार्यः | १-४७ । |
| ३९१९९ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १२-३३ । |
| ३९२०० | " | रामभद्राश्रमः | १-३० । |
| ३९२०१ | " | " | १-१६ । |
| ३९२०२ | " | | ६ । |
| ३९२०३ | " | रामाश्रयः | १-२० । |
| ३९२०४ | " | | १-१८ । |
| ३९२०५ | शकृतचन्द्रिका | श्रीकृष्णः | १-१२ । |
| ३९२०६ | कातन्त्रवृत्तिटीका | | १-१२+१, १-४, २-४+६ । |
| ३९२०७ | सारस्वतं सभाष्यम् | | ४-४५+१२, ५-८+१ । |
| ३९२०८ | सारस्वतं सटीकम् | | ३-१४ । |
| ३९२०९ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गासिंहः | १-८३, ८३-१४४, १४४-१५८, १५८-१६७ । |
| ३९२१० | " | " | १-१२२ । |
| ३९२११ | " | " | १-१३ । |
| ३९२१२ | सारस्वतम् | | ३०-१०५ । |
| ३९२१३ | कातन्त्रपरिशिष्टवृत्तिः | श्रीपतिदत्तः | १-१२० = (१२१)-१२६+१, १२८-१५० । |
| ३९२१४ | कातन्त्रवृत्तिपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १-३, १+२ । |
| ३९२१५ | | | १-३२, ३४-१००, १०२-१३३ । |
| ३९२१६ | धातुपाठः | | ५-३४+१ । |
| ३९२१७ | प्रयोगसारः | वारुडशर्मा | १-११ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषनिबन्धनम् |
|--------|--------------------|------------------|-------|-------|----------|------------------------|--|
| ९४×३३ | ११ | ३२ | दे.ना | का. | १७७७ | अपूर्० | |
| ९×३८ | १० | ३४ | " | " | | पूर्० | आख्यातप्रक्रियामात्रम्। |
| १११×४७ | १२ | ४६ | " | " | | अपूर्० | |
| ११३×४७ | १२ | ४६ | " | " | | पूर्० | तद्धितप्रक्रियान्ता । |
| १११×४४ | ११ | ४१ | " | " | १७११ | " | कृदन्तप्रकरणम् । |
| १०६×४६ | ६ | २६ | " | " | | अपूर्० | |
| ९५×३९ | १० | २७ | " | " | १७२७ | पूर्० | कृदन्तप्रकरणम् । |
| १४३×५४ | ८ | ४३ | " | " | | " | तद्धितप्रक्रियान्ता । |
| १२५×४५ | ९ | ६५ | " | " | १९०४ | " | स्याद्यन्तप्रकाशान्ता । प्राकृतकारिके- तिनामान्तरम् । |
| १६९×३६ | ४ | ४४ | वङ्ग | " | | अपूर्० | टीका पञ्जिकाभिन्ना । |
| १०७×३८ | ७ | ४१ | " | " | | " | |
| ८७×४१ | १२ | ३९ | दे.ना | " | | " | पृष्ठैकदेशे 'टी० लघु' इति लिखित- मस्ति । |
| १४६×३१ | ४ | ३१ | वङ्ग | " | | पूर्० | कृत्प्रकरणम्। |
| १७×३६ | ४ | ३६ | " | " | | " | आख्यातप्रकरणम् । |
| १६८×३६ | ४ | ५१ | " | " | | " | आख्याते रुचादिवृत्तिः । |
| १४२×३५ | ६ | ४७ | " | " | | अपूर्० | सुवन्ततिङन्तभागौ । |
| १६६×३२ | ४ | ५४ | " | " | श० १६४८ | पूर्०* | समासप्रकरणान्ता । |
| १७×३७ | ८ | ७४ | " | " | | अपूर्० | आख्यातप्रकरणम् । |
| १७५×३५ | ६ | ५२ | " | " | | पूर्०* | आख्यातप्रकरणस्य ३१, १०१ पत्रा- ङ्कयोरेवापि पूर्वापरपङ्क्त्योरे- कवाक्यत्वात्पुस्तकं पूर्णं ज्ञायते । |
| १३८×१२ | २ | ३४ | " | ता.प. | | अपूर्० | |
| १०×५२ | १२ | ३८ | दे.ना | का. | | पूर्० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|---------------------------|--|
| ३९२१८ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-७२+१ । |
| ३९२१९ | प्रयोगविवेकसङ्ग्रहः | वररुचिः | १-१२ । |
| ३९२२० | अनिट्कारिका | | १-५ । |
| ३९२२१ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-२४० । |
| ३९२२२ | महाभाष्यं सटीकम् | पतञ्जलिः टी० का० कैयटः | १-१६, १६-२० । |
| ३९२२३ | " | " | १५६-१६७, १८७-१८८ । |
| ३९२२४ | शब्दरूपावली सटिप्पणा | | १-११ । |
| ३९२२५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २४४, २४६-२४७, २४९-२५२, २५४-२५५ । |
| ३९२२६ | " | | १, ८-५९ । |
| ३९२२७ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशः | १-१०३, १०५, १०५-१६३+१, १६४-२९०+१ । |
| ३९२२८ | लघुशब्दरत्नम् | | १-१६=(१७), १८=(१९) । |
| ३९२२९ | प्रौढमनोरमा | | २ । |
| ३९२३० | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | | १-६ । |
| ३९२३१ | वै० सि० लघुमञ्जूषा सटीका | | १-१०४ । |
| ३९२३२ | लघुशब्दरत्नम् | | १-११ । |
| ३९२३३ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-६५ । |
| ३९२३४ | " | " | १-२८५ । |
| ३९२३५ | " | " | १-१३१=(१३२), १३३-१६७ । |
| ३९२३६ | " | " | १-३२ । |
| ३९२३७ | " | " | १-९९ । |
| ३९२३८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-२३९, २३९-२४२, २४५, २५६ । |
| ३९२३९ | " | " | २-१२, १४-८९, १०६-११८, १३३-१६४, १६६-१८२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|-------|----------------|-------------------------|---|
| ९०५५९ | ११ | २४ | दे.ना. | का. | | अ० | |
| ९१५४२ | ९ | ३१ | " | " | | पू० | वररुचिकारिका वा, कारकादितद्वितान्ता। |
| ९५३९ | ७ | ३२ | " | " | १६८४ | " | |
| ९९५४२ | ९ | ४७ | " | " | १८४८ | " | |
| १२८५४८ | १० | ७१ | " | " | | " | टीका-प्रदीपाख्या, अ० १ पा० ४, आ० २ मात्रमत्रपूर्णम्। |
| १४२५५५ | १२ | ६० | " | " | | अपू० | टीका-प्रदीपाख्या, अ० १, पा० २ आ० ३। |
| ८८५३८ | ८ | ३८ | " | " | १८८८ | पू० | टि०-मराठीभाषायाम्। |
| ९३३३९ | ७ | २६ | " | " | | अपू० | |
| ९३५४१ | ७ | २३ | " | " | | " | |
| ९९५५२ | १३ | ४८ | " | " | १८८४ श १७४९ | पू०* | कचित्संश्लिष्टपत्रेषु पत्राङ्काभावः पत्रसङ्ख्याङ्कने दोषः। |
| ९९५४२ | १२ | ४५ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका। |
| १०८५४७ | ११ | ४९ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका। |
| १३५४५२ | १० | ६७ | " | " | | " | |
| १३६५५२ | ८ | ५३ | " | " | | " | टीका-कुञ्जिकाख्या। |
| १०६५४७ | १० | ३६ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका। |
| ९५५४२ | १० | ४० | " | " | | पू० | स्वादिसन्ध्यन्तः। |
| ९८५४२ | १० | ३२ | " | " | १८७५ | " | अजन्तादि द्विरुक्तप्रक्रियान्तः। |
| १०५४४ | ८ | ३१ | " | " | | "* | तिङन्तभागः। |
| ९२५४२ | ९ | ४७ | " | " | | " | कृदन्तभागः। |
| १०५४४७ | ९ | ४० | " | " | | " | उत्तरार्द्धमात्रम्। |
| ९५३८ | ८ | ३९ | " | " | | अपू० | तिङन्तकृदन्तभागौ। |
| ९५४ | ८ | ३२ | " | " | | " | सुबन्तभागः। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|-----------------|-------------------------------------|
| ३९२४० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | २००-२०८ । |
| ३९२४१ | सरूपाणामेकशेष इति सूत्र- विचारः | | १-६ । |
| ३९२४२ | समासचक्रम् | | १-३ । |
| ३९२४३ | ” | | ३, ५, ६, ८, ९+१ । |
| ३९२४४ | ” | | १-१२ । |
| ३९२४५ | षट्कारकप्रक्रिया | | २-८+१ । |
| ३९२४६ | शब्दकौस्तुभटीका | | २-४५ । |
| ३९२४७ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ४ । (गणनया) |
| ३९२४८ | शब्दरूपाणि | | १-१६ । |
| ३९२४९ | ” | | २ । (गणनया) |
| ३९२५० | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | २-२० । |
| ३९२५१ | ” | ” | २५ । (गणनया) |
| ३९२५२ | ” | ” | २१-३० । |
| ३९२५३ | ” | ” | ९२ । (गणनया) |
| ३९२५४ | ” | ” | १०-२५ । |
| ३९२५५ | ” | ” | १-५, ७-९, १४-१६, १८-२६, ३८-४३, ४३ । |
| ३९२५६ | ” | ” | २७ । (गणनया) |
| ३९२५७ | ” | ” | ४-३४, ३४-४१, ४३-७१ । |
| ३९२५८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी टीका | | २ । (गणनया) |
| ३९२५९ | लघुशब्दरत्नम् | | ११-१०४ । |
| ३९२६० | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | सृष्टिधरशर्मा | ७-३०, १-१८, १-२१, १९-२४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विदेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|---|
| दं०५×४'१ | १० | २१ | दे.ना. | का. | | अपू० | समासाश्रयप्रकरणम् । |
| ९'३×३'१ | ११ | ५३ | " | " | | पू० | |
| ९'४×४'२ | ७ | २० | " | " | | अपू० | |
| ५'७×३'७ | ५ | १४ | " | " | १८९८ | " | |
| दं३×३'८ | ६ | २५ | " | " | | पू० | |
| १०'१×४'२ | ९ | २५ | " | " | | अपू० | |
| ९'३×४'२ | ९ | ३५ | " | " | | " | अष्टाध्यायी टी० टीका । विषमव्याख्यायां नवममाहिकम् । |
| १०'४×४'३ | १० | ३९ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| दं०७×४ | ९ | २० | " | " | | पू० | |
| दं०७×३'८ | ७ | २३ | " | " | | अपू० | |
| ९'८×४'२ | १० | ४२ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| ९'६×४'२ | ७ | २० | " | " | | " | " |
| ९'६×४'१ | १० | ३२ | " | " | | " | " अ० १ पा० १ आ० ५ । |
| दं०१×४'४ | १० | ३० | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । पत्राणि कीट-भक्षितानि । |
| ९'५×४'२ | १० | ३९ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| ७'८×४'१ | १३ | ५० | " | " | | " | " |
| १०'१×४'३ | १० | ३५ | " | " | | " | " |
| ९'३×३'९ | ८ | ४२ | " | " | | " | " |
| ११'३×४'३ | १३ | ४२ | मै. | " | | " | संज्ञाप्रकरणम् । |
| १०'६×४'८ | ११ | ३२ | दे.ना. | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| १४'१×३'३ | ६ | ५० | वङ्ग | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|----------------|-------------------------------------|
| ३९२६१ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिभट्टः | १-३, १-५ + १, ६-३०, ३९, ६९-७०+१ । |
| ३९२६२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ८ । (गणनया) |
| ३९२६३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी टीका | | १-२, ४-५, ३-४, २-३, ५-६+४ । |
| ३९२६४ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिभट्टः | १-४३+१, १-१८, १-२१+१ । |
| ३९२६५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-५, ७-१४, १६ । |
| ३९२६६ | शब्दकौस्तुभः | | १-१३+१ । |
| ३९२६७ | " | | ४५ । (गणनया) |
| ३९२६८ | " | भट्टोजिभट्टः | १-२९, १-२९, ३१, १-७३, ७६-८३, १-६८ । |
| ३९२६९ | वाक्यप्रकाशसूत्रं सटिप्पणम् | हर्षः | १-६ । |
| ३९२७० | शब्दशोभा | नीलकण्ठः | १-२७ । |
| ३९२७१ | शब्दलक्षणम् | वररुचिः | १-८ । |
| ३९२७२ | परिभाषापठः | | १-७ । |
| ३९२७३ | श्लोकयोजनिकोपायः | | १-६+१, ८-१९ । |
| ३९२७४ | वैयाकरणभूषणसारव्याख्या | | १ । |
| ३९२७५ | शब्दकौस्तुभटीका | नारायणदीक्षितः | १-८४ । |
| ३९२७६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी टीका | | २-११ । |
| ३९२७७ | शब्दकौस्तुभटीका | | १-१६ । |
| ३९२७८ | समासविचारः | हरिः | १-१२ । |
| ३९२७९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी विलासः | | ४० । |
| ३९२८० | तर्कचन्द्रिका | श्रीकृष्णभट्टः | १-३६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|------------------------|-------------------------|--|
| ९४×४१ | ८ | ४५ | दे. ना. | का. | | अपू० | अष्टाध्यायीटीका अ० १, पा० १ आ० १, ८-९ । |
| ११४×४२ | ९ | ४० | मै० | ” | | ” | तद्धितप्रकरणम् । |
| ११५×४३ | १२ | ४१ | ” | ” | | ” | कारकप्रकरणस्य । |
| १२५×५१ | १० | ५६ | दे. ना. | ” | | पू०* | अ० १, पा० १, आ० १-४ । |
| १२×४१ | १० | ३७ | मै० | ” | | अपू० | सन्धिप्रकरणम् । |
| ९७×४३ | १० | ४१ | दे ना | ” | | ” | प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादे षष्ठाहिकम् । |
| ९७×४२ | ९ | ३४ | ” | ” | | ” | ” |
| ९२×४१ | ८ | ४४ | ” | ” | | ” | अ० १, पा० १, आ० ३-९ । |
| १०१×४५ | ११ | ३७ | ” | ” | १० का० १५०७ | ” | ” |
| ११९×४२ | ८ | ५० | ” | ” | १८३८ १० का० १६२३ | पू० | ” |
| १०६×४५ | ९ | ४१ | ” | ” | | ” | तद्धितकृदन्तस्त्रीप्रत्ययसन्धिप्रकर- णानि । |
| ६७×३५ | ७ | २५ | ” | ” | | ” | ” |
| ६६×४१ | ९ | २१ | ” | ” | | पू०* | कारकसमासवृत्तिविचारश्च । |
| ९१×४६ | २४ | ४० | ” | ” | | अपू० | ” |
| ९३×४२ | १४ | २६ | ” | ” | | ” | अष्टाध्यायी टी० टी०, अ० ३ । |
| १३×४८ | १५ | ७२ | ” | ” | | ” | अजन्तपुंलिङ्गप्रकरणस्य । |
| ९७×४३ | १० | ३१ | ” | ” | | ” | अष्टाध्यायी टीका, अ० १, पा० १, आ० ४ । |
| १०१×४६ | १६ | ४७ | ” | ” | | पू० | ” |
| ९८×४१ | १० | ३५ | ” | ” | | अपू० | ” |
| ९७×४२ | ११ | ३९ | ” | ” | | ” | ” |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|--------------------|---|
| ३९२८१ | तत्त्वबोधिनी | | १-१२ । |
| ३९२८२ | " | | १४०-१४५ । |
| ३९२८३ | " | | १२८-१२९ । |
| ३९२८४ | गणपाठः | रामकृष्णः | १-१९ । |
| ३९२८५ | " | | २-३१ । |
| ३९२८६ | कौमुदीविलासः | भास्करः | १-३१ । |
| ३९२८७ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १-२८, १-१७, १९-२० । |
| ३९२८८ | तर्कचन्द्रिका | कृष्णम्भट्टः | १-३२ । |
| ३९२८९ | " | " | ३, ५-५१ । |
| ३९२९० | कारकविचारः | | १-११ । |
| ३९२९१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-७६, १-४१, १-४४+१, ४५-८१, १-१२२, १२२-१५४, १-७९ । |
| ३९२९२ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-४२+१ । |
| ३९२९३ | प्रयोगसारः | वारुडः | १-१६ । |
| ३९२९४ | समासचक्रम् | | ७-११ । |
| ३९२९५ | " | | १-४ । |
| ३९२९६ | " | | १-७ । |
| ३९२९७ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-१८ । |
| ३९२९८ | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १-९२, ९४-१४९, १-११६ । |
| ३९२९९ | " | " | १-५६, ५८-६८ (= ६९) ७०-७६ (= १), ७६ (= २), ७६ (= ३), ७७-१०३, १०३-१०५, १०५-११४, ११४-१३८ । |
| ३९३०० | " | | १-६७, ६७-११९, ११९-१२२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|--------------|-------------------------|--|
| ८६ × ३५ | ७ | ३१ | दे. ना. | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९५ × ४४ | ७ | २६ | " | " | | " | " |
| ९४ × ४३ | १४ | ३६ | " | " | | " | हलन्तपुँल्लिङ्गस्य सामन्त्रितमित्यादि (५५२) सूत्रटीका । |
| १२२ × ४९ | १० | ४८ | " | " | | पू० | अष्टमोऽध्यायः । |
| ९९ × ३९ | ९ | ३६ | " | " | | अपू० | अ० ४-५ । |
| ९७ × ४९ | १२ | ४३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० । |
| १२६ × ५ | ११ | ४४ | " | " | | " | अ० १, पा० १, आ० २-३ । |
| १०६ × ४७ | ११ | ४३ | " | " | | " | |
| १०१ × ४४ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ९४ × ४१ | ७ | ३६ | " | " | | पू० | कारिकारूपेण । |
| १० × ४४ | ११ | ३५ | " | " | १८९१ १८९२ | "* | |
| १०२ × ४२ | १० | ६२ | " | " | | अ३० | आदितस्तद्धितांशा । |
| ९१ × ३८ | ७ | ३० | " | " | | पू० | कृत्पटलः । |
| ९३ × ५ | १० | २५ | " | " | | अपू० | |
| ९७ × ३७ | ९ | ४२ | " | " | | पू० | प्रयोगविचारश्च । |
| ९ × ४१ | ८ | २५ | " | " | | " | |
| १३२ × ५ | १२ | ७० | " | " | | " | वै० सि० कौ० व्याख्या । वैदिक- प्रकरणम् । |
| १३१ × ५१ | ११ | ४६ | " | " | | "* | वै० सि० कौ० टीका । तिङन्त प्रकरणं कृदन्तप्रकरणश्च । |
| १२ × ४५ | ११ | ४० | " | " | १७७३ | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । तिङन्तप्रकरणम् । |
| १२ × ४६ | ११ | ४३ | " | " | १७७७ | पू०* | वै० सि० कौ० टी० । कृदन्तप्रकरणम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|------------------|---|
| ३९३०१ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १४-६६ । |
| ३९३०२ | " | " | १-११, १२ (= १३), १४-५५ । |
| ३९३०३ | " | " | १-२, १-१८ । |
| ३९३०४ | रत्नार्णवः | कृष्णमित्रः | १-५, ६-६७, १-१४ (= १५), ८२-८५ (= ८६-८७), ८८-९८ । |
| ३९३०५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी सटीका | | १२९-१५४ । |
| ३९३०६ | अव्ययार्थनिरूपणम् | | १ । |
| ३९३०७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-७१ (= ७२), ७३-१२१ (= १२२), १२३-२१६, १-२९६ । |
| ३९३०८ | त्रिपथगा | | २, ३७-४३, ५९-६१ । |
| ३९३०९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१० । |
| ३९३१० | " | | ५५-७६, ८७-१२७ । |
| ३९३११ | " | भट्टोजिदीक्षितः | २-२९, ३४-४६, ४६-५०, ५३-५६ । |
| ३९३१२ | उणादिपाठः | | १-८ । |
| ३९३१३ | धातुपाठः | | १-१७ । |
| ३९३१४ | सारस्वतम् | | २-५४ । |
| ३९३१५ | सारस्वतटिप्पणम् | क्षेमेन्द्रसूरिः | २-३५, ३९, ४०-६४ । |
| ३९३१६ | प्रक्रियाकौमुदी | | २-४९ । |
| ३९३१७ | सारस्वतम् | नरेन्द्रपुरी | ३०-३७, ३९-६७, ६९-७१, ७३-८८ । |
| ३९३१८ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-१४ । |
| ३९३१९ | गणपाठः | | १-२४, २४+१, २५ । |
| ३९३२० | सारस्वतसूत्रपाठः | | १-८ । |
| ३९३२१ | धातुपाठः | | २-१८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|-----------------|-------------------------|--|
| १०°६×४°६ | ९ | ४५ | दे. ना. | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० व्याख्या । स्वरप्रकरणम् । |
| १०°८×४°५ | ९ | २६ | " | " | | पू०* | वै० सि० कौ० व्याख्या । वैदिकप्रकरणमात्रम् । |
| १०°८×४°७ | ९ | ४५ | " | " | | अपू० | स्वरप्रकरणम् । |
| १०°९×४ | ८ | ५१ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| १२°३×५°१ | ११ | ६४ | " | " | | " | टीका-तत्त्वबोधिनी । कारकसमासप्रकरणे । |
| ११°८×५°६ | १८ | ३२ | " | " | | " | |
| ९°५×४°१ | ८ | ३९ | " | " | १९३९ | पू० | |
| ९°८×४°५ | १२ | ४० | " | " | | अपू० | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |
| ९°२×४°२ | १० | ४८ | " | " | | पू० | प्रारम्भतस्त्वादिसन्ध्यन्ता । |
| ११°२×४°२ | ११ | ५४ | " | " | | अपू० | |
| ९°९×३°९ | १४ | ३८ | " | " | | " | उत्तरार्द्धम् । |
| ८°८×३°७ | ११ | ६६ | " | " | १७९९ | पू० | |
| ८°९×३°७ | १० | ३० | " | " | | " | |
| ९°२×४ | ८ | २९ | " | " | | अपू० | तद्धितप्रक्रियान्तम् । |
| ८°९×४°१ | ७ | २९ | " | " | १६९२ श. १५५८ | " | |
| ८×४ | ८ | २० | " | " | | " | सुबन्तभागः । |
| ८°७×३°९ | ३ | १९ | " | " | | " | |
| ९°५×४°२ | ७ | २६ | " | " | | " | तिङन्तभागः । |
| ८°१×३°३ | ६ | २५ | " | " | | " | |
| ७°२×३°२ | १० | २७ | " | " | | पू० | |
| ११°२×४°५ | ८ | ३४ | " | " | १७३५ | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|------------------------|-------------------------|
| ३९३२२ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १८ । (गणनया) |
| ३९३२३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१५ । |
| ३९३२४ | " | | १-९ । |
| ३९३२५ | " | | १-११ । |
| ३९३२६ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १०-७० । |
| ३९३२७ | परिभाषापाठः | | १, ३, ४ । |
| ३९३२८ | " | पाणिनिः | १-३ । |
| ३९३२९ | कातन्त्रवृत्तिटीका | | १-३, ३, +२, १-४ । |
| ३९३३० | कलापचन्द्रः | सुषेणाचार्य कविराजः | १-८८, ८८-१४४, १४४-१८० । |
| ३९३३१ | पाद्मव्याकरणम् | पद्मनाभः | १-१७ । |
| ३९३३२ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गासिंहः | १-२० । |
| ३९३३३ | कातन्त्रवृत्तिपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १-२५ । |
| ३९३३४ | कातन्त्रवृत्तिविवरणम् | | १-३४ । |
| ३९३३५ | " | | ३०-६८ । |
| ३९३३६ | कातन्त्रवृत्तिपञ्जिका | | १-४, ७ । |
| ३९३३७ | धातुपाठः | | १-३६ । |
| ३९३३८ | प्रसिद्धपदबोधः | भरतसेनः | २-८४ । |
| ३९३३९ | वैयाकरणभूषणसारः | | १-७ । |
| ३९३४० | मुग्धबोधटीका | | १-९ । |
| ३९३४१ | कातन्त्रसूत्रम् | | १-२ । |
| ३९३४२ | मुग्धबोधः | | १-७ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | काण्डः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|--------------|---------|--------|--------------------|---------------------|---|
| ११×४६ | १२ | ३५ | दे. ना. | का. | | अपू० | सुबन्तभागः । |
| ११५×४४ | ९ | ३९ | " | " | | " | तिङन्तभागः । |
| १०८×३९ | ७ | ३७ | " | " | | " | मुनित्रयमित्यारभ्य प्रादूहो० इत्यन्ता । |
| ८३×३४ | ८ | २० | " | " | | " | आदितो होतृकारपर्यन्ता । |
| ८७×३७ | १० | ४३ | " | " | | " | . |
| ८१×३८ | १२ | ३१ | " | " | | " | तन्मूलभूतसूत्राण्यपि । |
| ९९×४३ | १० | ४० | " | " | १७४४ | पू० | शान्तनवाचार्यकृतानि फिट्-सूत्राणि च । |
| १४३×३२ | ८ | ५७ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १७×३८ | ६ | ६५ | " | " | | " | कातन्त्रवृत्तिटीका । |
| १३×३८ | ७ | ५२ | " | " | | पू० | प्रथमाध्यायः । |
| १३७×३६ | ६ | ४० | " | " | | " | सन्धौ पञ्चमपादान्ता । |
| १३९×३७ | ९ | ६० | " | " | वङ्गाब्दाः १२८९ | " | " |
| १३८×३६ | ५ | ३९ | " | " | वङ्गाब्दाः १२८८ | " | अव्ययीभावादेः । |
| १४४×३७ | ८ | ५५ | " | " | | अपू० | कारकसमासप्रकरणे । |
| १८×३१ | ५ | ५८ | " | " | | " | |
| १३७×४३ | ५ | २७ | " | " | | पू० | कातन्त्रानुसारी । |
| १३×३७ | ३ | ३२ | " | " | वङ्गाब्दाः १२६९ | अपू० | |
| १३×५१ | १२ | ४० | " | " | | " | |
| १३७×३६ | ७ | ४८ | " | " | | " | कारकप्रकरणस्य । |
| १४२×३१ | ६ | ४९ | " | " | | पू० | कृदन्ते षष्ठपादः । |
| १३२×३८ | ६ | ३४ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|--------------------|--|
| ३९३४३ | मुग्धबोधः | | १-२७ । |
| ३९३४४ | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १-१११, १११-१९१, १९१-३०१ (= २७८) २७९-३२२, ३२४-३२६, ३३२-४५०, ४५१-४५२ । |
| ३९३४५ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-३५ । |
| ३९३४६ | धातुपाठः | | १-१६ । |
| ३९३४७ | शब्दरूपावली | | १-३ । |
| ३९३४८ | सारस्वतरूपमाला | | १-२४ । |
| ३९३४९ | लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या | शङ्करः | १-४० । |
| ३९३५० | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-१७ । |
| ३९३५१ | प्रत्ययग्रहणे यस्मादिति परिभाषाविचारः | | १-१३ । |
| ३९३५२ | त्रिपथगा | | १-२६ । |
| ३९३५३ | गदा | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-१४ । |
| ३९३५४ | परिभाषाभास्करः | भास्करः | १-७५ । |
| ३९३५५ | वैयाकरणभूषणसारविवृतिः | रुद्रनाथः | १-१४, १-७५ । |
| ३९३५६ | वैयाकरणभूषणसारटीका | | १-७, १-३ । |
| ३९३५७ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशः | १-९७ । |
| ३९३५८ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | ” | १-२३, १-२९ । |
| ३९३५९ | ” | ” | १-१६, १६ (= १७), १७-१४२ । |
| ३९३६० | प्रबोधचन्द्रिका | बैजलभूपतिः | १-२१ । |
| ३९३६१ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-८० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|-------|-----------------|-------------------------|---|
| १५४४४१ | ६ | ४७ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९९४४१ | ११ | ३४ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० । पूर्वाद्धमात्रम् । |
| १३१४५१ | १२ | ६६ | " | " | | पू० | वै० सि० कौ० व्याख्या । स्वर- प्रकरणम् । |
| १०४४४८ | १० | ३८ | " | " | | अपू० | |
| ८६४३६ | ९ | २२ | " | " | | " | |
| ८६४३८ | ९ | २० | " | " | | पू० | |
| ९८४४५ | ९ | ४३ | " | " | १९१४ | " | कारकप्रकरणस्य । |
| १०४४५ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ९२४४२ | ७ | ३७ | " | " | | पू० | |
| ९२४४४ | ९ | ३७ | " | " | | अपू० | परिभाषेन्दुशेखरटीका । अन्तिमपत्रं. निरक्षरम् । |
| १०४४३ | १० | ४० | " | " | | " | परिभाषेन्दुशेखरटीका । विवृतिः काशिकाचेतिनामान्तरम् । |
| ९३४३६ | ७ | ३९ | " | " | | " | परिभाषात्रिचारात्मकः । |
| ९५४४१ | ९ | ४४ | " | " | | " | |
| ९६४४३ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| १०५४४४ | ११ | ४९ | " | " | | " | |
| १०७४४२ | १४ | ५० | " | " | १८४५ श. १७१० | " | अ० १, पा० १, आ० ६-८ । |
| १०५४४५ | १० | ३५ | " | " | | पू० | अ० २, पा० १, आ० १-३, " " २, " १-२, " " २, " १-३ । |
| १०२४८१ | १२ | ३१ | " | " | १९०४ | " | |
| १६२४३७ | ६ | ४० | " | " | १८१६ श. १६८० | " | आख्याते १-८ पादाः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|----------------------------|--|
| ३९३६२ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-४७। |
| ३९३६३ | कातन्त्रविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १-१५५। |
| ३९३६४ | शब्दकौस्तुभः सटिप्पणः | भट्टोजिदीक्षितः | १-१४०, १५७-२०२, +२, २०५-२०७, १२८-१५४, १-७, १-९। |
| ३९३६५ | काशिका | वामनः | १-३४, ३४-६३, १-४९, १-१४ = (१५, १६) १७-१२०, १-२३, २३-९९, १-२४, २४-७९, १-९७, ९७-१४८, १-९०, १-७७। |
| ३९३६६ | प्रौढमनोरमा | | २-६८, ७२-७४, ७६-७७। |
| ३९३६७ | सारसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजभट्टः | १-२८। |
| ३९३६८ | सारस्वतम् | | १-५, ७-२६। |
| ३९३६९ | शब्दार्थसारमञ्जरी | | २-१७। |
| ३९३७० | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-२५। |
| ३९३७१ | अनिट्कारिका | | १-५। |
| ३९३७२ | सारस्वतसूत्रपाठः | | २-६। |
| ३९३७३ | समासचक्रम् | जयशाम | १-६। |
| ३९३७४ | समासवादः | " | १-१३। |
| ३९३७५ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जलिः प्र० का०-कैयटः | ३९-९४, १-३५, १-३ = (४), ३९, १-५४ ५४, ५६-६४, १-१३५, १-११०, १-१००, १-१५२, १-१७२। |
| ३९३७६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१००, १७९-३४२। |
| ३९३७७ | परिभाषापाठः | पाणिनिः | १-३। |
| ३९३७८ | गणपाठः | | १-२२। |
| ३९३७९ | परिभाषापाठः | | ४। (गणनया) |
| ३९३८० | उणादिसूत्रं सवृत्तिकम् | वृ० का० उज्ज्वलदत्तः | १-१२, १७-२६, २८-१०३। |
| ३९३८१ | लिङ्गानुशासनं सवृत्तिकम् | | २-२१। |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|-----------------------------|
| ११'१×४'८ | १० | ३९ | दे. ना. | का. | श. १५०४ | पू० | |
| १०'९×३'३ | ८ | ४९ | " | " | १५६० | " | तद्धितपर्यन्ता । |
| १२'५×५ | ८ | ४१ | " | " | १८६४ | अपू० | अष्टाध्यायीटीका । |
| १०'४×४'१ | १० | ३७ | " | " | १६५० | पू०* | |
| ९'८×४'२ | ८ | ३५ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| ११'४×३ | १४ | ४० | " | " | | पू० | |
| ९'४×३ | ८ | २५ | " | " | | अपू० | |
| ९'६×४'९ | १२ | ४३ | " | " | | " | षट्कारकविवेचनम् । |
| ११'४×१ | १० | २९ | " | " | | " | |
| ९'१×४'२ | ९ | ३५ | " | " | | पू० | |
| ९'३×४'१ | ९ | ३२ | " | " | | अपू० | समासचक्रम् । |
| ९'३×४ | १३ | ३५ | " | " | | " | समासतत्त्वमिति नामान्तरम् । |
| ९'८×३'९ | १२ | ४२ | " | " | १६१४ | पू० | |
| १२'४×६ | १३ | ६० | " | " | १८८१ | अपू० | |
| ११'८×३'९ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| ११'८×३'९ | ८ | ३९ | " | " | | पू० | |
| ९'८×३'५ | १० | ४० | " | " | | " | |
| ८'८×३'८ | ११ | ३७ | " | " | | "* | तन्मूलभूतसूत्राण्यपि । |
| ९'२×३'५ | ८ | ४० | " | " | १६७५ | अपू० | पुस्तके लिपिभेदः । |
| ९'३×३'८ | ११ | २४ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|-----------------|--|
| ३९३८२ | उणादिसूत्रपाठः | | १-८ । |
| ३९३८३ | कविकल्पद्रुमः | वोपदेवः | १-२२ । |
| ३९३८४ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशः | १-४३, ४३-४४, ४४(=१)४४(=२) ४५-५१, ५१-५६ + २, ५७-३४० । |
| ३९३८५ | समासचूडामणिः | | १-२ । |
| ३९३८६ | धातुवृत्तिः | सायणः | १-५६ । |
| ३९३८७ | शब्देन्दुशेखरटीका | | १-४६ । |
| ३९३८८ | शब्देन्दुशेखरदोषोद्धारः | मन्युदेवः | १-२७, (= २८), २८-४०, ४१-६१, ६१ । |
| ३९३८९ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागोजिभट्टः | ५४-९८ । |
| ३९३९० | शब्ददीपः | चिद्रूपः | १-२४+१ । |
| ३९३९१ | धातुपाठः | | १-१९ । |
| ३९३९२ | अष्टाध्यायी | | १-२ । |
| ३९३९३ | सभ्याभरणं सटीकम् | रामचन्द्रः | १-५०, ८२-१६५, १९७-२०७ । |
| ३९३९४ | गजसूत्रविचारः | | २-६ । |
| ३९३९५ | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १, ३-२७, ३०-६०, ६२-६४, ६६-६८, ७०, ८८-१३३ । |
| ३९३९६ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-४३, १-६९, १-५ । |
| ३९३९७ | " | " | १५३-१८७, १९१-३०२, ८-१४६ । |
| ३९३९८ | वाद्सुधाकरः | कृष्णाचार्यः | १-२० । |
| ३९३९९ | परिभाषाभास्करः | भास्करः | १-४२ । |
| ३९४०० | प्रक्रियाकौमुदी | | २, ३, ५-६३, ६५-७९ । |
| ३९४०१ | धातुपाठः | | १-१० । |
| ३९४०२ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | २, ३, ५-७, १२-४६, १-३, ४०-१२६, १-७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|-----------------|------------------------|---|
| ९.६x४.२ | ९ | ३८ | दे.ना. | का. | १८५५ | पू० | |
| ९.४x४.२ | १० | ३९ | " | " | १६८९ | " | धातुपाठश्च । |
| ११.२x४.८ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| ८.७x३.४ | ९ | ४३ | " | " | श. १६८८ | " | |
| ९.७x३.७ | १२ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| ११.५x४.७ | ९ | ३९ | " | " | | " | कारकप्रकरणस्य । |
| १०.७x४.६ | १३ | ३३ | " | " | | " | |
| ११.१x४.७ | ११ | ४५ | " | " | | " | अ० १ पा० १ आ० २-४ । |
| ९.६x४.३ | ९ | ३३ | " | " | | पू०* | |
| ९.६x४.२ | ९ | ३७ | " | " | १८८५ श. १७१९ | " | |
| १०.२x३.८ | ११ | २९ | " | " | | " | |
| १०.२x४.५ | ९ | ४० | " | " | | अपू० | |
| ११x४.६ | १२ | ४५ | " | " | | " | |
| १०.९x४.५ | ८ | ४२ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| १२x५.६ | ११ | ३९ | " | " | | पू० | वै० सि० कौ० टीका । समर्थाश्रित इत्यारभ्य यावत्पूर्वाद्धर्मपूर्णा । |
| ११.६x४ | ८ | ३७ | " | " | १७४९ | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०.८x४.३ | ८ | ३७ | " | " | | पू० | |
| १०x४.५ | १३ | ४४ | " | " | | " | |
| ११.५x४.८ | ८ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| १३.५x५ | १२ | ५१ | " | " | १८९५ | पू० | पाणिनीयः । |
| १०.१x४.५ | १२ | ३८ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|----------------------------|--|
| ३९४०३ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-४३ । |
| ३९४०४ | धातुवृत्तिः | सायणाचार्यः | २-१८८, १९०-२५० । |
| ३९४०५ | ” | ” | ३०१-३०७, १-१९७ । |
| ३९४०६ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १+१, २-४१७, १-२४६ । |
| ३९४०७ | लिटि धातोरनभ्यासस्येति- सूत्रविचारः | | १ । |
| ३९४०८ | न्यायार्थमञ्जूषा | हेमहंसगणिः | १-५२ । |
| ३९४०९ | शब्दरूपावली | | ३-८ । |
| ३९४१० | अव्ययपाठः | | १-३ । |
| ३९४११ | शब्दरूपावली | | १-३१ । |
| ३९४१२ | उणादिसूत्रं सवृत्तिकम् | वृत्तिकारः उज्ज्वलदत्तः | १-८३, ८२-१०७ । |
| ३९४१३ | विभक्त्यर्थनिर्णय. | कृष्णम्भट्टमौनी | १-२, १-२१+१ । |
| ३९४१४ | उणादिसूत्रपाठः | | १-७ । |
| ३९४१५ | कारकवादः | रत्नपाणिः | १-९ । |
| ३९४१६ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशभट्ट | ३१-२११, १-१०५, ८७-८९, ६०-६८, ९९-१५३, १-७५, १-३०, १-५९ । |
| ३९४१७ | लघुदर्पणः | हरिवल्लभः | ३-१९४ । |
| ३९४१८ | रप्रत्याहारखण्डनम् | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-४२ । |
| ३९४१९ | स्फोटचन्द्रिका | कृष्णम्भट्टमौनी | १-२, ४-७, ९, ११-१४ । |
| ३९४२० | अनिट्कारिका सटीका | | १-२ । |
| ३९४२१ | व्याकरणग्रन्थविशेषः | | ८-१५, १७-३०, ३२-३३ । |
| ३९४२२ | शाब्दिकाभरणम् | | २-५३, ५५-११० । |
| ३९४२३ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-२१, २३-८३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|--|
| ११७×५ | १२ | ५० | दे.ना. | का. | | पू० | |
| १०७×३०६ | ८ | ४१ | " | " | | अपू० | माधवीया । |
| ११×४३ | १० | ४८ | " | " | | " | " |
| १३×५ | ९ | ३७ | " | " | १९०९ | पू०* | वै० सि० कौ० टीका । प्रारम्भे टिप्पनञ्च । |
| ९६×४३ | ११ | ४५ | " | " | | अपू० | |
| १०१×४ | १७ | ५१ | " | " | १५१५ | पू० | हेमचन्द्रव्याकरणटीका । |
| १०१×४१ | ८ | २४ | " | " | | अपू० | |
| १०१×४६ | ८ | २४ | " | " | | पू० | |
| ९२×४२ | ७ | ३० | " | " | | " | |
| ८८×३८ | ९ | ३८ | " | " | | "* | |
| १२×४४ | १० | ४६ | " | " | | अपू० | |
| ८९×३३ | १० | ४४ | " | " | १७३१ | पू० | |
| ९६×३८ | ९ | ३२ | " | " | | " | षट्कारकपरिच्छेद इति नामान्तरम् । |
| १०६×४७ | १० | ४१ | " | " | १८०० | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । तद्धितप्रकरणा- स्वरप्रकरणान्तः । |
| ९७×४३ | ९ | ३९ | " | " | १८९४ | " | वैयाकरणभूषणसारटीका । स्फोटनिरूपणान्तः । |
| ९७×४४ | ९ | ३६ | " | " | १०८१ | पू० | |
| १०२×३८ | ९ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| १३२ × ५१ | १३ | ५४ | " | " | | " | |
| १२६×४६ | १० | ४१ | " | " | | " | |
| ९४×३९ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| ७६×४ | ६ | १६ | " | " | | " | |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | विचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|--------------|-------|--------|----------|---------------------|---|
| १७५×४१ | ४ | ६१ | वङ्ग | का. | | अपू० | अत्र सटीकं श्रीकृष्णलीलामृतम् शङ्करकविवरसूक्तम् सुभाषितानि साहित्यदर्पणटीका च । |
| ९५×४२ | ८ | ३८ | दे.ना | " | | " | " |
| ९४×४१ | १० | ४२ | " | " | | " | कारकसूत्रप्रयोगमात्रानुसारिशब्द- बोधप्रदर्शनपरा । |
| ९४×४४ | ९ | ३८ | " | " | | पू०* | स्त्रीप्रत्ययान्ता । |
| ८१×३९ | ६ | २१ | " | " | | " | " |
| ११२×४१ | ८ | ५१ | " | " | १८५३ | " | स्वरवैदिकप्रकरणयोः । |
| ११२×४१ | ८ | ५१ | " | " | | अपू० | पूर्वार्द्धभागः । |
| ११२×४१ | ८ | ५१ | " | " | | पू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । तिङन्त- प्रकरणतो वैदिकप्रक्रियान्तम् । |
| ११३×४१ | ८ | ४६ | " | " | | अपू० | " |
| ११३×४१ | ९ | ४९ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टी० । कारक- प्रकरणस्य । |
| १०×५ | ११ | ४० | " | " | | " | " |
| ७२×४ | ८ | १९ | " | " | | " | " |
| १०१×०२ | १२ | ३५ | " | " | | " | स्थानिवदादेशोऽनन्विधावितिसूत्र- विचारः । अ० १, पा० १, सू० ६ । |
| १०१×५१ | ११ | ३२ | " | " | | " | सप्तममाह्निकम् । |
| १०२×४५ | ७ | ३२ | " | " | | " | " |
| ९९×४६ | ८ | ३० | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| १०८×३७ | ११ | ४४ | " | " | | " | " |
| १०५×४६ | ८ | २८ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याधिकरणम् |
|------------|--------------------------|-----------------------------------|---|
| ३९४४२ | महाभाष्यम् | पतञ्जलिः | १-४४, १-५०, १-२१ । |
| ३९४४३ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-१७, १७-१८, १८-२० (= २१) २२-१३२ १३२-२०२ + १ |
| ३९४४४ | अष्टाध्यायी | | १-१० । |
| ३९४४५ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-२२ । |
| ३९४४६ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | | ३ । (गगनया) |
| ३९४४७ | " | पतञ्जलिः टी० का०-कैयटः | १-२४२, १-७७, १-७२ १-६०, १-४६ । |
| ३९४४८ | सभ्याभरणं सटीकम् | रामचन्द्रभट्टः टी०का०-गोविन्दः | १-८४ । |
| ३९४४९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-३०० । |
| ३९४५० | रप्रत्याहारमण्डनम् | रामचन्द्रपाठकः | १-७ । |
| ३९४५१ | महाभाष्यम् | पतञ्जलिः | १-७१, १-२२, १-१६, १-२२, १-५१, १-३०, १-३३, १-४५, १-३२, १-३०, १-१५, १-२६, २६, २३-३०, १-३८, १-३२+२ । |
| ३९४५२ | सुपदान्याकरणम् | पद्मनाभदत्तः | १-५+२, ६-६७ (= ६८-६९) ७०-१८८, +१० । |
| ३९४५३ | सुपदान्यासूत्रपाठ | पद्मनाभः | १-४८, १-२० । |
| ३९४५४ | प्राकृतप्रकाशः सवृत्तिकः | वररुचिः वृ०का०-भामहः | १-१९ । |
| ३९४५५ | कलापसूत्रपाठः | | १-१३, १६-४५ । |
| ३९४५६ | अव्ययार्थः | | १-२ । |
| ३९४५७ | कातन्त्रवृत्तिटीका | दुर्गसिंहः | १-११२ । |
| ३९४५८ | कातन्त्रवृत्तिः | " | १-८९ । |
| ३९४५९ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-८८ । |
| ३९४६० | कविकल्पद्रुमः | वोपदेवः | १-२२ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | भाषाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|----------------|--------------|--------|-------|-----------------|---------------------|---|
| ११३×४७ | ११ | ५० | दे.ना. | का. | | अपूर्० | ५-६ अध्यायौ । |
| १०१×४१ | ११ | ४४ | " | " | | पूर्०* | |
| ६६×३६ | ७ | २१ | " | " | | " | सप्तमोऽध्यायः । |
| ५२५ . ४८ | २१ | ५२ | " | " | | " | द्वै० सि० कौ० टीका । वैदिकप्रकरणमात्रम् । |
| १०७×४८ | १४ | ५८ | " | " | | अपूर्० | |
| १०८×४८ | २० | ६४ | " | " | | पूर्० | प्रथमाध्यायात्पञ्चमाध्यायान्तम् । |
| १२४×४९ | १० | ५६ | " | " | | " | टीका-रश्मिमाला । |
| १२६×४६ | १० | ५३ | " | " | श. १७७ " ७१८ | " | |
| १६३×३३ | ९ | ४५ | " | " | १६४८ | " | |
| १३२×५१ | १३ | ६४ | " | " | १६५० | " | |
| १४५×२४ | ७ | ६६ | " | " | श. १५८५ | "* | |
| १४४×२४ | ४ | ६३ | ब्रह्म | " | | " | आदितः पञ्चमाध्यायान्तः । |
| १०१×४४ | १४ | ४९ | " | " | | " | वृत्तिः-सनोरमा । |
| ८२×३३ | ४ | २३ | " | " | | अपूर्० | |
| १०८×४५ | १२ | ३८ | दे.ना. | " | १८३७ | पूर्० | |
| १७६×३९ | ८ | ६६ | ब्रह्म | " | श. १७१३ | " | आख्यानप्रकरणस्य । |
| १६३×३६ | ५ | ५० | " | " | श. १७४४ | " | " |
| १०४×३९ | ११ | ४५ | दे.ना. | " | १७४३ | " | द्वै० सि० कौ० व्याख्या । तिङन्त-भागस्य । |
| ८४×३८ | ८ | २८ | " | " | १६६९ श. १५३४ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|--------------------------|--|
| ३९४६१ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशभट्टः | १-७+१, ८-१८, १८, २०-५० (=५१) ५२-२३९ (= २४०) २४०, २४१ (= २४२), २४३-२५३, २५५-२६० । |
| ३९४६२ | अव्ययार्थकारिका | | १-४ । |
| ३९४६३ | गोपालकारिका सविवृतिः | गोपालदत्तः | १-४ । |
| ३९४६४ | उणादिवृत्तिः | | १०-५२, ५२-७८ । |
| ३९४६५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१७, ११-११०, १-३५, ३३ (= ३६) ३७- ७६, ७८-९१ । |
| ३९४६६ | श्रौढमनोरमा | | १-७१ । |
| ३९४६७ | रूपमालिका | रङ्गदेवः | १-४, २, १-२ । |
| ३९४६८ | प्राकृतप्रकाराः सवृत्तिकः | चरुचिः वृ०का-भामहः | १-२३ । |
| ३९४६९ | उपसर्गवृत्तिः | | १-५ । |
| ३९४७० | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पलञ्जलिः टी०-कैयटः | १-३०, १-५६, ७०-१६२ । |
| ३९४७१ | श्रौढमनोरमा | | १-२९ । |
| ३९४७२ | उणादिसूत्रटीका | | १-१९ । |
| ३९४७३ | अष्टाध्यायी | | १-४० । |
| ३९४७४ | उणादिसूत्रं सवृत्तिकम् | वृ० का०-उज्ज्वल दत्तः | १-५४, ५४-१०७ । |
| ३९४७५ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागोजीभट्टः | १-३०७, ३३५-४५४, १-१२३, १-८४, ८४-११६ । |
| ३९४७६ | " | " | १-१०७, १-९३ । |
| ३९४७७ | " | " | १-१३९, १-१४८, १४८-१५७, १५९-१८० । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्वापूर्णा- विवेचः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|-----------------|-------------------------|---|
| ९०८×४०५ | १३ | ४८ | दे. ना. | का. | १७६३ | अपू० | |
| १००६×४०५ | १० | ४६ | " | " | १९२१ | पू० | |
| १००८×४०६ | १३ | ४९ | " | " | | " | बहुवचनै भलयेदिति सूत्रविचाररूपा। दशकारिकाविवृतिर्वा। |
| १००८×४०५ | १३ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| ११०८×४०७ | ६ | ३८ | " | " | | " | |
| १२०४×४०५ | ८ | ३९ | " | " | | " | |
| १००१×४०४ | ७ | ३७ | " | " | | " | सिद्धान्तकौमुदीसिद्धशब्दानाम्। |
| ९०८×४०२ | ११ | ४८ | " | " | १८२९ | पू० | वृत्तिः—मनोरमा। |
| ९०८×४०२ | १० | ४१ | " | " | ७२१८ ? | " | सं० १८२७ इति प्रतिभाति। |
| १२०६×५०५ | १५ | ६१ | " | " | | अपू० | अ० १, पा० १, आ० १-९। अ० २, पा० १, आ० १। |
| ९०६×४०५ | ७ | ३० | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका। सुबन्त- प्रकरणस्य। |
| ८०५×३०६ | ७ | ३० | " | " | १८४१ श० १७०६ | पू० | मध्यकौमुद्या। |
| १००१×४०८ | ११ | ४२ | " | " | १८७२ श० १७३५ | " | |
| ९०६×४०६ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| १००२×४०५ | १० | ३८ | " | " | | अपू० | अ० १-३। |
| १००१×४०२ | ९ | ४० | " | " | | पू० | अ० ७-८। |
| १००१×४०४ | ९ | ३८ | " | " | | "* | अ० ६ पा० १ आ० १-६। " २, " " २। " ३, " " ३। " ४, " " ४। |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------------|---------------------------|--|
| ३९४७८ | णेरणावितिसूत्रव्याख्यानम् | शिवरामेन्द्रयतिः | ५-१२ । |
| ३९४७९ | कारकतत्त्वम् | | १-२, +१ । |
| ३९४८० | प्रतिपिद्धार्थोऽयमितिभाष्यविचारः | | १-३, ६-३५ (= ३६) । |
| ३९४८१ | क्रियाकलापः | जिनदेवसूरिः | १-६० । |
| ३९४८२ | भावप्रदीपः | कृष्णमित्रभट्टाचार्यः | १-२६ । |
| ३९४८३ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-१५९, १९१, १-१४ । |
| ३९४८४ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी सटीका | वरदराजः टी०का०-शिवरामः | १-१६४ । |
| ३९४८५ | अष्टाध्यायी | | २-४, ७-१५, २१-२७, ३०-४४, ७४-७८ । |
| ३९४८६ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागोजीभट्टः | १-२६४, १-१९, ११-२८, २८-७०, १-८२, १-७३, १-४८, १-२६, ३-४, ४-१६ । |
| ३९४८७ | परिभाषेन्दुशेखरः | " | १-८० । |
| ३९४८८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१४ । |
| ३९४८९ | समासचक्रम् | | १-६ । |
| ३९४९० | सारस्वतप्रक्रिया | अनुभूतिस्वरूपाचार्यः | १-६, १-४२, १-४१, १-१२, । |
| ३९४९१ | महाभाष्यप्रदीपः | कैयटः | १-७३, १-३९, १-२९, १-६४, १-५३, १-५५, १-६१, १-८२, १-५७, १-४० । |
| ३९४९२ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशभट्टः | १-१५, १-८३-२४२, २४७-२५३ । |
| ३९४९३ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | उदयङ्करः | १-२८ + १, १ - १५, १-३, १-२, ४, १-१७ । |
| ३९४९४ | रत्नप्रकाशिका | भैरवः | १-३६+१, १-२७, १९-३७, १-५, १-७ । |
| ३९४९५ | परिभाषेन्दुशेखरःसटिप्पनः | नागेशः | १-४२ । |
| ३९४९६ | परिभाषापाठः | | १-५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------|--------------------|------------------|---------|-------|------------------------|-------------------------|---|
| १०८५७ | १५ | ५९ | दे. ना. | का. | श. १७०२ | अपू० | भाष्यसम्मतम् । |
| १३६५३ | १६ | ३८ | " | " | | " | |
| ८८५३७ | ८ | २४ | " | " | | " | |
| ११४५५ | १० | ४५ | " | " | १६०७ २० का० १४९० | पू० | |
| १०१४२ | ८ | ४० | " | " | | " | शब्दकौस्तुभटीका । प्रथमाह्निकः । |
| १२४८ | ११ | ५२ | " | " | | अपू० | टीका-सदस्थिमाला । पुस्तके लिपिभेदः । |
| १३१४५ | ९ | ६० | " | " | | पू० | टी०-कुञ्जिका । आदितस्वर- प्रक्रियान्ता । |
| ४८५२७ | ५ | १६ | " | " | | अपू० | |
| १११४१ | ९ | ४२ | " | " | १८४२ | " | टै० सि० कौ० टीका । |
| ११२४२ | ७ | ३५ | " | " | | पू० | |
| १२७४८ | ९ | ४२ | " | " | | अपू० | |
| ९२४९ | १० | २४ | " | " | | " | |
| १११५८ | १३ | ३७ | " | " | १९०६ | पू० | आदित. कृदन्तान्ता । |
| १३२५५ | १२ | ६९ | " | " | | " | अ० १-८ । |
| १४५३ | १० | ६० | " | " | | अपू० | |
| १३७४३ | १० | ६४ | " | " | | " | ज्योत्स्नाख्या । |
| १३६५२ | १३ | ५९ | " | " | | " | शब्दरत्नटीका । |
| १२३४८ | १० | ४६ | " | " | | पू० | |
| १०७५१ | १० | ३१ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-----------------|--|
| ३९४९७ | वैयाकरणभूषणसारटीका | भैरवः | १-२३ । |
| ३९४९८ | वैयाकरणभूषणसारः सटीकः | | १-५, ५, ६-१५, १५-२५, २७-३२ । |
| ३९४९९ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | ३८-४१ । |
| ३९५०० | परिभाषेन्दुशेखरः सटीकः | | १६-२०, २३-४४, ४४-४५, ५२, ५२-५७, ६०-७९+९ । |
| ३९५०१ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | २५ । (गणनया) |
| ३९५०२ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-१८ । |
| ३९५०३ | वाक्यवादव्याख्या | | १+१ । |
| ३९५०४ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-७, ९-२५+३ । |
| ३९५०५ | तत्त्वबोधिनी | | १-१६३, ३-७१, ७१-७३, ७३-८०+१, १-८१ । |
| ३९५०६ | " | | १-२७+१ । |
| ३९५०७ | पाणिनिसूत्रसूची | हरपालः | १-६६, ६८-६९ । |
| ३९५०८ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ६३-१२०, १२०-१७३ (= ४६) ४७-५५ । |
| ३९५०९ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-११०, ११२-११९ । |
| ३९५१० | उपसर्गवृत्तिः | | १-१० । |
| ३९५११ | पाणिनिसूत्रवृत्तिः | | १-१५ । |
| ३९५१२ | धातुवृत्तिः | सायणः | १-९७ । |
| ३९५१३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१६२, १-४९+१, ५०-१०१, १-८१+१, १-२०, १-३९, १-८ । |
| ३९५१४ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-५, १-३, १, १-२, २ । |
| ३९५१५ | " | | १-१२ । |
| ३९५१६ | " | | १-२, १-६ । |
| ३९५१७ | " | | १-५, २३-२४, ३७-३८, ६-१०, ५५-७४, १-१४, १००-१०२ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|------------------------------|--|
| ३९५१८ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-१५, १८-४२, १-१०, १-१९, १-२६, १-१९+१, १-६+६। |
| ३९५१९ | " | | १, १-४। |
| ३९५२० | " | | १-९। |
| ३९५२१ | " | उदयङ्करः | १-५० + १। |
| ३९५२२ | " | | ८-१२। |
| ३९५२३ | शब्दकौस्तुभः | | १-५५। |
| ३९५२४ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जलिः प्र०दी०का०-कैयटः | १-१८, १-२४, १-२५, १-१६, १८-१९, १-२४। |
| ३९५२५ | शब्दरूपावलिः | | १२। (गणनया) |
| ३९५२६ | " | | ३-६+१। |
| ३९५२७ | " | | १-८। |
| ३९५२८ | " | | १-२। |
| ३९५२९ | " | | १-२०, २०-३७। |
| ३९५३० | समासचक्रम् | | १-३। |
| ३९५३१ | " | | ३-४ ७-१०। |
| ३९५३२ | " | | ३-७। |
| ३९५३३ | समासचक्रचूडामणिः | | १-२। |
| ३९५३४ | समासचक्रम् | | १-४। |
| ३९५३५ | समासविधिः | | १-७। |
| ३९५३६ | समासचक्रम् | | १-४। |
| ३९५३७ | समासज्ञापकः | नवाभट्टः | १-६। |
| ३९५३८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-२१, १, २३-२८। |
| ३९५३९ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-५५। |
| ३९५४० | " | | १-७६। |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|-----------------------|
| १००१×४०४ | ९ | ३९ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९९×४ | ११ | ४४ | " | " | | " | |
| ९७×४०४ | १५ | ४६ | " | " | | " | |
| ९५×४३ | ९ | ४१ | " | " | | " | कज्योत्स्नाख्या । |
| १२२×४६ | १२ | ४४ | " | " | | " | |
| १२६×४६ | १० | ६३ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| १२७×४८ | ७ | ५१ | " | " | | " | अ० १, पा० १, आ० १-४ । |
| १०×४३ | २७ | १३ | " | " | | " | |
| ८३×३६ | ६ | २२ | " | " | | " | |
| ८३×२८ | ५ | १९ | " | " | | " | |
| ७×४३ | १३ | २४ | " | " | | " | |
| ७३×४ | ८ | २२ | " | " | | " | |
| ८५×४ | ८ | २६ | " | " | | " | |
| ६६×४४ | ८ | १८ | " | " | | " | |
| ८३×३६ | ७ | २३ | " | " | | " | |
| ८६×३६ | १२ | ३४ | " | " | | पू० | |
| ८६×४५ | ८ | २३ | " | " | | " | |
| ८१×४३ | ९ | २० | " | " | | " | |
| ८३×४२ | १० | २३ | " | " | | " | |
| ५६×३८ | ८ | १७ | " | " | | " | |
| १११×३९ | ९ | ४७ | " | " | | अपू० | स्वरवैदिकप्रकरणम् । |
| ११×४६ | ७ | ४७ | " | " | श० १७३४ | पू० | |
| ९३×४ | ९ | ३३ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्यादिवरणम् |
|------------|----------------------------|-------------------------------------|--|
| ३९५४१ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | वरद्वराज. | १-७, ९-१२ । |
| ३९५४२ | उत्तरपक्षावली | शिवदत्तमिश्रः | २-१३, १७-४३, ४८-६०, ६३ । |
| ३९५४३ | समासकुसुमावली | मङ्गलेश्वरः | १-२, २, ४-१६ । |
| ३९५४४ | शब्दलौस्तुभप्रभा | वैद्यनाथभा-गुण्डेः | १-७, ९-१४, २ । |
| ३९५४५ | महाभाष्यप्रदीपविवरणम् | ईश्वरानन्दः राम- चन्द्रसरस्वती च | ३-४०, ४४-५२, ६०-६५, ६७-६८, ६८-७६, ७८-८०, ८३, ८६ । |
| ३९५४६ | चन्द्रिकावातुपाठः | | १-३, ५-१८ । |
| ३९५४७ | कविकल्पद्रुमः | वोपदेवभट्टः | १-१५ । |
| ३९५४८ | फिट्स्त्राणि | शान्तनवाचार्यः | १-३ । |
| ३९५४९ | पदमञ्जरी | | १-२१ । |
| ३९५५० | प्रक्रियाकौमुदी | रामचन्द्रः | १-७, ९-२८, ३०, १६-७६ । |
| ३९५५१ | उणादिसूत्रपाठः | | १-११ । |
| ३९५५२ | तत्त्वदीपिका | | १-२५ । |
| ३९५५३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-५५)६-८९, ९१-८०, १-५३, ५५-११५ ८-११, १३-५९, १-२५ । |
| ३९५५४ | वैयाकरणशब्दरत्नमाला | सोमयाजी | १-२, ६-११ । |
| ३९५५५ | बालबोधिनी | वासुदेवमिश्रः | १-१६५, १६७-२३२, २३२-२४९ । |
| ३९५५६ | कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १-९३, ९३-१०३, १०५-१०८, ११०-११२, ११४-१२०, १२२-१२४, १२६-१२९ । |
| ३९५५७ | सारस्वतं सटीकम् | टी०का०-पुञ्जराजः | १०-९५, ९६-१५५ । |
| ३९५५८ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-३२ । |
| ३९५५९ | कारकचक्रम् | | १-९ । |
| ३९५६० | लघुभाष्यम् | | २, ४-१४, १६-२० । |
| ३९५६१ | शब्दरूपावली | | १-१७ । |
| ३९५६२ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपालः | १-१९ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|---------------------------|--------------------------------------|
| ३९५६३ | वादिघटमुद्गरभाष्यम् | जयन्तभट्टः | १-१३, १-२ । |
| ३९५६४ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-९१ । |
| ३९५६५ | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामाश्रमाचार्यः | १-५५, १-२०, ३३-८७, ९९, १-२४, २८-३८ । |
| ३९५६६ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | १-३२ । |
| ३९५६७ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-१२, १५-२९, ३१-३५, ३८-४८ । |
| ३९५६८ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गासिंहः | १-१०, १०-३६, ३६-१०५ । |
| ३९५६९ | कविकल्पद्रुमः | वोपदेवः | १-३१ । |
| ३९५७० | मुग्धबोधः | | १०, २३-२४+(१) = ४ । |
| ३९५७१ | धातुपाठः | | १-३९+१ । |
| ३९५७२ | कविकल्पद्रुमः | वोपदेवः | १-४२ । |
| ३९५७३ | मुग्धबोधसूत्रपाठः | ” | १-१५ । |
| ३९५७४ | मुग्धबोधः | ” | १-१०५ । |
| ३९५७५ | मुग्धबोधटीका | दुर्गादासः | १-१०६, १-३५, १-१६ । |
| ३९५७६ | मुग्धबोधः | | १९-२४ । |
| ३९५७७ | सङ्क्षिप्तसारः | | १-६ । |
| ३९५७८ | कातन्त्रक्रोडपत्रसङ्ग्रहः | | १-४, १-२, १-४, १-२, १+१, १-३ । |
| ३९५७९ | विशेष्यत्वविशेषणत्वयोर्द्वै- विध्यविचारः | | १-४ । |
| ३९५८० | कर्मण्यग्रइतिस्त्रटीका | | १ । |
| ३९५८१ | गणवृत्तिः | | १-५ । |
| ३९५८२ | धातुभेदः सप्रयोगः | | १ । |
| ३९५८३ | धातुपरिच्छेदः | माधवसेनः | १-११ । |
| ३९५८४ | षट्कारकम् | | १-१५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------------------|-------------------------|--------------------------|
| ११'५×६'२ | १३ | ४० | दे. ना. | का. | १९०५ | अपू० | सारस्वतभाष्यम् । |
| ९'७×४'३ | ७ | ३६ | " | " | | पू० | |
| १३'३×५' | ९ | ३१ | " | " | १९०२ १८८६ १८२६ | अपू० | |
| १३'४×५'२ | १० | ३७ | " | " | | पू० | आख्यातप्रक्रियामात्रम् । |
| १०'१×४'३ | ९ | ३४ | " | " | १८३३ | अपू० | |
| १४'३×३'१ | ५ | ४९ | वङ्ग. | " | श. १७२० | पू० | कृत्प्रकरणम् । |
| १२'९×३'१ | ५ | ४७ | " | " | श. १७३९ | " | |
| १५'४×३'७ | ६ | ४१ | " | " | | अपू० | |
| १४'३×३'१ | १० | ८३ | " | " | | पू० | सोदाहरणः । |
| १२'८×३'२ | ५ | ३६ | " | " | श. १७१० | " | |
| १५×३'१ | ६ | ५३ | " | " | | " | |
| १४'४×३'२ | ६ | ५५ | " | " | श. १७२८ | " | |
| १४'३×३'२ | ८ | ७५ | " | " | | अपू० | भ्वादिप्रकरणान्ता । |
| १५×३'२ | ५ | ४२ | " | " | | " | |
| १०×३'५ | ९ | ४४ | " | " | | " | सुबन्तप्रकरणम् । |
| १४'५×३'१ | ६ | ५५ | " | " | | " | |
| १४'३×३'१ | ८ | ५८ | " | " | | पू० | सोपपत्तिकः । |
| १४'४×३'१ | ६ | ५० | " | " | | " | |
| १३×३ | ५ | ३८ | " | " | | " | गणसूत्रञ्च । |
| १४'३×३'१ | ८ | ६५ | " | " | | अपू० | कारिकामयः । |
| १४'३×३'१ | ६ | ४९ | " | " | | पू० | |
| १४'३×३'१ | ८ | ६२ | " | " | श. १७१८ | " | |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|--------|-------|------------------------------|------------------------|-----------------------|
| १४३×३०१ | ७ | ४५ | दे.ना. | का. | | पू० | आख्याते १ पादः । |
| १४२×३०१ | ४ | ५७ | " | " | | " | कृत्प्रकरणम् । |
| ९७×३०७ | १० | ३८ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९७×४२ | ९ | ५० | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीकाटीका । |
| ९७×४३ | १० | ३८ | " | " | | " | " । प्रथमाह्निकम् । |
| १०७×४८ | २० | ३८ | " | " | १८५१ | " | अष्टाध्यायीटी०टी० । |
| ९७×४०२ | १५ | ३६ | " | " | | " | " |
| ९७×४०२ | १० | ५१ | " | " | | " | " |
| ९७×४३ | १६ | ६० | " | " | | " | " |
| ९८×३८ | ९ | ३४ | " | " | | " | द्वितीयकाण्डम् । |
| १०५×४०६ | ९ | ३७ | " | " | | " | " |
| ११×५४ | १५ | ५० | " | " | ७६१ | " | " |
| ११४×४७ | १० | ५० | " | " | | " | " |
| १११×४५ | १० | ४५ | " | " | | " | " |
| ११२×४९ | १२ | ४० | " | " | | " | " |
| ८९×३०७ | ८ | ३२ | " | " | | " | " |
| ८६×४५ | ९ | ३१ | " | " | १७२१ | " | " |
| १३१×६७ | १२ | ५५ | " | " | | " | तृतीयाध्यायमात्रम् । |
| १३३×६५ | ९ | ५९ | " | " | १७६१ १७६२ १७७७ १७८२ | " | " |

| क्र.संख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|--------------------|---|
| ३९६०४ | षट्कारकनिरूपणम् सटिप्पणम् | | १-११ । |
| ३९६०५ | वैयाकरणभूषणकारिका | | १-६ । |
| ३९६०६ | परिभाषाभास्करः | भास्करभट्टः | १-३, ५-२२, २२-५२ । |
| ३९६०७ | सिद्धान्तसार. सटीकः | | १-३, ५, ७-१६, १८-१९, २१-३४, ३६-५१, ५३-७०, ७२-८५, ८७-८९ । |
| ३९६०८ | " | | १-२, ५-६, ८-१५, १७-१८, १८-२० । |
| ३९६०९ | सारस्वतम् | | ६-८ । |
| ३९६१० | वैयाकरणसिद्धान्तलघु- मञ्जूषा | नागेशः | ७१, ७५-७९, ८१-८९, ९१-९५, ९७-१२९, १४१-१४५, १४८-१४९, १५३-१६४, १६९-२५३ । |
| ३९६११ | महाभाष्यम् | पतञ्जलिः | १२-२६५, २६७-२८७, १-२, ४-९९, १०२-११४, ११६, १, ११०, १२९-१३२, १३५-१३७, १४२-१४९ । |
| ३९६१२ | लघुभाष्यम् | | १; ६-९, ११-१२, १४, १७-३७, ५१ । |
| ३९६१३ | सूत्रसप्तशती | | १-४ । |
| ३९६१४ | सारसिद्धान्तकौमुदी | | १-२६ । |
| ३९६१५ | रप्रत्याहारमण्डनम् | लक्ष्मणपाठकः | १-५ । |
| ३९६१६ | प्रौढमनोरमा | | १ । |
| ३९६१७ | वैयाकरणभूषणसारटीका | कृष्णमित्रः | २-१७ । |
| ३९६१८ | नन्दिकेश्वरकारिका सटीका | उपमन्युः | १-७ । |
| ३९६१९ | वाद्चूडामणिः | कृष्णाचार्यः | १, ४-१६ । |
| ३९६२० | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-३, ६-२५ । |
| ३९६२१ | " | | ६०-९४, ९६-१०० । |
| ३९६२२ | लघुशब्देन्दुशेखरज्योत्स्ना | उदयङ्करः | १-२१, २३-२४, २६-३४ । |
| ३९६२३ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-१६, १८-४८ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|--------------|---------|-------|----------|---------------------|-------------------------------------|
| ९३×४४ | ६ | ३१ | दे. ना. | का. | | पू० | |
| ९७×४१ | ९ | २८ | " | " | १८४९ | " | स्फोटवादान्ता । |
| १०३×४५ | १० | ५५ | " | " | | अपू० | |
| १०८×४७ | ११ | ३६ | " | " | १९०१ | " | |
| १०८×४७ | १२ | ३५ | " | " | | " | |
| ९८×४३ | १० | २८ | " | " | | " | |
| १०७×४५ | १० | ४५ | " | " | १८३८ | " | |
| ९८×४४ | १० | ४२ | " | " | १६११ | " | |
| १०३×४३ | १३ | ५१ | " | " | १८७२ | " | सारस्वतभाष्यमाख्यातविवरणान्तम् । |
| १०×४३ | ८ | ४० | " | " | | " | |
| १३२×६९ | १२ | ३४ | " | " | १८७३ | पू० | |
| १०७×४५ | १४ | ४४ | " | " | | " | |
| १०९×४५ | १२ | ३९ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । वैदिक-प्रकरणम् । |
| १०९×४५ | १२ | ३९ | " | " | | " | |
| ९७×४४ | ९ | ३१ | " | " | १८९५ | पू० | टीका तत्त्वविमर्शिनी । |
| १०७×४४ | १२ | ४८ | " | " | | अपू० | युक्तिरत्नाकरो वा । |
| १०४×४६ | १३ | ४१ | " | " | | " | टीका चिदस्थिमाला । |
| १०५×४६ | १० | ४३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टी० टीका । |
| १०५×४५ | १० | ४९ | " | " | | " | |
| १०८×४५ | १३ | ४९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|--------------------|--|
| ३९६२४ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-१५ । |
| ३९६२५ | परिभाषेन्दुशेखरगदा | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-२१, ३२-७१ । |
| ३९६२६ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | २-१९, २१-७८, ८०-८१ । |
| ३९६२७ | अष्टाध्यायी | | १-५, ७, ९-१३+१ । |
| ३९६२८ | सारसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-४, २-१०, १०-१४, १७-३२, ३४-४१, ४३-६२ । |
| ३९६२९ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | " | २-२८, ३०-१४० । |
| ३९६३० | मुग्धबोधटीका | दुर्गादासः | १-७५, ७८-१५४ । |
| ३९६३१ | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-१०२ । |
| ३९६३२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-९७ । |
| ३९६३३ | " | " | १-४३ (= ४४)-११७, ११९-१२४ । |
| ३९६३४ | " | " | १-३७, ४०-४७, १-४३ + ४, ४७-७३, ७५-९९, २-१६, १५-२४, २७-४५, १४५ । |
| ३९६३५ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-७१ । |
| ३९६३६ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-३६, (१-३) ४०-६७ । |
| ३९६३७ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-४६ । |
| ३९६३८ | " | | २-५३ । |
| ३९६३९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २-१५ + १, १८-४७ । |
| ३९६४० | तत्त्वबोधिनी | | १-६ । |
| ३९६४१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ३४-७७, ८२-९२, ९२-९५, १-६ । |
| ३९६४२ | लघुशब्देन्दुशेखरः सटिप्पणः | नागेशः | १-६, ८-१४ । |
| ३९६४३ | तत्त्वबोधिनी | | ४५-५७, ६९-९७ । |
| ३९६४४ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिभट्टः | १-२६, १-३२, १-२५, १-२८, १-३०, १-२५, १-१३, १-४३, १-१९, १९-३६ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आर्षः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|--------------|---------|-------|----------|--------------------|---|
| १०१×४५ | १२ | ४७ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १०९×४५ | ११ | ४१ | " | " | | " | |
| ९९×४५ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| १०७×४५ | १० | ४३ | " | " | | " | |
| ८१×४२ | १० | ३२ | " | " | १८७९ | " | |
| ९४×५१ | १३ | ३५ | " | " | | " | |
| १७३×४१ | १० | ७५ | वङ्ग. | " | | " | |
| ९५×३८ | १२ | ४६ | दे. ना. | " | | पू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । कारकान्तभागस्य । |
| ९८×४३ | ९ | ३२ | " | " | | " | कृतप्रकरणमात्रम् । |
| १०×४४ | १० | ४१ | " | " | १८८६ | "* | तिङन्तप्रकरणमात्रम् । |
| ९८×४२ | ९ | २० | " | " | | अपू० | |
| १०×४१ | ९ | ३० | " | " | | पू० | |
| ९२×४२ | १० | ३५ | " | " | | "* | कीटभक्षितः । ग्रन्थपूर्णार्थं मध्ये ३६ पृष्ठतः १-३ पत्राण्यन्यलिखितानि । |
| ८७×३७ | ७ | २३ | " | " | | अपू० | |
| ९२×३४ | ६ | ३४ | " | " | | " | |
| ९८×४ | ६ | ३३ | " | " | | " | |
| ९८×४३ | १० | ३८ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०४×४ | १३ | ५० | " | " | | " | |
| १०×४२ | ११ | ४० | " | " | | " | |
| ११×४५ | ११ | ३३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०×३७ | १६ | ४९ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । अ० १ पा० १ आ० १-९ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------|-------------------------------|---|
| ३९६४५ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-३४, ४१-४२ (= ४३), ४४-४७ (= ४८), ४९-१९२, १-२१ । |
| ३९६४६ | परिभाषेन्दुशेखरः | " | १-६२ । |
| ३९६४७ | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-२६ । |
| ३९६४८ | " | " | १-१५० । |
| ३९६४९ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-३८ + (३९ = ४९), ४०-३१५, १-१६८, १-७१ । |
| ३९६५० | उपपदमतिङ्-सूत्र-व्याख्या | | १-५ । |
| ३९६५१ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ६-१०, १०-१४, १४-३०, ४६-५४, ५४-७२ । |
| ३९६५२ | " | टी० का०- राघवेन्द्राचार्यः | १-१६ + १, १८-१९, १-३४, ३६-४४, ४४-४५ । |
| ३९६५३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१२ । |
| ३९६५४ | प्रबोधचन्द्रिका | बैजलभूपतिः | १-११, ११-२९ । |
| ३९६५५ | गणपाठः सटिप्पणः | | १-३२ । |
| ३९६५६ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागोजिभट्टः | १-७९ । |
| ३९६५७ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-४८९, १-२९०+१ । |
| ३९६५८ | कविकल्पद्रुमः | | १-१०+१ । |
| ३९६५९ | मुग्धबोधटीका | | १-१३ । |
| ३९६६० | सापेक्षवादः | | १ । |
| ३९६६१ | " | | १-३ । |
| ३९६६२ | प्रक्रियाकौमुदी | | १-२२, १-२२ । |
| ३९६६३ | धातुपाठः | | १-२२ । |
| ३९६६४ | मुग्धबोधः | वोपदेवः | १-५७ । |
| ३९६६५ | कातन्त्रसूत्रम् | | ५-१५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|--------------|------------------------|---|
| ९'८×४'३ | १० | ३६ | दे.ना. | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ९'२×४'१ | ११ | २८ | " | " | १९०१ | पू० | |
| ८'५×३'८ | १० | ३४ | " | " | १८७० | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । वैदिक- प्रकरणम् । |
| ८'४×३'८ | १० | ३६ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ८'१×३'८ | ९ | ३९ | " | " | १८७० | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| ७'५×३'५ | ११ | ३० | " | " | | पू० | |
| १०'५×४'२ | १३ | ५५ | " | " | | अपू० | टीका गदा । |
| ११'१×४'९ | ११ | ३४ | " | " | | पू०* | टीका त्रिपथगा । |
| ९×३'९ | ११ | ४६ | " | " | | अपू० | |
| ९'१×४'१ | ८ | ३५ | " | " | | पू० | सन्धिचन्द्रिकान्ता । |
| ९'४×३'५ | ८ | ३९ | " | " | १८८६ | " | |
| ९'७×३'२ | ८ | ४२ | " | " | १८८१ | " | |
| ९'५×३'५ | ८ | ३८ | " | " | १९६४ १८८७ | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ९'७×३'५ | ४ | ३६ | वङ्ग | " | श० १७०१ | अपू० | |
| १७'७×३ | ७ | ५५ | " | " | | पू० | स्त्रीप्रकरणस्य । |
| १७'२×२'८ | ८ | ८० | " | " | | " | समासघटकपदविचारः । |
| १७'२×२'८ | ५ | ७५ | " | " | | " | " |
| ९'२×४ | १२ | ३३ | " | " | | अपू० | सुवन्ततिङन्तप्रकरणे । |
| १५×३'२ | ५ | ४८ | " | " | | " | कातन्त्रानुसारः । |
| १७'७×३'६ | ५ | ६४ | " | " | | पू० | त्यादितः कृदन्तं यावत् । |
| १३'७×४'५ | ३ | २९ | " | " | | अपू० | आख्यातप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------|---------------------------------|---|
| ३९६६६ | सापेक्षवादः | परमानन्दः | १-२ । |
| ३९६६७ | अन्वयोपक्रमोपायफलानि | | १ । |
| ३९६६८ | शब्दरत्नम् | रामशरणः | १-७ । |
| ३९६६९ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिटीका | सुषेणकविराजः | १-६७ । |
| ३९६७० | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-७९ । |
| ३९६७१ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिटीका | | १-८ । |
| ३९६७२ | कातन्त्रपरिशिष्टसूत्रम् | | १-११ । |
| ३९६७३ | मुग्धबोधः | | १-१८ । |
| ३९६७४ | धातुवृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-८ । |
| ३९६७५ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | " | १-५२ । |
| ३९६७६ | कातन्त्रपरिशिष्टसूत्रम् | | १-६ । |
| ३९६७७ | कातन्त्रपरिशिष्टसूत्रवृत्तिः | श्रीपतिदत्तः | १-१३६, १३६-१७० । |
| ३९६७८ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-५७ । |
| ३९६७९ | सुपद्मव्याकरणम् | पद्मानाभदत्तः | १-३४ । |
| ३९६८० | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | काशीश्वरः | १, ४-८०+७३, २९-३२ । |
| ३९६८१ | मुग्धबोधटीका | दुर्गादासः | १-२४ । |
| ३९६८२ | " | | १-३०, १ । |
| ३९६८३ | सङ्क्षिप्तसारः सवृत्तिकः | क्रमदीश्वरः वृ०काः जुमरनन्दः | १-२३, २४(=१), २-५१, १-३१, १-१५, १-२५, २६(=१), २-३४ । |
| ३९६८४ | मुग्धबोधः | वोपदेवः | १-९+३, १०-७६ । |
| ३९६८५ | मुग्धबोधटीका | दुर्गादासः | १-६६, १-७५, ७५-११३, १-११, १३-१९, २१-२३, १-४९, १-२७ । |
| ३९६८६ | परिभाषासूत्रम् | | १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|------------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|--|
| १७०२२२८ | ५ | ७५ | वङ्ग० | का. | | पू० | |
| १७०२२२८ | ८ | ८० | " | " | | " | |
| १७०२२२८ | ५ | ६५ | " | " | | " | |
| १७०२२२८ | ७ | ८० | " | " | | " | कृत्सु १-५ पादाः । |
| १६०९ × ३ ६ | ४ | ५९ | " | " | | " | तद्धितपादान्ता । |
| १५५३३ | ६ | ६५ | " | " | | अपू० | आख्यातपादस्य । |
| १०६५२९ | ७ | ३२ | " | " | | पू० | |
| १२०९५९ | ६ | ३९ | " | " | | अपू० | अजन्तपुँल्लिङ्गान्तः । |
| १३७५३५ | ६ | ४७ | " | " | | " | |
| १८०२३३६ | ५ | ४३ | " | " | | " | आख्यातप्रकरणम् । |
| १७०२२२८ | ५ | ४६ | " | " | | पू० | स्त्रीप्रकरणान्तम् । |
| १७०२२२८ | ४ | ५० | " | " | श. १७२५ | " | समासप्रकरणान्ता । |
| १३७५३४ | ४ | ५४ | " | " | | अपू० | चतुष्टयप्रकरणम् । |
| १४०८३२ | ६ | ७१ | " | " | | " | |
| १४०४३६ | ६ | ५६ | " | " | श. १६१३ | " | शब्दरत्नाकरो वा । ग्रन्थान्ते का- तन्त्रदौर्गसिंहवृत्तिश्च पत्रचतुष्टये वर्त्तते । |
| १८०३३४ | ७ | ६८ | " | " | | " | |
| १८०५३४ | ६ | ७० | " | " | | " | |
| १५६५३३ | ६ | ५१ | " | " | | पू०* | वृत्तिः रसवती । समासपादान्तः । |
| १३०३ × ४५ | ९ | ४२ | दे. ना | " | १७९७ | " | |
| १३०१५९ | १२ | ४५ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १३०३३९ | ५ | ५३ | " | " | श. १७३६ | पू० | अत्र शिक्षावलावलन्यायसूत्राणि च सन्ति । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------------------|-------------------------------|--|
| ३९६८७ | सुपद्मकरन्दः | प्राणहरिभिषक् | १-८+१, १, १-१३, १-११, १-११, १-४, १-४, १-२५, १-८(=१), २-४+३। |
| ३९६८८ | सुपद्मव्याकरणम् | पद्मनाभदत्तः | २-१११। |
| ३९६८९ | सारस्वतटीका | | १-६। |
| ३९६९० | धातुपाठः | | १-३०। |
| ३९६९१ | राजादिवृत्तिः | | १-८। |
| ३९६९२ | सङ्क्षिप्तसारदीपिका | वंशिवदन- भट्टाचार्यः | १-१०, ४-७, ९-११, १३-१५, २६-३३, ३५-३७, ४०। |
| ३९६९३ | कातन्त्रपरिशिष्टसूत्रवृत्तिः | श्रीपतिदत्तः | १-२३, १-७८, ८०-९८, १००-११९+१। |
| ३९६९४ | धातुलक्षणम् | दलोकः | १-२८+३, १-३। |
| ३९६९५ | शब्दरत्नाकरः | कामदेववोषः | १-६, ११-५६+१। |
| ३९६९६ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गासिंहः | २-८, ११-६५, ६७-१०३। |
| ३९६९७ | भाषावृत्तिः | पुरुषोत्तमः | २९४। (गणनया) |
| ३९६९८ | मुग्धबोधटीका | रामानन्दः | १२९। (गणनया) |
| ३९६९९ | सङ्क्षिप्तसारः सवृत्तिकः | कमदीश्वर वृ०का० जुमरनन्दिः | १-२६। |
| ३९७०० | कारिकावृत्तिः | सरस्वतीरामः | १-२६। |
| ३९७०१ | वैयाकरणसिद्धान्तलघुमञ्जूषा | नागेशभट्टः | १-७०(=७१), ७१, १-१०३। |
| ३९७०२ | तर्कचन्द्रिका | कृष्णभट्टमौनी | १-४२, ४२-१२४, १२६-१४७। |
| ३९७०३ | सङ्क्षिप्तसारवृत्तिविवरण- कौमुदी | अभिरामः | १-३०, ३०-६०। |
| ३९७०४ | सङ्क्षिप्तसारवृत्तिविवरणम् | गोथीचन्द्रः | १-१०४। |
| ३९७०५ | समासज्ञापकावली | हरगोविन्द- विद्यावाचस्पतिः | १-१६। |
| ३९७०६ | मुग्धबोधपरिशिष्टम् | काशीश्वरः | १-४१, ४१-५९। |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | भाषाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|-------|---------------------|-------------------------|---|
| १८६×४६ | १३ | ८० | वङ्ग. | का. | श. १७१२ | अपू० | सुपदानव्याकरणटीका । |
| १६४×३७ | ६ | ४६ | " | " | | " | |
| ११४×५४ | १६ | ४२ | दे.ना | " | | " | टीका-चन्द्रकीर्तिः । |
| १३४×३१ | ४ | ३० | वङ्ग. | " | श. १७३७ | पू० | |
| १३६×३१ | ६ | ५५ | " | " | | " | कातन्त्रे समासप्रकरणस्य । |
| १३२×३७ | ९ | ४८ | " | " | | अपू० | |
| १६९×३१ | ५ | ६४ | " | " | श. १५६७ | पू० | |
| १३५×१९ | ६ | ६८ | " | " | श. १६१६ | "* | अन्ते दशबलकारिका च । |
| १३५×१९ | ६ | ६८ | " | " | श. १६१६ | अपू० | |
| १३८×१२ | ३ | ५२ | " | ता० | | " | आख्यातप्रकरणस्य । |
| १७५×३२ | ९ | ७९ | " | का | वङ्गाब्दाः १२१८ | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| १७५×३२ | ९ | ७९ | " | " | | " | |
| १४९×३१ | ५ | ७१ | " | " | श. १७१० | पू० | सन्धिपादान्तः । |
| १४२×३३ | ६ | ५३ | " | " | | अपू० | |
| १२१×४४ | १२ | ४० | दे.ना. | " | श. १८८० १७४४ | " | |
| ९४×४३ | ९ | २५ | " | " | | " | |
| १५५×३५ | ११ | ७२ | वङ्ग. | " | | पू० | सं० सा० टी० टी० टीका समास पादस्य । |
| १५६×३५ | ४ | ५४ | " | " | वि०र०का० श. १७५४ | " | जुमरनन्दिपरिशोधितवृत्तेष्टीकेयं समासपादस्य । |
| १५६×३६ | ११ | ६६ | " | " | | " | सङ्क्षिप्तसारज्ञापकावल्याम् । |
| १६५×३८ | ७ | ७२ | " | " | श. १७७१ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|---------------------|---|
| ३९७०७ | मुग्धबोधपरिशिष्टम् | काशीधरः | १-२८ (= २४) २५-४३ + ५ । |
| ३९७०८ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-१५, १७-२५ । |
| ३९७०९ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | ५९-७० । |
| ३९७१० | ” | | १-१७ । |
| ३९७११ | ” | | ५६-८३ । |
| ३९७१२ | ” | | ७-१२, १४-२२, १९-२९, २९, २९-३९, ३९-११३ ११५-१३३, १-१५, १७-२६, ३०-३५ । |
| ३९७१३ | अष्टाध्यायी | | १-२०, २२-८२, ८४-८७, ८९ । |
| ३९७१४ | कविरहस्यधातुव्याख्या | | १-९ । |
| ३९७१५ | अपरिमाणेत्यादि-सूत्र- व्याख्या | | १-२ । |
| ३९७१६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ३१५ । (गणनया) |
| ३९७१७ | क्रियाकलापः | विद्यानन्दः | १६-२१ । |
| ३९७१८ | अष्टाध्यायी | | १-७० । |
| ३९७१९ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागोजिभट्टः | १-६९ ७६-१६८, १-६६ (= ६७), ६७-७५, (= ७६), ७७-१७०, १-९४, १-१०६, १-१०३, १०३-११७, १-१७२, १-९१, १-७९ । |
| ३९७२० | काशिकाविवरणपञ्जिका | जिनेन्द्रबुद्धिपादः | १-१७, १-१४, १-४, ६-४४, १-३+१, ७, ९-४८ । |
| ३९७२१ | अनिट्कारिकाटीका | | १-६ । |
| ३९७२२ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १-१४, १९-१०० । |
| ३९७२३ | प्रक्रियाकौमुदीटीका | | ६-१९, २१-३४, ३६-४३ । |
| ३९७२४ | प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः | विडुलाचार्यः | ६-९, ९-९९ । |
| ३९७२५ | शब्दकौस्तुभटीका | | १-१८ । |
| ३९७२६ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | नरदराजः | ११, १३-२९ । |
| ३९७२७ | व्याकरणटीकाग्रन्थविशेषः | | ३१-४८, ४८-६३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|--------------|-------------------------|--|
| १४'१×३'१ | ६ | ६५ | वङ्ग. | का | श. १६१० | अपू० | |
| ९'८×४'३ | १३ | ४६ | दे. ना. | " | | " | अख्यातप्रक्रिया । |
| १०'९×४'९ | ११ | ४० | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ११'६×४'८ | ११ | ५५ | " | " | | " | " तद्धितप्रकरणम् । |
| ११'७×४'९ | १३ | ५० | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । समासा- श्रयान्तः । |
| ११'६×४'६ | १३ | ६२ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ९'२×४'४ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| १०'५×४'५ | १४ | ५४ | " | " | | पू० | |
| ११'५×४'७ | ११ | ४१ | " | " | | " | |
| ११'८×४'७ | ९ | ४४ | " | " | | अपू० | अतिजीर्णपत्रत्वात्प्रयोगानर्हा । |
| १३'२×६'९ | २१ | ५५ | " | " | | पू० | |
| ८'७×३'८ | ९ | २५ | " | " | | अपू० | अष्टमाध्यायस्य प्रथमपादान्ता । |
| १०'७×४'९ | १० | ३६ | " | " | १७८५ १८४६ | " | १-८ अध्यायाः । |
| १३'१×४'८ | १२ | ६२ | " | " | | " | |
| ८'८×३'३ | ८ | ३५ | " | " | | पू० | |
| ११'३×४'१ | १० | ४६ | " | " | | अपू० | |
| १०'८×४'५ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| ११'८×४'७ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| ९'८×४'२ | १६ | ३७ | " | " | | " | अष्टमाध्यायी टी० टीका । |
| १२'८×५ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| ९'६×४'२ | १० | ३८ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-----------------|---|
| ३९७२८ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिभट्टः | १-१७९, १७९-२२८ । |
| ३९७२९ | " | | ५-७८, ७८-९१ । |
| ३९७३० | " | भट्टोजिभट्टः | १-९८, ९८-१०८ । |
| ३९७३१ | " | | १-९५ । |
| ३९७३२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २५-३९ । |
| ३९७३३ | " | | ७-१८, २०-२३, ११८ । |
| ३९७३४ | " | | १-८, ८ । |
| ३९७३५ | " | भट्टोजिदीक्षितः | ३-९१, २-६, ९५-११२, (१३ = १४), ११४-१२६ । |
| ३९७३६ | " | | १-८१ । |
| ३९७३७ | " | | १-१६, २२-३८, ४४-२०७, २०७-२०८ । |
| ३९७३८ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-३७, ४०-५० । |
| ३९७३९ | प्रौढमनोरमा सटीका | | १-५६ । |
| ३९७४० | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-९, १२-३३, ५५-६१, १-११, ७९-१११, ११३-११७, १-४४ । |
| ३९७४१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१९, २१-२८ । |
| ३९७४२ | " | | १-५९ । |
| ३९७४३ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | ३२-३३, ३७-६३ । |
| ३९७४४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ३९-४७ । |
| ३९७४५ | " | | २१-३९ । |
| ३९७४६ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | ३-१६, १८-३३ । |
| ३९७४७ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशिभट्टः | १०-८५ । |
| ३९७४८ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | ११९-१३८, १४४-२९९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | ज्ञा- कारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|---------------|----------|-------------------------|--|
| १०९×४२ | ११ | ४६ | दे. ना. | का. | | पू० | अष्टाध्यायीटीका । अ० १ पा० १ आ० १ । |
| १०८×४४ | १० | ४७ | " | " | | अपू० | अष्टाध्यायीटीका । अ० १ पा० ३ आ० २ । |
| १०७×४३ | १० | ४६ | " | " | | पू० | अष्टाध्यायीटीका । अ० २ पा० ४ आ० २ । |
| १०५×४७ | १० | ४७ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । अ० ३ पा० १ आ० ६ । |
| ९५×४२ | १३ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| ११७×५५ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| ११७×५३ | १० | ३४ | " | " | | अपू० | |
| ९७×४२ | १० | ३४ | " | " | १८३८ | " | |
| ९८×४ | १० | ३४ | " | " | | पू० | कृदन्तप्रकरणम् । |
| ९७×४१ | ८ | ३६ | " | " | | अपू० | |
| ८३×४१ | १० | ३१ | " | " | | " | |
| ९२×४२ | १४ | ४३ | " | " | | " | टीका शब्दरत्नाख्या । |
| १२२×३८ | १० | ५७ | " | " | | " | वै० मि० कौ० टी० टीका । |
| ८५×३६ | १२ | ३१ | " | " | | " | |
| ९३×३८ | १० | २९ | " | " | | " | |
| १०×४२ | ९ | ३६ | " | " | | " | |
| ८७×३८ | ९ | २९ | " | " | | " | |
| ८९×२९ | ६ | १९ | " | " | | " | |
| ७८×४५ | १२ | ३० | " | " | | " | |
| १०६×४६ | ७ | ३६ | " | " | | " | |
| ११३×४३ | ९ | ४५ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|--------------------|---|
| ३९७४९ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-१४, १७-५४ (५५ = ५६) ५६-१४७ । |
| ३९७५० | " | " | १-१३२ । |
| ३९७५१ | " | " | १-४५ । |
| ३९७५२ | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १४४-२५६, २५८-२७४ । |
| ३९७५३ | " | " | १-१११+२, ११४+१, ११७-११९+१, १२३+१ । |
| ३९७५४ | समासचक्रम् | | २-११ । |
| ३९७५५ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-२०, १-१० । |
| ३९७५६ | धातुरूपावली | | १-२ । |
| ३९७५७ | शब्दरत्नम् | | १-१८, ३९-५६ । |
| ३९७५८ | प्रौढमनोरमा | | १-३४ । |
| ३९७५९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | २०-२६, ६३-७०, ७८-९८, १५१-१६२, १७१-१७६ । |
| ३९७६० | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १-२०, २५-४६, ४८-५५, ५८-७० । |
| ३९७६१ | शब्दरूपावली | | २-८ । |
| ३९७६२ | कातन्त्रसूत्रं सवृत्तिकम् | | २० । |
| ३९७६३ | तत्त्वबोधिनी | | १-२७, २९, ३१-३८, ४२-४८, ५१-९४ । |
| ३९७६४ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १२-२०, २२ । |
| ३९७६५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-९, ११-१२+३, १७-१९ । |
| ३९७६६ | " | | ३१-३२, ३४-३७ । |
| ३९७६७ | प्रौढमनोरमाटीका | | ५६-६२ । |
| ३९७६८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ३७-४०, ४२, ४७-४९, ५१-५५ । |
| ३९७६९ | " | | १-७, ११-३६ । |
| ३९७७० | सिद्धान्तकौमुदी | | ४८-५९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्व- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|-----------------|------------------------|------------------------|
| ११×४३ | ९ | ३८ | दे.ना. | का. | | अपूर्० | वै० सि० कौ० टीका । |
| ११०२×४०५ | ८ | ३३ | " | " | | पूर्० | " कृदन्तप्रकरणम् । |
| ११×४३ | ९ | ३६ | " | " | | " | " वैदिकप्रकरणमात्रम् । |
| १००८×४४ | ९ | ३७ | " | " | | अपूर्० | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| १०५×४५ | ९ | ३३ | " | " | | " | " |
| ७५×४६ | ८ | २० | " | " | | " | |
| ९०४×४१ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| ९६×४३ | १६ | ५२ | " | " | | " | |
| १०५×४१ | ९ | ३६ | " | " | | " | ० सि० कौ० टी० टीका । |
| १०५×४७ | १० | ३८ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९०४×४१ | ८ | २९ | " | " | १७७९ | " | |
| १०७×४४ | १० | ४५ | " | " | १७७० श. १६३५ | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| ८×४ | ९ | २४ | " | " | १८२८ | " | धातुरूपावलीसहिता । |
| १७१×३७ | ४ | ४० | वङ्ग | " | | " | |
| १०२×४२ | ९ | ३४ | दे.ना. | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९३×४१ | १३ | ४८ | " | " | | " | |
| १०५×४५ | १४ | ४२ | " | " | | " | |
| १०८×४३ | ५ | २७ | " | " | | " | |
| १०४×४५ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| ९४×३७ | ८ | २६ | " | " | | " | |
| ९५×३७ | १० | ३४ | " | " | | " | |
| ८६×४ | ६ | १९ | " | " | | " | |

| क्रमांख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|-------------------|-----------------------|
| ३९७७१ | लघुशब्दरत्नम् | | १-८ । |
| ३९७७२ | " | | ९-१४, १७-२७ । |
| ३९७७३ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | ११-६३, ६५-६७, ६७-७२ । |
| ३९७७४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | ८-१०, ४३-४६, ५७-५८ । |
| ३९७७५ | अष्टाध्यायी | | २-४९ । |
| ३९७७६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ३०-३१ । |
| ३९७७७ | " | | ४ । (गणनया) |
| ३९७७८ | शब्दकौस्तुभटीका | | १-४ । |
| ३९७७९ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ५-४८ । |
| ३९७८० | वैयाकरणसिद्धान्तदीपिका | कोण्डभट्टः | २९ । |
| ३९७८१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ४१, ५०, ५६ । |
| ३९७८२ | अष्टाध्यायी | | ५०-५१ । |
| ३९७८३ | वैयाकरणभूषणसारः | | ११-२८ । |
| ३९७८४ | " | कोण्डभट्टः | १-५१ । |
| ३९७८५ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | ५६६ । (गणनया) |
| ३९७८६ | परिभाषेन्दुशेखरत्रिपथगा | राववेन्द्राचार्यः | १-५७ । |
| ३९७८७ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-४५ । |
| ३९७८८ | लघुशब्देन्दुशेखरविवृति | | १४-१५ । |
| ३९७८९ | लघुशब्देन्दुशेखरदोषोद्धारः | | १७-२१ । |
| ३९७९० | उपपक्षमतिङ् इति सूत्रवादः | मन्नुदेवः | १-५ । |
| ३९७९१ | प्रौढमनोरमा | | १-५, ७-९, ३१-३६+१ । |
| ३९७९२ | लघुशब्देन्दुशेखर. | नागेशः | १-२४, २४-६३ । |
| ३९७९३ | शब्दरूपावलिः | | ७-८, ११-१४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | जातिः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|------------------------|
| ११'५×४'३ | ९ | ४१ | दे.ना. | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| १०'७×४'५ | १० | ४९ | " | " | | " | " |
| ९×४'५ | ११ | ३३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० व्याख्या । |
| ९'९×३'९ | १० | ३२ | " | " | | " | |
| ८'७×३'६ | १० | ३३ | " | " | | " | |
| ९'३×३'८ | ८ | ४० | " | " | | " | |
| ९'२×३'८ | ११ | ३८ | " | " | | " | |
| ९'२×४'१ | १० | ३२ | " | " | | " | अष्टाध्यायी टी० टीका । |
| ९'४×४'१ | १२ | ३५ | " | " | | " | |
| ९×३'७ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| ९'८×३'८ | १२ | ४५ | " | " | | " | |
| ८'९×३'५ | १० | ३० | " | " | | " | |
| ८'५×३'५ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| १०'५×३'७ | ९ | ४३ | " | " | | पू० | |
| ९'८×३'८ | ९ | ४४ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| १०'६×४'६ | ११ | ४३ | " | " | १९१६ | पू० | |
| १०'८×४'६ | ९ | ३४ | " | " | | अपू० | |
| १०'७×४'६ | ९ | ३८ | " | " | | " | |
| १०'९×४'७ | १० | ५० | " | " | | " | |
| १०'३×४'४ | ९ | ३६ | " | " | | पू० | |
| ११'४×४ | २० | ६५ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९'८×४'२ | १० | ४० | " | " | | " | " |
| ७'२×३'९ | ८ | १९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|--------------------|---|
| ३९७९४ | प्रौढमनोरमा | | १-७, १२ (= २२), १३-२१ (= ३५), ५९ + १ । |
| ३९७९५ | प्रौढमनोरमा सटीका | | १-५, ५-१० । |
| ३९७९६ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-२८ । |
| ३९७९७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-७९ । |
| ३९७९८ | शब्दरूपावलिः | | १-१० । |
| ३९७९९ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-२, ४-६ । |
| ३९८०० | वैयाकरणसिद्धान्तपरमलघु- मञ्जूषा | नागेशः | १-२८ । |
| ३९८०१ | शब्दरूपावलि | नारायणभट्टः | १-१५ । |
| ३९८०२ | प्रौढमनोरमा | | १-८ + ९, १० । |
| ३९८०३ | लघुशब्दरत्नम् | | ४२-६६ । |
| ३९८०४ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-१०५ । |
| ३९८०५ | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-५१ । |
| ३९८०६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-२०, ४-५, ३२-३७ । |
| ३९८०७ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १-१०, २१-७० । |
| ३९८०८ | " | नागेशः | १-२५ । |
| ३९८०९ | अष्टाध्यायी सवार्तिका | | ४-६३, ६३-७२ । |
| ३९८१० | उणादिसूत्रवृत्तिः | उज्ज्वलदत्तः | १-१५, १७-२५ । |
| ३९८११ | गणपाठः | | १-२७ । |
| ३९८१२ | गणरत्नम् | वर्द्धमानः | १-३९ । |
| ३९८१३ | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १-२२३ (= २२४), २२५-२९५, ६३-८२ |
| ३९८१४ | " | " | १-२२, २२-१२२ । |
| ३९८१५ | " | " | १-३६, ३८-९४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| ९६×४३ | ११ | ३३ | दे. ना. | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| ११४×४८ | १० | ५२ | " | " | | " | टीका शब्दरत्नाख्या । |
| १०८×४६ | १६ | ६७ | " | " | | पू० | |
| ९२×३७ | ६ | २४ | " | " | | अपू० | |
| ८२×४७ | ९ | २५ | " | " | | " | |
| ८६×३७ | १० | २८ | " | " | | " | |
| १०३×४२ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| ९६×४६ | ७ | ३१ | " | " | | पू० | अजन्तशब्दनिरूपणान्ता । |
| ९८×४३ | ९ | ५० | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९८×४३ | ११ | ४१ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ८५×३९ | ९ | २६ | " | " | | पू० | |
| १३४×४१ | ७ | ४९ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ९५×४२ | ११ | ४७ | " | " | | " | वैदिकस्वरलिङ्गानुशासनप्रकरणानि । |
| ११×४५ | ९ | ४४ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| ११×४५ | ११ | ४४ | " | " | | " | " |
| ८२×४३ | १० | ३० | " | " | | " | |
| १०३×४७ | ८ | ४० | " | " | | " | |
| ९७×४४ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| ९४×४२ | १२ | ३५ | " | " | | पू० | छन्दोबद्धं पुस्तकम् । |
| १०६×४५ | ११ | ५१ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । पत्राङ्कलेखन- ध्रमेऽपि पूर्वाद्धम्पूर्णम् । |
| ११×४५ | १२ | ५५ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । तिङन्तप्रकरण- मात्रम्पूर्णम् । |
| ११२×४७ | १४ | ४९ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । कृदन्तमात्रम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|--------------------|-------------------------------------|
| ३९८१६ | धातुपाठः | | १-३१ । |
| ३९८१७ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-६२ । |
| ३९८१८ | " | " | १-९४ । |
| ३९८१९ | पूर्वपक्षावली | होरिलशर्मा | १-६० । |
| ३९८२० | प्रत्याख्यानसङ्ग्रहः | | १-४६ । |
| ३९८२१ | प्रबोधचन्द्रिका | बैजलभूपालः | १-२५ । |
| ३९८२२ | शब्दकौस्तुभप्रभा | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-५९, ६१-६९ । |
| ३९८२३ | प्रौढमनोरमा | | २-१०८, ११३-१२२ । |
| ३९८२४ | " | | १-६१ । |
| ३९८२५ | " | | १-१४०, १४२ । |
| ३९८२६ | बालबोधः | नरहरिः | १-१४ । |
| ३९८२७ | वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा | नागेशभट्टः | १-१४२ । |
| ३९८२८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-२७, १-४५, १-११ । |
| ३९८२९ | तत्त्वबोधिनी | | १-३२, ३४-५९, ११२-११५, ११७-३३२ । |
| ३९८३० | " | | १-६९, १-(२३ = २४)२५-२९, १-६+१, ७-२६ |
| ३९८३१ | सुबोधिनी | जयकृष्णभट्टः | १-७ । |
| ३९८३२ | तत्त्वबोधिनी | | १-२३ । |
| ३९८३३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-२९ । |
| ३९८३४ | सारस्वतम् | | १, ३-४, ६-२३ । |
| ३९८३५ | कांतन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-३४+१ । |
| ३९८३६ | " | " | १-३९+१, २-३ ६+२ । |
| ३९८३७ | प्रबोधचन्द्रिका | बैजलभूपतिः | ११-३२ । |
| ३९८३८ | " | | १५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|--|
| ९०६×२०२ | ६ | ४४ | दे ना. | का. | १८६६ | पू० | |
| १०×४०४ | ९ | ३३ | " | " | १८८८ | " | |
| ९५×४०२ | ९ | ३२ | " | " | | अपू० | |
| ८८×३०८ | ९ | २२ | " | " | | पू० | शास्त्रार्थविषयको ग्रन्थः । |
| ९२×४०२ | ११ | ३० | " | " | | अपू० | सङ्ग्रहकर्त्रा पाणिनिस्त्रयमवलम्ब्य- सूत्रं तद्दशप्रत्याख्यानञ्च सङ्गृहीतम् । |
| ९०७×५ | ९ | ३६ | " | " | | पू० | सन्धिवचन्द्रिकान्ता । पद्यमयोऽर्थग्रन्थः । |
| ९३×४०२ | ९ | २९ | " | " | | अपू० | |
| ८५×४ | ६ | ३९ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९५×४०३ | ८ | २९ | " | " | १९२० | " | " |
| ९७×४०२ | ८ | ३३ | " | " | | " | " |
| ९×३०५ | ९ | ४६ | " | " | | " | |
| १०×४०४ | ११ | ५३ | " | " | | पू० | स्फोटवादमात्रम् । |
| १०२×३०८ | ७ | ४२ | " | " | १८९९ | " | वैदिकप्रकरणालिङ्गानुशासनान्ता । |
| १०×४०३ | १० | ३२ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९५×५०१ | ८ | ३२ | " | " | | " | " |
| ९४×४०३ | १० | ५१ | " | " | | " | वैदिकप्रकरणमात्रम् । |
| ९५×५०१ | १२ | ३९ | " | " | | " | कारकप्रकरणमात्रम् । |
| ९१×४ | ९ | ३८ | " | " | | " | स्वरप्रकरणमात्रम् । |
| ९३×३०४ | १० | ३४ | " | " | १६६८ | " | आख्यातप्रक्रियामात्रम् । |
| १५×३०२ | ३ | ३८ | वङ्ग | " | | " | चतुष्टयप्रकरणम् । |
| १५×३०२ | ३ | ३९ | " | " | | " | " |
| ८५×४०४ | ८ | ३० | दे ना. | " | १८७७ | " | पद्यमयोऽर्थं ग्रन्थः । |
| ८६×४०४ | ११ | ३९ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---|-----------------------|---------------------------------------|
| ३९८३९ | व्याकरणग्रन्थविशेषः | | १-६ । |
| ३९८४० | सारस्वतम् | | २-३८ । |
| ३९८४१ | " | | १०-१९ । |
| ३९८४२ | " | | १-४९ । |
| ३९८४३ | " | | ६-१० । |
| ३९८४४ | कातन्त्रसूत्राणि | | ६-१०, १-२९ । |
| ३९८४५ | धातुरूपावलिः | | ३-४८ । |
| ३९८४६ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | २-१८ । |
| ३९८४७ | मुग्धबोधः | | १-४ । |
| ३९८४८ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-६५ । |
| ३९८४९ | मुग्धबोधः | | १-५३ । |
| ३९८५० | प्रौढमनोरमा | | १-१० । |
| ३९८५१ | सापेक्षवादः | | १ । |
| ३९८५२ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिपञ्जिका- व्याख्या | विश्वेश्वरतर्काचार्यः | १०१-१०३ । |
| ३९८५३ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १४-५५ (= ५६), ५७-७७, (= ७९), ७९-१०० । |
| ३९८५४ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-७६, ७८-७९ । |
| ३९८५५ | संक्षिप्तसारः | क्रमदीश्वरः | १-७ । |
| ३९८५६ | लघुशब्देन्दुशेखरदोषोद्धारः | मन्नुदेवः | १-२५ । |
| ३९८५७ | तत्त्वप्रकाशिका | | १-१६ । |
| ३९८५८ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १-५, ५-२०, २२-१५८, १५८-१६४ । |
| ३९८५९ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-३३ । |
| ३९८६० | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ३-५ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|--------------|---------|-------|--------------------|--------------------|--|
| १३०५३ | ७ | ४६ | वङ्ग. | का. | वङ्गाब्दाः १२५८ | पू० | सन्धिप्रक्रियामात्रम् । |
| १०२५४६ | ८ | ३३ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| ९३५४४ | ८ | ३४ | " | " | | " | |
| १०५४५ | ९ | ३७ | " | " | | " | |
| १०२५६४ | ४ | २४ | " | " | | " | |
| १३४५३१ | ८ | ४५ | वङ्ग. | " | | " | अत्र शिक्षापरिभाषापरिशिष्टसूत्राणि च । |
| ११६५२७ | ५ | ४७ | " | " | | " | प्रयोगरत्नमालानुसारिणी । |
| १३५५३२ | ५ | ४२ | " | " | | " | सन्धिप्रकरणमात्रम् । |
| १२७५४८ | ८ | ४६ | " | " | | पू० | सन्ध्यध्यायः । |
| १४५५२७ | ६ | ५२ | " | " | | अपू० | कृतप्रकरणमात्रम् । |
| १२६५४३ | ९ | ३७ | " | " | | पू० | तद्धितपादान्तः । |
| १११५४८ | १४ | ४६ | दे. ना. | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| १७९५३ | ८ | ६६ | वङ्ग. | " | | पू० | कारकविशेषणीभूतकारकसापेक्षे वृत्तिर्न भवतीति विचारः । |
| १७९५३ | ८ | ६८ | " | " | | " | आख्याते ३-८ पादाः । |
| १७९५३ | ७ | ८१ | " | " | श. १७१८ | अपू० | आख्यातप्रकरणमात्रम् । |
| १७९५३ | ४ | ५६ | " | " | | पू० | " |
| १३५५४२ | ६ | ३३ | " | " | | " | सन्धिप्रकरणस्य । |
| ९५५४१ | ११ | ३७ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| १०५५४४ | १५ | ३९ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| १६४५३५ | ५ | ६२ | वङ्ग. | " | | पू० | चतुष्टयप्रकरणम् । |
| ८२५४३ | १२ | ३६ | दे. ना. | " | | अपू० | |
| ९४५४३ | ८ | ३० | " | " | | " | कारकप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|-----------------|--|
| ३९८६१ | निपातत्वविचारः | | १ । |
| ३९८६२ | नाजानन्तर्यइति-परि- भाषाविचारः | | १-३ । |
| ३९८६३ | अर्थवदिति-सूत्रविचारः | | १-१४ । |
| ३९८६४ | लघुशब्देन्दुशेखरदोषोद्धारः | | ३०-५१, १-११ । |
| ३९८६५ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १६-६३ । |
| ३९८६६ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १-३९, ४१-४५ । |
| ३९८६७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१४३ । |
| ३९८६८ | " | " | १८-३५, ५३-२७० । |
| ३९८६९ | परिभाषेन्दुशेखरदोषोद्धारः | | २६-१२२ । |
| ३९८७० | प्रौढमनोरमाकुचमर्दनम् | जगन्नाथः | १-३४ । |
| ३९८७१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-३, ६-३१ । |
| ३९८७२ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | ३-९, ११-५३ । |
| ३९८७३ | " | " | १-६० । |
| ३९८७४ | तत्त्वबोधिनी | | ५०-८२, ८२-१४७, १४७-१६८, १६८- १७६, १७६-२११ । |
| ३९८७५ | " | | १८१-२२५ । |
| ३९८७६ | प्रौढमनोरमा | | १-१७, १७-१९, १९-५६, २६-३१ । |
| ३९८७७ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-९, ११-३०, ३२ । |
| ३९८७८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १५-१८, १८-४६ । |
| ३९८७९ | प्रक्रियाकौमुदी सव्याख्या | | १-७ । |
| ३९८८० | धातुपाठः | | १-४ । |
| ३९८८१ | कातन्त्रसूत्रम् | | १-१० । |
| ३९८८२ | " | | १-१३ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|---|
| ९०७×४८ | १४ | ४८ | दे. ना | का. | | अपू० | अनुबन्धचतुष्टयविमर्शश्च । |
| १०६×४७ | १२ | ३७ | " | " | | " | |
| ९९×४२ | ९ | ४२ | " | " | | " | |
| १०९×४५ | १० | ४५ | " | " | | " | |
| ९५×३९ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| ९५×४२ | १३ | ४० | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९२×४४ | १२ | ३४ | " | " | १८१० | पू० | तिङन्तप्रकरणमात्रम् । |
| ९२×४२ | ७ | २० | " | " | १८०८ | अपू० | पूर्वार्द्धभागः । |
| ९२×४३ | १० | ३२ | " | " | | " | |
| ९१×३५ | १३ | ४७ | " | " | | " | प्रौढमनोरमाखण्डनं वा । |
| ९६×४४ | १० | ४४ | " | " | | " | स्वरप्रकरणं लिङ्गानुशासनञ्च । |
| ८५×३५ | ९ | ३८ | " | " | | " | १-८ अध्यायाः, पाणिनिसूत्रपाठो वा । |
| ९×४४ | १० | २८ | " | " | १८३३ | पू० | |
| ९५×३७ | ९ | ५० | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०५×४५ | ११ | ३७ | " | " | | " | " सुवन्तप्रकरणस्य । |
| ९८×३६ | १० | ४१ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । कृदन्तप्रकरणस्य । |
| १०६×४६ | १३ | ३७ | " | " | | " | |
| १०×४३ | ११ | ३७ | " | " | १८१४ | " | वैदिकप्रकरणं लिङ्गानुशासनञ्च । |
| १३८×३ | ६ | ५० | वङ्ग | " | | " | आत्मनेपदप्रकरणम् । अत्र बहुत्र सूत्रवृत्त्योर्व्यत्ययः । |
| १३८×३६ | ६ | ३९ | " | " | | " | कातन्त्रीयः । |
| १४×३७ | ६ | ३७ | " | " | | " | आख्यातपादपर्यन्तम् । |
| १६५×३९ | ४ | ४७ | " | " | | " | आख्यातपादान्तम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|-----------------|--|
| ३९८८३ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गासिंहः | १-३२ । |
| ३९८८४ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिपञ्जिका | त्रिलोचनदासः | १-८७, ८९-१३१ (= ८८-१३०), १३१-१३६, १३७-१६३ (= १२७-१५३) । |
| ३९८८५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-२३ । |
| ३९८८६ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-१९, १-५६, ३४-३८ । |
| ३९८८७ | " | " | १-६२ । |
| ३९८८८ | " | " | २२-१४०, १५२-१८९, १९१-१९३ । |
| ३९८८९ | प्रौढमनोरमा | " | २-९९ । |
| ३९८९० | " | " | ९-११ (= ९९), १००-२४४ । |
| ३९८९१ | " | " | १-१०० । |
| ३९८९२ | कातन्त्रसूत्रम् | | ५-९ । |
| ३९८९३ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-३१ । |
| ३९८९४ | समासविधिवादः | उमापतिशर्मा | १-२ । |
| ३९८९५ | प्रकीर्णपल्लवः | विद्यानन्दः | × |
| ३९८९६ | अर्थवत्सूत्रकोडपत्रम् | | १-४ । |
| ३९८९७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१५५ । |
| ३९८९८ | " | " | १-१५, १-९३ । |
| ३९८९९ | " | " | १-५३ । |
| ३९९०० | " | " | १-३७ । |
| ३९९०१ | परिभाषेन्दुशेखरदोषोद्धारः | मन्युदेवः | १-६, १३-२५ । |
| ३९९०२ | लघुशब्देन्दुशेखरज्योत्स्ना | उदयङ्करः | १-२४+१, २६, २९-१८६ । |
| ३९९०३ | परिभाषार्थमञ्जरी | भीमः | १-१२ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|----------------|--------------|---------|-------|----------|---------------------|--|
| ११'७×२'९ | ३ | ३९ | वङ्ग. | का. | श. १७२३ | पू० | सन्धिप्रकरणे १-५ पादाः । |
| १४'८×२'९ | ५ | ४४ | " | " | १६४८ | "* | तद्धितपादान्ता । |
| १०'१×४'४ | ७ | ३६ | दे. ना. | " | | " | वैदिकप्रकरणमात्रम् । |
| १०'५×४'८ | १३ | ३७ | " | " | | "* | कृत्प्रकरणमात्रम् । |
| ९'९×४'२ | १२ | ४६ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणमात्रम् । |
| ९'६×४'२ | ८ | ४० | " | " | | अपू० | पूर्वाद्धभागः । |
| १०×३'६ | १० | ४४ | " | " | १८३५ | " | वै०सि०कौ०टीका । तिङन्तभागस्य । |
| ९'८×३'६ | १० | ४३ | " | " | | " | वै०सि०कौ०टीका । पूर्वाद्धभागस्य । |
| ९'७×५'६ | ९ | ३७ | " | " | | पू० | अव्ययान्ता, वै०सि०कौ०टीका । |
| ११'८×३'३ | ४ | ३३ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १०'२×४'६ | १५ | ४७ | मै० | " | | पू० | स्फोटवादान्तः । |
| १०'८×४'६ | १३ | ४७ | दे. ना. | " | | " | कृत्तद्धितेति सूत्रे समासग्रहणस्य निय- मार्थत्वं विध्यर्थत्वं वेति विचारः । |
| ७'५×३'२ | ६ | ४१ | " | " | | अपू० | भग्नपत्रत्वात् प्रयोगानर्हः । |
| १३'३×४'९ | ८ | ४४ | " | " | | " | |
| ९'६×४'२ | ९ | ३४ | " | " | १८५३ | पू० | द्विरुक्तप्रक्रियान्ता । |
| ९'६×४'२ | ११ | ४१ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणमात्रम् । |
| ९'८×४'२ | ११ | ४२ | " | " | | " | कृदन्तप्रकरणम् । |
| ९'४×४'३ | १२ | ५२ | " | " | १८७६ | " | स्वरप्रकरणतो लिङ्गानुशासनान्ता । |
| ९'३×४'३ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | |
| ९'९×४'१ | ९ | ३३ | " | " | | " | हलन्तपुँल्लिङ्गान्ता । |
| ९'५×४'१ | ८ | ४१ | " | " | | " | परिभाषेन्दुशेखरटीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|--------------------|---|
| ३९९०४ | णेरणाविति-सूत्रव्याख्या | शिवरामेन्द्रयतिः | १-२० । |
| ३९९०५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-५, ५-६७, ६७, ६७-१२४, १-२२, २३ (=२४)-७५, १-७७, १-८ । |
| ३९९०६ | " | | ७०-८१ । |
| ३९९०७ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | ३-८ । |
| ३९९०८ | " | | ४-७ । |
| ३९९०९ | " | | २९-५८ । |
| ३९९१० | " | | १-१३, १५-५० । |
| ३९९११ | " | | ४०-४१, ४५, ४७-५०, ५२, ५५-११०, ११३-११७, ११९-१२१ । |
| ३९९१२ | सारस्वतम् | | २०-३०, ३३-६० । |
| ३९९१३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ११४-१४२, १४२ १४४ । |
| ३९९१४ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-६६, ७७-९५, ९५-१७०, १-११४ । |
| ३९९१५ | धातुपाठः | | १-२३ । |
| ३९९१६ | शब्दमाला | | १-४ । |
| ३९९१७ | लघुशब्दरत्नभावप्रकाशिका | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-१३३, १३३-१५४ (= १५५), १५५-१६२, (= १६३), १६४-२५४, १-२५, १-१७० । |
| ३९९१८ | अष्टाध्यायी | | १-३ । |
| ३९९१९ | " | | ६-९ । |
| ३९९२० | " | | १-७, ९-१२ । |
| ३९९२१ | " | | ३-१८, ५५-६७, ६९-७१ । |
| ३९९२२ | " | | २-३, ५-१४, १६-५०, ५२-५६ । |
| ३९९२३ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | ५६, ६४, ६६-६९ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-------|----------------|--------------|--------|-------|-------------------------------|---------------------|-------------------------------------|
| १०×४२ | ९ | ४३ | दे.ना. | का. | श. १७०२ र० का० १७६८ (?) | पू० | |
| ९७×४ | ११ | ४३ | " | " | १८९५ श. १७६० | "* | |
| ९६×४४ | ११ | ३२ | " | " | | अपू० | तत्पुरुषप्रकरणम् । |
| १०×४३ | १० | २७ | " | " | | " | |
| ८८×३८ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| ८४×३७ | ११ | ३१ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |
| ८८×३८ | १० | ४० | " | " | | " | कृदन्तप्रकरणम् । |
| ८४×३५ | ७ | २४ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |
| ८४×४३ | ९ | २ | " | " | | " | |
| ७१×४ | १४ | २९ | " | " | | " | |
| ९८×४१ | ११ | ४० | " | " | १८६५ | " | |
| ७४×३८ | ८ | ३२ | " | " | | पू० | |
| ६४×३५ | ९ | २० | " | " | | अपू० | शाब्दिकप्रक्रिया वा । |
| ९५×४२ | ९ | ३६ | " | " | | " | सन्धि-स्त्रीप्रत्यय-कारकप्रकरणानि । |
| ७८×३८ | ९ | २९ | " | " | | " | |
| ८१×३५ | ११ | ३० | " | " | | " | |
| ६८×३५ | १३ | ३१ | " | " | | " | अ० ७-८, पा० १-४ । |
| ७१×३४ | ७ | २० | " | " | | " | अ० १, २, ६, ७ । |
| ८९×३३ | १० | २९ | " | " | | " | अ० १-८ । |
| ८५×३७ | ९ | ३० | " | " | | " | तद्धिततिङन्तप्रकरणे । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-----------------|--|
| ३९९२४ | सारस्वतम् | | २-१० । |
| ३९९२५ | शब्दरूपावलिः | | २-७ । |
| ३९९२६ | अष्टाध्यायी | | १-५, ५-६, ८-१० । |
| ३९९२७ | " | पाणिनिः | १-६, १३-५९ । |
| ३९९२८ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | ५ । (गणनया) |
| ३९९२९ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | ३२-३९, ४३-४४ । |
| ३९९३० | " | | १२२-१२३, १२५, १२७-१३०, १३२, १३४-१३६, १३९ । |
| ३९९३१ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-८ । |
| ३९९३२ | सारस्वतम् | | १०-१८, १८-२२, २४, २६-४६ । |
| ३९९३३ | कातन्त्रवृत्तिपञ्जिका | | ११८-१३२ । |
| ३९९३४ | शब्दकौस्तुभः | | १-१० । |
| ३९९३५ | सुबोधिनी | | १-१६ । |
| ३९९३६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १६०-१७८ = (१-१९) । |
| ३९९३७ | " | | १-१८ । |
| ३९९३८ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-९३, ६८-६९ (= ८५-८६), ७०-१५१, १५१-१६५ । |
| ३९९३९ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-१२, १५-२८ । |
| ३९९४० | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १ । |
| ३९९४१ | रप्रत्याहारमण्डनम् | लक्ष्मणपाठकः | १-८ । |
| ३९९४२ | धातुवृत्तिः | सायणाचार्यः | १-२ । |
| ३९९४३ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १८७-२२५, २२७-२३० । |
| ३९९४४ | अष्टाध्यायी | | १-२८ । |

| अक्षरः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेचः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|--------------|---------|-------|----------|---------------------|--------------------------------------|
| ७८×३६ | ७ | २५ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| ९४×४३ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| ८×४२ | १३ | २६ | " | " | | " | |
| ९७×४२ | ८ | २४ | " | " | | " | |
| ९५×४१ | १० | ३० | " | " | | " | |
| ८५×३५ | १० | २४ | " | " | | " | |
| ८५×३५ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| ९४×४२ | १० | २५ | " | " | | " | |
| ९५×३७ | ९ | २९ | " | " | | " | |
| १०२×४ | ९ | ४८ | " | " | | " | आख्यातप्रकरणम् । |
| ९२×४२ | ६ | २३ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । अ० १, पा० १, आ २ । |
| ९३×४२ | १० | ३० | " | " | | " | वैदिकप्रकरणस्य । चै० सि० कौ० टीका । |
| १०२×३९ | ९ | ४० | " | " | | " | उणादिप्रक्रियांता । |
| ९२×४ | ९ | ४६ | " | " | १८९६ | पू० | उत्तरकृदन्तप्रकरणमात्रम् । |
| १०४×३८ | ७ | ३२ | " | " | १७०३ | "* | पूर्वादिमात्रम् । |
| १०७×४५ | १० | ५३ | " | " | | अपू० | |
| ९५×३६ | ९ | ४१ | " | " | | " | |
| १०×४४ | ११ | ३६ | " | " | १८३७ | पू० | |
| १२७×५७ | ११ | ५३ | " | " | | अपू० | माधवीया । चुरादिप्रकरणस्य । |
| १०७×४ | ६ | २५ | " | " | | " | समासप्रकरणम् । |
| ११×४८ | १५ | ४६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|-----------------|---|
| ३९९४५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १०-३०, ३३ । |
| ३९९४६ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-२३, २५-३० । |
| ३९९४७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ३८-३७ (= ३८) ३८ । |
| ३९९४८ | " | | १-५१ । |
| ३९९४९ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | ३१-४५ । |
| ३९९५० | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | २-७ । |
| ३९९५१ | " | | १-४२ । |
| ३९९५२ | लघुशब्दरत्नभावप्रकाशिका | | १ । |
| ३९९५३ | " | | ८०-८४, ८६, ८६-१३२, १३४, १३५ । |
| ३९९५४ | " | वैद्यनाथः | १७-६८, १०१-१०२, १४२-२००, २५७-२५८, २५८-४२८ । |
| ३९९५५ | " | | १-२३, १-४३, ४३-५३, १-२९ । |
| ३९९५६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-६४, १-९, ९-८३ । |
| ३९९५७ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-१२, १४-३२ । |
| ३९९५८ | शब्दरत्नप्रकाशिका | भैरवः | १-८ । |
| ३९९५९ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | २८-७२ । |
| ३९९६० | प्रोढमनोरमा | | १-७१ । |
| ३९९६१ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलदेवः | ६-११ । |
| ३९९६२ | अष्टाध्यायी | | १-२० । |
| ३९९६३ | धातुवृत्त्यनुक्रमणिका | | १-३२ । |
| ३९९६४ | लघुवैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-४४ । |
| ३९९६५ | " | " | १-२, ५, ८-२५, २७, २९-३१, ३३-४५, ४७, ५४, ६०-६५, ६७ । |
| ३९९६६ | आख्यातविवेकः | श्रीकृष्णभट्टः | १-५ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|----------------|--------------|--------|-------|----------|---------------------|--|
| १०°५×४°३ | ५ | ३० | दे.ना. | का. | | अपू० | सन्धिप्रकरणम् । |
| ९°४×४°८ | ९ | २९ | " | " | | " | तिङन्तप्रक्रिया । |
| ८°५×४°१ | ९ | ३० | " | " | | " | सुवन्तप्रकरणम् । |
| ९°१×४ | ९ | ३३ | " | " | | " | आदितो हलन्तपुँल्लिङ्गांशा । |
| ८°५×३°५ | ९ | ३४ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |
| ९°६×३°४ | ७ | ४३ | " | " | | " | |
| ९°२×३°५ | ७ | २४ | " | " | | " | शाङ्करी । |
| १२°५×४°७ | ९ | ३७ | " | " | | " | |
| १२°५×४°७ | ६ | ५१ | " | " | | " | अजन्तपुँल्लिङ्गप्रकरणस्य । |
| १२°७×४°५ | ११ | ५४ | " | " | १८६५ | " | कारकप्रकरणान्ता । |
| १०°५×४°५ | १० | ४८ | " | " | | " | |
| ११°३×५°७ | ९ | ३० | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |
| ११°२×४°३ | १३ | ६२ | " | " | | " | तद्धितप्रकरणम् । |
| ९°७×३°४ | ७ | ५७ | " | " | | " | भैरवी वा । संज्ञाप्रकरणम् । |
| १०°२×४°३ | १० | ४५ | " | " | | " | |
| ९°७×३°५ | ७ | ३१ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । संज्ञाप्रकरणत्वेतिङ्गांशा । |
| ९×४°१ | ८ | २८ | " | " | | " | |
| ११×४°७ | १५ | ५६ | " | " | श० १६०६ | पू० | पाणिनिसूत्रपाठो वा । |
| ९°६×४°३ | २५ | १४ | " | " | | " | धातुपाठो वा । |
| ९°७×४ | ९ | ३३ | " | " | | " | स्फोटवादान्तः । |
| १०°२×४°३ | ९ | ३९ | " | " | | अपू० | |
| ८°७×४°५ | १२ | ३१ | " | " | १८९७ | पू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|--------------------|----------------------------------|
| ३९९६७ | कारकादिविचार.सव्याख्यः | | १-१० । |
| ३९९६८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-९ । |
| ३९९६९ | परिभाषेन्दुशेखरगदा | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-१७८ । |
| ३९९७० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१४, १४-५८ । |
| ३९९७१ | प्रयोगविवेकसङ्ग्रहः | वररुचिः | १-५६ । |
| ३९९७२ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १-५१, ५३-६९ + १ । |
| ३९९७३ | अष्टाध्यायी | | १-६३ । |
| ३९९७४ | शब्दरूपावली | | १-१२ । |
| ३९९७५ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-१५६, १५८-१६७, १६९-१८१ । |
| ३९९७६ | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रसरस्वती | १-४९, ४४-२४७, २२२-२७१, २७३-२८५ । |
| ३९९७७ | " | | १-१३५ । |
| ३९९७८ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-२४६ । |
| ३९९७९ | तत्त्वबोधिनी | | १० । |
| ३९९८० | प्रौढमनोरमा | | ३३-५५ (= ५६), (५७-९४) । |
| ३९९८१ | प्रौढमनोरमःकुचमर्दनम् | | ७-३२, ३२-४२ । |
| ३९९८२ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-९५ । |
| ३९९८३ | " | " | १-४६ । |
| ३९९८४ | " | " | १-३३ । |
| ३९९८५ | परिभाषेन्दुशेखरः सटिप्पणः | नागेशः | १-४१ । |
| ३९९८६ | " | " | १-३५ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|----------------|--------------|--------|-------|-----------------|---------------------|---|
| ९*५×४*१ | ९ | २९ | दे.ना. | का. | | पू० | अत्र कारकसमासलकाराणां प्रयोगमनुसृत्य विचारः । |
| १०×४*२ | १० | ४१ | " | " | | " | लिङ्गानुशासनमात्रम् । |
| १०*३×३*४ | ७ | ४ | " | " | १९२७ | " | परिभाषेन्दुशेखरविवृतिस्तत्काशिका वा । |
| ८*२×३*९ | ८ | ३० | " | " | | " | स्वरप्रकरणमारभ्यवैदिकप्रक्रियान्ता । |
| ९*६×४*२ | ६ | २५ | " | " | १८७८ श. १७४४ | " | अत्र १-३ पटलेषु कारकसमासतद्धितप्रयोगप्रणाली प्रदर्शिता । |
| १०×४ | ७ | ३२ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० । तिङन्तप्रकरणम् । |
| ९*५×४*३ | ७ | ३१ | " | " | | पू० | पाणिनिसूत्रपाठो वा । |
| ९*४×३*५ | ८ | २८ | " | " | | अपू० | |
| ८*२×२*४ | ५ | २२ | " | " | | " | |
| ११*७×४*५ | ११ | ४१ | " | " | श. १६२३ | " | वै० सि० कौ० टीका । पूर्वार्द्धम् । |
| १०*७×४*३ | १० | ४५ | " | " | १७७० | पू० | „ कृदन्तप्रकरणम् । |
| ९*५×४*६ | १३ | ३४ | " | " | | " | स्फोटवादान्तः । |
| ११×४*५ | १६ | ४९ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । संज्ञाप्रकरणम् । |
| १०*३×४*१ | ७ | ४३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । उत्तरार्द्धम् । |
| १०*३×४ | १० | ५० | " | " | | " | संज्ञाप्रकरणांशात् स्त्रीप्रत्ययप्रकरणांशम् । मनोरमाखण्डनं वा । |
| ११×४ | १० | ५४ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । लकारार्थप्रक्रियांशात् कृदन्तप्रक्रियांशा । |
| १०*२×४ | ८ | ४४ | " | " | १८६८ | " | वै० सि० कौ० टीका । तिङन्तप्रकरणम् । |
| १०*५×३*८ | १० | ३६ | " | " | १८७७ | पू० | वै० सि० कौ० टीका । तिङ्स्वरनिरूपणम् । |
| ११*५×४*५ | १० | ५३ | " | " | | " | |
| १०*५×४*५ | ९ | ३९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-----------------|--|
| ३९९८७ | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-८, १०-३७ । |
| ३९९८८ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिभट्टः | १-२१ । |
| ३९९८९ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-७४, ८६-१८५ । |
| ३९९९० | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागोजीभट्टः | १-८६ । |
| ३९९९१ | " | नागेशभट्टः | १-१०९, १११-२०३, १-६०, १-३१, १-४९ । |
| ३९९९२ | " | " | १-३, ५-११, १४, १९, २२, २४-२९, ३२-४६, ४८, ५०, ५२-५३, ५८-५९, ६१, ७०-७१, ७३, ७५, ७६, ७९-८०, ८५, ८९, ९२-९३, ९६ । |
| ३९९९३ | शब्दकौस्तुभः | | ५७-१०८ । |
| ३९९९४ | शब्दरत्नम् | | १-१०५ । |
| ३९९९५ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | २६-३५, ३८-५१, ५४-७१, ७४-११५, १, ११६-२३२, २३२-२५६ । |
| ३९९९६ | " | " | १-१२८ + १ । |
| ३९९९७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-२५ । |
| ३९९९८ | " | | १-५ । |
| ३९९९९ | " | | ३-३० । |
| ४०००० | " | | २-१५ । |
| ४०००१ | " | | १-४८, ४८-६४, ६४-८२ + १, ८४-८८ । |
| ४०००२ | " | | १७-५५ । |
| ४०००३ | शब्दकौस्तुभः | | १०३, १०३, १०३, ८-९३ । |
| ४०००४ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १९, २६-३४, ३६-१०३, १०५-१५, १७२-२३४, १८-३९ । |
| ४०००५ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-१७, २०, २२-३७, ४१, ५०-६८ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| १२३×४८ | ११ | ५६ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १२२×४७ | १० | ५८ | " | " | | पू० | अष्टाध्यायीटीका । अ० १. पा० १. आ० १ । |
| १२२×४७ | १० | ४६ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । संज्ञाप्रकरणा- ददादिप्रकरणंशा । |
| १२३×४९ | ११ | ६३ | " | " | | पू० | वै० सि० कौ० टी० तिङन्तप्रकरणम् । |
| १२४×४५ | ११ | ५६ | " | " | श० १८६० | अपू० | वै० सि० कौ० टी० । संज्ञाप्रकरणान् स्वरप्रकरणान्तः । |
| १०९×४५ | ९ | ५१ | " | " | | " | " |
| १२२×४८ | १० | ५६ | " | " | | पू०* | अष्टाध्यायीटीका । अ० १, पा० १, आ० ७ । |
| ९७×४४ | १० | ४७ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । संज्ञाप्र- करणात् कारकप्रकरणंशम् । |
| १०८×४६ | १० | ३९ | " | " | श० १७५४ | " | वै० सि० कौ० टीका । विसर्गसन्धितः तद्धितप्रकरणान्ता । |
| ११×४६ | ११ | ३५ | " | " | श० १८७३ | पू०* | " तिङन्तप्रकरणम् । |
| १०३×४५ | १० | ३२ | " | " | | अपू० | कृदन्तप्रकरणम् । |
| १०३×४५ | १५ | ४३ | " | " | | " | स्वरप्रकरणम् । |
| ९९×४३ | ११ | ३० | " | " | | " | भ्वादिप्रकरणम् । |
| ९३×३३ | ८ | ३३ | " | " | | " | कारकप्रकरणम् । |
| ९६×४२ | १० | ३२ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |
| १०१×४ | १३ | ३८ | " | " | | " | " |
| ९९×४२ | १३ | ४८ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । अ० १, पा० १, आ० ५, ७-९ । |
| ९८×४४ | १० | ३८ | " | " | | " | " अ० १, पा० १, आ० ४-६, ८-९ । |
| ९७×३४ | ८ | ३९ | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------|--------------------|-----------------------|
| ४०००६ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | २-२९, ६२, ६४-६९ । |
| ४०००७ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-२३ । |
| ४०००८ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-८, १०-१५२, ५३-१२९ । |
| ४०००९ | तत्त्वदीपिका | लोकेशकरः | १-१९० । |
| ४००१० | तत्त्वबोधिनी | | १-८, १-६ । |
| ४००११ | अष्टाध्यायी | | १-६५ । |
| ४००१२ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपतिः | १६-२४ । |
| ४००१३ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-१८ । |
| ४००१४ | परिभाषेन्दुशेखरः | | ३६ । (गणनया) |
| ४००१५ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-१७ । |
| ४००१६ | तत्त्वबोधिनी | | १-१६ । |
| ४००१७ | अष्टाध्यायी | | १-७०, ७२-७४ । |
| ४००१८ | व्याकरणग्रन्थविशेषः | | १-११, १४-१५+१ । |
| ४००१९ | " | | १-८ । |
| ४००२० | प्रकीर्णपत्राणि | | १७ । (गणनया) |
| ४००२१ | भाषावृत्तिः | पुरुषोत्तमदेवः | ७७ । |
| ४००२२ | प्रकीर्णपत्राणि | | ३३ । |
| ४००२३ | व्याकरणग्रन्थविशेषः | | १-१४, १४-१७ । |
| ४००२४ | संज्ञितसारः | क्रमदीश्वरः | १-१३ । |
| ४००२५ | " | " | १-२ । |
| ४००२६ | मुग्धबोधः | | २६ । (गणनया) |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| ९०४४२ | ८ | ४३ | दे. ना. | का. | १७८३ | अपू० | |
| ११४४४ | १० | ५३ | " | " | | " | चिदस्थिमाला । |
| ९०४४१ | १० | ३३ | " | " | १९३० | " | वै० सि० कौ० टीका । पूर्वाद्धम् । |
| ९०४४३ | ७ | २९ | " | " | | " | सिद्धान्तचन्द्रिकाव्याख्या । |
| १०९४४७ | ९ | ४१ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । संज्ञाप्रकरणम् भ्वादिप्रकरणञ्च । |
| ११९४४५ | ९ | ३४ | " | " | | पू० | पाणिनिसूत्रपाठो वा । |
| १०४४४२ | ८ | ४१ | " | " | १८९० | अपू० | |
| १०९४४७ | ११ | ४४ | " | " | | " | त्रिपथगा । |
| १०४४४ | ९ | २८ | " | " | | " | अत्र परिभाषाटीका प्रथमान्तार्थ- मुख्यविशेष्यकशाब्दबोधखण्डनम् कतिपयपाणिनिसूत्रार्थविचारश्च । |
| ९०६४४६ | ११ | ४४ | " | " | | पू० | वै० सि० कौ० टीका । वैदिक प्रकरणस्य । |
| १०१४४१ | १० | ४० | " | " | | अपू० | " " |
| ८२४४ | ८ | २३ | " | " | श. १६९४ | पू० | |
| १३८४२८ | ६ | ६१ | वङ्ग. | " | | अपू० | |
| १३७४२८ | ८ | ३८ | " | " | | " | |
| १५५४३५ | ६ | ५५ | " | " | | " | |
| १४४३ | ७ | ५६ | " | " | | " | पुस्तकं दग्धम् प्रयोगानर्हञ्च । अन्ते सृष्टिधरकृता भाषावृत्त्यर्थविवृतिश्च । |
| १५३४३६ | ८ | ४९ | " | " | | " | |
| १३८४२७ | ६ | ७० | " | " | | " | |
| १२५४३ | ७ | ४६ | " | " | | " | |
| १२८४२४ | ५ | ५२ | " | " | | " | |
| १७५४३७ | ५ | ५६ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|---------------------------|---|
| ४००२७ | मुग्धबोधः | वोपदेवः | १-१५, ४१-९५ । |
| ४००२८ | भाषावृत्त्यर्थविवृतिः | सृष्टिधरशर्मा | २०-२६ । |
| ४००२९ | मुग्धबोधः | | ३ । (गणनया) |
| ४००३० | कविकल्पद्रुमः | वोपदेवः | २१-२५ + १ । |
| ४००३१ | कातन्त्रसूत्रवृत्तिः | दुर्गासिंहः | ४७, १६-१७, २२, २५-३६, ४४ । |
| ४००३२ | ठ्याकरणग्रन्थविशेषः | | १-१९ । |
| ४००३३ | " | | १७, २६-२९, ३१-३७ । |
| ४००३४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २-२१ । |
| ४००३५ | काशिका | | १-२६, २८ । |
| ४००३६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ४-६, २४, ४-१६, २१-२६, ४८, ५०-५१, ६५-६६, ७४-७५, ३०-३३, ४०-५५, ५९-६४, ६७-७०, ७२, ७७-९६, १०२-१११, ९७-१०१, २७-२८, ७६, ७१, ७१, ७३, २-११, १६-१८, १९ । |
| ४००३७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ११२-११८ । |
| ४००३८ | तत्त्वबोधिनी | | १, ५-६, १२-७६, ७८-८२ + १, ८३-१०७ । |
| ४००३९ | धातुपाठः | | १-४ । |
| ४००४० | सारस्वतम् | अनुभूतिस्व- रूपाचार्यः | ७१-८० । |
| ४००४१ | " | | १ । |
| ४००४२ | सारस्वतं सटीकम् | | २-३ । |
| ४००४३ | " | | ३-११, १३-१५, २५-३० । |
| ४००४४ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १२-२२ = (२३), २४-८४ । |
| ४००४५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-५२, १-५० । |
| ४००४६ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | वरदराजः | १-१०, १०-९५, ९७-१३६, १३६-१३७ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | शब्दः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|--|
| १५×३०१ | ५ | ५८ | वङ्ग | का. | | अपू० | |
| १४×३०५ | ६ | ६५ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीकाटीका । |
| १५५×४०२ | ७ | ३९ | " | " | | " | त्यादिप्रकरणम् । |
| १५५×४०५ | ६ | ४४ | " | " | श. १६९२ | " | घातुपाठो वा । |
| १३×२०८ | ८ | ६४ | " | " | | " | आख्यातप्रकरणम् । |
| १४०२×३०६ | ६ | ५ | " | " | | " | |
| १३०६×२०५ | ८ | ६८ | " | " | | " | |
| १४०३×४०१ | १० | ५८ | मै० | " | | " | |
| ११०७×३०९ | ७ | ४९ | दे.ना | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । अ० १, पा० १ । |
| विविधः | ९ | २८ | " | " | | " | प्रक्रियाकौमुदी च । |
| ९०९×४०४ | १० | ३३ | " | " | | " | |
| ११०४×३०५ | ६ | ४८ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० । |
| १५×३०५ | ७ | ४८ | वङ्ग | " | | " | |
| १००२×४०५ | १३ | ३२ | दे.ना. | " | | " | |
| ७०१×४०५ | ९ | २२ | " | " | | " | "नामि" इति सूत्रव्याख्यानम् । |
| ९०२×९ | १५ | ४१ | " | " | | " | |
| ८०७×५ | १८ | ४४ | " | " | | " | |
| १००१×४०६ | ९ | २४ | " | " | १८८८ | " | द्विरुक्तप्रक्रियान्ता । अन्ते भिन्ना- काराणि पत्राणि सन्ति । |
| ९०८×४०३ | १२ | ४३ | " | " | १८३१ | पू० | कृतः लिङ्गानुशासनान्ता । |
| १००८×४ | ८ | ४० | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|-----------------|--|
| ४००४७ | पारसीकप्रकाशः | विहारिकृष्णदासः | १-१०, १३-१४ । |
| ४००४८ | शब्दरूपावली | | १-६ । |
| ४००४९ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-२३, २२-३०, ३२-३६ । |
| ४००५० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-२६, २८-४२, ४४-६४, ६४-१०३, १०५-११२, १२०-१५४, १५६-१७३, ७४-७६, ३, १८० । |
| ४००५१ | " | " | १-२०, २२-३२, ३४-७१, ७१-१०२ । |
| ४००५२ | " | " | १-१००, १-२८ । |
| ४००५३ | समासचक्रम् | | १-५ । |
| ४००५४ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | ९, ३०-४५, ७५, ९१-९४ । |
| ४००५५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १८, २०-३२, ३४-३७, ४०, ४२-४४ । |
| ४००५६ | पूर्वपक्षावलिः | होरिलशर्मा | १, ३-५, ७, ९-१२, १४-३२ । |
| ४००५७ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २१, २५, ५६, ६२, ६८-६९, ९६ । |
| ४००५८ | शब्दरूपावलिः | | १-१०, १२-१७ । |
| ४००५९ | शब्दकौस्तुभः | | २, ८, ११, १४-१५, २६, ३०, ३४ । |
| ४००६० | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ४ । |
| ४००६१ | शब्दकौस्तुभतात्पर्यटीका | | ५, ७-१०, १२-१३ । |
| ४००६२ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | २२-२५, ५१-५६, ५८ । |
| ४००६३ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-७, ७-३० । |
| ४००६४ | परिभाषापाठः | | १-५ । |
| ४००६५ | प्रौढमनोरमा | | १-७ । |
| ४००६६ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपालः | १-३२ । |
| ४००६७ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | २, ८-१३ । |
| ४००६८ | प्रौढमनोरमा | | ४८, ४९, ५२, ६२, ६७, ८२-८४, ८७-८८, ९३, १००-१०१, १०४, १०७ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|----------------|--------------|---------|-------|----------|--------------------|--|
| ९९×४४ | ९ | २९ | दे. ना. | का. | | अपू० | व्याकरणप्रकरणम् । |
| ८२×३७ | ९ | ४१ | " | " | | पू० | |
| ९५×४१ | १६ | ४३ | " | " | १५६९ | " | |
| १०×३७ | ९ | ४९ | " | " | | अपू० | |
| ८६×३७ | ११ | ३२ | " | " | | " | |
| ८६×३९ | ७ | २२ | " | " | | पू० | कृदन्तप्रकरणम् । |
| ८३×३७ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| ६६×२८ | ७ | २३ | " | " | | अपू० | |
| ९२×४२ | १० | ३० | " | " | | " | |
| १२×४७ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| ९×४६ | १० | २२ | " | " | | " | |
| १०३×४३ | ८ | २६ | " | " | | " | |
| ९५×४२ | ८ | ३५ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| ९३×४१ | ११ | ३४ | " | " | | " | |
| ९४×४ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| ९५×४१ | १० | ३० | " | " | | " | |
| १२६×३३ | ६ | ५८ | " | " | | पू० | अष्टाध्यायीटीका । १ अ० १ पा० १ आ० मात्रम् । |
| ८५ × ३४ | ७ | ३४ | " | " | | " | |
| ८९×४२ | १३ | ४६ | " | " | | अपू० | वै०सि०कौ०टीका । |
| ९२×४१ | ८ | ३१ | " | " | | " | |
| ११५ × ४ | ६ | ३० | " | " | | " | |
| ९×४४ | ८ | २८ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|-----------------|---|
| ४००६९ | महाभाष्यम् | पतञ्जलिः | १-२९, १-३६ । |
| ४००७० | प्रौढमनोरमाटीका | | ४१ (गणनया) । |
| ४००७१ | शब्दरूपावली | | ४७ । |
| ४००७२ | समासचक्रम् | | १-७ । |
| ४००७३ | अष्टाध्यायी | | १-७ । |
| ४००७४ | प्रयोगमुख्यसारः | वारुडः | १, ३-७, ९ । |
| ४००७५ | पदमञ्जरी | | १-८ । |
| ४००७६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ६, २५-२६, ५७, ७०-७४, + ३, ९०-९५ । |
| ४००७७ | शब्दकौस्तुभः | | ३-७, १०, १२, १३, १६, १७, १९-२४, ३२-३३ । |
| ४००७८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १९, ३८, ३९, ४१ । |
| ४००७९ | प्रौढमनोरमा | | १-९० । |
| ४००८० | दशलकारसारमञ्जरी | सिद्धान्तवागीशः | १-३+१ । |
| ४००८१ | लिङ्गानुशासनम् | | १-४ । |
| ४००८२ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-३२ । |
| ४००८३ | प्रौढमनोरमा | | १-३७, ३७-३८, ३८-६९, १-९, १-३६, ३८-५९, ६१-७५ । |
| ४००८४ | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामभद्राश्रमः | १-९९ । |
| ४००८५ | यङ्लुगन्तरूपाणि | | १-२० । |
| ४००८६ | पाणिनिमूत्रं सटीकम् | | १-१६- २-२६, २८-३२, ४-३५ । |
| ४००८७ | स्वरप्रक्रियाव्याख्या | रामचन्द्रः | १-२५, ११-१८, १-३१, १-१८ । |
| ४००८८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-२० । |
| ४००८९ | " | | १-२५ । |
| ४००९० | " | भट्टोजिदीक्षितः | १०-१०६, १४५ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|----------------|--------------|---------|-------|----------|---------------------|--|
| १०'७x४'६ | १२ | ४९ | दे. ना. | का. | | पू० | चतुर्थाध्यायमात्रम् । |
| ९'५x४'४ | १४ | ४७ | " | " | | अपू० | |
| ९'२x४'१ | ११ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ८'३x३'८ | ९ | २९ | " | " | १८८० | " | |
| ६'९x४'१ | १० | १९ | " | " | | अपू० | |
| ९'६x४'३ | १२ | ४६ | " | " | | " | |
| ९x३'८ | १० | २७ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| ९'३x४'७ | ११ | २५ | " | " | | " | |
| ९'५x४'१ | ८ | ३१ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| ९'१x४'२ | १० | ३६ | " | " | | " | |
| १४x२'३ | १० | ३४ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९'९x४'५ | १३ | ५६ | " | " | | पू० | |
| १०x४'५ | १० | ३९ | " | " | १८५४ | " | |
| १२'७x४'३ | १४ | ४७ | " | " | | " | |
| १०x४'६ | १० | ३२ | " | " | | अपू० | वै०सि०कौ०टीका । |
| ९'७x४'३ | ८ | २३ | " | " | | " | |
| ९'३x४'५ | ९ | ३१ | " | " | १८१७ | पू० | |
| ९'५x४'६ | १३ | ३६ | " | " | | अपू० | स्वरप्रकरणम् । विख्यातपुस्तकाद् भिन्नमिदम् । |
| ९'५x४'६ | १२ | ३० | " | " | १८०६(?) | " | |
| ९'४x४'३ | ११ | ३० | " | " | १९१६ | " | |
| ११'७x४'३ | ७ | ३९ | " | " | | " | |
| ११'७x४ | ११ | ६० | " | " | श. १७०२ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------------|-----------------------------------|--|
| ४००९१ | धातुपाठः | | १-७ । |
| ४००९२ | उणादिसूत्रपाठः | | १ + १ । |
| ४००९३ | स्थानिवत्सूत्रविचारः | | १-६ । |
| ४००९४ | ” | | १-५ । |
| ४००९५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी सटीका | भट्टोजिदीक्षितः टी० का० नागेशः | १-४ । (गणनया) |
| ४००९६ | ” | | ६१-६३ । |
| ४००९७ | शब्दकौस्तुभः | | १-११ । |
| ४००९८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १ । |
| ४००९९ | प्रथमाविभक्त्यर्थविमर्शः | | १-८ । |
| ४०१०० | वार्त्तिकम् | | १-११ । |
| ४०१०१ | गणपाठः | | १-२२ । |
| ४०१०२ | परिभाषापाठः | | १-६ । |
| ४०१०३ | अष्टाध्यायी | | १-४४ । |
| ४०१०४ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-२२०, २२२, २२३-२४२, ३०-४२, ४६-६६, ९५-१३४ + १ । |
| ४०१०५ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | २-५८ । |
| ४०१०६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१३७, १-९, १-५१ = ५२, ५३-५४ ५४-१६६, १-१०२ । |
| ४०१०७ | ” | | १-८८ । |
| ४०१०८ | ” | भट्टोजिदीक्षितः | १-४, ६-६८, ७२-७३, ७५-७६, ८४-१०७ |
| ४०१०९ | परिभाषाप्रदीपाचिः | उदयङ्करः | १-६ = ७-१०६ । |
| ४०११० | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-४५ । |
| ४०१११ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-९२, १-५६ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|----------------|--------------|--------|-------|-----------------|---------------------|--|
| १२×४'१ | १२ | ६२ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ११'९×४ | ९ | ४४ | " | " | | पू० | प्रथमपादमात्रम् । |
| ८'६×४'४ | ८ | २१ | " | ४ | | " | क्रोडपत्राणि । |
| ९'५×४'२ | १२ | ३२ | " | " | | अपू० | |
| १२×४'१ | १३ | ६१ | " | " | | " | टी० लघुशब्देन्दुशेखराख्या । णिजन्तल्लकारार्थान्ता । |
| ११'९×४'१ | ११ | ५३ | " | " | | " | टी० लघुशब्देन्दुशेखराख्या । तिङन्तप्रकरणम् । |
| १३×४'१ | १० | ३८ | " | " | | " | अष्टाध्यायीटीका । |
| ११'५×४'१ | ७ | ४५ | " | " | | " | कारकप्रकरणम् । |
| ९'५×४'२ | ९ | ३९ | " | " | | " | |
| ९×४'२ | ८ | ३८ | " | " | | " | कात्यायनप्रोक्तम् । |
| १२'७×४'८ | १० | ४८ | " | " | | पू० | |
| ९'४×४'३ | ८ | ३२ | " | " | | " | |
| ११×४'९ | १० | ३८ | " | " | | " | |
| १२'६×४ | ११ | ४९ | " | " | श. १७६६ १७७० | अपू० | वै० सि० कौ० टी० । |
| ९'९×४'३ | ९ | ३३ | " | " | श. १९०९ | " | |
| १०'२×४'५ | ६ | २५ | " | " | | " | |
| १०'२×४'६ | ९ | ३४ | " | " | | पू० | तिङन्तमात्रम् । |
| ९'७×४'४ | १२ | ३७ | " | " | | अपू० | तिङन्तमात्रम् । |
| ९'९×४'५ | ११ | ३७ | " | " | | पू० | |
| ९'८×४'२ | १३ | ४५ | " | " | | अपू० | अष्टाध्यायीटीका । प्रथमाध्यायः । |
| १०×४'८ | १० | ३५ | " | " | | " | भ्वादितः स्वरप्रक्रियान्ता । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------------|--------------------------|---|
| ४०११२ | प्रौढमनोरमा | | ४५-६०, ८६-१३२, १६२-२२५ । |
| ४०११३ | महाभाष्यं सटीकम् | | १-१० । |
| ४०११४ | महाभाष्यम् | पतञ्जलिः | ५-५३, ७१-११२ । |
| ४०११५ | " | " | १-३१ । |
| ४०११६ | महाभाष्यं सटीकम् | पतञ्जलिः टी०का० कैयटः | १-३९ । |
| ४०११७ | " | " | १-१९१, १९४-२२६ । |
| ४०११८ | " | टी०का० कैयटः | १-३१, १-९, ४१-६३ । |
| ४०११९ | लघुशाब्देन्दुशेखरटीका | | ७ । (गणनया) |
| ४०१२० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१४२, १-९, ३४-९५, ५३-६३, ६४ । |
| ४०१२१ | प्रौढमनोरमा | " | १-५९ । |
| ४०१२२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | " | १९, २६-१६७, १६७-१८४, १८७-२०६, १-१५३, १६१-१८३, १-१९, १-१५ । |
| ४०१२३ | " | | १७-३५, ४०-४२ । |
| ४०१२४ | अष्टाध्यायी | | १ । |
| ४०१२५ | क्रोडपत्रम् | | १-१३+१ । |
| ४०१२६ | प्रौढमनोरमा | | २७-५०, ५५-५८ । |
| ४०१२७ | वैयाकरणभूषणसारः | | १ । |
| ४०१२८ | सारस्वतम् | | २-२७ । |
| ४०१२९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २१-३१+१ । |
| ४०१३० | " | | ४-२० । |
| ४०१३१ | परिभाषेन्दुशेखरक्रोडपत्रम् | | १-६ । |
| ४०१३२ | " | | १-२ । |
| ४०१३३ | " | | १-४ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आकारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|--|
| १२३×४७ | ८ | ३७ | दे.ना. | का. | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| १२५×४८ | ८ | ५३ | " | " | | " | टीका-प्रदीपाख्या । |
| ११×३७ | ८ | ३६ | " | ५ | १६८० | " | अ० ४ पा० ४ आ० १ । |
| १३६×५७ | १३ | ४१ | " | " | | " | |
| ५७×४८ | १० | ५३ | " | " | | पू० | टीका-प्रदीपाख्या । अ० १ पा० १ आ० २ । |
| १२५×४ | १४ | ५१ | " | " | १८८२ | " | अ० १ पा० १ आ० ९ । |
| १२३×४९ | १२ | ५५ | वङ्ग. | " | | अपू० | " |
| १२९×६५ | १९ | ५० | दे.ना. | " | | " | |
| ८९×४१ | ९ | ३३ | " | " | | " | अन्तिमपत्रमेतद्विन्नग्रन्थस्य । |
| १०९×४६ | १७ | ४१ | " | " | | पू० | वै० सि० कौ० टीका । कृदन्तप्रक्रिया- मात्रम् । |
| १२३×५१ | ७ | ३२ | " | " | | अपू० | |
| १२७×४८ | ८ | २६ | " | " | | " | |
| ११८×४८ | १० | ४८ | " | " | | " | |
| १०७×३९ | ७ | ३० | " | " | | " | |
| १०९×४६ | ११ | ५८ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| ९८×४६ | ९ | ४६ | " | " | | " | |
| १०४×४७ | ८ | ३७ | " | " | | " | |
| १०४×४४ | ८ | ३३ | " | " | | " | |
| १०×४७ | ९ | २९ | " | " | | " | |
| १३५×४२ | ९ | ६५ | " | " | | पू० | भान्यमानेत्यादि परिभाषोपरि । |
| १३५×४२ | ९ | ६४ | " | " | | " | गौडमुख्ययोरित्यादि परिभाषोपरि । |
| १३५×४२ | ९ | ६० | " | " | | " | अर्थवदित्यादि परिभाषोपरि । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|--------------|-------------------|
| ४०१३४ | परिभाषेन्दुशेखरक्रोडपत्रम् | | १-२ । |
| ४०१३५ | " | | १-३ । |
| ४०१३६ | " | | १-२ । |
| ४०१३७ | " | | १-४ । |
| ४०१३८ | " | | १-१२ । |
| ४०१३९ | " | | १-३ । |
| ४०१४० | " | | १-२ । |
| ४०१४१ | " | | १ । |
| ४०१४२ | " | | १-३ । |
| ४०१४३ | परिष्कारः | | १ । |
| ४०१४४ | प्रकीर्णपत्राणि | | ८ । (गणनया) |
| ४०१४५ | ज्ञापकसमुच्चयः | पुरुषोत्तमः | १-२, ५-६+१, ७-९ । |
| ४०१४६ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ६७-७० । |
| ४०१४७ | " | योगेश्वरः | १-११+१ । |
| ४०१४८ | परिभाषेन्दुशेखरक्रोडपत्रम् | | १ । |
| ४०१४९ | " | | १-३ । |
| ४०१५० | लघुशब्देन्दुशेखरक्रोडपत्रम् | | ४ । (गणनया) |
| ४०१५१ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-६ । |
| ४०१५२ | क्रोडपत्रम् | | १-१० । |
| ४०१५३ | लघुशब्देन्दुशेखरक्रोडपत्रम् | | १-१४ । |
| ४०१५४ | " | | १-८ । |
| ४०१५५ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १-५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आचारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|--|
| १३.५×४.२ | ९ | ५० | दे. ना | का. | | पू० | नानुबन्धकृतेत्यादि परिभाषोपरि । |
| १३.५×४.२ | ९ | ५६ | " | " | | " | कार्यमनुभवन्नित्यादि परिभाषोपरि । |
| १३.५×४.२ | ९ | ६२ | " | " | | " | निर्दिश्यमानपरिभाषोपरि । |
| १३.५×४.२ | ९ | ५६ | " | " | | " | " |
| १३.५×४.२ | ९ | ६७ | " | " | | " | अन्तरङ्गपरिभाषोपरि । |
| १३.५×४.२ | ९ | ७० | " | " | | " | स्त्रीप्रत्यये चानुपसर्जनेनेति परि- भाषोपरि । |
| १३.५×४.२ | ९ | ६४ | " | " | | " | "उत्तरपदाधिकारे" इत्यादि परि- भाषोपरि । |
| १३.५×४.२ | ९ | ७० | " | " | | " | 'उणादयोऽव्युत्पन्नानि' इत्यादि परिभाषोपरि । |
| १३.५×४.२ | १० | ७३ | " | " | | " | सरूपाणमित्यादि सूत्रोपरि । |
| १३.५×४.२ | ९ | ६२ | " | " | | " | रषाभ्यामित्यादिसूत्रस्थसमानपदस्य । |
| १३.५×४.३ | ४ | ६७ | " | " | | अपू० | |
| १३.५×४.३ | १३ | ७१ | " | " | | " | |
| १३.५×४.३ | ७ | ५३ | " | " | | " | |
| १३.५×४.२ | १० | ५७ | " | " | | " | टीका-हैमवती । |
| १३.५×४.२ | ९ | ६३ | " | " | | " | यत्रानेकविधमितिपरिभाषायाः । |
| १३.५×४.२ | ९ | ७९ | " | " | | " | प्रत्ययग्रहण इत्यादि परिभाषायाः । |
| १३.५×४.२ | ९ | ६२ | " | " | | " | |
| १३.५×४.२ | १० | ५५ | " | " | | " | टीका-हैमवती । |
| १३.५×४.२ | १० | ६२ | " | " | | " | |
| १३.५×४.२ | ९ | ५७ | " | " | | " | |
| १३.५×४.२ | ८ | ६५ | " | " | | " | |
| १३.५×४.२ | ९ | ५७ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--------------------------------------|---------------------------|-----------------------------|
| ४०१५६ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-८, ८ । |
| ४०१५७ | क्रोडपत्रम् | | २ । (गणनया) |
| ४०१५८ | ज्ञापकसमुच्चयटीका | बृहस्पतिमिश्रः | १-६३, ६५-६९ । |
| ४०१५९ | ज्ञापकसमुच्चयः | पुरुषोत्तमदेवः | २-५१, ५१-५५, ५५-५९, ६२-६३ । |
| ४०१६० | कातन्त्रसूत्रवृत्तिविवरण- पञ्जिका | त्रिलोचनदासः | ३-९, १८-३४, ३६-८३ । |
| ४०१६१ | प्रक्रियाप्रकाशः | | १-१३, १५-८७, ८९ । |
| ४०१६२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-५ । |
| ४०१६३ | " | | १८-२५, २८-७२ । |
| ४०१६४ | व्याकरणग्रन्थविशेषः | | ७२ । (गणनया) |
| ४०१६५ | शब्दरूपावली | | १-३ । |
| ४०१६६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-२६, २९-३८ । |
| ४०१६७ | " | | २५-३१, ३१, ३३-३५ । |
| ४०१६८ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | २-५, ७-८ । |
| ४०१६९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २३-३२, ३४-३७, ३७-८८ । |
| ४०१७० | " | | ७-१६, १८-१९ । |
| ४०१७१ | " | | ४ । (गणनया) |
| ४०१७२ | " | | १-२२ । |
| ४०१७३ | सारस्वतम् | | ८-११, १३-१६ । |
| ४०१७४ | अष्टाध्यायी | | २-५ । |
| ४०१७५ | सारस्वतम् | अनुभूतिस्वरूपा- चार्यः | २-१५० । |
| ४०१७६ | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-३३, ३९-४४ । |
| ४०१७७ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-६२ + १ । |
| ४०१७८ | " | | १-३९ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|-----------------------|
| १३०५×४०२ | ९ | ५३ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १३०५×४०२ | ५ | ५८ | " | " | | " | लघुशब्देन्दुशेखरस्य । |
| ८०६×३०९ | ८ | ३२ | " | शु | | " | |
| ८०६×३०९ | ६ | ३० | " | " | १६६५ | " | |
| १०×३०१ | १० | ४९ | " | " | | " | |
| १००५×३०५ | ८ | ५० | " | " | | " | |
| १००४×४०३ | ११ | ४४ | " | " | | " | वैदिकप्रकरणमात्रम् । |
| १००८×४०६ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| १०×३०७ | ११ | ४३ | " | " | | " | |
| १२०१×३०९ | ६ | ३८ | " | " | | " | |
| ९०७×५ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| ९०५×५०१ | ११ | ४२ | " | " | | " | |
| ९०९×४०३ | ११ | ३० | " | " | | " | |
| ९०१×४०२ | ८ | २७ | " | " | | " | |
| ९०२×४०२ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| ९०५×५०१ | १२ | ३० | " | " | | " | |
| ९०२×४०२ | ९ | ३५ | " | " | | " | |
| ८०४×३०९ | ८ | २६ | " | " | | " | |
| ९०४×३०९ | ७ | २२ | " | " | | " | |
| ८०२×४०८ | ४ | २३ | " | " | १८२५ | " | |
| १००५×४०५ | ९ | ३९ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ९०५×४०२ | ८ | २७ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० । |
| ९०८×४०१ | ११ | ४० | " | " | | " | " |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------|--------------------|--|
| ४०१७९ | वाक्यपदीयं सटीकम् | | १-२०० । |
| ४०१८० | वृत्तिदीपिका | मौनिश्रीकृष्णभट्टः | १-३३ । |
| ४०१८१ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-४६, ४६-८७ । |
| ४०१८२ | शब्दरूपावली | | १-५ । |
| ४०१८३ | " | | १-४३ । |
| ४०१८४ | शिष्यप्रबोधिका | गोविन्दभट्टः | २-१०८ । |
| ४०१८५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-१९५ । |
| ४०१८६ | " | " | १-१०१ । |
| ४०१८७ | " | " | १-७९ । |
| ४०१८८ | " | | १-२१ । |
| ४०१८९ | " | | १-२८ + १ । |
| ४०१९० | अष्टाध्यायी | | २-४ । |
| ४०१९१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | ६९-९४ । |
| ४०१९२ | " | | १-२० । |
| ४०१९३ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-८३, ८५-८८, ९०-१२३, १२७-२०७, १-९, ९(क-घ)१०-१२८, १-५८, ६०-८३ । |
| ४०१९४ | सुबोधिनी | जयकृष्णः | १-७७ । |
| ४०१९५ | " | " | १-३७ । |
| ४०१९६ | लघुशब्दरत्नम् | | १२९-१४४ । |
| ४०१९७ | " | हरिदीक्षितः | १-११६, ११८, १२४-१२७, १३८-१८५ । |
| ४०१९८ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-२९, ३१ (= ३०) ३१-७४ । |
| ४०१९९ | गवाक्शब्दव्याख्या | | १-४ । |
| ४०२०० | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ३, ७८ । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|----------------|--------------|---------|-------|-----------------|---------------------|--|
| १३३३६७ | १० | ३३ | दे. ना. | का. | | अपू० | तृतीयकाण्डम् । |
| १०५५४३ | ९ | ३४ | " | " | १८३(?) | पू० | |
| ९२३३१ | ७ | ४० | " | " | १८२० | " | |
| ६७३३४ | ११ | २८ | " | " | | अपू० | |
| ८६५४६ | ८ | १२ | " | " | १८२१ | " | |
| १०६५३७ | ९ | ४१ | " | " | | " | कातन्त्रीयधातुगणवृत्तिः । |
| ९९५४३ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| ९८५४१ | १० | ४७ | " | " | १८७४ | पू० | तिङन्तप्रकरणम् । |
| १०५४२ | १० | ३५ | " | " | १८७४ | " | कृदन्तप्रकरणम् । |
| ९६५४३ | ११ | ४२ | " | " | | " | वैदिकप्रकरणम् । |
| ९९५४४ | १० | ३७ | " | " | | अपू० | स्वरप्रकरणम् । |
| ६९५४३ | ७ | १८ | " | " | | " | |
| १०५४२ | ८ | ३० | " | " | १८९८ श. १७६३ | " | |
| ९९५४३ | १० | ३५ | " | " | | " | |
| १०५३७ | ७ | ४० | " | " | १६९१ | " | |
| ८३५४१ | ९ | ३६ | " | " | श. १७०३ | पू० | वै०सि०कौ०टीका । स्वरप्रकरणमात्रम् |
| १०१५४८ | १० | ३७ | " | " | | " | " वैदिकप्रकरणमात्रम् । |
| ९४५४३ | ९ | ३७ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ९४५४ | ८ | ३५ | " | " | | " | |
| १३९५४३ | ११ | ५६ | " | " | | पू०* | अष्टाध्यायीटीका । अत्र प्रथमाध्याय- स्य द्वितीयपादतः प्रथमाध्यायान्तः । |
| ८४५४ | ७ | २९ | " | " | | " | |
| ११९५४ | १० | ५७ | " | " | | अपू० | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|-----------------|---|
| ४०२०१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | ७०-८१, ८३-९० । |
| ४०२०२ | अष्टाध्यायी | | ३-४८ । |
| ४०२०३ | वार्तिकसङ्ग्रहः | | १-४२ । |
| ४०२०४ | लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या | | १-३ । |
| ४०२०५ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-२५ । |
| ४०२०६ | लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या | | १, १-१३, १३-१८+२, ४-१८, १-६४ । |
| ४०२०७ | वर्णात्कारइति सूत्रविचारः | | १-४ । |
| ४०२०८ | परिभाषार्थप्रदीपः | गोविन्दाचार्यः | १-२५ । |
| ४०२०९ | परिभाषासङ्ग्रहः | | १-४ । |
| ४०२१० | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-२+३, ४-६+२, ११-२१+१, २३-३२+१, ३३-३४+१, ३७-८७, १-३७ । |
| ४०२११ | भावप्रकाशिका | वैद्यनाथः | १-१६९ । |
| ४०२१२ | सदस्थिमाला | " | १-१२, १५-५५, ५७-१०२ । |
| ४०२१३ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १-४० । |
| ४०२१४ | " | नागोजिभट्टः | ३४२-३७१, ३७१-४०७ । |
| ४०२१५ | " | " | १-९८ । |
| ४०२१६ | " | " | १-२५ । |
| ४०२१७ | " | | ३४ । (गणनया) |
| ४०२१८ | " | नागोजिभट्टः | १-६०, ६०-६४ । |
| ४०२१९ | " | | २७५-२८२, २८४-३१४, ३१६-३३१ । |
| ४०२२० | लघुशब्दरत्नम् | | २४-५०, ५३ (= ५२), ५४-५७, ५९-७२, ७४-९१, ९१-१०० । |
| ४०२२१ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | २-१९५, १९५, १९६-२०२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आशयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|--------|------|----------|-------------------------|--|
| १०७४४६ | ९ | २३ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| ९१४३९ | १२ | ३६ | " | " | | " | |
| ९७४४३ | ९ | ४१ | " | " | १८६८ | " | |
| ११४४९ | १२ | ४३ | " | " | | " | |
| १३३४५ | ९ | ४७ | " | " | | " | |
| १२९४५ | १७ | ६१ | " | " | | " | |
| १२६४४७ | १२ | ६६ | " | " | | " | |
| १०५४४५ | ११ | ३७ | " | " | | पू० | |
| ११९४४६ | | ५१ | | | | | |
| ९७४४५ | ९ | ३७ | " | " | १८५६ | " | |
| ९४४४१ | ९ | ३७ | " | " | १८६७ | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ९४४४२ | १० | ३७ | " | " | | " | लघुशब्दरत्नव्याख्या । |
| ९६४४२ | ९ | ३४ | " | " | | " | लघुशब्देन्दुशेखरटीका । |
| १०५४४९ | ११ | ४६ | " | " | | " | वै०सि०कौ०टी०टी० । तिङन्तभागः । |
| १११४४८ | ११ | ४२ | वङ्ग | " | १८११ | " | " कारकभागः । |
| ९४४४२ | १० | ४० | दे.ना | " | १८६३ | पू० | " तिङन्तभागः । |
| ९६४४३ | ११ | ३८ | " | " | १८६३ | " | " कृदन्तभागः । |
| १०७४४६ | ११ | ४४ | " | " | | " | " अजन्तनपुंसकलिङ्गतोऽव्यय- भागान्तः । |
| ९७४४३ | १२ | ४२ | " | " | १८६२ | " | " तद्धितभागः । |
| ९५४४१ | १० | ४२ | " | " | | अपू० | " समासभागः । |
| १०४४५ | १० | ३६ | " | " | | " | " |
| ८८४३८ | ८ | २९ | " | " | | " | " आदितो हलन्तपुंलिङ्गभागान्तः । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याद्विवरणम् |
|------------|---------------------------|--------------------|---|
| ४०२२२ | लघुशब्दरत्नम् | | १०१-१२५+१। |
| ४०२२३ | परिभाषेन्दुशेखरदोषोद्धारः | मन्नुदेवः | १-५१। |
| ४०२२४ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | वैद्यनाथभट्टः | ४-४२, ४२-१४६, १४८, १५०-१५७, १६०-१६२, १६४-१६६। |
| ४०२२५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-८, ८-१२, १२-१५। |
| ४०२२६ | धातुपाठः | | ४-२६, २८-३६, ३७ (= ३८), ३९-४०, ४१ (= ४२), ४५-४७। |
| ४०२२७ | चिदस्थिमाला | वैद्यनाथपायगुण्डेः | १-११, ३१। |
| ४०२२८ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | २४-६९। |
| ४०२२९ | सिद्धान्तचन्द्रिका | रामचन्द्राश्रमः | १-४१। |
| ४०२३० | लघुशब्देन्दुशेखरविमर्शः | | १-२। |
| ४०२३१ | लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या | | १-२०। |
| ४०२३२ | लघुशब्दरत्नम् | | ११९-१२८। |
| ४०२३३ | ” | | १०। (गणनया) |
| ४०२३४ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | ४९, ५१-५५, ५८-५९। |
| ४०२३५ | लघुशब्दरत्नम् | | १-२३। |
| ४०२३६ | लघुशब्दरत्नटीका | | २३, २५-३८। |
| ४०२३७ | धातुरूपावली | | १-३, २-७। |
| ४०२३८ | ” | | १२ = (१४), १४-२३, २३-२७+२। |
| ४०२३९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-६। |
| ४०२४० | तत्त्वबोधिनी | | १-६। |
| ४०२४१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-७, ९-१०, १५-५०। |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|----------------|--------------|--------|-------|----------|---------------------|--|
| ९०६×४३ | ११ | ४० | दे.ना. | कम. | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । अव्ययी-भावांशतो बहुव्रीहिपर्यन्तम् । |
| ९०५×४२ | ९ | ४० | " | " | | " | |
| ९०५×४२ | १० | ४५ | " | " | { ८६८ | " | काशिकाख्या । |
| ९०८×४३ | १६ | ५० | " | " | श. १५४२ | पू० | वैदिकप्रक्रियामात्रम् । |
| ८०८×२८ | ४ | ३३ | " | " | | अपू० | अक्षरानुक्रमेण श्लोकवदः । |
| १२०५×४८ | १२ | ५२ | " | " | | " | लघुशब्देन्दुशेखरवृत्तिः । |
| १००७×४५ | १० | ४८ | " | " | | " | सञ्ज्ञाप्रकरणस्य । |
| १००४×३९ | ११ | ३५ | " | " | | पू० | पूर्वार्द्धभागस्य । |
| ९०८×४३ | १३ | ४३ | " | " | | अपू० | कानिचिद्भवादिप्रकरणस्यैवाक्या-न्युद्धृत्य लिखितः । |
| ९०८×४३ | १० | ४७ | " | " | | " | |
| ९०५×४२ | १२ | ४२ | " | " | | " | द्वै० सि० कौ० टी० टीका, कारक-प्रकरणस्य । |
| ९०८×३९ | ९ | ४७ | " | " | | " | द्वै० सि० कौ० टी० टीका । |
| १००४×४४ | १० | ४८ | " | " | | " | " तिङन्तप्रकरणस्य । |
| १००३×३८ | ७ | ३३ | " | " | | " | द्वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ९०६×४२ | १० | ४२ | " | " | | " | |
| ९०१×४१ | ९ | ३० | " | " | | " | |
| ९०४×४३ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| १००१×४६ | ९ | २६ | " | " | | " | अव्ययीभावप्रकरणस्य । |
| १००७×३९ | ६ | ३३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टीका । |
| १००१×४१ | १० | ३३ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणस्य । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्यानिर्घरणम् |
|------------|-------------------------|--|---|
| ४०२४२ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-४६, ५१-६२ । |
| ४०२४३ | " | | १-१६ + १ । |
| ४०२४४ | पाणिनिसूत्रव्याख्या | | १-५ + १ । |
| ४०२४५ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ८, १३-३३ । |
| ४०२४६ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-३३ । |
| ४०२४७ | " | | १-६४ । |
| ४०२४८ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-२, ९-१२, ३४-५७ । |
| ४०२४९ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | ३३-५५ । |
| ४०२५० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | २६-५८ । |
| ४०२५१ | " | | १-२४ । |
| ४०२५२ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | ३०३-३६० । |
| ४०२५३ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ६६-७५ । |
| ४०२५४ | लघुशब्दरत्नम् | | ११५-११८ । |
| ४०२५५ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | २-१० । |
| ४०२५६ | कालापदीपिका | वीरसिंहदेवो- पाध्याय गौतम- पण्डितः | २-७, १०-१४, १६-२९, ३१-३४, ३६-४५, ५७-५१, ५३-६३, ६५, ६७-७८ । |
| ४०२५७ | परिभाषेन्दुशेखरटिप्पणी | | १-११+१, १-१९ + १, १-२३ + १ । |
| ४०२५८ | लघुशब्दरत्नम् | | ४ । (गणनया) |
| ४०२५९ | " | हरिदीक्षितः | १-१२ (= १३), १४-२५ । |
| ४०२६० | प्राकृतप्रकाशः सवृत्तिः | वररुचिः वृ० का० भामहः | १-३४ । |
| ४०२६१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ८ । (गणनया) |
| ४०२६२ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | ३७-५४ । |

| आकारः | मङ्कल-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आश्रयः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------|--------------|--------|--------|----------|---------------------|---|
| १०४×४३ | ८ | ४० | दे.ना. | का. | | अपू० | तिङन्तप्रकरणस्य । |
| ९६×५१ | १० | ३१ | " | " | | पू० | वैदिकप्रकरणस्य । |
| ९६×४६ | १० | ४२ | " | " | | अपू० | व्याख्या-श्लोकमयी । |
| ८४×३१ | १२ | ५२ | " | " | | " | कृदन्तप्रकरणस्य । |
| ९७×११ | ११ | ४० | " | " | | पू० | आदौ टिप्पणञ्च, स्वरलिङ्गानुशासन-प्रकरणे । |
| १०१×३९ | ७ | २८ | " | " | | अपू० | आदितो हलन्तपुल्लिङ्गान्ता । |
| ८७×३२ | १० | ४१ | " | " | १८४३ | " | कृदन्तप्रकरणस्य । |
| ९५×४१ | ९ | ३३ | " | " | | " | अव्ययभ्वादिप्रकरणयोः । |
| १११×३७ | ७ | ३४ | " | " | | " | सुबन्तप्रकरणस्य । |
| १०×४३ | ९ | ३६ | " | " | | " | " |
| १२६×४८ | ११ | ५१ | " | " | | " | वै०सि०कौ०टी०टी० कारकप्रकरणस्य । |
| ८९×४५ | ११ | ३१ | " | " | | " | सुबन्तप्रकरणस्य । |
| ९८×४१ | १० | ४४ | " | " | | " | वै०सि०कौ०टी०टी० कारकप्रकरणस्य । स्त्रीप्रत्ययप्रकरणस्य । |
| १०२×४९ | १० | ३५ | " | " | | " | कारकप्रकरणस्य । |
| १२१×२७ | ६ | ६१ | " | " | | " | कातन्त्रसूत्रवृत्तिव्याख्या । |
| ८६×४२ | ९ | २९ | " | " | | पू० | |
| १०१×४४ | १० | ३८ | " | " | | अपू० | वै०सि०कौ०टी०टी० कारकप्रकरणस्य । |
| ९७×४५ | १० | ३४ | " | " | | " | " |
| ५६×४७ | ११ | २२ | " | " | | पू० | वृत्तिः-मनोरमाख्या । |
| ९४×४१ | ८ | २९ | " | " | | अपू० | आदितः सरूपाणामितिसूत्रं यावत् । |
| १०१×४७ | ९ | ३४ | " | " | | " | तिङन्तप्रकरणम् । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-------------------------|--------------------------|--|
| ४०२६३ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १-२४ । |
| ४०२६४ | लघुशब्दरत्नम् | | ४७ । (गणनया) |
| ४०२६५ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ७६-८९, ९१-९६ । |
| ४०२६६ | कारकचक्रम् | | १-२ । |
| ४०२६७ | महाभाष्यटीका | | ५३ । (गणनया) |
| ४०२६८ | रूपमालिका | रङ्गदेवः | १-४ । |
| ४०२६९ | प्राकृतसञ्जीवनी | वसन्तराजः | १-७, ११-१४ । |
| ४०२७० | लघुशब्दरत्नम् | | ९-१०, १२-१८, २१-२३, २५ । |
| ४०२७१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | ४-५, ६२-१३९ । |
| ४०२७२ | " | | ४३-६२ । |
| ४०२७३ | प्रयोगमुखः | धर्मकीर्तिः | २८-९१ । |
| ४०२७४ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | ६-४२ । |
| ४०२७५ | शिशुबोधः | काशीनाथः | १-९ । |
| ४०२७६ | लघुशब्दरत्नम् | | १-१२ । |
| ४०२७७ | प्रौढमनोरमा | | ४७ । |
| ४०२७८ | लघुशब्दरत्नम् | | १-५३ । |
| ४०२७९ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-२५ । |
| ४०२८० | परिभाषेन्दुशेखरः | नागेशः | १-३९ । |
| ४०२८१ | परिभाषेन्दुशेखरटिप्पणम् | | २ । (गणनया) |
| ४०२८२ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १-३ । |
| ४०२८३ | महाभाष्यम् | पतञ्जलिः | ३-१५ । |
| ४०२८४ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जलिः प्रका० कैयटः | १-१३८, २०७-२८४, १-९२, १-५, १-९४, ९६-१०३, १०५, १०७-१०८, १-३५ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|-------------------------|---|
| १०३×४९ | ९ | २९ | दे. ना. | का. | | पू० | कृदन्तप्रकरणम् । |
| ९६×४३ | ९ | ४४ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ८६×४५ | ११ | ३२ | " | " | | " | स्त्रीप्रत्ययप्रकरणस्य । |
| १०१×४३ | ८ | ३० | " | " | | " | |
| १६६×४ | ९ | २७ | " | " | | " | |
| ९३ × ४१ | ९ | ३७ | " | " | | " | सिद्धान्तकौमुदी सिद्धशब्दानाम् । |
| १०२×३८ | ८ | ४१ | " | " | | " | प्रथमपरिच्छेदस्य । |
| ८६×४६ | १० | २८ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ११६×४७ | १२ | ३४ | तेलगु | " | | " | इकोयणचीतिसूत्रात् पूर्वार्द्धं यावत् । |
| १०४×४५ | १२ | ३६ | " | " | | " | |
| १०१×६३ | १४ | २१ | दे. ना | " | | " | अत्र ६५-७२ तमाङ्काः पृष्ठसङ्ख्यात्वेन शेषाः पत्रसङ्ख्यात्वेन च लिखिताः । |
| १२१×३६ | ९ | ५३ | " | " | १८५५ | " | |
| ९७×५ | ९ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ११५×४१ | ११ | ४९ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ११८×४ | ११ | ५२ | " | " | | " | " |
| ११९×४ | १२ | ५० | " | " | | " | " |
| ११९×४ | ११ | ५६ | " | " | | " | " |
| ११५×४ | ११ | ४९ | " | " | | पू० | |
| १३३×४१ | ८ | ६४ | " | " | | अपू० | |
| ११४×४ | ११ | ४१ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टी० । तिङन्त- प्रकरणम् । |
| १०८×४६ | ११ | ५० | " | " | | " | अ० १ पा० १ आ० २ । |
| १०८×४६ | ११ | ४७ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|---------------------------|----------------------------|----------------------------------|
| ४०२८५ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | | १-६ । |
| ४०२८६ | " | पतञ्जलिः प्र० का० कैयटः | ३९-७२ । |
| ४०२८७ | महाभाष्यम् | पतञ्जलिः | १७-३६, ३६, ३८-६२, ६४ । |
| ४०२८८ | " | " | ७१, ७३-९६, ९८, ९८-१०२, ११७-१३९ । |
| ४०२८९ | परिभाषाविवृतिव्याख्या | भैरवः(भवदेवा- त्मजः) | १-७४ । |
| ४०२९० | नागेशोक्तिप्रकाशिका | | १-२ । |
| ४०२९१ | लघुशब्दरत्नम् | हरिदीक्षितः | १-२४ । |
| ४०२९२ | समासचक्रम् | | १-७ । |
| ४०२९३ | धातुपाठः | | १-१७ । |
| ४०२९४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | १-२४, १५, २६-९७ । |
| ४०२९५ | " | " | १-३९ । |
| ४०२९६ | " | " | १-१४२ । |
| ४०२९७ | वैयाकरणभूषणसारः | कोण्डभट्टः | १-२२, १-२२, १८-३९, १-१६ । |
| ४०२९८ | लघुशब्देन्दुशेखरचन्द्रिका | विश्वनाथः | १-१२२, १२२-१४६, १४६ । |
| ४०२९९ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागोजीभट्टः | २७३-४८६ । |
| ४०३०० | प्रौढमनोरमा | भट्टोजि दीक्षितः | १-७ । |
| ४०३०१ | " | | ११-४६ । |
| ४०३०२ | " | भट्टोजिदीक्षितः | १-२५ । |
| ४०३०३ | प्रौढमनोरमा सटीका | टी० का० हरिदीक्षितः | १-३७ । |
| ४०३०४ | लघुशब्देन्दुशेखरः | भट्टोजिदीक्षितः | ११८-१४३ । |
| ४०३०५ | परिभाषेन्दुशेखरचन्द्रिका | विश्वनाथः | १-६, ९-९८, १००-१८५ । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------------|--------------------------|---|
| ४०३०६ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | २४८ । (गणनया) |
| ४०३०७ | " | " | १-१००, १००-१२४, १२४-१३९+१ । |
| ४०३०८ | " | " | १-८८ । |
| ४०३०९ | अष्टाध्यायी | | १-३, ३-४५, (= ४६-४७) ४८-५२ । |
| ४०३१० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १२-३५ । |
| ४०३११ | शब्दरूपावली | | ७-२४ । |
| ४०३१२ | धातुरूपावली | | १-८ । |
| ४०३१३ | परिभाषामणिमाला | | १-२१ । |
| ४०३१४ | महाभाष्यसिद्धान्त- रत्नप्रकाशः | शिवरामेन्द्र- सरस्वती | ९४ । (गणनया) |
| ४०३१५ | " | " | ६-११६ । |
| ४०३१६ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | ५३ । (गणनया) |
| ४०३१७ | महाभाष्यसिद्धान्त- रत्नप्रकाशः | | १-७४, ७६-४२८, ४२८-४७३ । |
| ४०३१८ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-७९ + १ । |
| ४०३१९ | महाभाष्यसिद्धान्त- रत्नप्रकाशः | शिवरामेन्द्र- सरस्वती | ६-३८, ३८-३९, ५०-६८, ७९-१०९, १११-१३९, १३९, १३९-१४१=(१४२)१४३-१६९, ७५ । |
| ४०३२० | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-३७ । |
| ४०३२१ | " | | १-२२ । |
| ४०३२२ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | १-७७ । |
| ४०३२३ | प्रौढमनोरमा | | १-२७ । |
| ४०३२४ | शब्दकौस्तुभः | भट्टोजिदीक्षितः | १-६९, १-२३, ७-२६, २६-२९, ५६-६१ । |
| ४०३२५ | प्राकृतप्रकाशः सवृत्तिकः | वररुचिः वृ०का०-भामहः | १-२३ । |
| ४०३२६ | पारसीकप्रकाशः | विहारिकृष्णदासः | १-९६ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|------------------------|----------------------|
| १०'८x४'८ | ७ | २७ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १०'६x४'६ | १० | २९ | " | " | | " | तिङन्तभागः । |
| १०'९x४'६ | ९ | ३५ | " | " | | पू० | कृदन्तभागः । |
| १०'१x३'९ | ९ | १५ | " | " | १८५२ | " | |
| १०'४x४'८ | १२ | ४४ | " | " | | अपू० | |
| १०'४x४'७ | १० | २९ | " | " | | " | |
| १०'१x४'६ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| ९'९x८'६ | १२ | १६ | " | " | | पू० | |
| १०'९x४'६ | १२ | ५० | " | " | | अपू० | |
| १०'८x४'७ | ११ | ४८ | " | " | | " | |
| ११'२x४ | ९ | ६२ | " | " | | " | |
| १०'८x४'६ | १० | ४७ | " | " | | " | |
| १०'७x४'६ | ७ | ३६ | " | " | | " | |
| १०'९x४'७ | १२ | ४७ | " | " | | " | |
| १०'४x४ | १० | ३९ | " | " | | " | |
| १०'७x३'९ | ५ | ३२ | " | " | | पू० | |
| १३'४x५ | १३ | ५९ | " | " | | " | अ० रे, पा० ष, आ० १ । |
| ९'५x३'७ | ११ | ६१ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| १०'९x४'१ | १० | ४० | " | " | | " | अष्टाध्यायी टी० । |
| १२'८x६'४ | १२ | ४४ | " | " | | पू० | |
| ९'८x३'४ | ६ | २७ | " | " | १६६५ | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|--------------------|---|
| ४०३२७ | सारस्वतम् | | १-११, १७-१६४ । |
| ४०३२८ | प्रौढमनोरमा | | १-५५+१ । |
| ४०३२९ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-१२, १४-१६६ । |
| ४०३३० | " | " | १-५१ = ५२, ५३-७३, ७३, ७३-१००, १०२ १४२, १-२८, २८-८०, १-१६३, १-१०१ । |
| ४०३३१ | मध्यसिद्धान्तकौमुदी सटिप्पणा | वरदराजः | १-३२, १-१७५ । |
| ४०३३२ | प्राकृतप्रकाशः | वररुचिः | १-१९ । |
| ४०३३३ | " | " | १२ । (गणनया) |
| ४०३३४ | मुखबोधः | | १, १-१४ । |
| ४०३३५ | पारसीकप्रकाशः | विहारिकृष्णदासः | १-२८ । |
| ४०३३६ | धातुपाठः | | ८, ११-१३ । |
| ४०३३७ | क्रोडपत्रम् | | १-६ । |
| ४०३३८ | लघुसिद्धान्तकौमुदी | | १ । |
| ४०३३९ | तत्त्वबोधिनी | ज्ञानेन्द्रभिक्षुः | १-७+१ । |
| ४०३४० | मध्यसिद्धान्तकौमुदी | | १ । |
| ४०३४१ | वैयाकरणसिद्धान्तपरम- लघुमञ्जूषा | नागेशः | १-४३ । |
| ४०३४२ | मनोरमाखण्डनम् | चक्रपाणिः | १-१६७ । |
| ४०३४३ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | भट्टोजिदीक्षितः | २०७ । (गणनया) |
| ४०३४४ | काशिकासारवृत्तिः | वासुदेवः | १-४६ । |
| ४०३४५ | अष्टाध्यायी | | १-१४ । |
| ४०३४६ | शब्दकौस्तुभप्रभा | | २-२२ । |
| ४०३४७ | कविकल्पद्रुमः सटीकः | वोपदेवः | ५-३६ । |

| आकारः | पंक्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|---------------|--------------|--------|-------|----------|---------------------|---|
| १५४४ | ७ | ३० | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १३०५५ | १२ | ३४ | " | " | | " | वै०सि०कौ०टीका । |
| १३०५३५ | ९ | ४४ | " | " | | " | |
| १३०५३५ | १० | ४५ | " | " | १९२४ | " | |
| १२५४३२ | ७ | ४२ | " | " | | " | |
| १२५४४१ | ७ | ४९ | " | " | | " | |
| १०३४३४ | १४ | ६५ | " | " | | पू०* | |
| १५४३४ | ६ | ४६ | वङ्ग. | " | | अपू० | कारकपादः । |
| ९९४३ | ११ | ३१ | दे.ना. | " | | " | अत्र पूर्व कोशप्रकरणं तच्च पूर्णम् । |
| १०४४४७ | १० | ४४ | " | " | | " | |
| १३०५५५ | ९ | ४३ | " | " | | पू० | |
| ९०४३२ | २६ | १४ | " | " | | अपू० | |
| ११४३७ | ९ | ३५ | " | " | | " | वै०सिद्धान्तकौमुदीटीका । अत्राव्यय-प्रकरणांशः । |
| १२२४४३ | ८ | ३४ | " | " | | " | |
| १२४४४६ | ८ | ५१ | " | " | | पू० | |
| १००४४ | ९ | ४७ | " | " | १८५९ | " | |
| ९५४३६ | ८ | ३३ | " | " | १७२० | अपू० | |
| १०३४४२ | ११ | ४३ | " | " | | " | अष्टाध्यायीभूत्रवृत्तिर्वा । |
| ८०४३९ | ९ | ३१ | " | " | | " | |
| ९०४४८ | १२ | ३३ | " | " | | " | अष्टाध्यायी टी० टी० । |
| १०३४५ | १७ | ४० | " | " | १९१९ | " | धातुपाठः सुग्धबोधानुसारी । |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | अन्वकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|--|-----------------|----------------------------------|
| ४०३४८ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १-६, ३७-६४ । |
| ४०३४९ | अनिट्कारिका सटीका | | १-६ । |
| ४०३५० | परिभाषासङ्ग्रहः | | १, ३-५ । |
| ४०३५१ | महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | नागेशः | ४-८७ । |
| ४०३५२ | अष्टाध्यायी | | ६३-७३ । |
| ४०३५३ | " | पाणिनिः | १-२०, १८-४७ । |
| ४०३५४ | " | " | १-४७ । |
| ४०३५५ | आख्यातचन्द्रिका | | २-२५ । |
| ४०३५६ | धातुसङ्ग्रहः | | १-१४ । |
| ४०३५७ | धातुचन्द्रिका | ठाकुरदासः | १-१९ । |
| ४०३५८ | वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषाकला | | १-५३ । |
| ४०३५९ | " | वैद्यनाथभट्टः | १-३६ । |
| ४०३६० | वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा- टिप्पणम् | | १-४ । |
| ४०३६१ | धातुपाठः | | १-१९ । |
| ४०३६२ | अष्टाध्यायीव्याख्या | | १-३ । |
| ४०३६३ | वार्त्तिकसङ्ग्रहः | रुद्रधरः | १-५६, ६०-६४, ६७-९७, ९९-१०१ । |
| ४०३६४ | धातोस्तन्निमित्तस्यैवेति- सूत्रविचारः | | १ । |
| ४०३६५ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ३०-३३, ३३-३४, ३६, ३८-६६, ६६-६७ । |
| ४०३६६ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-७१, ७३-७६, ७६-८१ । |
| ४०३६७ | प्रबोधचन्द्रिका | वैजलभूपालः | ४-११+१ । |
| ४०३६८ | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-२०, २९-५५, ९१ । |
| ४०३६९ | महाभाष्यम् | | ३५ । (गणनया) |

| आकारः | वर्द्धि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|---------|--------------------|------------------|--------|-------|----------|-------------------------|--------------------------------|
| ११०६×६७ | ७ | ३१ | दे.ना. | का. | | अपू० | आख्यातप्रक्रियामात्रम्। |
| ११०७×६५ | ७ | ३१ | " | " | | पू० | |
| ९५×४३ | ८ | ३० | " | " | १८६३ | अपू० | |
| १०२×४७ | १२ | ३९ | " | " | | " | |
| ७८×३३ | ९ | २८ | " | " | | " | |
| ७९×३५ | ९ | २६ | " | " | १८२९ | " | |
| ९२×४३ | ९ | ४० | " | " | | पू० | |
| १०५×४६ | ९ | ३९ | " | " | | अपू० | कारिकामयी। |
| ९५×४२ | ८ | ३१ | " | " | | " | कारिकारूपः। |
| १७३×३५ | ११ | ६२ | वङ्ग० | ता.प. | | पू० | |
| १०४×४६ | १२ | ४७ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १०४×४५ | १२ | ४६ | " | " | | " | |
| १०७×४७ | ८ | ३९ | " | " | | " | |
| १०५×४५ | १० | ३६ | " | " | | पू० | |
| ९×४२ | ७ | ३४ | " | " | | अपू० | कारिकारूपा। |
| १४४×७६ | ५ | ८० | वङ्ग० | " | | " | |
| १०७×४७ | ९ | ४७ | दे.ना. | " | | " | |
| ९३×४२ | १६ | ५२ | " | " | | " | |
| ९३×४ | १५ | ३९ | " | " | | पू०* | वै०सि०कौ०टीका। तिङन्तप्रकरणम्। |
| ९२×४१ | ९ | ३५ | " | " | | अपू० | |
| १००×४४ | १० | ४२ | " | " | | " | वै०सि०कौ०टीका। कृत् प्रकरणम्। |
| ११४×४२ | १३ | ३२ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|------------------------------------|-----------------|----------------------|
| ४०३७० | प्रौढमनोरमा | भट्टोजिदीक्षितः | १-१७, १७-२१४, १-१९३। |
| ४०३७१ | प्रयोगमुख्यसारः | | २-५। |
| ४०३७२ | महाभाष्यं सप्रदीपम् | पतञ्जलिः | १११३। (गणनया) |
| ४०३७३ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १०५-१३०। |
| ४०३७४ | शब्दरूपावलिः | | १-७। |
| ४०३७५ | वैयाकरणभूषणसारटीका | | २-२०। |
| ४०३७६ | लघुशब्देन्दुशेखरः | | १-९, ११, ११-१५। |
| ४०३७७ | " | | १-१९। |
| ४०३७८ | फिट्सूत्राणि | शान्तनवाचार्यः | १-२। |
| ४०३७९ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-७। |
| ४०३८० | क्रोडपत्रम् | | १-१३। |
| ४०३८१ | प्रौढमनोरमा | | १-५। |
| ४०३८२ | महाभाष्यव्याख्या | | १-१८। |
| ४०३८३ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | २-१३। |
| ४०३८४ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-१५९। |
| ४०३८५ | लघुशब्देन्दुशेखरः | नागेशः | १-२६, ४१, ४५-६३। |
| ४०३८६ | शब्दरूपावलिः | | १-२७। |
| ४०३८७ | पूर्वपक्षावलिः | | १-१०। |
| ४०३८८ | वैयाकरणसिद्धान्त- परमलघुमञ्जूषा | नागेशः | ४६-७४। |
| ४०३८९ | अष्टाध्यायी | पाणिनिः | १-११। |
| ४०३९० | प्रौढमनोरमा | | १-१६। |
| ४०३९१ | प्रौढमनोरमाटीका | | १-२। |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|--------|--------------------|------------------|-------|-------|--------------|-------------------------|--|
| १०१×४४ | ९ | ३५ | दे.ना | का. | १८८८ १८८९ | पू० | वै० सि० कौ० टीका । |
| ८८×४ | १५ | ४९ | " | " | १७८४ | अपू० | |
| १३८×५४ | ८ | ५५ | " | " | १८५० | " | |
| १०८×४५ | ९ | ४६ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० । |
| ९८×४२ | ९ | ३४ | " | " | | " | |
| ११६×४ | १३ | ५६ | " | " | | " | |
| १०×४२ | १० | ४६ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० । |
| १०१×४३ | ९ | ३९ | " | " | | " | " |
| १०×४४ | ११ | ३५ | " | " | | पू० | |
| ९५×४१ | १० | ३६ | " | " | | " | लिङ्गाहुशासनमत्रम् । |
| ९३×४५ | ११ | ३६ | " | " | | " | अर्थवदित्यादिमूत्राणाम् । |
| १०२×४५ | ८ | ३८ | " | " | | अपू० | वै० सि० कौ० टीका । णेरणौ यत्कर्म णौ चेतस कर्ताऽनाध्याने, इतिसूत्र- माश्रित्य । |
| १०८×४७ | १२ | ४३ | " | " | | " | |
| १०×२५ | ११ | ५० | " | " | | " | |
| १०४×३८ | १० | ४२ | " | " | | " | उत्तरार्द्धम् । |
| १०२×४२ | १० | ५२ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० । |
| ९५×४२ | ७ | ३० | " | " | | पू० | |
| ९२×४१ | ११ | ३९ | " | " | | " | |
| ९८×४२ | १० | ४६ | " | " | १८५५ | अपू० | |
| १३×४२ | ९ | ४६ | " | " | | " | |
| १०६×४१ | ७ | ३३ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० । |
| १६×३८ | १५ | ४९ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसङ्ख्याविवरणम् |
|------------|-----------------------------|-----------------|--------------------|
| ४०३९२ | अर्थवत्सूत्रविचारः | | १-४ + १ । |
| ४०३९३ | वैयाकरणभूषणसारः | | ५५ । |
| ४०३९४ | " | | १ । |
| ४०३९५ | धातुवृत्तिः | | १७-२१, २७-३० । |
| ४०३९६ | हलन्त्यमिति सूत्रार्थविचारः | | १ । |
| ४०३९७ | यमविचारः | | १-२ । |
| ४०३९८ | कातन्त्रवृत्तिः | दुर्गसिंहः | १-१५ + १, १६-४४ । |
| ४०३९९ | परिभाषेन्दुशेखरः | | ३-१२ । |
| ४०४०० | वै० सि० कौमुदीविलासः | भास्करः | १-४५ । |
| ४०४०१ | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी | | १-२१ । |
| ४०४०२ | पारसीप्रकाशः | विहारिकृष्णदासः | २० । (गणनया) |
| ४०४०३ | वैयाकरणसिद्धान्तमाला | | ४० । " |
| ४०४०४ | वाक्यपदीयं सटीकम् | | २-१५, २७-५० । |
| ४०४०५ | पटकारकप्रक्रिया | | १-१० । |
| ४०४०६ | वैयाकरणभूषणसारः | | १-१० । |
| ४०४०७ | लघुराव्देन्दुशेखरटीका | | ५ । (गणनया) |
| ४०४०८ | गोडपत्रम् | | १-३ । |
| ४०४०९ | परिभाषेन्दुशेखरदोषोद्धारः | मन्नुदेवः | १ । |
| ४०४१० | सारस्वतभाष्यम् | | २ । |
| ४०४११ | वैयाकरणसिद्धान्तमञ्जूषा | | १५ । |
| ४०४१२ | सिद्धान्तचन्द्रिका | | १ । |
| ४०४१३ | दशलकारकारिका | | ५ । |
| ४०४१४ | सारस्वतम् | | २० । |

| आकारः | पङ्क्ति-संख्या | अक्षर-संख्या | लिपि | भाषाः | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा-विवेकः | विशेषविवरणम् |
|-----------|----------------|--------------|------------|-------|----------|---------------------|-----------------------------------|
| १०°=x४°३ | ९ | ३६ | दे.ना. का. | | | अपूर्० | अन्तिमपत्रं ग्रन्थान्तरस्य । |
| ९°७x४°१ | ९ | ४७ | " " | | १=४४ | " | |
| ९x३°९ | ११ | ४६ | " " | | | " | |
| १०°x२°९ | ९ | ५७ | " " | | | " | |
| ९°९ x ३°१ | ११ | ६६ | " " | | | " | |
| १०°७x४°६ | १७ | ५४ | " " | | | " | |
| १५°४x३°५ | ४ | ४४ | वङ्ग | " | | " | आख्यातप्रकरणस्य । |
| ९°७x३°९ | १२ | ५७ | दे.ना° | " | | " | |
| १२°८x३°२ | ८ | ५३ | " " | | | " | |
| ११°७x३°७ | ५ | ३६ | " " | | | " | वैदिकप्रकरणम् । |
| १०°१x४°७ | ९ | २७ | " " | | | " | |
| ११°१x३°९ | ९ | ४९ | " " | | | " | |
| १०°७x३°७ | ७ | ४१ | " " | | | " | वाक्यकाण्डम् । |
| १३°६x४°४ | १० | ४६ | " " | | | पूर्० | |
| १०°७x४°७ | ६ | ३३ | " " | | | अपूर्० | |
| १२x५ | १६ | ६६ | " " | | | " | कारकप्रकरणस्य । |
| १३x१°२ | ११ | ४५ | " " | | | " | प्रकृतिप्रत्यययोरर्थबोधकताविषये । |
| १०x४°६ | ९ | ३७ | " " | | | " | |
| ८°६ x ४°९ | १९ | ४८ | " " | | | " | |
| ९°४x४°३ | १० | ४१ | " " | | | " | |
| ९°२x४°१ | ९ | ३१ | " " | | | " | अनिट्कारिकामात्रम् । |
| ६°९ x २°७ | ५ | ३४ | " " | | | " | |
| ८°६x४°२ | ८ | २८ | " " | | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविकरणम् |
|------------|----------------------|--------------|--------------------|
| ४०४१५ | अष्टाध्यायी | | ५० । |
| ४०४१६ | लघुशब्दरत्नम् | | १६-४४, ४६-११४ । |
| ४०४१७ | पाणिनिसूत्रं सटीकम् | | ३९-१२९, १३१, १३९ । |
| ४०४१८ | व्याकरणग्रन्थविशेषः | | ६ । |
| ४०४१९ | प्रकीर्णपत्राणि | | २६ । (गणनया) |
| ४०४२० | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | ६-७ + १ । |
| ४०४२१ | व्याकरणग्रन्थविशेषः | | २ । (गणनया) |
| ४०४२२ | " | | ७२-७८, ८१-८९+७ । |
| ४०४२३ | " | | ६ । (गणनया) |
| ४०४२४ | लघुशब्दरत्नटीका | | १-२३, २५-२६ + १ । |
| ४०४२५ | व्याकरणटीकाग्रन्थः | | २ । (गणनया) |
| ४०४२६ | व्याकरणग्रन्थविशेषः | | २३-२५, ५२-५३ । |
| ४०४२७ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | २१-२२ । |
| ४०४२८ | व्याकरणग्रन्थविशेषः | | २४-५२ । |
| ४०४२९ | " | | १-२३ । |
| ४०४३० | प्रकीर्णपत्राणि | | ८६ । (गणनया) |
| ४०४३१ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-२ । |
| ४०४३२ | " | | २ । (गणनया) |
| ४०४३३ | " | | १-२ । |
| ४०४३४ | " | | १ । |
| ४०४३५ | " | | ३ । (गणनया) |
| ४०४३६ | " | | १-२ । |

| आकारः | पङ्क्ति- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | शिक्षा- संख्या | लिपिकालः | पूर्णापूर्णा- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|--------|-------------------|----------|-------------------------|--|
| ८१×३५ | १० | २५ | दे.ना. | का. | | अपू० | |
| १०५×३९ | ८ | ५२ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टी० । |
| ८९×४९ | ९ | ३९ | " | " | | " | स्वरप्रकरणम् । |
| ८८×४३ | १४ | ४५ | " | " | | " | |
| विविधः | × | × | वङ्ग | " | | " | |
| ९९×३९ | ८ | ३८ | दे.ना. | " | | " | एकम् पत्रम् परिभाषेन्दुशेखर- मूलस्याप्यस्ति । |
| ९८×४३ | १२ | ३८ | " | " | | " | उर्वरितपत्राणि । |
| ८७×४८ | १२ | ३७ | " | " | | " | |
| १०१×३८ | १५ | ६९ | " | " | | " | उर्वरितपत्राणि । |
| १४५×४ | १० | ४७ | " | " | | " | वै० सि० कौ० टी० टी० टी०, कारकप्रकरणस्य । |
| १२८×४८ | ४ | ५७ | " | " | | " | |
| ९७×४३ | | | | | | | |
| १०६×३६ | ८ | २५ | " | " | | " | |
| ९९×४३ | १७ | ६१ | " | " | | " | |
| ९३×४३ | ११ | ४६ | " | " | | " | |
| ९१×४३ | १० | ३७ | " | " | | " | |
| विभिन्नः | × | × | " | " | | " | |
| १०१×४४ | १५ | ४५ | " | " | | " | |
| ९९×४३ | ९ | ३३ | " | " | | " | |
| १०×४५ | ९ | ४३ | " | " | | " | |
| ११३×३७ | १० | ६० | " | " | | " | |
| १२६×३५ | १० | ७४ | " | " | | " | |
| ११४×३ | १३. | ७१ | " | " | | " | |

| क्रमसंख्या | ग्रन्थनाम | ग्रन्थकारनाम | पत्रसंख्याविवरणम् |
|------------|----------------------|--------------|-------------------|
| ४०४३७ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १, ३ । |
| ४०४३८ | ” | | २ (गणनया) । |
| ४०४३९ | क्रोडपत्रम् | | १ । |
| ४०४४० | ” | | १ । |
| ४०४४१ | ” | | १-३ । |
| ४०४४२ | लघुशब्देन्दुशेखरटीका | | १-४ । |
| ४०४४३ | लघुशब्दरत्नटीका | | १-२ । |
| ४०४४४ | वैयाकरणभूषणसारटीका | | १ । |
| ४०४४५ | परिभाषेन्दुशेखरटीका | | १४ । (गणनया) |

| आकारः | प्रक्षि- संख्या | अक्षर- संख्या | लिपिः | आधारः | लिपिकालः | पूर्णापूर्ण- विवेकः | विशेषविवरणम् |
|----------|--------------------|------------------|---------|-------|----------|------------------------|-------------------------------|
| १२॰९×३॰६ | १० | ६६ | दे. ना. | का. | | अपू० | |
| १२॰८×४॰६ | ९ | ५८ | " | " | | " | |
| १२॰७×४॰७ | १५ | ७४ | " | " | | " | अन्तादिवच्चेति सूत्रस्य । |
| ११॰१×४॰७ | ६ | ५३ | " | " | | " | भलाञ्जशोऽन्ते इति सूत्रस्य । |
| १०॰६×४॰२ | १० | ३५ | " | " | | " | "गेरणौ" इत्यादिसूत्रस्य । |
| १०॰९×४॰५ | १३ | ५६ | " | " | | " | हैहेप्रयोगे इतिसूत्रादारभ्य । |
| ११॰१×४ | १५ | ५७ | " | " | | " | प्रौढमनोरमाटीकाटीका । |
| १२॰८×४॰७ | १२ | ५४ | " | " | | " | |
| ११॰१×५ | १५ | ६२ | " | " | | " | |

द्वादशभागोल्लिखितव्याकरणग्रन्थानामक्षरानुक्रमणिका

| | |
|--|--|
| <p>अधीगर्थद्वेषां कर्मणीति सूत्रार्थविचारः ३८८१७ ।</p> <p>अनिट्कारिका ३८८९०, ३९२२०, ३९३७१ ।</p> <p>अनिट्कारिका (सटिप्पणा) ३८४६१ ।</p> <p>अनिट्कारिका (सटीका) ३८३३८, ३८८१०, ३९४२०, ४०३४९ ।</p> <p>अनिट्कारिकाटीका ३९७२१ ।</p> <p>अनेकमन्यपदार्थसूत्रार्थविचारः ३८४६२ ।</p> <p>अन्वयोपक्रमोपायफलानि ३९६६७ ।</p> <p>अपरिमाणेत्यादिसूत्रव्याख्या ३९७१९ ।</p> <p>अभिनवार्थतरङ्गिणी ३८४२७ ।</p> <p>अर्थवत्त्वपरिष्कारः ३८४९१ ।</p> <p>अर्थवत्त्वविचारः ३८८९४ ।</p> <p>अर्थवत्सूत्रकोडपत्रम् ३८७०१, ३९८९६ ।</p> <p>अर्थवत्सूत्रविचारः ३८९९८, ३९८६३, ४०३९२ ।</p> <p>अर्थवदितिसूत्रार्थनिर्णयः ३८८६० ।</p> <p>अव्ययपाठः ३९४१० ।</p> <p>अव्ययार्थः ३८४४८, ३८७४८, ३९४९६ ।</p> <p>अव्ययार्थकारिका ३९४६२ ।</p> <p>अव्ययार्थनिरूपणम् ३९३०६ ।</p> <p>अष्टाध्यायी ३८००६, ३८००९, ३८०४६, ३८१३२, ३८१४१, ३८१४३, ३८२४१, ३८२७४, ३८३६४, ३८४४७, ३८४६२, ३८५८०, ३८६७९, ३८६८०, ३८७४८, ३८८५९, ३८८८६, ३८८८७, ३८८९१-३८८९४, ३८९२४, ३८९२६, ३९१२९, ३९१४१, ३९३६२, ३९३९२, ३९४०३, ३९४२३,</p> | <p>३९४४४, ३९४७३, ३९४८६, ३९५३९, ३९५४०, ३९५६७, ३९६२७, ३९७१३, ३९७१८, ३९७७६, ३९७८२, ३९७९९, ३९८७२, ३९८७३, ३९९१८-३९९२२, ३९९२६, ३९९२७, ३९९४४, ३९९६२, ३९९७३, ४००११, ४००१७, ४००६४, ४००७३, ४०१०३, ४०१२४, ४०१७४, ४०१९०, ४०२०२, ४०३०९, ४०३४६, ४०३६२-४०३६४, ४०३८९, ४०४१६ ।</p> <p>अष्टाध्यायीटीका ३८२४४, ३८२४६, ३८२४७, ३८२५०, ३८२५६, ३८२८६, ३८३०४, ३८३१२, ३८३१७, ३८३३१, ३८३४४, ३८३४८, ३८४८९, ३८७०२, ३८७०९, ३८८१३, ३८८६४, ३८८६६, ३८९८६, ३८९९१, ३९१६१, ३९२५०-३९२५७, ३९३६४, ३९४३९, ३९५२३, ३९६४४, ३९६६७, ३९७२८, ३९७३१, ३९९३४, ३९९८८, ३९९९३, ४०००३, ४०००४, ४००३६, ४००५९, ४००६९, ४००६३, ४००७७, ४००९७, ४०११०, ४०१९८, ४०३२४ ।</p> <p>अष्टाध्यायीटीकाटीका ३८०४६, ३८२४८, ३८२५१-३८३६४, ३८३२९, ३८४७७, ३८४६०, ३८९०३, ३८९७८, ३८९८२, ३८९८३, ३९२४६, ३९२७६, ३९२७७, ३९५४४, ३९५४९, ३९५८८-३९५९२, ३९७२६, ३९७७८, ४००२८, ४००७६ ।</p> <p>अष्टाध्यायीटीकाटीका ३८१७० ।</p> <p>अष्टाध्यायीपाठः ३८०४४ ।</p> |
|--|--|

| | |
|---|---|
| अष्टाध्यायीवार्तिकम् ३८८७२ । | उपसर्गार्थसङ्ग्रहः ३८१११ । |
| अष्टाध्यायीव्याख्या ४०३६२ । | उपसाहित्यम् ३८३७२ । |
| अष्टाध्यायी सवार्तिका ३९८०९ । | एकाच उपदेशोऽनुदात्तादिति सूत्रं सवृत्तिकम् ३८८१६ । |
| अष्टाध्यायीसूत्रवृत्तिः ४०३४४ । | एवकारार्थविवृतिः ३८४६४ । |
| आख्यातचन्द्रिका ४०३११ । | कर्मण्यण् इति सूत्रटीका ३९१८० । |
| आख्यातवादः ३८८८८ । | कलापचन्द्रः ३८३४६, ३८३१३, ३९३३० । |
| आख्यातविवृतिः ३८२७६ । | कृत्वापटीका ३८००१, ३८३४६ । |
| आख्यातविवेकः ३८३७०, ३९९६६ । | कलापदीपिका ४०२१६ । |
| आख्यातवृत्तिटिप्पणी ३८००८ । | कलापपरिशिष्टप्रबोधः ३८०१४ । |
| इकोगुणवृद्धीतिवादार्थः ३८८१८ । | कलापसूत्रम् ३८०१८ । |
| उणादिपाठः ३९३१२ । | कलापसूत्रपाठः ३९४११ । |
| उणादिवृत्तिः ३८३७१, ३८१८२, ३८८८९, ३९४६४ । | कलापसूत्रव्याख्या ३८०१७ । |
| उणादिसूत्रम् ३८०७१, ३८३३६ । | कल्पलताटीका ३८८९९ । |
| उणादिसूत्रं (सवृत्तिकम्) ३८४६३, ३९३८०, ३९४१२, ३९४७४ । | कविकल्पद्रुमः ३८२९४, ३८३३४, ३८४१३, ३८१६१, ४८९१९, ३८८१३, ३९३८३, ३९४६०, ३९१४७, ३९१६९, ३९१७२, ३९६१८, ४००३० । |
| उणादिसूत्रटीका ३९४७२ । | कविकल्पद्रुमः (सटीकः) ३७९८१, ४०३४७ । |
| उणादिसूत्रपाठः ३९३८२, ३९४१४, ३९१११, ४००९२ । | कविकल्पद्रुमटीका ३८१६३ । |
| उणादिसूत्रमाला ३८१६८ । | कविरहस्यधातुव्याख्या ३९७१४ । |
| उणादिसूत्रवृत्तिः ३९८१० । | कातन्त्रम् ३८३६३, ३८१२२, ३९१८१ । |
| उणादिसूत्रसङ्ग्रहः ३८१८१ । | कातन्त्रम् (सवृत्तिकम्) ३८१६१-३८१६४ । |
| उत्तरपदत्वे चैतिवार्तिककरोडपत्रम् ३८८१७ । | कातन्त्रकौमुदी ३८१०२ । |
| उत्तरपक्षावली ३९१४२ । | कातन्त्रकरोडपत्रसङ्ग्रहः ३९१७८ । |
| 'उपपदमतिङ्' इति सूत्रवादः ३९७९० । | कातन्त्रपरिशिष्टम् ३८३२६, ३८३१८ । |
| उपपदमतिङ्सूत्रव्याख्या ३९६१० । | कातन्त्रपरिशिष्टवृत्तिः ३८०६७, ३८११२, ३९२१३ । |
| उपसर्गबोधकत्वखण्डनम् ३८१८३ । | कातन्त्रपरिशिष्टसूत्रम् ३८४१०, ३९६७२, ३९६७६ । |
| उपसर्गवृत्तिः ३८७९३, ३९४६९, ३९११० । | |

| | |
|--|--|
| कातन्त्रपरिशिष्टसूत्रवृत्तिः ३१६७७, ३१६९३ । | कातन्त्रसूत्रवृत्तिटीका ३१६६९, ३१६७१ । |
| कातन्त्ररूपमाला ३१११८ । | कातन्त्रसूत्रवृत्तिपञ्जिका ३१८९३, ३१८९८, ३१८८४, ३१९३३ । |
| कातन्त्रविवरणम् ३७९८४ । | कातन्त्रसूत्रवृत्तिपञ्जिकाव्याख्या ३१८९२ । |
| कातन्त्रविवरणटीका ३८००७ । | कातन्त्रसूत्रवृत्तिविवरणपञ्जिका ४०१६० । |
| कातन्त्रविवरणपञ्जिका ३७९७८ । | कातन्त्रसूत्रवृत्तिव्याख्या ४०७९६ । |
| कातन्त्रविस्तरः ३७९९६, ३८०८१, ३८२७६ । | कातन्त्रसूत्राणि ३१८४४ । |
| कातन्त्रवृत्तिः ३८२७७, ३८३९३, ३८३९९, ३८४९१, ३९११७, ३९२०९-३९२११, ३९३३२, ३९३६१, ३९४९८, ४०३१४ । | कामधेनुः ३७९८९ । |
| कातन्त्रवृत्तिः (सटीका) ३८३९१, ३९४२४ । | कारकग्रहः ३८४६९ । |
| कातन्त्रवृत्तिटीका ३७९१७, ३९२०६, ३९३२९, ३९४९७ । | कारकचक्रम् ३८१६७, ३९९९९, ४०२६६ । |
| कातन्त्रवृत्तिपञ्जिका ३८३२९, ३८३२८, ३८३९९, ३८३९७, ३८४११, ३९२१८, ३९२१९, ३९३३३, ३९३३६, ३९३६३, ३९९८६ । | कारकचन्द्रिका ३८६७८ । |
| कातन्त्रवृत्तिविवरणम् ३९३३४, ३९३३९ । | कारकतत्त्वम् ३८३७३, ३८४६६, ३८४९७, ३९४७९ । |
| कातन्त्रवृत्तिविवरणपञ्जिका ३७९९६, ३८०४७-३८०४९, ३८०७८, ३८१०८, ३८२७८, ३८९७७, ३८८६०, ३९९९६ । | कारकनिर्णयः ३८३४३, ३८३७४, ३८३७९, ३८९०० । |
| कातन्त्रसूत्रम् ३८१६६, ३८३९३, ३८३२०, ३८३२७, ३९३३०, ३८४१०, ३८९२०, ३९३७१, ३९६६९, ३९८८१, ३९८८२, ३९८१२ । | कारकवर्णनं (सटीकम्) ३८४६७ । |
| कातन्त्रसूत्रं (सवृत्तिकम्) ३८२८९, ३८३९६, ३८४१२, ३९७६२ । | कारकवादः ३९४१९ । |
| कातन्त्रसूत्रवृत्तिः ३९९६८, ३९६७०, ३९६७९, ३९६७८, ३९६८०, ३९६९६, ३९८३९, ३९८३६, ३९८४६, ३९८५८, ३९८९४, ३९८८३, ४००३१ । | कारकविचारः ३८४१९, ३९२९० । |
| | कारकादिविचारः ३७९२८ । |
| | कारकादिविचारः (सव्याख्यः) ३९९६७ । |
| | कारिका ३९२१९ । |
| | कारिकाविवेचनं (सव्याख्योदाहरणम्) ३८७३९ । |
| | कारिकावृत्तिः ३९७०० । |
| | काव्यकामधेनुवृत्तिः ३८३६९ । |
| | काशिका ३७९२६, ३७९९०, ३८०९९, ३८२८६, ३८२८९, ३८३१७, ३८४२०, ३८६१९, ३८८९६, ३९३९३, ३९३६९, ४००३९, ४०२२४ । |
| | काशिका (सटीका) ३८०९६ । |

काशिकाटीका ३९१४६ ।
 काशिकाविवरणपञ्जिका ३८११९-३८११९, ३३२८९,
 ३८६८६, ३८८९९, ३९७२० ।
 काशिकावृत्तिः ३८१२०, ३८१२२ - ३८३४४,
 ३८३८६, ३८६८७, ३८६७६,
 ३७६७७ ।
 काशिकावृत्तिटीका ३८७७३-३८७७६ ।
 काशिकाव्याख्या ३७९२७ ।
 काशिकासारवृत्तिः ४०३४४ ।
 किरीटः ३८४७०, ३८९१६ ।
 क्रियाकलापः ३९४८१, ३९७१७ ।
 कुञ्जिका ३७९६२, ३७९८२, ३९२३१, ३९४८४ ।
 कौमुदीविलासः ३९२८६ ।
 क्रोडपत्रम् ३८३७७, ३८६३८, ३८८४१, ३८८६२,
 ३८९०७, ३८९७४, ३८९८१, ४०१२९,
 ४०१९२, ४०१९७, ४०३३७, ४०३८०,
 ४०४०८, ४०४३९-४०४४१ ।
 खण्डितपत्राणि ३७९४३ ।
 गजसूत्रविचारः ३९३९४ ।
 गणपाठः ३७९३१, ३७९४०, ३७९९२, ३८०४१,
 ३८०७२, ३८३३३, ३८६६७, ३८७००,
 ३९२८४, ३९२८९, ३९३१९, ३९३७८,
 ३९४२९, ३९८११, ४०१०१ ।
 गणपाठः (सटिप्पणः) ३९६९९ ।
 गणरत्नम् ३९८१२ ।
 गणरत्नमहोदधिः ३८४९९, ३८८९२ ।
 गणरत्नवृत्तिः ३९६८१ ।
 गदा ३८२०३, ३८६०८, ३०६४७, ३८६४९,
 ३८७३६, ३९१९१, ३९१९२, ३९३९३,
 ३९६००, ३९६९१ ।

गवाकूशब्दव्याख्या ४०१९९ ।
 गोर्वाणमञ्जरी ३९१४० ।
 गोपालकारिका सवृत्तिः ३९४६३ ।
 चङ्गकारिका ३९१२६ ।
 चन्द्रकला ३८०१३, ३८४३७ ।
 चन्द्रकीर्तिः ३९६८९ ।
 चन्द्रिकाधातुपाठः ३९९४६ ।
 चारुच्चारणचातुरी ३८२६१, ३८६०३ ।
 चित्प्रभा ३८६९४ ।
 चिदस्थिसाला ३७९९४, ३८९४३, ३९०३६, ३९६२०,
 ४०२२७ ।
 “जनपदशब्दात्क्षत्रियादन्”
 इति सूत्रार्थविचारः ३९०६६
 ज्ञापकसमुच्चयः ३८६९९, ४०१४९, ४०१९९ ।
 ज्ञापकसमुच्चयटीका ४०१९८ ।
 टिड्डाणवितिसूत्रशङ्कासमाधानम् ३८८९१ ।
 टीकाग्रन्थविशेषः ३८८०९, ३९१४८ ।
 णेरणावितिसूत्रव्याख्या ३९९०४ ।
 णेरणावितिसूत्रव्याख्यानम् ३९४७८ ।
 णेरणौयत्कर्मत्यादिसूत्रार्थसिद्धिः ३८८९० ।
 तत्त्वदीपिका ३८६७९, ३९६९२, ४०००९ ।
 तत्त्वबोधिनी ३७९९८, ३८०४२, ३८०८८, ३८०९१,
 ३८१३०, ३८१३१, ३८१६९, ३८१८१,
 ३८२०७, ३८२६७, ३८२७०, ३८२७३,
 ३८३१६, ३८६०७, ३८७७९, ३८९२६,
 ३८९२७, ३८९३६, ३८९६४, ३८९६७-
 ३८९६९, ३९१३२, ३९१३७, ३९१९१,
 ३९२८१-३९२८३, ३९२९८-३९३००,
 ३९३०९, ३९३४४, ३९६०६, ३९६०६,

| | |
|---|--|
| ३९६४०, ३९६४३, ३९७६०, ३९७६३, ३९८१३-३९८१६, ३९८२९, ३९८३०, ३९८३२, ३९८५७, ३९८७४, ३९८७६, ३९९७६, ३९९७७, ३९९७९, ४००१०, ४००१६, ४००३८, ४०२४०, ४०३३९. | ३९३२१, ३९३३७, ३९३४६, ३९३९१, ३९४०१, ३९५४१, ३९६६३, ३९६९०, ३९८१६, ३९८८०, ३९९१५, ४००३९. ४००९१, ४०२२६, ४०२९३, ४०३३६, ४०३६१। |
| तत्त्वविमर्शिनी ३८७३८। | धातुपाठः (सटीकः) ३७६८६। |
| तत्त्वविचरणी ३८९०८। | धातुभेदः (सप्रयोगः) ३९५८२। |
| तन्त्रप्रदीपः ३८११४। | धातुरत्नमञ्जरी ३८०३३, ३८९११, ३८९१२। |
| तर्कचन्द्रिका ३८३७८, ३८६९८, ३९२८०, ३९२८८, ३९२८९, ३९४३२, ३९७६२। | धातुरूपावली ३८०४६, ३८०५९, ३८०८७, ३८०८९- ३८०८७, ३८०९२-३८०९४, ३८१००, ३८२९५, ३८२९७, ३८३१०, ३८५२६, ३८८४४-३८८४६, ३८९०६, ३८९१३, ३८९१०, ३९७५६, ३९८४५, ४०२३७, ४०२३८, ४०३१२। |
| तिवादिवृत्तिः ३९११५। | धातुलक्षणम् ३९.९४। |
| तृतीयादिषु भाषितेति सूत्रार्थविचारः ३८८४९। | धातुवृत्तिः ३८०६०, ३८०६१, ३८११३, ३८१९७, ३८१९८, ३८५८७, ३८५८६, ३८८९५(क), ३९३८६, ३९४०४, ३९४०५, ३९५१३, ३९६७४, ३९९४०, ४०३९५। |
| त्रिपथगा ३८२०५, ३८६५०, ३८८८५, ३९३०८, ३९३५२, ३९६५२, ४००१३। | धातुवृत्तिव्याख्या ३८६५४। |
| त्वत्त्वादर्थः ३८५८८। | धातुवृत्त्यनुक्रमणिका ३९९३३। |
| दर्पणः ३९४९८। | धातुसङ्ग्रहः ४०३५६। |
| दशगणकारिकामतम् ३८६९७। | धातोस्तन्निमित्तस्यैवेति सूत्रविचारः ३८५२३, ४०३६४। |
| दशलकारकारिका ४०४१३। | धात्वर्थनिपातार्थनिर्णयः ३९१४५। |
| दशलकारसारमञ्जरी ४००८०। | नन्दिकेश्वरकारिका (सटीका) ३८५८९, ३८९०८, ३९६१८। |
| दीपव्याकरणम् ३९११९। | नन्दिकेश्वरकारिका (सव्याख्या) ३८७३८। |
| धातुकोशः ३८८४२। | नपदान्तसूत्रकोडपत्रम् ३८५९०। |
| धातुचन्द्रिका ४०३५७। | नागरोक्तिप्रकाशिका ४०२९०। |
| धातुदीपिका ३८५६६। | नाजानन्तर्य इति परिभाषाविचारः ३९८६२। |
| धातुपरिच्छेदः ३९५८३। | नामिसूत्रादिकोडपत्रम् ३८६०४। |
| धातुपाठः ३७९५३, ३८०१६, ३८०४०, ३८०४३, ३८०९०, ३८१७४, ३८२६०, ३८२९६, ३८३२३, ३८३२४, ६८३४५, ३८३६७, ३८३६८, ३८४५४, ३८६६८, ३८७४४, ३८८४७, ३८८४८, ३८९०९, ३८९१०, ३९१४३, ३९१४४, ३९२१६, ३९३१३, | |

निष्ठातत्वविचारः ३९८६१ ।

निर्धारणपद्योविचारः ३८१४६ ।

न्यायार्थमञ्जूषा ३९४०८ ।

न्यासः ३८११९, ३८५८६, ३८८५५, ३९१४६ ।

पदचन्द्रिकावृत्तिः ३७५५५, ३९१४७ ।

पदमञ्जरी ३७९२७, ३७९६८, ३८०५६, ३८५९१,
३८६०६, ३८७७३ - ३८७७६, ३९५४९,
४००७५ ।

पदमञ्जरीकुसुमविकासः ३८१७० ।

परमलघुमञ्जूषा ३८५९२ ।

परिभाषा (कातन्त्रम्) ३९८४४ ।

परिभाषापाठः ३७९७०, ३८२४०, ३८२५८, ३८२५९,
३८३६६, ३८६५१, ३८८३८-३८८४०,
३९०३१, ३९०३२, ३९२७२, ३९३२७,
३९३२८, ३९३७७, ३९३७९, ३९४९६,
४००६४, ४०१०२ ।परिभाषाप्रदीपार्चिः ३८४७२, ३८५९३, ३८६९६,
३८७७२, ४०१०९ ।परिभाषाभास्करः ३७९७१, ३८५९४, ३८५९५,
३८६९५, ३९३५४, ३९३९९,
३९६०६ ।

परिभाषामणिमाला ३८३७९, ३८५०३, ४०३१३ ।

परिभाषार्थप्रदीपः ४०२०८ ।

परिभाषार्थमञ्जरी ३८५९७, ३९०२५, ३९०२८,
३९१५३, ३९९०३ ।

परिभाषार्थसङ्ग्रहः ३८७७७ ।

परिभाषार्थोत्तंसः ३८८३७ ।

परिभाषावली ३८५०४ ।

परिभाषाविवृतिव्याख्या ३८३८१, ३८३८२, ४०२८९ ।

परिभाषावृत्तिः ३८५६९, ३८७५३, ३८८३६ ।

परिभाषाशिरोमणिः ३८६०६ ।

परिभाषासङ्ग्रहः ४०२०९, ४०३५० ।

परिभाषासूत्रम् ३९६८६ ।

परिभाषेन्दुचन्द्रिका ३८३८३, ३८५९६ ।

परिभाषेन्दुशेखरः ३७९५५, ३७९७२, ३७९७९,
३८०५७, ३८१७१, ३८२१३,
३८२५७, ३८३११, ३८३१६,
३८६४४, ३८८३४, ३८८३५,
३९०२९, ३९०३०, ३९१४९,
३९१५०, ३९४८७, ३९६३६,
३९६४६, ३९६५६, ३९७३८,
३९७४७, ३९८०४, ३९८१७,
३९८१८, ३९९७५, ३९९८७,
४००१४, ४०२८०, ४०३९९ ।परिभाषेन्दुशेखरः (सटिप्पणः) ३९४९५, ३९९८५,
३९९८६ ।परिभाषेन्दुशेखरः (सटीकः) ३८२०३, ३८४७१,
३८६९४, ३८७३६,
३९५०० ।

परिभाषेन्दु शेखरः (सविवृतिः) ३९१५१ ।

परिभाषेन्दुशेखरकाशिका ३८२०६ ।

परिभाषेन्दुशेखरक्रोडपत्रम् ४०१३१-४०१४२,
४०१४८, ४०१४९ ।

परिभाषेन्दुशेखरगदा ३९६२५, ३९९६९ ।

परिभाषेन्दुशेखरचन्द्रिका ३८७७०, ३८७७१,
४०३०५ ।

परिभाषेन्दुशेखरटिप्पणम् ४०२८१ ।

परिभाषेन्दुशेखरटिप्पणी ३८६४५, ४०२५७ ।

परिभाषेन्दुशेखरटीका ३७९३०, ३८०८३, ३८१३९,
३८२०४, ३८२०५, ३८३८०-

| | | |
|---------------------------------|--|---|
| परिभाषेन्दुशेखरटीका | ३८३८०-३८३८३, ३८४२७, ३८४२८, ३८४४९, ३८४६९, ३८६२४, ३८६०७-३८६०९, ३८६४६, ३८६४७, ३८६४९, ३७६६०, ३८६९६, ३८६९६, ३८७३७, ३८७६९, ३८८३३, ३८८७९-३८८८४, ३९०२६, ३९१६२, ३९१६३, ३९१९०, ३९३६२, ३९३६३, ३९३६३, ३९३६४, ३९३६९, ३९३६९, ३९७३४, ३९७७९, ३९८९९, ३९९३९, ३९९३९, ३९९२०, ३९९६१, ४००१३, ४००६२, ४०१०६, ४०१४६, ४०१८७, ४०१९१, ४०१९६, ४०२२४, ४०३६६, ४०३८३, ४०४२०, ४०४२७, ४०४४६। | पाणिनिसूत्रव्याख्या ३८८७८, ३८९२३, ४०२४४। पाणिनिसूत्रसूची ३९९०७। पाणिनीयवादनक्षत्रमाला ३८४२६। पाद्मव्याकरणम् ३९३३१। पारसीकप्रकाशः ४००४७, ४०३२६, ४०३३६, ४०४०२। पूर्वपक्षसमाधिसङ्ग्रहः ३८८०६। पूर्वपक्षावलिः *३९१६४, ४००६६, ४०३८७। पूर्वपक्षावली ३८९६१, ३९८१९। प्रकीर्णपत्राणि ४००२८, ४००२२, ४०१४४, ४०४१९, ४०४३०। प्रकीर्णपल्लवः ३९८९६। प्रकीर्णप्रकाशः ३८६६२। प्रक्रियाकौमुदी ३७९४४, ३८०६२, ३८१२४, ३८१२६, ३८१२७, ३८१४९, ३८२१९, ३८२२४, ३८२३४, ३८३३२, ३८३६१, ३८४४३, ३८४४४, ३८६११-३८६१४, ३८७३४, ३८७३६, ३८७४७, ३८८७७, ३९०२०, ३९०२२, ३९०२३, ३९०४९, ३९३१६, ३९४००, ३९६६०, ३९६६२, ४००३६। प्रक्रियाकौमुदी (सटीका) ३७९४६, ३७९४६। प्रक्रियाकौमुदी (सव्याख्या) ३९८७९। प्रक्रियाकौमुदीटीका ३९१६६, ३९७२३। प्रक्रियाकौमुदीप्रसादः ३७१४८, ३७९८०, ३८००४, ३८१२६, ३८२१६, ३८४२४, ३८८०३, ३९७२४। प्रक्रियाकौमुदीव्याख्या ३८४९६। प्रक्रियादोषसङ्ग्रहः ३८६९६। प्रक्रियाप्रकाशः ४०१६१। |
| परिभाषेन्दुशेखरत्रिपथगा | ३९७८६। | |
| परिभाषेन्दुशेखरत्रिपथगाव्याख्या | ३८४२६। | |
| परिभाषेन्दुशेखरदोषोद्धारः | ३८६१०, ३८६८८, ३९८६९, ३९९०१, ४०२२३, ४०४०९। | |
| परिभाषेन्दुशेखरविवृतिः | ३९०२४, ३९०२७। | |
| परिभाषेन्दुशेखरशिरोमणिः | ३८९१६। | |
| परिभाषेन्दुशेखरहैमवती | ३८४९६। | |
| परिशिष्टसूत्रम् (कातन्त्रम्) | ३९८४४। | |
| परिष्कारः | ४०१४३। | |
| परीक्षा (वैयाकरणभूषणसारटीका) | ३९४९७। | |
| पाणिनिसूत्रं (सटीकम्) | ४००८६, ४०४१७। | |
| पाणिनिसूत्रपाठः | ४००११। | |
| पाणिनिसूत्रवृत्तिः | ३९९११। | |
| पाणिनिसूत्रवृत्त्यर्थसङ्ग्रहः | ३८७६२। | |

प्रक्रियाव्याकृतिः ३८६१६ ।
 प्रतिविद्धार्थोयमितिभाष्यविचारः ३९४८० ।
 प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणमिति सूत्रविचारः ३८६५३ ।
 प्रत्ययग्रहणे यस्मादितिपरिभाषाविचारः ३९३९१ ।
 प्रत्याख्यानसङ्ग्रहः ३८४२३, ३९८२० ।
 प्रत्याहारमण्डनम् ३९९४१ ।
 प्रथमाविभक्त्यधेविमर्शः ४००९६ ।
 प्रदीपः ३८१९२, ३९२२२, ३९२२३ ।
 प्रदीपव्याख्या ३८४७४ ।
 प्रबोधचन्द्रिका ३७९२६, ३७९८८, ३८२३८, ३८२८४,
 ३८२९०, ३८४२२, ३८६०६, ३८६१७,
 ३८८०४, ३८९२८, ३९०००, ३९३६०,
 ३९६६२, ३९६९५, ३९८२१, ३९८३७,
 ३९८३८, ३९९६१, ४००१२, ४००६६,
 ४०३६७ ।
 प्रयोगमुखम् ३८८०२ ।
 प्रयोगमुखः ४०२७३ ।
 प्रयोगमुख्यसारः ४००७४, ४०३७१ ।
 प्रयोगविचारः ३९२९६ ।
 प्रयोगविधिः ३८८३२, ३९११२, ३९११३ ।
 प्रयोगविवेकसङ्ग्रहः ३८९०१, ३८९२९, ३८९३०,
 ३९९७१ ।
 प्रयोगसारः ३७९८९, ३९२१७, ३९२९३ ।
 प्रसिद्धपदबोधः ३९३३८ ।
 प्राकृतकारिका ३९२०६ ।
 प्राकृतकौमुदी ३८४९६ ।
 प्राकृतचन्द्रिका ३८६८४, ३८८२८, ३९२०६ ।
 प्राकृतप्रकाशः ४०३३३, ४०३३३ ।

प्राकृतप्रकाशः (सवृत्तिकः) ३८७८९, ३८७९०,
 ३८९१९, ३९४६४,
 ३९४६८, ४०२६०,
 ४०३२६ ।
 प्राकृतवृत्तिः ३८६८२, ३८६८३ ।
 प्राकृतसञ्जीवनी ३८८२७, ४०२६९ ।
 प्राकृतसूत्रम् ३८९१८ ।
 प्रातिपदिकान्तेतिसूत्रविचारः ३८६१८ ।
 प्रातिपदिकार्थसूत्रविचारः ३९००१ ।
 प्रौढमनोरमा ३७९३६, ३७९६६, ३८०७६, ३८२००,
 ३८२०२, ३८२२१, ३८२८२, ३८२८३,
 ३८३०३, ३८३०७, ३८३१८, ३८३६९,
 ३८३८७-३८३८९, ३८४०८, ३८४१६,
 ३८६६६, ३८६६०-३८६६३, ३८६६३,
 ३८७२७, ३८७७८, ३८८०७, ३८९३२-
 ३८९३६, ३८९३७, ३८९३८, ३९००२-
 ३९००६, ३९०९३, ३९१०९, ३९१८९,
 ३९२२९, ३९३६६, ३९३९६, ३९३९७,
 ३९४६९, ३९४६६, ३९४७१, ३९६१६,
 ३९६४६, ३९७४८-३९७६१, ३९७६८,
 ३९७९१, ३९७९४, ३९८०२, ३९८२३-
 ३९८२६, ३९८५०, ३९८७६, ३९८८९-
 ३९८९१, ३९९६०, ३९९८०, ३९९८२-
 ३९९८४, ३९९८९, ४००९६, ३९९९६,
 ४०००८, ४००३६, ४००६८, ४००७९,
 ४००८०, ४००८३, ४०११२, ४०१२१,
 ४०१२३, ४०२७७, ४०३००-४०३०२,
 ४०३२३, ४०३२८, ४०३६६, ४०३६८,
 ४०३७०, ४०३८१, ४०३९० ।
 प्रौढमनोरमा (सटीका) ३८६४१, ३८६४६, ३९७३९,
 ३९७९५, ४०३०३ ।
 प्रौढमनोरमा (सशब्दरत्ना) ३८२६६, ३८८४३,
 ३८९९१, ३८९९२ ।
 प्रौढमनोरमाकुचमर्दनम् ३८९३९, ३९८७०, ३९९८१ ।

| | | | |
|-------------------------------|--|-------------------------------|--|
| महाभाष्यं (सप्रदीपविवरणम्) | ३८२३६ । | मुग्धबोधटीका | ३८०६५, ३८०६६, ३८३५०, ३८३५२, ३८५०९, ३८५१७, ३८५१८, ३९३४०, ३९५७५, ३९६३०, ३९६५९, ३९६८१, ३९६८२, ३९६८५, ३९६९८ । |
| महाभाष्यं (सप्रदीपोद्योतम्) | ३७९६४, ३८८१२, ३८९७१ । | मुग्धबोधपरिशिष्टम् | ३९७०६, ३९७०७ । |
| महाभाष्यटीका | ३८०१२, ३८४०१, ३८७६५ ३८९०५, ४०२६७ । | मुग्धबोधसूत्रपाठः | ३९५७३ । |
| महाभाष्यप्रदीपः | ३७९७५, ३८४०३, ३८६६६- ३८६७३, ३९०६७, ३९०६८, ३९४९१, ३९५९७ । | यङ्लुगन्तप्रक्रियाप्रकाशिका | ३८७६७ । |
| महाभाष्यप्रदीपप्रकाशः | ३८६६५, ३८७९८ । | यङ्लुगन्तप्रयोगविचारः | ३८१५९ । |
| महाभाष्यप्रदीपविवरणम् | ३८०७३, ३८०७४, ३८४००, ३९५४५ । | यङ्लुगन्तरूपाणि | ४००८५ । |
| महाभाष्यप्रदीपोद्योतः | ३७९८७, ३७९९७, ३८४७६, ३८४७७, ३८६०२, ३८६६४, ३८६७४, ३८६७५, ३८६८७- ३८६९०, ३८६९२, ३८६९३, ३८९७०, ३८९७२, ३९२८७, ३९३५८, ३९३५९, ३९३८९, ३९४३६, ३९४३७, ३९४७५- ३९४७७, ३९५९८, ३९५९९, ३९७१९, ३९७३२, ४०२९९, ४०३३२, ४०३५१ । | यदागमपरिभाषाविचारः | ३८९५८ । |
| महाभाष्यप्रदीपोद्योतनम् | ३८४७५, ३८६९१ । | यमचातुर्विध्यनिर्णयः | ३८१४४ । |
| महाभाष्यविवरणम् | ३८६३३ । | यमविचारः | ४०३९७ । |
| महाभाष्यव्याख्या | ४०३८२ । | येननाप्राप्त इतिपरिभाषाविचारः | ३८९५९ । |
| महाभाष्यसिद्धान्तरत्नप्रकाशः | ३८००२, ३८७६६, ४०३१४, ४०३१५, ४०३१७, ४०३१९ । | योगविभागसूत्रसङ्ग्रहः | ३८८०८ । |
| महाभाष्यसूक्तिरत्नाकरः | ३८०९५ । | रत्नप्रकाशिका | ३९४९४ । |
| मुग्धबोधः | ३८०२५, ३८०५४, ३८२५६, ३८४०६- ३८४०९, ३८४१४, ३८४९०, ३८५१०, ३९३४२, ३९३४३, ३९५७०, ३९५७४, ३९५७६, ३९६३४, ३९६७३, ३९६८४, ३९८४७, ३९८४९, ४००२६, ४००२७, ४००२९, ४०३३४ । | रत्नार्णवः | ३८०१०, ३८४५०, ३८५४०, ३९३०४ । |
| | | रप्रत्याहारखण्डनम् | ३८७६८, ३९४१८ । |
| | | रप्रत्याहारमण्डनम् | ३८१४७, ३८२१४, ३९१२८, ३९४५०, ३९६१५ । |
| | | राजादिवृत्तिः | ३८६४३, ३९६९१ । |
| | | रुचादिगणवृत्तिः | ३८७९३ । |
| | | रुचादिवृत्तिः | ३८२१५ । |
| | | रूपमालिका | ३८१३६, ३८१७६, ३८१९५, ३८६२७, ३९४६७, ४०२६८ । |
| | | रूपसङ्ग्रहः | ३८२२८ । |
| | | रूपावतारः | ३८१२३ । |
| | | रूपावली | ३८२३९ । |

लघुचन्द्रिका ३९१२० ।

लघुदर्पण ३९४१७ ।

लघुभाष्यम् ३९९६०, ३९६१० ।

लघुचैयाकरणभूषणसारः ३९९६४, ३९९६९ ।

लघुशब्दरत्नम् ३७९६७, ३८३०९, ३८४१७, ३८४१८,
३८७८४-३८७८८, ३८७६६, ३९०९८,
३९१२६, ३९२३२, ३९२६९, ३९३९०,
३९४३१, ३९६३१, ३९६४७, ३९६४८,
३९७४०, ३९७६२, ३९७६३, ३९७७१,
३९७७२, ३९८०३, ३९८०६, ४०१७६,
४०१९६, ४०१९७, ४०२१०, ४०२२०,
४०२२२, ४०२३२, ४०२३३, ४०२३६,
४०२३६, ४०२६४, ४०२६८, ४०२६९,
४०२६४, ४०२७०, ४०२७६, ४०२७८,
४०२९१, ४०४१६ ।

लघुशब्दरत्नटीका ४०४२४, ४०४४३ ।

लघुशब्दरत्नभावप्रकाशिका ३९९१७, ३९९६२-
३९९६९ ।

लघुशब्दरत्नव्याख्या ४०२११ ।

लघुशब्देन्दुचन्द्रिका ३८७६६ ।

लघुशब्देन्दुशेखरः ३७९३२, ३७९३३, ३७९३६,
३७९६१, ३७९६८, ३८०६१,
३८०७०, ३८१८०, ३८१९४,
३८२६४, ३८२७१, ३८६४१,
३८६४२, ३८७८२, ३८७८३,
३८८१८, ३८८२०, ३९००७-
३९०१२, ३९०४८, ३९०९१,
३९०९२, ३९०९४ - ३९०९६,
३९२३३ - ३९२३७, ३९४०६,
३९४१६, ३९४३०, ३९४८६,
३९६८७, ३९६४६, ३९६६७,
३९७०९ - ३९७१२, ३९७८६,
३९७९२, ३९८०७, ३९८०८,
३९८६६, ३९९७२, ३९९९०-
३९९९२, ४००९६, ४००९६,

लघुशब्देन्दुशेखर ६०१०४, ४०१७७, ४०१७८,
४०२१३ - ४०२१६, ४०२२१,
४०२३१, ४०२६२, ४०२८२,
४०३०४, ४०३२९, ४०३३०,
४०३७३, ४०३७६, -४०३७७,
४०३८६ ।

लघुशब्देन्दुशेखरः (सटिप्पणः) ३९६४२ ।

लघुशब्देन्दुशेखरकोडपत्रम् ४०१६०, ४०१६३,
४०१६४ ।

लघुशब्देन्दुशेखरचन्द्रिका ४०२९८ ।

लघुशब्देन्दुशेखरचूडामणिः ३९०७८ ।

लघुशब्देन्दुशेखरज्योत्स्ना ३८८२२, ३९०३७,
३९०८२, ३९६२१,
३९६२२, ३९९२२ ।

लघुशब्देन्दुशेखरटीका ३७९९४, ३८१३८, ३८६४३,
३८७३२, ३८७३३, ३८७९४,
३८७९६, ३८८२१, ३८८६८,
३८९३१, ३९०३६, ३९०६६,
३९०७९, ३९०८३, ३९०८४,
३९०८६-३९०९०, ३९१४२,
३९१७१, ३९१७६-३९१७८,
३९२४७, ३९३६०, ३९४८३,
३९६०२, ३९६०८, ३९६१४-
३९६२०, ३९६२२, ३९६२०,
३९६२१, ३९७८७, ३९८६०,
३९८७७, ३९९४०, ४०००७,
४००६०, ४००६७, ४०११९,
४०१६६, ४०२००, ४०२०६,
४०२१७, ४०२२८, ४०२६३,
४०२६६, ४०३१६, ४०४०७,
४०४३१-४०४३८, ४०४४२ ।

लघुशब्देन्दुशेखरदोषोद्धारः ३९०३६, ३९८६६,
३९७८९, ३९८६४ ।

लघुशब्देन्दुशेखरप्रभा ३८४८३ ।

लघुशब्देन्दुशेखरभावाथदीपिका ३८४८२ ।

| | |
|--|--|
| लघुशब्देन्दुशेखरविमर्शः ४०२३० । | वाक्यपदीयप्रमेयसङ्ग्रहः ३८१४९ । |
| लघुशब्देन्दुशेखरविवृतिः ३८४९८, ३९०८९, ३९७८८ | वाक्यप्रकाशसूत्रम् (सटिप्पणम्) ३९२६९ । |
| लघुशब्देन्दुशेखरविवृतिसङ्ग्रहः ३८४८१ । | वाक्यवादन्याख्या ३९९०३ । |
| लघुशब्देन्दुशेखरविषमपदवाच्यविवृतिः ३८४८० । | वाक्यविचारः ३९०१३ । |
| लघुशब्देन्दुशेखरव्याख्या ३८४७९, ३८४८४-३८४८३, ३९०८०, ३९०८१, ३९३४९, ४०२४४, ४०२०६, ४०२३१ । | वाचूडामणिः ३९३१९ । |
| लघुसिद्धान्तकौमुदी ३८१०४, ३८१९०, ३८१९९, ३८१८३, ३८१८४, ३८१९६, ३८२७९, ३८३३३, ३८९२७, ३८९२८, ३८९७३, ३८७३१, ३८८०६, ३९०६७-३९०६९, ३९०९९, ३९१०२, ३९१७४, ३९९०९, ३९९४१, ३९७२६, ३९९२८, ३९९३१, ४०१६८, ४०२४९, ४०३३८ । | वादनक्षत्रमाला ३९०७९, ३९०७६ । |
| लघुसिद्धान्तचन्द्रिका ३९१२१-३९१२४ । | वादसुधाकरः ३८३८४, ३८३८९, ३८९२९, ३८६२२, ३९०१४, ३९३९८ । |
| ललिता ३८९२१ । | वादिघटमुद्गारभाष्यम् ३९९६३ । |
| लिङ्गवृत्तिः ३८२१०, ३८८९७ । | वार्त्तिकम् ४०१०० । |
| लिङ्गानुशासनम् ३८२०६, ४००८१ । | वार्त्तिकसङ्ग्रहः ४०२०३, ४०३६३ । |
| लिङ्गानुशासनम् (सवृत्तिकम्) ३९३८१ । | विभक्त्यर्थनिर्णयः ३८९४९, ३८९९०, ३८६२३ । |
| लिङ्गानुशासनवृत्तिः ३८४०९ । | विभक्त्यर्थनिरूपणम् ३९१७२, ३९४१३ । |
| लिटिधातोरनभ्यासस्येति सूत्रविचारः ३९४०७ । | विभक्त्यर्थविचारः ३८४४६, ३८९३९ । |
| वर्णात्कार इति सूत्रविचारः ४०२०७ । | विभक्त्यर्थविवेचनम् ३९०१९ । |
| वाक्यपदीयम् ३८०३०, ३८०३१, ३८९३४, ३८९४४- ३८९४६, ३८८१६, ३९०७७ । | विविधक्रोडपत्रसङ्ग्रहः ३९०७४ । |
| वाक्यपदीयम् (सटीकम्) ३८०२२, २८०२९, ३८८१४, ३८८१९, ३८८१९, ३८८२४, ३८८२९, ३८८७३, ३९९९४, ४०१७९, ४०४०४ । | विवृतिः ३९३९३ । |
| वाक्यपदीयटीका ३८९४७, ३८९४८, ३८६९२ । | विशेष्यत्वविशेषणत्वयोर्द्वैविध्यविचार ३९८७९ । |
| | विषमा ३८४७९, ३८९८४ । |
| | वृत्तिदीपिका ३७९९२, ३८१११, ३८९३१, ३८९९१, ४०१८० । |
| | वृत्तिवादः ३७९४१ । |
| | वैदिकीप्रक्रिया ४०१६२ । |
| | वैयाकरणभूषणम् ३८६२४, ३८८७४ । |
| | वैयाकरणभूषणम् (सटीकम्) ३८९०९ । |
| | वैयाकरणभूषणकारिका ३९६०९ । |

वैयाकरणभूषणसारः ३७९३८, ३७९९३, ३८०६८,
 ३८२९१, ३८३९९, ३८३०९,
 ३८३१५, ३८४२१, ३८४४६,
 ३८५३६, ३८५५२ - ३८५५७,
 ३८७४३, ३८७५३ - ३८७५५,
 ३८८६१, ३९०१६, ३९०१८,
 ३९०७२, ३९०७३, ३९१६९,
 ३९२२१, ३९३३९, ३९४४३,
 ३९५५८, ३९५६४, ३९६२६,
 ३९६३६, ३९७८३, ३९७८४,
 ३९७९६, ३९८९३, ३९९७८,
 ४०००५, ४०००६, ४००४९,
 ४००८२, ४०१२७, ४०१८१,
 ४०२७४, ४०२७९, ४०२९७,
 ४०३९३, ४०३९४, ४०४०६।

वैयाकरणभूषणसारः (सटीकः) ३९४९८।

वैयाकरणभूषणसारकान्तिः ३९१६८।

वैयाकरणभूषणसारटीका ३८६१९, ३८७४८,
 ३८७४९, ३८९८०,
 ३९१७०, ३९३५६,
 ३९४१७, ३९४९७,
 ३९५९३, ३९६१७,
 ४०३७५, ४०४४४।

वैयाकरणभूषणसारतत्त्वविवृतिः ३८७५०।

वैयाकरणभूषणसारदर्पणः ३७९६०, ३८२८८,
 ३८८२३, ३८९१७,
 ३९०५०, ३९१६७।

वैयाकरणभूषणसारपरीक्षा ३८३९९।

वैयाकरणभूषणसारलघुदर्पणः ३८७५१, ३८७५२।

वैयाकरणभूषणसारविवृतिः ३९०५१, ३९३५५।

वैयाकरणभूषणसारत्रयाख्या ३८०८४, ३८२८९,
 ३८५३०, ३९२७४।

वैयाकरणमतोन्मज्जनम् ३८५०५।

वैयाकरणमतोन्मज्जनम् (सटीकम्) ३९०१९।

वैयाकरणशब्दरत्नमाला ३८३९६, ३९५५४।

वैयाकरण- ३७९४९, ३७९७३, ३७९८१, ३८०३२,
 सिद्धान्तकौमुदी ३८०५२, ३८०७९, ३८०८०, ३८११०,
 ३८१३३, ३८१३४, ३८१६२, ३८१७७,
 ३८१८२, ३८१८५, ३८१८८, ३८२०१,
 ३८२१२, ३८२२०, ३८२३०, ३८२३१,
 ३८२३७, ३८२८१, ३८२९२, ३८३०२,
 ३८३१५, ३८३२४, ३८३९०, ३८५१३-
 ३८५१८, ३८५६०, ३८५२३-३८७२६,
 ३८७४६, ३८९५२-३८९९०, ३९०९७,
 ३९१००, ३९१०१, ३९१०३-३९१०८,
 ३९१३३-३९१३६, ३९१३८, ३९१३९,
 ३९१७९-३९१८३, ३९२२०, ३९२२६,
 ३९२३८-३९२४०, ३९२६२, ३९२६६,
 ३९२६९, ३९३०४, ३९३०९-३९३११,
 ३९३२३-३९३२५, ३९३७३, ३९४२९,
 ३९४३८, ३९४४९, ३९४६५, ३९४८८,
 ३९५१३, ३९५३८, ३९५५३, ३९५९६,
 ३९६२२-३९६३५, ३९६३९, ३९६४१,
 ३९६५३, ३९६९३, ३९७३२-३९७३७,
 ३९७४१, ३९७४२, ३९७४४, ३९७४५,
 ३९७५९, ३९७६५, ३९७६६, ३९७६८-
 ३९७७०, ३९७७४, ३९७७६, ३९७७७,
 ३९७८१, ३९७९७, ३९८०६, ३९८२८,
 ३९८३३, ३९८५७, ३९८६८, ३९८७१,
 ३९८७८, ३९८८५-३९८८८, ३९८९७-
 ३९९००, ३९९०५, ३९९०६, ३९९१३,
 ३९९१४, ३९९३६-३९९३८, ३९९४०,
 ३९९४७, ३९९४८, ३९९५६, ३९९५७,
 ३९९६८, ३९९७०, ३९९९७, ३९९९८-
 ४०००२, ४००३४, ४००३६, ४००३७,
 ४००४०, ४००५०-४००५२, ४००५५,
 ४००५७, ४००६६, ४००७८, ४००८८-
 ४००९०, ४००९८, ४०१०६-४०१०८,
 ४०१२०, ४०१२२, ४०१२३, ४०१२९,
 ४०१३०, ४०१६३, ४०१६६, ४०१६७,
 ४०१६९, ४०१७०-४०१७२, ४०१८५-
 ४०१८९, ४०१९१-४०१९३, ४०२०१,
 ४०२२५, ४०२३९, ४०२४१-४०२४३,
 ४०२४५-४०२४८, ४०२५०, ४०२५१,

वै०सि०कौमुदी ४०२६१, ४०२७१, ४०२७२, ४०२९४-
४०२९६, ४०३०६-४०३०८, ४०३१०,
४०३१८, ४०३२०, ४०३२१, ४०३४३,
४०३७९, ४०३८४, ४०४०१ ।

वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी(सटीका) ३८२६९, ३८३०८,
३८७८०, ३८७८१,
३९३०६, ४००९६,
४००९६ ।

वै०सि०कौ०टीका ३७९९८, ३८०१०, ३८०११, ३८०३६,
३८०४२, ३८०८२, ३८०८८, ३८०९१,
३८१२९-३८१३१, ३८१६०, ३८१८१,
३८२००, ३८२०२, ३८२०७, ३८२२१,
३८२६६, ३८२६७, ३८२७०, ३८२७३,
३८३८२, ३८३०६, ३८३०७, ३८३०९,
३८३१६, ३८३१८, ३८३८७-३८३८९,
३८४०४, ३८४३३, ३८५०७, ३८५४०,
३८५४१, ३८६०१, ३८७२७, ३४८०७,
३८८१८, ३८८२०, ३८८३१, ३८९२६-
३८९२७, ३८९३२-३८९३८, ३८९६३-
३८९६६, ३९००७-३९०१२, ३९०४८,
३९१०१, ३९१३०-३९१३२, ३९१३७,
३९१८४-३९१८६, ३९१९१, ३९२२९,
३९२५८, ३९२६३, ३९२७६, ३९२८१-
३९२८३, ३९२९८-३९३००, ३९३०४,
३९३४४, ३९३६६, ३९३९६, ३९३९७,
३९४०६, ३९४१६, ३९४२७, ३९४४६,
३९४७१, ३९४८६, ३९५०१, ३९५०४-
३९५०६, ३९५८७, ३९६६१, ३९६४०,
३९६४३, ३९६४६, ३९६४९, ३९६५७,
३९७०९-३९७१२, ३९७४८-३९७५१,
३९७६८, ३९७६०, ३९७६३, ३९७७३,
३९७८६, ३९७९१, ३९७९२, ३९७९४,
३९८०२, ३९८०३, ३९८०७, ३९८०८,
३९८१३-३९८१६, ३९८२३, ३९८२६,
३९८२९, ३९८३०, ३९८३१, ३९८३२,
३९८५०, ३९८५७, ३९८६६, ३९८७४-
३९८७६, ३९८८९-३९८९१, ३९९६०,
३९९७२, ३९९७६, ३९९७७, ३९९७९,
३९९८०, ३९९८२-३९९८४, ३९९८९-

वै०सि०कौ०टीका ३९९९२, ३९९९६, ३९९९६, ४०००८,
४००१०, ४००१६, ४००१६, ४००३८,
४००६६, ४००६८, ४००७९, ४००८३,
४०१०४, ४०११२, ४०१२१, ४०१२६,
४०१७७, ४०१७८, ४०१९४, ४०१९६,
४०२१३-४०२२१, ४०२३४, ४०२४०,
४०२५२, ४०२७७, ४०२८२, ४०३०४,
४०३२३, ४०३२८-४०३३०, ४०३३९,
४०३६६, ४०३६८, ४०३७०, ४०३७३,
४०३७६-४०३७७, ४०३८१, ४०३८५,
४०३९० ।

वै०सि०कौ०वित्तासः ३८९६६, ३९०४४, ३९२७९,
३९६००, ४०४०० ।

वै०सि०कौ०व्याख्या ३७९५४, ३८०७७, ३८४५०,
३८५१९, ३८५२०, ३८५५९,
३८६५५, ३८६६०-३८६६३,
३८७२८, ३९००२-३९००६,
३९२९७, ३९३०१-३९३०३,
३९३४६, ३९४२६, ३९४५९,
४०३००, ४०३०२ ।

वै०सि०दीपिका ३९७८० ।

वै०सि०परमलघुमञ्जूषा ३९०३३, ३९०३४,
३९८००, ४०३४१,

वै०सि०मञ्जूषा ३८०५०, ३९८२७, ४०४११ ।

वै०सि०मञ्जूषाकला ४०३५८, ४०३५९ ।

वै०सि०मञ्जूषाटिप्पणम् ४०३६० ।

वै०सि०मञ्जूषाव्याख्या ३८०५१ ।

वै०सि०माला ४०४०३ ।

वै०सि०रत्नाकरः ३८४४२ ।

वै०सि०लघुमञ्जूषा ३७९४२, ३७९८३, ३८०६४,
३८०६९, ३८३००, ३८७१०-
३८७१२, ३८७९७, ३९२२७,
३९२३०, ३९३५७, ३९३८४,
३९४३४, ३९४६१, ३९४९२,
३९६१०, ३९७०१, ४०३८८ ।

वै० सि० लघुमञ्जूषा (सटीका) ३७९६१, ३७९८२,
३९२३१ ।

वै० सि० लघुमञ्जूषाकुञ्जिका ३८७५६ ।

वै० सि० लघुमञ्जूषाटीका ३७९६२, ३७९६३ ।

व्याकरणक्रोडपत्रम् ३८२६३, ३८५३७ ।

व्याकरणग्रन्थविशेषः ३७९४७, ३८६१६, ३८६२९,
३९४२१, ३९८०९, ४००१८,
४००१९, ४००२३, ४००२२,
४००३३, ४०१६४, ४०४१८,
४०४२१, ४०४२२, ४०४२३,
४०४२६, ४०४२८, ४०४२९ ।

व्याकरणटीकाग्रन्थविशेषः ३९११०, ३९७२७,
४०४२५ ।

व्याकरणदीपिका ३८८२६ ।

व्याख्यानप्रक्रिया ३८८९८ ।

व्युत्पत्तिवादक्रोडपत्रम् ३८५७१ ।

शङ्करकविवरसूक्तम् ३९४२४ ।

शब्दकौस्तुभः ३७९३४, ३७९७६, ३८१९१, ३८३०४,
३८३२२, ३८३३०, ३८५३२, ३८६८५,
३८७०२-३८७०९, ३८७१३-३८७१६,
३८८१३, ३८८६४, ३८८६५, ३८९८५-
३८९९१, ३९१३१, ३९२५०-३९२५७,
३९२६१, ३९२६४, ३९२६६, ३९२६८,
३९४३९, ३९५२३, ३९६४४, ३९७२८-
३९७३१, ३९९३४, ३९९८८, ३९९९३,
४०००३, ४०००४, ४००५९, ४००६३,
४००७७, ४००९७, ४०११०, ४०१९८,
४०३२४ ।

शब्दकौस्तुभः (सटिप्पणः) ३९३६४ ।

शब्दकौस्तुभः (सटीकः) ३८३९८ ।

शब्दकौस्तुभटिप्पणी ३८६२५ ।

शब्दकौस्तुभटीका ३७९९१, ३८५३९, ३८७१७-
३८७२०, ३८९७५, ३८९७८,
३८९८२, ३९९८३, ३९०२१,
३९०४७, ३९२४६, ३९२७५,
३९२७७, ३९७२५, ३९७७८ ।

शब्दकौस्तुभतत्त्वम् ३८६२६ ।

शब्दकौस्तुभतात्पर्यम् ३८९०३ ।

शब्दकौस्तुभतात्पर्यटीका ४००६१ ।

शब्दकौस्तुभप्रभा ३८३५७, ३८५३९, ३९१६२,
३९५४४, ३९५८८, ३९५८९,
३९५९१, ३९५९२, ३९८२२,
४०३४६ ।

शब्दकौस्तुभविषयव्याख्या ३८७२१ ।

शब्दकौस्तुभवृत्तिः ३८९७९ ।

शब्दकौस्तुभव्याख्या ३८१३५, ३८९८४, ३९५९० ।

शब्ददीपः ३९३९० ।

शब्दमाला ३९९१६ ।

शब्दमालिका ३८२४२ ।

शब्दरत्नम् ३८१४२, ३८२६५, ३८२७२, ३८९४७,
३९०४४, ३९०४५, ३९१६३, ३९२२८,
३९४३३, ३९६६८, ३९७३९, ३९७५७,
३९७९०, ३९९९४, ४०३०३ ।

शब्दरत्नटीका ३८४३२, ३८४३४, ३८८६३, ३९४९४ ।

शब्दरत्नप्रकाशिका ३८४३०, ३८४३१, ३९९५८ ।

शब्दरत्नभावप्रकाशिका ३७९५०, ३७९५७, ३७९६५,
३८२०८, ३८४३३, ३८८०१,
३८९०२, ३९१५७, ३९१५८ ।

शब्दरत्नाकरः ३८३९१, ३९६९५ ।

शब्दरूपाणि ३९२४८, ३९२४९ ।

शब्दरूपावलि: ३८२६८, ३९१६४, ३९१६६, ३९१७३,
३९६२६-३९६२९, ३९७९३, ३९७९८,
३९८०१, ३९९२६, ४००६८, ४०३७४,
४०३८६ ।

शब्दरूपावली ३८१९३, ३८२४२, ३८२४३, ३८२४९,
३८३०३, ३८३३९, ३८४८७, ३८४८८,
३९०३८-३९०४३, ३९३४७, ३९४०९,
३९४११, ३९४३६, ३९४४१, ३९६६१,
३९७६१, ३९९७४, ४००४८, ४००७९,
४०१६६, ४०१८२, ४०१८३, ४०३११ ।

शब्दरूपावली (सटिप्पणा) ३९२२४ ।

शब्दलक्षणम् ३९२७१ ।

शब्दविनायकः ३८४२९ ।

शब्दशोभा ३९२७०, ३९६०१ ।

शब्दसारः ३९१६६ ।

शब्दानुशासनं (सवृत्तिकम्) ३९११४ ।

शब्दानुशासनवृत्तिः ३८१०९ ।

शब्दार्थसारमञ्जरी ३८३४९, ३९३६९ ।

शब्देन्दुशेखरः ३८४४१ ।

शब्देन्दुशेखरटीका ३८०१३, ३८४३६ - ३८४४०,
३८६७०, ३८६००, ३८६३०,
३८६३१, ३९३८७, ३९४९३ ।

शब्देन्दुशेखरदोषोद्धारः ३९३८८ ।

शब्देन्दुशेखरव्याख्या ३८९९९ ।

शाङ्करी ३८६०७, ३९९९९ ।

शब्दबोधप्रक्रिया ३८८६६, ३८९०१ ।

शब्दिकप्रक्रिया ३९९१६ ।

शब्दिकाभरणम् ३९४२२ ।

शिक्षा ३९८४४ ।

शिरोमणिः ३८४६३, ३८४६९, ३८४७० ।

शिशुबोधः ४०२७६ ।

शिष्यप्रबोधिका ४०१८४ ।

श्रीकृष्णलीलामृतम् ३९४२४ ।

श्रीसूक्तिरत्नाकरः ३८०९६ ।

श्रैधरी ३९०८४ ।

श्लोकजातिकोपायः ३९२७३ ।

षट्कारकम् ३९०८४ ।

षट्कारकम् (सटीकम्) ३८७९१ ।

षट्कारकरूपणम् (सटिप्पणम्) ३९६०४ ।

षट्कारकपरिच्छेदः ३९४१६ ।

षट्कारकप्रक्रिया ३९२४६, ४०४०६ ।

षट्कारकविचारः ३८१०६ ।

षट्कारकविवेचनम् ३८८७० ।

षट्कारकविवेचनम् ३८०७६ ।

षोडशकारिका (सटीका) ३८७२२ ।

संक्षिप्तसारः ३९६७७, ३९८६६, ४००२४, ४००२६ ।

संक्षिप्तसारः (सटीकः) ३८०९६ ।

संक्षिप्तसारः (सवृत्तिकः) ३९६८३, ३९६९९ ।

संक्षिप्तसारटीका ३८३२१, ३८३२२ ।

संक्षिप्तसारदीपिका ३९६९२ ।

संक्षिप्तसारवृत्तिविवरणम् ३९७०४ ।

संक्षिप्तसारवृत्तिविवरणकौमुदी ३९७०३ ।

(संक्षिप्तसार टी०टी०टी०)

संस्कृतमञ्जरी ३९१४० ।

सदस्थिमाला ४०२१२ ।

| | |
|--|---|
| सभ्याभरणम् (सटीकम्) ३९३९३, ३९४४८ | सारस्वतम् ३८२२३, ३८२२६, ३८२२७, ३८२३३, ३८३३७, ३८३४२, ३८३४७, ३८४०२, ३८४७३, ३८५०८, ३८५७२-३८५७८, ३८६३२-३८६३६, ३८६४२, ३८६५७, ३८६५८, ३८७४१, ३९११३-३९११८, ३९२१२, ३९३१४, ३९३१७, ३९३६८, ३९५६६, ३९६०९, ३९८३४, ३९८४०- ३९८४३, ३९९१२, ३९९२४, ३९९३२, ४००४०, ४००४१, ४०१२८, ४०१७३, ४०१७५, ४०३२७, ४०४१४ । |
| समासकुसुमावली ३६५४३ । | |
| समासचक्रम् ३८१७५, ३८२९८, ३८३०१, ३८५११, ३८५१३, ३८८३२, ३८८६७, ३९१११- ३९११३, ३९२४२-३९२४४, ३९२९४- ३९२९६, ३९३७३, ३९४८९, ३९५३०- ३९५३२, ३९५३४, ३९५३६, ३९७५४, ४००५३, ४००७२, ४०२९२ । | |
| समासचक्रचूडामणिः ३९५३३ । | |
| समासचूडामणिः ३८४९३, ३९३८५ । | सारस्वतम् (सटीकम्) ३८१८६, ३९२०८, ३९५५७, ४००४२, ४००४३ । |
| समासज्ञापकः ३९५३७ । | सारस्वतम् (सभाष्यम्) ३९२०७ । |
| समासज्ञापकावली ३९७०५ । | सारस्वतचन्द्रिका ३८१८९ । |
| समासतत्त्वम् ३९३७३ । | सारस्वतटिप्पणम् ३९३१५ । |
| समासपादः (सटीकः) ३८५५८ । | सारस्वतटीका ३८१६३, ३८२१८, ३९६८९ । |
| समासवादः ३८३६०, ३९३७४ । | सारस्वतदीपिका ३८१७३, ३८३४७ । |
| समासविचारः ३९२७८ । | सारस्वतप्रक्रिया ३८०६३, ३८०७६, ३८०९७, ३८०९८, ३८१०२, ३८१०३, ३८१०६, ३८१०७, ३८४९९, ३८९२१, ३९११५, ३९११६, ३९४९० । |
| समासविधिः ३९५३५ । | सारस्वतप्रदीपिका ३७९३९ । |
| समासविधिवादः ३९८९४ । | सारस्वतभाष्यम् ३९५३३, ४०४१० । |
| समासादिविचारः ३७९२९ । | सारस्वतरूपमाला ३९३४८ । |
| सम्बन्धोद्योतः ३८७९३ । | सारस्वतलघुभाष्यम् ३८९०४ । |
| सम्बन्धोपदेशः ३९१२६, ३९१९२ । | सारस्वतविभृतिः ३७९७४ । |
| सरूपागामेशोष इति सूत्रविचारः ३९२४१ । | सारस्वतवृत्तिः ३८१६४ । |
| सुर्वमङ्गला ३८४४९ । | सारस्वतसूत्रपाठः ३८२१७, ३९३२०, ३९३७२ । |
| सापेक्षवादः ३९६६०, ३९६६१, ३९६६६, ३९८५१ । | साहित्यदर्पणटीका ३९४२४ । |
| सारसिद्धान्तकौमुदी ३८१५८, ३८४३५, ३८५७२, ३९३६७, ३९६१४, ३९६२८ । | |
| सारस्वतम् ३८००३, ३८०५३, ३८१३७, ३८१५२, ३८१५४, ३८१५७, ३८१६५, ३८१७२, ३८१७८, ३८१७९, ३८१९०, ३८२२२, | |

सिद्धान्तचन्द्रिका ३८०९६, ३८१४०, ३८१८०,
३८२२९, ३८२३२, ३८२७९,
३८२८०, ३८६३८ - ३८६४१,
३८७४२, ३९१२७, ३९१९९-
३९२०४, ३९२९२, ३९३७०,
३९४९९, ३९५६५, ३९७०८,
३९९२३, ४००४४, ४००८४,
४०२२९, ४०३४८, ४०४१२ ।

सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्तिः ३९२७८ ।

सिद्धान्तचन्द्रिकाव्याख्या ३८५७९, ३९५५२ ।

सिद्धान्तपद्माकरः ३८४२६ ।

सिद्धान्तरत्नाकरः ३७९९९, ३८०००, ३८०८२,
३९५९५ ।

सिद्धान्तसारः (सटीकः) ३९६०७, ३९६०८ ।

सिद्धान्तसुधानिधिः ३८०१२ ।

सुपद्ममकरन्दः ३९६८७ ।

सुपद्मव्याकरणम् ३८६३७, ३९४५२, ३९६७९,
३९६८८ ।

सुपद्मसूत्रपाठः ३९४५३ ।

सुबोधिनी ३७९५४, ३८०११, ३८१२९, ३८७२८,
३८८३१, ३८९६३, ३९१३०, ३९१३१,
३९२९७, ३९३०१ - ३९३०३, ३९३४०,
३९४४५, ३९५०१, ३९५०४, ३९७७३,
३९८३१, ३९९३३, ४००१५, ४०१९४,
४०१९५ ।

सूक्तिरत्नाकरः ३८९०५ ।

सूत्रसप्तसती ३९६१३ ।

स्थानिवत्सूत्रविचारः ४००९३, ४००९४ ।

स्थानिवत्सूत्रार्थविचारः ३८८३० ।

स्थानेऽन्तरतम इतिसूत्रक्रोडपत्रम् ३८६२८ ।

स्फोटचन्द्रिका ३७९६९, ३८७२९, ३८७३०, ३८९६१,
३९४१९ ।

स्फोटतत्त्वम् ३८९०० ।

स्फोटतत्त्वनिरूपणम् ३९४२८ ।

स्फोटनिरूपणम् ३८९६२ ।

स्फोटरत्नम् ३८२८७ ।

स्फोटविचारः ३८१०१ ।

स्यादिप्रक्रिया ३८८७१ ।

स्वरप्रक्रिया ३८८७५ ।

स्वरप्रक्रियाव्याख्या ३८८७६, ४००८७ ।

स्वरसिद्धान्तचन्द्रिका ३८४६८ ।

स्वरितविवृतिः ३८८२९ ।

स्वरितवृत्तिः ३८९२२ ।

हरिनामामृतव्याकरणम् ३८०८९ ।

“हलन्त्यम्” सूत्रविचारः ३८९६० ।

हलन्त्यमिति सूत्रार्थविचारः ४०३९६ ।

हलङ्घ्यादिसूत्रविचारः ३८१४८ ।

हैमवती ४०१४७, ४०१५१ ।

शुद्धिपत्रम्

| अशुद्धम् | शुद्धम् | क्रमसंख्या | स्तम्भे |
|--------------------------|--|------------|---------|
| X | टीकानाम कला ? | ३७९६१ | १२ |
| ७३, ७-१२९ | '७३, ७३-१२९ | ३७९६४ | ४ |
| १-२२९ | १-३, ६-१०४, १०४-१८१, १८३-२२५, २२७-२२९ | ३८००१ | ४ |
| पू० | अपू० | ३८००१ | ११ |
| ८८-१०० | ८८, १०० | ३८०६२ | ४ |
| कीटदंष्ट्रा | कीटदष्ट्रा | ३८०८५ | १२ |
| X | श्रीसूक्तिरुक्ताकर इति नामान्तरम् | ३८०९५ | १२ |
| १ सं-पत्रं | १ मं पत्रं | ३८११५ | १० |
| ३८ ३३ | ३८१३३ | ३८१३३ | १ |
| वै० सि० कौ० टीका | वै० सि० कौ० टी० टीका । | ३८२७२ | १२ |
| अ० १-२ । | अ० १-२ ।” | ३८४६० | १२ |
| शाङ्करी | शाङ्करी | ३८६०७ | २ |
| आख्यातकृदन्तप्रकरणम् । | आख्यातकृदन्तप्रकरणे । | ३८६३९ | १२ |
| वैदिकस्वरप्रकरणमात्रम् | ” वैदिकस्वरप्रकरणमात्रम् | ३८६६१ | १२ |
| ...५४-१.६ | ...५४-१०६ | ३८७४८ | ४ |
| १ ५५ | १-५५ | ३८७४९ | ४ |
| ३८८ ५ | ३८८१५ | ३८८१५ | १ |
| हलन्तपुंलिङ्गान्ता | हलन्तपुंलिङ्गान्ता | ३८८२२ | १२ |
| ३८५४ | ३८८५४ | ३८८५४ | १ |
| वै० सि०.... | वै० सि०.... | ३८८६३ | १२ |
| ३८६९४ | ३८८९४ | ३८८९४ | १ |
| १-३, २-४ | २-४ | ३८९७८ | ४ |
| २ (गणनया) | ५ गणनया | ३८९७९ | ४ |
| ...२-३५ | ...२७-३५ | ३८९८८ | ४ |
| टि० मराठीभाषायाम् | टी० मराठीभाषायाम् | ३९२२४ | १२ |
| अष्टाध्यायीटीका | वै० सि० कौ० टी० टीका | ३९२४७ | १२ |
| अष्टाध्यायीटीका | अष्टाध्यायीटी० टीका | ३९२७७ | १२ |
| १८८५ | १८५५ | ३९३९१ | १० |
| १-१३९, १-१४८,.... | १-१४८,.... | ३९४७७ | ४ |
| टी० कुञ्जिका | टी० कुञ्जिका | ३९४८४ | १२ |
| कव्योत्सनाख्या | कव्योत्सनाख्या | ३९५३१ | १२ |
| कर्मण्यण्डितिसूत्रटीका | कर्मण्यण्डितिसूत्रटीका | ३९५८० | २ |
| वै० सि० कौ० टी० टी० टीका | वै० सि० कौ० टी० टीका | ३९६२१ | १२ |
| वै० सि० कौ० टी० टीका | वै० सि० कौ० टीका | ३९६४५ | १२ |
| ” | ” | ३९६५७ | १२ |
| ” | ” | ३९७०९ | १२ |
| ” | ” | ३९७११ | ” |
| ” | ” | ३९७१२ | ” |